[पूर्ण संख्या २१८] पत्र-सूचना

[बाबू दुर्गाप्रसाद जी का पत्र][1]
प्राप्ति; २१ अक्टूबर १८८०।

—:•:—

[पूर्ण संख्या २१९] पत्र

Amritsar Arya Samaj[2]
23rd October 1880.

Revered Sir,

Col. Olcott and Madame Blavatsky have reached here and are most anxious to see you. Besides their wishes it is the most earnest desire of this Samaj to have you with us at their present occasion, which if brought into effect will be a most desirable end. All the members solicit and hope that you will be so kind as to proceed to Amritsar at your earliest possible convinience.

Namaste from Pandit Umrao Singh and myself and others,

I am,
Yours respectfully,
Murli Dhar,
Secretary, Arya Samaj

---

१. इस पत्र की सूचना और प्राप्ति तिथि का निर्देश ऋ० द० के पूर्ण संख्या ४८८ (भाग १, पृष्ठ ५३७) के पत्र में मिलता है।

२. यह पत्र वैदिक मैगजीन (गुरुकुल कांगड़ी) पौष १९६५ वि० में छपा था।

भाषार्थ

अमृतसर आर्यसमाज
२३ अक्तूबर १८८०

आदरणीय महोदय

कर्नल आलकाट तथा मैडम ब्लेवेट्स्की यहां पहुंच गये हैं और वे आपसे मिलने के लिए अत्यन्त उत्सुक हैं। उनकी इच्छा के अतिरिक्त इस समाज की भी हार्दिक कामना है कि इस अवसर पर आप यहां पधारें। यदि ऐसा हुआ तो वह अत्यन्त स्पृहणीय प्रसङ्ग होगा। सभी सदस्य ऐसी प्रार्थना करते हैं तथा आशा रखते हैं कि आप शीघ्रातिशीघ्र हर सम्भव सुविधा से अमृतसर के लिये प्रस्थान करेंगे। लौटती डाक से आपके उत्तर की कामना तथा पं० उमराव सिंह, मेरी तथा अन्यों की नमस्ते के साथ,

मैं हूं आपके प्रति अत्यन्त
सम्मानभाव वाला,
मुरलीधर,
मन्त्री आर्य समाज।

—:०:—

[पूर्ण संख्या २२०] पत्र-सूचना

[श्री आत्माराम जी गुजरांवाले का पत्र][1]
४ नवम्बर १८८०।

—:०:—

[पूर्ण संख्या २२१] पत्र-सूचना

[लाला रामशरणदास का पत्र मास्टर शादीराम की जामिनी के सम्बन्ध में][2]

—:०:—

१. इस पत्र की सूचना और तिथि का निर्देश ऋ० द० के पूर्ण संख्या ४९२ (भाग १, पृष्ठ ५४३) के पत्र में मिलती है। इस में ऋ० द० से कुछ प्रश्न पूछे गये थे, उनकी जानकारी ऋ० द० के पूर्व निर्दिष्ट पूर्ण संख्या ४९२ (पृष्ठ ५४३-५४७) के पत्र से मिलती है।

२. इस पत्र की सूचना ऋ० द० के पूर्ण संख्या ४९६ (भाग १, पृष्ठ ५५१) के पत्र में मिलती है।

[पूर्ण संख्या २२२]　　पत्र-सूचना

[बख्तावरसिंह शाहजहांपुर के पत्र][1]

—:०:—

[पूर्ण संख्या २२३]　　पत्र

वैदिकयन्त्रालय काशी[2]

संख्या　　　　बनारस

नमस्ते

भगवन्

आपने जो मास्टर सादीराम के पास मुं० ब० के अपराध पकड़ने के लिये पत्र भेजा[3] वह मुझे विदित हुवा मुं० ब० का लिखाया हुवा जो प्रति मास का हिसाब उर्दू मे है उसको सादीराम जी मुझको रात्रि में लिखाते हैं लिख रहा हू आप के पास भी भेजूंगा और जो विशेष अपराध की जगह देखूंगा वहा सूचना क अलग आपको लिखूंगा अब तौ जो अनेकी जगह व्योरेवार लिखावट नही है इससे मालुम होता है कि उन का मन चीना लेख है और काम वालों से जो काम लिया है उस मे अपना अभिष्ट काम लेकर उन्होंने आप का दाम खरच किया है जैसे (एक कामता कंम्पोजीटर जो कि नागरी और अगरेजी और उर्दू में अति प्रवीणता से कंपोस करने वाला है मेरे आये पर ३।४ रोज कंपोस उसका अति मंदाम का हुवा मने उस से एक दिन कहा कि बड़े शोक की बात है जो तुम्रारा एसा कंपोस हो उसने मुझे लज्जित होकर जवाब दिया कि पडित जी आप का आगवन ही मेरे लिए मदंता का कारण हुआ मे जब से नौकर हवा हूं ५।६ वार वेदभाष्य आदि पुस्तको के कंपोस की शपथ नही

---

१. इन पत्रों की सूचना ऋ० द० के पूर्ण संख्या ४९६ (भाग १, पृष्ठ ५५१) के पत्र में मिलती है।

२. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्र व्यवहार' पृष्ठ ४०८-४१० से लिया है।

३. यह शादीराम को लिखा हुआ ऋ० द० का पत्र उपलब्ध नहीं हुआ है। हमने इसी पत्र के आधार पर प्रथम भाग (पृष्ठ ५५०) में पूर्ण संख्या ४९४ पर 'पत्र-सूचना' मात्र छापी है।

देता हूं और जो मैने आर्य्यदर्पण की उर्दू व अंगरेजी का ही कंपोस किया) यह ८) मासिक पाता है कई जगह वढ़ई के नाम दाम हिसाव में पकड़े है जैसे एक जगह १७) लिख है काम एसा अंत्यन्त उस का नही मालुम होता है अथवा मेरी अल्प बुद्धि हो तो सादीराम जी इन वातों में आश्चर्य मानते है और में तो लिखते पढते ही शोक ग्रस्त होता हूं क्योकि जब से आया हूं मेरी विन घाट ही गुजर हुई और होती है।

नालिस कागद छटि के जब पूरी गलती पाई जाय जब कहनी उचित है किन्तु इस काम में शीघ्रता नही करना चाहिये। ठाकुर मुकन्दसिह जी वा भूपालसिह जो आप से आप मुखत्यार किये यह उत्तम काम हुआ क्योकि धर्माधर्म के व्यवस्थापक क्षत्री जन ही है।

काम जो कि आपने हमारे दोनो के लिये लिखे वे हम दोनो ने संयोक्त स्वीकार किये और पहिले ही से कर रहे हैं पुस्तकालय की तारी सादीराम जी ने अपने विचार से प्रथम ही मुझे देदी थी आगे इश्वर की साक्षी पूर्वक अपने पुरुषार्थ भर आलस नहीं करेगे।

हस्ताक्षर करने कराने की व्यवस्था १ तारीख अच्छी प्रकार चलेगी क्योंकि अभी सब रजिस्टर आदि लिखा पढी मैने साफ नही कर पाई है और जो वही करता तो अंक इस महिने मे नही तैयार करवा पाता।

जामिनी[1] के लिये जो आपने लिखा बड़े हर्ष की बात है रीत छोड़ कुरीत जो आप चल रहे थे उसे कोन अच्छा कहता था इस विषय मे प्रथम तो इनाम की सफाई चाहिये क्योंकि उसी से व्यावहार की शुद्धि होती है।

आप ही कहना अयोग्य है परन्तु ८।९ वर्ष से आप मुझे हर एक व्यवहारो मे देख रहे हैं बुद्धिमान पुरुष मनुष्य की शीघ्र परीक्षा कर सकते है आप मेरे गुण वा अपगुणो को अच्छे प्रकार जानते भी हैं और में इस विषय में प्रतिज्ञा करता हूं कि जैसे जैसे अपराध मुंशी बखता० के प्रतीत होते हैं मेरे मन वचन और कर्म से वे अपराध न होगे यह भी कह सकता हूं मेरे आधे जामिन आप ही है इस परदेश

---

१. ज्वालादत्त को जामिनी के लिये पत्र के आरम्भ में निर्दिष्ट शादीराम के पत्र में ऋ० द० ने लिखा होगा। शादीराम का पत्र हमें प्राप्त नहीं हुआ।

मे जामिनी किस को दिलाऊं पत्रों से तो इस व्यवहार की अच्छी सफाई नही होती है इस से यह उचित है कि आप एक महीने आगरे रह कर जो आगे आवोगे और फरुखाबाद मे आप का आना होतो आपकी आज्ञा उनुकूल मे भी ८ रोज को आजाऊंगा वहां इस विषय की सफाई हो जायगी ।

हरफ जो अभिष्ट होते है वे खारिज हरफों के टाइपफौंडर ढलवा लिये जाते हैं अधिक शीशा नहीं है जो शीशा की तजवीज होगी तो हरफ और हूं वनवाना अच्छा होगा जिस से अभिष्ट सब की डेउढ लगी रहे। सब कारीगरो से यथायोग्य वृंत्तात पूछ रहा हूं कोई कोई लोग मुंशी वखतावरसिह की आशा मे मालुम होते हैं वे भी प्रेसमान कुछ चेष्टा मुं० वु० की आशा की सी कर रहा है सादीराम चाहते है कि और अच्छा आदमी मिले तव उस को निकाल दे और ह ज्यादा खरच मालुम होता है वह भी वे कम किया चाहते जैसा होगा वैसा आप को लिखा जावेगा। कागजों के लिये कलकत्ते से जवाव आ गया है ।

२४ पोंड केले कागज के १ गट्ठे के दाम १६० लिख आये हैं सो अवश्य भेजते होंगे ।

सातवे फरमे पर आज आज्ञा दे चुका हूं काम सब अच्छे परिश्रम से हो रहा है और आगे को भी साथ परिश्रम के होगा आप किसी काम की चिन्ता न करते मास्टर सादीराम व्यवहार मे अच्छे प्रवीण हैं ।

सुन्दरलाल का पत्र आया है वे भी आवेगे। हमारे मित्र राधा-क्रिष्ण जी के साथ प्रीति के हमारी ओर से समझा दीजिये कि तकार की जगह द्वित्त्व सा तकार न वनाश करं उन के थोड़े इसारा मे भी कंपोस वाले स्पष्ट द्वित्त्व कर देते हैं औरहू पकार यकार आदि का भेद रक्खे उन को यह शिक्षा उन ही के लिये लाभदायक होगी। हम अपने काम को सम्हार ही लेते हैं ।

मिती मार्ग व० ८	भवदनुग्रहकांक्षी
सं० १९३७[1]	पं० ज्वालादत्त[2]

१. २५ नवम्बर सन् १८८०।

२. 'इस पत्र के अक्षर ज्वालादत्तजी के अक्षरों के साथ नहीं मिलते' यह टिप्पणी श्री मुन्शीराम जी ने अपने संस्करण पृष्ठ ४२२ पर दी थी ।

[पूर्ण संख्या २२४] पत्र[1]

ॐ

प्रतिष्ठाऽचार्य्य श्री १०८ श्रीपर्मगुरु श्री सुवामि दयानन्द सरस्वति जी महाराज नमो नमस्ते: स्वाई जैपुर से शिष्य बिप्र गोपीनाथ कि नमस्ते बंचणा यहा सर्ब प्रकार आनन्द सर्वशक्तिमान् परमेश्वर से नेक चाहते अब अर्ज यह है कि भूमिका तो मगा लि है और संद्धिविषय ब्याकर्ण छपा या नहीं सो कृपा दृष्टि कर्के लिखना सो मगा लेवेंगे और पंण्डित कालुराम जी महाराज के पास से पत्र आया लिखा था के गौरक्षा का बंदोबस्त राव राजा शिकर[2] के ईलाके ५५५ ग्राम में चंदा सालयाना हो गया है रामगढ़ लिछ्मणगढ़ फतेपुर इनमें रुपया कुच्छ हो गया है सो आपको ज्ञात्वा होवे और ये भि लिखा था के गोरक्षा निमितक् जैपुर भि आवेगें यहां के सर्व सभासद् वा समाजस्थु कि नमस्ते बंचना कृपा कर्के पत्र दिजयेगा ।[3]

[जयपुर] द० गोपीनाथ

—:०:—

[पूर्ण संख्या २२५] पत्र-सूचना

[पं० कृपाराम का पत्र][4]

—:०:—

१. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' पृष्ठ २२७ से लिया है।

२. अर्थात् सीकर।

३. पत्र पर तिथि आदि नहीं है। इसमें सन्धि विषय में पूछा है। सन्धि-विषय मार्गशीर्ष १९३७ में प्रथम बार छपा था। अत: यह पत्र स० १९३७, मार्गशीर्ष या पौष मास तदनुसार नवम्बर या दिसम्बर का है।

४. इस पत्र की सूचना ऋ० द० के पूर्ण संख्या ५०४ (भाग १, पृष्ठ ५६२) के पत्र में मिलती है। यह पत्र सम्भवत: २५ नवम्बर १८८० के पश्चात् लिखा गया था।

[पूर्ण संख्या २२६] पत्र-सूचना

[गोपालराव हरि देशमुख के दो पत्र।[1]
वसीयत नामा के सम्बन्ध में।
पूना

—:o:—

[पूर्ण संख्या २२७] पत्र

मुंबई ता० ३ डिसेंबर १८८०[2]
गीरगाव माधव बाग के
सामने डाकतरमोरेश्वर
के घर मे

श्रीमत् स्वामी दयानन्द सरस्वति

नमस्ते

छात्रान्तर्गत गोपालरावहरी देशमुख के अनेक नमस्कारपूर्वक विनंति. आपणो कागल भाई शेवकलाल उपर आव्यो ते वाचो, थिओसाफिकल सोसायटि वाला आर्य्य समाज के विरुद्ध नहि है। ये लोक शोधक है सिद्ध नहीं और सोसायटि मे शाखा सब धर्म्मो की है। वैदिक शाखा में आर्य्य समाज सब आपहं है। बौद्ध शाखा में सिलोन के लोग है। जेन्द आवस्था के पारसी लोग भी है। धर्म के बाबत में कुच भी हरकत नही। हम वेद माने तो ये लोक वेद न मानो ऐसा कहते नहीं। कोइ क्रिस्तियन होय तो तेने क्रिस्त ने नमानोएम कहते नहि। सारांश कोइ नेधर्मनी हरकत नहीं। योगशास्त्र का विच्यार करने का मुख्य मतलब है। ऐसा ये महिने का थिआसोफिस्ट में साफ लिखा है। इस वास्ते नाम काटने की जरुर मालुम पडति नथी। थिआसोफिष्ट मेहम है तो वेद छोड़ता नथी और एलोक भी वेदधर्म छोड़ो ऐसा कहते नही।

---

१. इन पत्रों तथा विषय और भेजने के स्थान की सूचना गोपालराव हरि देशमुख के अगले पूर्ण संख्या २२७ के पत्र में मिलती है।

२. मार्ग० शु० १, २ सं० १९३७ वि०। यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्र व्यवहार' प्रथमभाग पृष्ठ २४८-२५० से लिया है।

आपके नाम पर दो कागद पुने से भेजे छे वसियत नामा के बाब-तमे ।[1]

सत्यार्थप्रकाश छ्या मिलता नहीं और बहुत लोक मागते है इस वास्ते आपके पास होगा तो दुरस्तकरना चाहिये इस में और कुच विषय लिखने के होय तो लिखकर काशि में वा मुंबई में छापना चाहिये ।

आर्यसमाज सब कितनेहे उस की यादि भेजेंगे तो आर्यपत्रिका में छापेंगे ।

आर्य समाज का काम छ्या ठीक-ठीक चलता है ।

आप का इस तरफ आने का विचार होगा तो अच्छा होगा । पहिले एक महिना खबर करना चाहिये ।

पंडित शाम जी को आप पत्र लिखा था[2] उसका तरजुमा लंदनमे मोनेरवियम के सही से छापा हे[3] वो कागद हम पर भेजा था वो पढ़ कर हमने आप के नाम पर डाक में भेजा हे आपके जानने के वास्ते ।

नमस्ते

गोपालरावहरी देशमुख[4]

—:०:—

[पूर्ण संख्या २२८] **पत्र**

नमस्ते । आप के दो कृपा पत्र मीले पढ़के बड़े प्रसन्न हुअे सदैव कृपा करके लिखना बेद भाष्य का चंदा लेने की तकलिफ बहोत होती

---

१. ये दोनों कागज हमें प्राप्त नहीं हुए ।

२. जिस पत्र का ऊपर संकेत है वह पत्र संस्कृत भाषा मे लिखा गया था । वह 'ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन' के पूर्ण संख्या ४१८ (भाग १, पृष्ठ ४४९) पर छपा है ।

३. मोनियर विलियम्स ने इङ्गलैण्ड के 'एिथनियम' पत्र (सन् १८८० या ८१) में इसका अंग्रेजी अनुवाद छापा था ।

४. म० गोपालराव देशमुख जी की यह चिट्ठी तथा इसके आगे मुद्रित पूर्ण संख्या २२८ की म० सेवकलाल कृष्णदासजी की चिट्ठी दोनों एक ही पत्र पर लिखी हुई हैं ।

है हिसाव बराबर नहीं है तो भी बहोत कर के हिसाब हम लगाया है रु० १००) हम ने बखतावरसिंह को भेजे थे और आठ दिन में रु० ५०) भीमसेन को भेजुगा ।

आपके आने बिना समाज का मंदिर होना कठीन है सब समाजों का अंगरेजी वा हिंदी में (देवनागरी लिपी में) लिखा के कृपा कर भेज देना । हम सब आनन्द में है आपकी तनदुरस्ती अच्छी होगी । मुलजी टाकरसी देव लोग[1] पधारे इन्हों की अन्त्येष्ठि की क्रिया संस्कार विधि के अनुसार की गई थी और सब सभासद बहोत कर के हाजर थे ।

प्रत्युत्तर कृपा करके शिघ्र ही लिखना ।

मैं हुं आप का
आज्ञांकित् सेवक
सेवकलाल कृष्णदास

—:o:—

[पूर्ण संख्या २२९] पत्र-सूचना

[मन्त्री आर्यसमाज, फरुखाबाद का पत्र][2]

—:o:—

[पूर्ण संख्या २३०] पत्र-सूचना

[लाला मूलराज एम० ए० का पत्र][3]
६ दिसम्बर १८८०[4]

—:o:—

---

१. देव लोग = देवलोक पधारे = मर गये ।

२. इस पत्र की सूचना ऋ० द० के पूर्ण संख्या ५०८ (भाग १, पृष्ठ ५६३) के पत्र में मिलती है ।

३. इस पत्र की सूचना ऋ० द० के पूर्ण संख्या ५०८ तथा ५०९ भाग १, पृष्ठ ५६३-५६४) के पत्रों में मिलती है ।

४. इस तारीख की सूचना ऋ० द० के पूर्ण संख्या ५०९ (भाग १, पृष्ठ ५६४) के पत्र में मिलती है ।

[पूर्ण संख्या २३१] पत्र-सूचना

[मास्टर शादीराम (काशी) का पत्र][1]

—:०:—

[पूर्ण संख्या २३२] पत्र

ॐ

राजस्थान उदयपुर[2]

ता० १० दिसम्बर सन् १८८०[3]

श्रीमान् परम पूजनीय परिव्राजकाचार्य स्वामी जी

महाराज

श्री ६[4] श्री दयानन्द जी सरस्वती

महोदय चरण कमलेषु सविनय

निवेदनमिदम्

अपरंच आपका आज्ञापत्र बहुत समय से आया नहीं सो कभी कभी स्मरण रखके यथावकाश प्रेषण करेंगे ॥

तथा अब के अंक के एक विज्ञापन से ज्ञात हुआ कि मुन्शी बखतावर सिंह जी ने भी बम्बई वाले हरिश्चन्द्र जी की तरह कुछ आप का दोष किया न जाने पढ़े लिखे मनुष्यों को भी यह व्याधि क्यों आय सताती है मुझ को यह अभी निश्चय नहीं है कि वदिक यंत्रालय आप का ही है वा और किसी ने अपना धन लगा कर स्थापन किया है सो आप अनुग्रह कर लिखावेंगे ॥

और वेदभाष्य मेरे लिखने से आपने निम्नलिखित महाशयों के नाम भेजना प्रारम्भ किया था सो अब आप अब तक का हिसाब लिखवा

---

१. इस पत्र की सूचना ऋ० द० के पूर्ण संख्या ५११ को (भाग १, पृष्ठ ५६५) के पत्र में मिलती है।

२. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्र व्यवहार' भाग १, पृष्ठ ७८से लिया है। ३. सं० १९३७ वि० मार्ग० शु० ६।

४. प्राचीन काल में विभिन्न प्रकार के जनों को पत्र लिखते समय भिन्न भिन्न संख्या लिखी जाती थी। गुरु को लिखे गये पत्र में '६' संख्या का प्रयोग होता था।

भेजें कि किस में किस में कितना कितना मूल्य बाकी लैना है कि में भिजवा दूं।

१. महाराणा जी उदैपुर ११।।)
२. राजराणां फत्तेहसिंह जी (देलवाड़ा)
३. पं० ब्रजनाथ जी उदैपुर ११।।)
४. पुरोहित ब्रह्मनाथ जी ,, ११।।)
५. डाक्टर भवानीसिंह जी ,,
६. मोहनलाल विष्णुलाल पण्ड्या उदयपुर ११।।)

जिस में इस वर्ष तक का हिसाब स्वच्छ हो जावे।।

अब आप का पधारना किधर को होगा? और सब क्षेम कुशल है।।

भवदीय सेवक

ह— मोहनलाल विस्णुलाल पंडया

—:o:—

[पूर्ण संख्या २३३] पत्र-सारांश

इसमें सन्देह नहीं कि श्री की कृपा मेरे भविष्य के लिये लाभ-स्पद है। श्रीमानों के साथ रहने से विद्या, ज्ञान, सदाचार और ख्याति का उत्तम लाभ है। तथापि गृहस्थी के बन्धनों से ऐसा बन्ध रहा हूं कि श्रीमान् जी की आज्ञा का पालनरूप धर्म की प्राप्ति का सौभाग्य नहीं देखता। आशा है साम्प्रदिक विवशता को क्षमा करेंगे।[1]

कृपाकांक्षी-गणेशप्रसाद

—:o:—

[पूर्ण संख्या २३४] पत्र

वैदिक ❁ यंत्रालय ❁ काशी[2]

संख्या बनारस सं० १८८०[3]।।

---

१. यह पत्र सारांश वा पत्रांश 'फर्रुखाबाद का इतिहास' ग्रन्थ के पृष्ठ १८७ पर छपा है। यह पत्र प० गणेश प्रसाद ने ऋ० द० के पूर्ण संख्या ५१३ तथा ५१६(भाग १, पृष्ठ ५६६-६७) के पत्र वा पत्रों के उत्तर में लिखा था।

२. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० के पत्र व्यवहार' भाग १, पृष्ठ ४१२-४१६ पर छपा है।

३. १८ दिसम्बर सन् १८८० तदनुसार पौष कृ० ७ सं० १९३७ वि०।

दि. ता. १८ पौ. ब. २

नमस्ते ! भगवन्

यजुर्वेदस्य पत्राणि प्राप्तानि ।

भवत्पत्र समीरित प्रश्नोत्तराणि मदीय पत्रेण सादीरामस्य पत्रेण वा यास्यन्त्येव । भवन्तो यथार्थतया मत्पत्रं न पश्यन्ति सादीरामस्य च पत्रं न शृण्वन्ति ।

यतो यानि भूमिकादीनि पुस्तकानि भवद्भिः प्राप्तानि तदर्थं यन्मया पृष्टं कस्य नाम्नि लेख्यानि तदुत्तरं न प्राप्तम् ।

नवम्बर मासावधि स्वमासिक धनव्यवस्था सर्वा लिखिता न जाने भवद्भिर्दृष्टा नवेति ।

मासि मासि यावन्मुद्रितुं शक्नोति तदपि मया लिखितं न जाने भवद्भिः प्राप्तं नवेति ।

किमत्र कारण मिति भूयः शङ्के । सम्प्रति । (गोलमाल कहने की बात है) इत्याद्या लापेन दूये च ।

भगवन्

नैव मुंशी बखतावरसिंहाभिधो मम प्रियभ्राता नापि मित्रवरः ।

नचात्मीय प्रयासेन भवत्कर्मणो न्यूनत्वमिच्छामि सादीरामेण-त्यैकतामासाद्य कार्य्य हानिं नेच्छामि न निष्कामोहं मासिक धनं भोक्तु मुत्सहे ।

कथं भवन्तो मुंशी बखतावरसिंहस्य व्यवहारसंजात रोषाग्नि-ज्वलितनिशितशराणि ज्वालावत्तं (गोल माल०) इत्यादि वचनैः प्रयोजयन्ति ।

नाहमेतेषां कठिनतर कष्टं सोढुमर्हति । भ्रातश्चास्या धीवर्य्या-ऽऽगच्छति तस्याः पतिः कारागारे मृतस्ततस्सा द्वादश दिवसानागतेति मयैव रात्रौ पाक भूमि प्रक्षालनं पाक भाण्ड धावनं च प्रतिदिनं भिक्षायाः स्वस्य सादीरामस्य चान्नपाकः कृतः ।

पहिले हिसाब विचारने को

अतस्तावत्पूर्व विनिमय विमर्शा यावसरो न जातः । दिवसे च यन्त्रालयस्य कार्य्या सावकाशः प्रातः । यन्त्रालयस्य कार्य्यं मपिना-वरुद्धम् किन्तु पूर्व संजात कार्य्या दात्मीय समये स्वस्य बुद्धावधिक-

मेव कृतं कारित च। तत्र पारितोषिकं गतम् प्रत्युत भवन्तो दुःसह वचनैर्वेव्यथयन्ति।

अहो दुर्दिष्टम्। किं कुर्य्याम्।

सादीरामेणैकः सहकारी मुहर्रर इति नाम्ना रक्षितः सोहं च पूर्वं धन प्रात्यप्राप्ति निस्सारयामि भवभिस्सारितो चेक्षिष्ये। यद्यप्यहं स्वगुणैर्दोषभागेव तथापि निश्चये न बिना दोषो न दीयताम्। किं बहुना भवन्त एव पश्यन्तु प्रिय भीमसेनो वेति संस्कृते न पत्रं लिखितम्।

पं० ज्वालादत्त

(अनुवाद)

भगवन्

यजुर्वेद के पत्र मिले।

आप के पत्र में लिखे हुवे प्रश्नों के उत्तर मेरे या सादीराम के पत्र मे जायेंगे ही। आप यथार्थतासे (ठीक तरह) मेरे पत्र को नही पढ़ते, और सादीराम के पत्र को नहीं सुनते।

क्यों कि जो भूमिकादि पुस्तक आप को मिली, उस के लिये मैंने पूछा (था) किस के नाम में लिखूं (मुझे) उत्तर नहीं मिला।

नवम्बर मास तक अपने मासिक धन की व्यवस्था सारी लिखदी, न जाने आप ने देखी या नहीं।

मास मास में जितना मुद्रित कर सक्ता है, वह भी लिखा (था), न जाने आप ने देखा या नहीं।

यहां क्या कारण है, यह मुझे वार वार शङ्का होती है। औ अब (गोल माल करने की बात है) इत्यादि आलापों (बातों) से दुःख होता है।

भगवन्

नाहीं मुंशी बखतावर सिंह मेरा भाई है, नाहीं मित्रवर।

और न अपने प्रयास से आप के काम की न्यूनता चाहता हूं। काम किये बिना (निष्कामोऽहम् ?) मासिक धन नहीं खा सक्ता, सादीराम के साथ भी मिल कर कार्य हानि नहीं करना चाहता।

आप मुंशी बखतावर सिंह के व्यवहार से उत्पन्न हुवी हुवी रोषाग्नि से जले तीखे (गोलमाल०) इत्यादि वचन बाण ज्वालादत्त पर क्यों लगाते हैं।

यह इन के कठिनतर कष्ट को नहीं सह सक्ता। और जो झीवरनी यहां आती है, उस का पति कारागार में मर गया इस लिये वह १२ दिन से नहीं आई, अतः रात को प्रति दिन मैंने ही भूमि झाड़ तथा रसोई के वर्तन धो कर अपना और सादीराम का भोजन बनाया।

इस लिये पहिले हिसाब विचारने का अवसर न मिला। दिन में यन्त्रालय के काम से अवकाश न मिला। यन्त्रालय का काम भी न रोका। किन्तु पहिले किये हुये काम से अपने समय में अपनी जान अधिक ही काम किया और करवाया वहां पारितोषिक तो गया, प्रत्युत् आप दुःसह वचनों से वञ्चना करते हैं (वञ्चयन्ति)।

अहो दुर्दैव ! क्या करूं।

सादीराम ने एक सरकारी मुहर्रिर रखा है। वह और मैं पहिले धन का आय व्यय निकालते हैं, और आप के निकाले हुवे को देखेंगे। यद्यपि मैं अपने गुणों से दोषी ही हूं तथापि निश्चय के विना दोष न दीजिये। बहुत क्या। आप या प्रिय भीमसेन ही देखें इसलिए पत्र संस्कृत में लिखा।

पं० ज्वालादत्त

—:०:—

[पूर्ण संख्या २३५] **पत्र-सारांश**

रमाबाई ने विपिन बिहारी बंगाली के साथ १३ अक्टूबर १८८० को ईसाई मत स्वीकार करके विवाह कर लिया।[1]

मार्ग बदि ५ सं० १९३७[2] ज्वालादत्त

—:०:—

१. पं० ज्वालादत्त का यह पत्र पं० भगवद्दत्त जी के संग्रह में लाहौर में था जो देश विभाजन के समय नष्ट हो गया। इसी पत्र के आधार पर पं० भगवद्दत्त जी ने पूर्ण संख्या ४५८ के पत्र (भाग १, पृष्ठ ५१०)पर टि० १ में उक्त आशय लिखा है। वहीं पर पत्र लिखने की तिथि का भी उल्लेख है।

२. २१ नवम्बर १८८०।

[पूर्ण संख्या २३६] **पत्रांश**

नकशा मर्दुम शुमारी के खानों की पूर्ति किस प्रकार करें।[1]

दयाराम

—:०:—

[पूर्ण संख्या २३७] **पत्राशय**

पुस्तकों का सूची पत्र भेजिये। पुस्तकें मंगवानी हैं।[2]

द्वारकादास

—:०:—

[पूर्ण संख्या २३८] **विज्ञापन**

यह महाराज साहब ऐसे छोटे छोटे प्रश्नों का भी उत्तर न दे सके। हमारे भारतवर्ष के पण्डित लोग तो ऐसे प्रश्नों का उत्तर ऐसा युक्तियुक्त देंगे ही कि पादरी साहब और सब लोग स्वयमेव स्वीकार कर लेंगे; क्योंकि वेदों को अनादि मानने में तो किसी को कोई आपत्ति है नहीं। पण्डितों के अतिरिक्त दूसरे वे सामान्य लोग भी जिन को कुछ भी ज्ञान है और थोड़ी सी भी बोलने की शक्ति है—ठीक उत्तर दे सकते हैं। सज्जनो! यह धार्मिक विषय अत्यन्त सूक्ष्म है। प्रत्येक व्यक्ति को अपने मत पर दृढ़ रहना चाहिये। किसी का व्याख्यान या उनकी कड़वी-मीठी बातें सुनकर चित्त को तत्काल न बदलना चाहिये।[3]

१५ दिसम्बर सन् १८८० बृजमोहन वैश्य

—:०:—

१. इस पत्राशय की सूचना ऋ० द० के पूर्ण संख्या ५२३ (भाग १, पृष्ठ ५७०) के पत्र में मिलती है।

२. यह पत्राशय ऋ० द० के पूर्ण संख्या ५२४ (भाग १, पृष्ठ ५७१) के पत्र के अनुसार बनाया है।

३. यह विज्ञापन पं० लेखरामकृत जीवनचरित हिन्दी सं० पृष्ठ ७५१ पर छपा है। विज्ञापन की तारीख और लेखक का नाम भी वहीं निर्दिष्ट हैं। यद्यपि विज्ञापन में साक्षात् ऋ० द० के नाम का उल्लेख नहीं है, परन्तु पूर्वापर के प्रसङ्ग के अनुसार विज्ञापन के आरम्भ में 'ये महाराज साहब' शब्दों

[पूर्ण संख्या २३९] पत्र

VEDIC PRESS BENARES[1]

No. Dated the 1881[2]

Dear Sir !

नमस्ते नेकधा भगवन्

पत्र आया[3] हाल मालूम हुआ यह तो मैं प्रथम ही स्वीकार कर चुका हूं कि आगे को अशुद्ध न रहने देऊंगा ऋग्वेद के ४७३-४७७ तक जो अशुद्धि दोष लिखे गये थे[4] मेरे नही है मैं तो ९० तारीख बाद में यहां आया हूं यह फारम प्रथम छप गया था। मैं जब यहां आया था तब काम की भड़भड़ी जादा थी और शोधना बहुत स्थिर चित्त से चाहिये।

इस से अब आगे को कुछ रोज इस काम में मेरी परीक्षा लेकर तब यह स्वीकार करना चाहिये कि शोधने में तुम्हारी कच्ची दृष्टि है यद्यपि अशुद्ध तो अभी मैं भी देखता हूं लेकिन आगे न रहने देऊंगा।

नवीन रचना के विषय में जो आपने लिखा सो जितना संस्कृत आप से मैं देहरेदून में कह आया था उतने ही को नवीन रचना कहता हूं व्याकरण के पुस्तकों में अभी तो भाषा ही बहुत मैं काट देता हूं लेकिन आगे इतना काम व्याकरण में होना चाहिये कि

से स्वामी दयानन्द सरस्वती का ही उल्लेख किया है, यह स्पष्ट है। इसी लिये इसे हम यहाँ दे रहे हैं।

१. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्र व्यवहार' (भाग १, पृष्ठ ४०३-४०५) पर छपा है।

२. यहां महिने का उल्लेख नहीं है। यह पत्र ऋषि दयानन्द के २२ दिसम्बर १८८० को शादीराम के नाम लिखे गये पूर्ण संख्या ५१८ (भाग १, पृ० ५६८) के साथ ज्वालादत्त को भेजे गये पूर्ण संख्या ५१७ (भाग १, पृष्ठ ५६८) के पत्र के उत्तर में लिखा गया है। अतः यह जनवरी १८८१ के आरम्भ में लिखा गया होगा।

३. यह पत्र ऋषि दयानन्द के पं० ज्वालादत्त को लिखे गये (पूर्ण संख्या ५१७, भाग १, पृष्ठ ५६८) पत्र के उत्तर में लिखा है।

४. इस के लिए ऋ० द० का पूर्ण संख्या ५१७ (भाग १, पृष्ठ ५६८, पं० ९-१०) देखें।

अभीष्ट भाषा शोध कर जो संस्कृत बने उस संस्कृत और भाषा को मिला कर फिरि कंपोस के लिये कांपी लिख कर उस कांपी को अच्छा शोध कर तब व्याकरण छपवाया जाय। इस प्रकार की कांपी ६० वा ७० पृष्ठ जब तैयार हो जाय तब महीने का छपवाई का काम १५ वा १६ फारम का चले इस लिये प्रार्थना यह है कि एक लेखक मेरे लिये देना चाहिये और शोधक का जो आप ने विचार किया सो तो अभी न चाहिये था क्योंकि मुझे दो महीने यहां आये हुए हैं यहां का सब काम अच्छी प्रकार मेरी दृष्टि में हो आया है और शोधने में भी उचित परिश्रम करूंगा। और जो नवीन को आप करेंगे तो महीने दो महीने उस में भी काम बिगड़ेगा इस से जब मुझ से न हो सके तो चाहे जिस को करि लीजिये। किंबहुना

नामिक की कांपी जब मैं भेजूंगा तब मेरे भाषा के काटने में रुचि हो तो आगे को जैसी आज्ञा होगी वैसा करूंगा वेदभाष्य की जो नवीन भाषा बन कर आती है कहीं कहीं दूरान्वयी बहुत है अब की दफे आप के भय से जैसी जैसी भाषा जहां जहां सोची मैं वैसी नहीं कर सका।

—:o:—

[पूर्ण संख्या २४०] पत्र

पौ. सु. १०[1]

नमस्तेनेकधा भगवन्[2]

मैंने प्रथम कई बार प्रार्थना अन्य पुस्तकों के छपवाने को करी थी उस में मुझे व्याकरण की नवीन रचना को महीने दो महीने अव-

---

१. संवत का उल्लेख नहीं है। पत्र के अन्त में यजुर्वेदभाष्य के अष्टमाध्याय १।२ दिन में भेजने को लिखा है। स्वामी जी महाराज ने १७ जनवरी १८८१ के पत्र पूर्ण सं० ५३१ (भाग १, पृष्ठ ५७४) में अष्टमाध्याय की प्राप्ति का उल्लेख किया है। तदनुसार यह पत्र सम्भवतः पौष सुदि १० सं० १९३७ (१० जनवरी १८८१) को लिखा गया था।

२. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्र व्यवहार' भाग १, पृष्ठ ४१७-४१९ पर छपा है।

काश मिल जाता अथवा मैंने यह चाहा था कि इस महीने के अवशेष फारमों को छपवा कर तब नामिक का आरंभ कराऊं, महीने के शेष दिनों मे नामिक भी छप जाता सो अब तक अंक भर[1] वेद की कांपी नही मिली। अब मिलेगी जो-१८ पृष्ठ तक कांपी आपने भेजी थी उसमें ६ पृष्ठ नवीन पाठ के छपवाने को निकले और पाठ मैं छपवा और कंपोस करा चुका था सो सब व्यवस्था आप को विदित कर चुका हूं। तो अब यह कसे बने कि नवीन रचना कंपोस के साथ हो सके क्योंकि नित्य कंपोस को २०० श्लोक पाठ चाहिये और संस्कृत के बनने में संस्कृत इस नामिक की कांपी से अलग लिख और जो अब नामिक को शोध रहा हूं इसी तरह भाषा शोध और फिरि उस संस्कृत और भाषा को मिलाकर कांपी लिखके कंपोस को देता जाऊं तथा प्रूफ शोधना भाषा बनाना और पत्र आदि ऊपरी काम जो आपडे यथोचित वह भी सब होता जाय इतना तो मेरा सामर्थ्य नही और अपनी बुद्धि से साथ चपलता के आपसे यही कहता हूं कि उक्त सब काम इकट्ठा नित्य नित्य करने को मनुष्य का सामर्थ्य न होगा। इससे प्रार्थना यह है कि इस नामिक की पहली कांपी से मैंने भाषा की बहुत सफाई कर और नोट आदि देकर इसका छपाने का आरम्भ करा दिया यह वे संस्कृत छपता है आगे को जो मुझे अवकाश दीजियेगा तो जंसा आप व्याकरण छपाया चाहते हैं वैसा ही छपेगा और संधिविषय तथा नामिक का दूसरी वार के छपने में संस्कृत बन जायगा।

(स्वराधीन व्यंजनम्) यह **स्वयं राजन्त इति स्वरा:** ० इस पंक्ति के आशय पर छप गया परन्तु पाठ ठीक नही है और मेरे पास महाभाष्य था नही उस समय कई बाते महाभाष्य देखने को मेरी आकांक्षा रह गई। अब मामाजी ने लिखा है कि तुम्हारा महाभाष्य हम भेज देंगे। गलती तो आपने निकाली मैं स्वीकार करता हूं यह दोष है परन्तु आपने मुझे काम भी बहुत दिया है इतना कुछ आप भी स्मरण कीजिये काशीजी में आकर एक महोने बाद मुझे दस्त २० रोज हुए अब शरीर अच्छे हैं उक्त क्लेश में यथेष्ट परिश्रम मुझसे नही हुआ। पढने के लिये जो आपसे मैं कह आया था सो फारसी तो मुंशीजी ने नहीं पढी और संस्कृत का अभी प्रारम्भ नही

१. अर्थात् एक अङ्क के लिये पर्याप्त प्रेस कापी।

किया अभी बिलकुल्ल कुछ पढता नही हूं आगे आप आज्ञा देवें तो गोतम सूत्र आदि पढने की इच्छा है सो पढूंगा।

पुस्तकें मुंशीजी से कह दिया है कल्ल भेजने कहते हैं साथ में समर्थदान आदि के चिट्ठी पत्र आदि भी भेजने कहते हैं।[1]

भगवदनुग्रहकांक्षिण: ज्वा०

अष्टमध्याय १। २ दिन में भेजता हूं।

—:o:—

[पूर्ण संख्या २४१]   पत्र

मुंबई ता० १५ जानेवारी १८८१[2]

ओ३म्

स्वस्ति श्री परिव्राजकाचार्य्यं वेदादि सत्यशास्त्रांतर्गत्त तत्व विच्छिरोमणि प्रवृत्यागमार्थ निष्ठ दलित प्राखंडार्थ वेदांत शास्त्रानुगतार्थ प्रवृत्ति पूर्वक नित्य नैमित्तक क्रिया प्रतिपादतार्थोद्बोधक अज्ञानांधकार तिमीर नाशक ज्ञानप्रद श्री[म]द्दयानंद सरस्वती स्वामी प्रति नमस्ते। आगे आप के पत्र का प्रत्युत्तर हमने और हानरएबल रावबाहदुर गोपालराव हरीदेशमुखजी ने दिया था[3] जिसकी पहुंच अभी तक हमको मिली नहीं है सो कृपा कर लिख भेजना क्योंकि मुंबईस्थ लोगों में एसी चर्चा हो रही है कि स्वामी जी थोड़े दिन में पधारने वाले है इतना ही नहीं बडके यहां तक पुछने है कि स्वामी जी पधारे है सो कहा मुकाम किया है जिसका पत्ता बता दिजीअे औ हमको तो इस विषय में कुच्छ खबर भी नही मात्र कल आगरे से भगवतीप्रसाद जी का पत्र आया, उसमें इतना ही लिखा था कि "स्वामी जी के २५ व्याख्यान हुअे है और यहां से अजमेर वा काशी[4]

१. पं० ज्वालादत्त के इस पत्र का उत्तर ऋ० द० ने १७ जनवरी १८८१ पूर्ण संख्या ५३१ (भाग १ पृष्ठ ५७४) के पत्र द्वारा दिया था।

२. पौष शु० १५ सं० १९३७ वि०। यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्र व्यवहार' भाग १, पृ० २५५-२६० पर छपा है।

३. यह संकेत ३ दिसम्बर १८८० के गोपालराव हरि देशमुख और बकलाल कृष्णदास के सम्मिलित पूर्व मुद्रित पूर्ण संख्या २२७, २२८ पर छपे पत्रों की ओर है।

४. इन दिनों स्वामी जी महाराज आगरा में विराजमान थे। आगरा से

को आप पधारोगे और वांह से मायत मुंबई को पधारोगे" इसमें आपका क्या अभिप्राय है सो कृपा करके हमको लिख भेजना जिससे हम आप के लिये मुकामादि व्यवस्था कर रक्खे।

जैनमत के पुस्तक की सोध करने के लिये आपने प्रथम लिखा था सो बड़ा परिश्रम से हमने इन्हो के कितनेक पुस्तक प्राप्त कर लिये थे जो आप को कुंवर स्यामलालसिंह जी ने आपको विदित किया होगा परन्तु इन्हों के ग्रन्थाग्रन्थ का बिचार किया जब व सब पुस्तक शास्त्रार्थ के विषय में पुराणों के नाई पौकल प्रसिद्ध हुवे जिससे हमने और प्रयत्न करके वहोतेक इन्हों के सिद्धांत के पुस्तक सुमार ३०००-०० लक्षाधिक श्लोकबापुर प्राप्त किये जिसमें वहोतेक पुस्तक ३०० से ६०० वर्ष के पूर्व लिखे हुये है और कितनेक पुस्तकों के प्रारम्भ के और कितनेकों के अन्त के पत्र नष्ट हो गये है तो भी रक्ख लिये है क्योंकि वे पुस्तक इन्हों के मुल सिद्धांत के है। इन्हों के धर्म सिद्धान्त के विषय में ग्रन्थाग्रन्थ का बिचार जो हमको मालुम हुआ है सो भी मैं आप को विदितार्थ लिख भेजता हुं क्योंकि जब तक अपने को इन्हों के प्रमाण अप्रमाण पुस्तकों का शास्त्रार्थ मालूम न होवे सब किया प्रयत्न व्यर्थ हो जाता है और वे लोग के पुस्तक कों प्राप्त करना बड़ी मुशकील की बात है इस लिये हमने प्रथम ही करार कर लिया है कि इस सब पुस्तक में जो हमको प्रिय हो दो पुस्तक हम रक्ख लेगे छोटे वा बड़े हो हमारी इच्छानुसार है और और पुस्तक वे जब हमसे मगे देना परन्तु मैं पढ़ता हु पूर्ण हो पीछे भेज सकता हु जिससे अपने कार्य्य से विघ्न न होवे।

इन्हों के सिद्धांत से मोक्ष एव परम पुरुषार्थ है—साधरणा साधारण धर्म विषय संबंध प्रयोजन के अधिकारी भेद के अनुबंध छ (६) विदित होते है जिन्हों को जैन सिद्धांत कहते है और इन्हों के मूल ग्रन्थ भी वहोत है वेसे कहते है तो भी शास्त्रार्थ विषय में (४) चार मूल सूत्र है (११) एकादश अंग है (१२) द्वादश उपांग है (६) छ

अजमेर पश्चिम में है और काशी पूर्व में। हो सकता है यहाँ नाम में कुछ अशुद्धि हो। जीवनचरित के अनुसार आगरा से भरतपुर, जयपुर होते हुए, अजमेर पहुंचे थे और वहां से मार्ग में कई स्थानों पर रुकते हुए पौष शु० १० सं० १९३८ (३० दिसम्बर १८८१) को बम्बई पहुंचे थे।

छेद है (१०) दश पयान है (५) पंच कल्प सूत्र है और— बंदि सूत्र और अनेक अनुयोगोद्धार सूत्र है। इस पुस्तकको के प्रत्येक की टीका, निर्युक्ति, चर्णी (चूर्णि) और भाष्य यह चार अव्यव (अवयव) है जिसको पंचाग कहते है।

इनके नाम—आवश्यक सूत्र, विशेष आवश्यक सूत्र, दशवैकालीक सूत्र, पाक्षिक सूत्र मील के चार मूल सूत्र है। आचारांग सूत्र, सुकडांग सूत्र, ठाणांगसूत्र, समुदायांसूत्र, भगवतीसूत्र, ज्ञाताधर्मकथासूत्र, उपासनदशासूत्र. अंतगडदशा सूत्र, अनुत्तरोववाईसूत्र, विपाकसूत्र, प्रश्न व्याकरण सूत्र, मील के एकादश अग है। उपवाई-सूत्र, रायपसेनी सूत्र, जीवाभिगम सूत्र, पन्नवणा सूत्र, जंबुद्दिप पन्नत्ती सूत्र, चन्द पन्नत्ती सूत्र, सुरपन्नत्ती सूत्र निरियावलि सूत्र, कप्पिया सूत्र, कपवडिसया सूत्र, पुप्फियासूत्र, पुप्फचूलीया सूत्र, मील के द्वादश उपांग है। उत्तराध्ययन सूत्र, निशीथ सूत्र, कल्प सूत्र, व्यहवार सूत्र, जील कल्पसूत्र, मीला के पंच कल्प सूत्र है। महानिशीथ बृहद्वाचना, महानिशीथलघुवाचना, मध्यम वाचना, पिंडनिर्युक्ति, ओघनिर्युक्ति, पर्युषणाकल्प माला के षट छेद है। चतुःषरणसूत्र, पंचखानसूत्र, तंदुलवैयालिक सूत्र, भक्तिपरिज्ञान सूत्र, महाप्रत्याख्यान सूत्र, चन्दविजयसूत्र, गणिविज्वासूत्र, मरणसमाधि सूत्र, देवेंद्रस्तवन सूत्र, संस्थार सूत्र मील के दश प्रयन्न है। इस सब पुस्तक की संख्या (६०००००) छ लक्षाधिका है। इन व्यतिरिक्त भी दशाश्रुतस्कंध, विरस्तवसूत्र, जितकल्पगणाचार प्रकीर्ण, ज्योतो करंड, सिद्धप्राभृत, वसुदेव हिम खंड, आदि बहुत पुस्तक है और इन पुस्तको पर टबाभी है। जैन धर्म के आचार्यो का (श्री पुजों का) एसा केहना है कि जब मनुष्य मूल पुस्तक समझने को अशक्त हुआ तब उस वक्त के विद्वानों ने उस पर टीका की जब टीका समझने को अशक्त हुआ तब निर्युक्ति की, जब निर्युक्ति समझने को अशक्त हुये तब चर्णी की, और जब चर्णी समझने को अशक्त हुआ तब भाष्य रचे, जब भाष्य समझने को अशक्त हुआ तब टब्बा रचे (जो भाषा गुजराती से बहुत मीलती है) और जब टब्बा भी समझने को अशक्त हुआ तब चरित्र रचे और पीछे रासादि नाना तहराके पुस्तक रचे गये और अभी किसी की बनाने की सामर्थ नही (अर्थात् एसा प्रतित होता है कि अभी अत्यन्त मुर्खता फैल गई है)। तो भी इन्हों का कहना एसा है कि सब पुस्तक मीलावे तो (५०००-०००) पचास लक्ष से अधिक श्लोक संख्या होवे।

जैनों में जो ढुंढक मत वाले है मुल सूत्रों को ही मानते है भगवे कपड़े पेहनते है और मुर्तिओं को नहीं मानते परन्तु बड़े गलीच रहते है और और मत बहुत है।

इन्हों के सब सिद्धांत के पुस्तक प्राकृत भाषा में है तो भी बहुत पुस्तको पर संस्कृत भाष्य है जिससे हमने बहुत करके वेसे हो पुस्तक ले रक्खे है जिससे आप को अवलोकन करने को बहुत तकलिफ न होवे और हमने **इस पत्र के साथ सब पुस्तक की यादी भी लिख भेजी** है जिससे आप का जो मुंबई आना अभी न होवे तो भी चाहे जितने पुस्तक डाक मार्फत मंगवा लेवे वेही हमारी विनंति है।

मै हुं आपका आज्ञां कित सेवक
सेवकलाल कृष्णदास
मत्री आर्य्यसमाज, मुम्बई।

पुस्तकों की यादी

नाम	पत्र	श्लोक	टीपण
१ आवश्यक सूत्र नियुंक्ति सहित	२१६.	१२०००	अनुमान
२ ,, दीपिका ,,	११२.	४०००	,,
३ आचारांग सूत्र टब्बा सहित	१२०.	६०००	,,
४ ,, प्रदीप	८५.	३५००	,,
५ सुकडांग सूत्र वृत्ति सहित	२२३.	१४८५०	
६ सुकडांग बालबोध वृत्ति सहित	७९.	०००	अनुमान
७ ठाणांग सूत्र टीका सहित		१५०००	,,
८ भगवती सूत्र वृत्ति सहित	३६९.	१८०००	,,
८ प्रश्नव्याकरण वृत्ति सहित	२८२.	५६३०	
९ उवाई सूत्र टीका सहित	७५.	३३११	
१० जीवाभिगम सूत्र वृत्ति सहित	३२२.	१६०००	अनुमान
११ पन्नवणा सूत्र	२२१.	७७८७	
१२ जंबुद्विपपन्नति सूत्र सटीक	३८५.	१८०००	अनुमान
१३ चंद्रपन्नति सूत्र		२३००	अनुमान
१४ सुरपन्नति सूत्र	११२	६०००	अपूर्ण
१५ जंबुद्विपपन्नति टब्बो	१४०	७०००	अनुमान
१६ कल्पसूत्र ध्ययनम् सटीक		३०००	,,
१७ पिंडनियुंक्ति		६०००	,,

१८ ओघ निर्युक्ति	१८२	५०००	अनुमान प्रथम पत्र नही है
१९ पर्युषणा कल्पसूत्र	६३.	१२१६	मिति सं १५१५
२० पंचखाण सूत्र सभाष्य	२४.	७००	अनुमान
२१ वंदि सूत्र टीका	१८१.	८०००	अनुमान
२२ नंदी सूत्र मूल		७००	अनुमान
२३ अनुयोग सूत्र वृत्तिः	१३३	६७००	
२४ सूत्र कृतांग दीपीका	११७	१४०००	
२५ षडदरसन सूत्र टीका	२७	१२५०	
२६ संगुहीणी सूत्र सटीक		३५००	
२७ सतरीसठाणं सूत्र सवृत्ति	५४	१६००	
२८ संग्रहणी सूत्र टब्बा सहित	४०	१७००	
२९ पट्टावली सूत्र		५००	
३० प्रतिक्रमण सूत्र वृत्तिः	३८	२०००	
३१ प्रज्ञापना सूत्र वृत्तिः		१०२५	अपूर्ण
३२ प्रवचन सारोद्धार वृत्तिः	३०४	१५०००	,,
३३ कथाकोष	१९९	६०००	,,
३४ उपदेशमाला	२४८	८०००	,,
३५ तपागच्छ पट्टावली	१९	४००	
३६ सींदुर प्रकर्ण	८३	२५००	
३७ षगुण विवर्ण	४४	३०००	
३८ न्यायावतार विवृत्तिः	४६	२५००	
३९ हेम वृहद्ध वृतिः	१०२	३०००	
४० अध्यात्ममत परिक्षा	६०	१५४८	
४१ चंपकमाला चरित्रम्	१२	१०००	
४२ भरेसरी बाहुबली वृत्तिः	२९०	१२०००	
४३ हीर सोभाग्य काव्य सटीकम्	२१८	४१६२	
४४ दशीनाम माला	३५	१८००	
४५ आचारप्रदिप	८५	४०००	
४६ उपदेश माला	१८८	८०००	

४७ सतरभेदी पुजाकथा		२००
४८ सतपदी लघुवृत्तिः	३५	१६००
४९ देवबंदन	१३	२५०
५० प्रश्नोत्तर समुच्चय	२६	१२००
५१ हेतुगर्भ प्रतिक्रमविधि	२४	८००
५२ पार्श्वनाथकाव्यपंजिका	८०	३२००
५३ चोवीस प्रबंध	२१	१६००
५४ गुणस्थानक विचार	३१	१६००
५५ चतुरकर्म ग्रंथ	१६	८००
५६ चोवीस डंडकनो टब्बो	२३	८९०
५७ त्रय कर्मग्रन्थ	२५	६००
५८ भववैराग्यसतक	१४	४००
५९ पार्श्वनाथ चरित्रम्	३५	२२००
६० सत्रुंजयओद्धार	२९१	११५५०
६१ आरंभसीद्धि	१४६	६८००

छपे हुये पुस्तक की यादी

६२ देवचंद जी कृत चोवीसी

६३ प्रकर्ण रत्नाकर भाग. १

६४ „ „ २

६५ „ „ ३

६६ प्रवचनसारोद्धार

६७ पांडवचरित्र

६८ समरादित्य के वली ना रास

६९ समकीत मूल

७० अजितशांतिस्तव

७१ सुमतीनागील चरित्र

७२ चिर्नबमतखंडन पत्रिका

७३ ज्योतिष ग्रन्थ

—:०:—

[पूर्ण संख्या २४२] पत्र-सूचना

[मुंशी नारायण किशन जीव गुजरांवाला का पत्र][1]

—:०:—

---

१. इस पत्र की सूचना ऋ० द० के पूर्ण संख्या ५३५ (भाग १, पृष्ठ ५७७) के पत्र में मिलती है।

[पूर्ण संख्या २४३]　　　पत्र

मुम्बई जनवरी १७-१८८१[१]
पं० दयानन्द सरस्वती स्वामी जी

श्री मन्मान्य स्वामी जी !

जब तक हम सामान भाषा में तत्त्व निर्णय न करें तावद् पर्यन्त हम कदापि भ्रम निवृत्ति व परस्पर निरन्तर विचार कि आवश्यकता नहीं छोड़ सकते, तथापि ईश्वर हमारे अनैक्य को इतना दृढ़ न करै कि जिससे हमारे हृदयों में जो उसने आर्य्यावर्त्त की उन्नतिकारक शुभ इच्छा वा उत्कट जिज्ञासा जो उसने डाली है कहीं नष्ट हो जावे जिस कार्य को करने में हम दोनों उद्यत है। जो कुछ आपने मूल जी ठाकरसी व बाबू छेदीलाल व बाबू परमोदा दास, व अन्य द्वारा जो कुछ आपने कहा उसको आप जानते होंगे वा वह जानते होंगे, हम तो यह जानते है कि जो कुछ उन्होने आप की ओर से कहा वह आप का ही कथन था और यह अत्यन्त शोक की बात है कि उन दोनों में से हमारे अभिप्राय को आप के, प्रति आप के अभिप्राय को हमारे प्रति ठीक ठीक प्रकट नहीं कर सके। उन्होने आपको एक काल में तो एक बात कहने वाला व दूसरे काल में दूसरी बात कहने वाला बनाया और उसी प्रकार से हमारे को भी। शुरू से अब तक न तो ओलकट साहिब ने और न मैंने अपना निश्चय बदला है अर्थात् वेद विषयक कि वेद समस्त धर्मों का असली स्रोत है, वा ईश्वर गुण विषयक अर्थात् किसी ऐसी वस्तु के सद्भाव विषय में जो कि सकल दृश्यमान पदार्थों का कारण है और जो कि गाड, ईश्वर, पर ब्रह्म प्रभृति शब्दों से उच्चारित होता है जब मूल जी हमारी बातचीत में मध्यस्थ थे तो उन्होने आपकी बातों को अनुवाद करके कहा कि आप का और हमारा सिद्धान्त अनादि अनन्त कारण विषयक में ठीक ठीक मिलता जुलता है। परन्तु मेरठ नगर के नवीन मिलाप से प्रकट हुआ कि आप का और हमारा उसके गुण और पुरुषत्व प्रभृति में निस्सन्देह

---

१. यह पत्र परोपकारी पत्र, पुस्तक १, अङ्क १, (सन् १८८९) के पृष्ठ २९-३३ तक छपा है। इसका उत्तर ऋ० द० ने १९ मार्च १८८१ के पूर्ण संख्या ५६४ (भाग १, पृष्ठ ५९९) के पत्र द्वारा दिया था।

भेद है हम ऐसे सत्य मित्रों की आकांक्षा करते हैं जो कि चाहे एक दूसरे से विरुद्ध हो जांय परन्तु जिसमें शान्ति और प्रेम वैसा ही बना रहै औरों के कार्य में दखल न देवें ओलकाट साहिब ने एक वक्तृता लिखी इस बात के फैसला करने में जिससे कि आगे कोई भ्रम न रहै जिस वक्तृता में उन्होने थियोसोफीकल सुसाइटी और आर्य समाज के नियमोपनियम का प्रभेद जताया और व्याख्यान को सकल आर्य समाजियों के सन्मुख पढ़ा परन्तु अब एक और प्रकार की भूल प्रतीत होती है उसे हमें फैसला करना चाहिये।

१. हमने अपनी सुसाइटी की एक शाखा बनाई और आपको उसका मुख्य अध्यापक और आचार्य माना, और हम अपनी सब सभा व सुसाइटी को आपके अनुयायी कर देते। यदि आपकी समाज वैसा ही होती जैसा कि हम समझते थे थियोसोफिकल सुसाइटी मनुष्य मात्र को जाति वा धर्म का ख्याल किये विना सामान्यता से अपने में मिला लेती है जिस बड़े नियम पर यह स्थित हुई है। किन्तु जब हमने देखा कि यह तो विशेष करके आर्य और भी इससे अधिक वैदिक सुसाइटी है तो यह बात स्पष्ट थी कि उसके नियम उस अभिप्राय को आच्छादित नहीं कर सकते थे जिस पर हम काम रहे हैं। अत एव हमने आर्य समाज की शाखा बनाई जैसा कि पूर्व वर्णन कर आये हैं॥

२. हमारी समाज विशेषरूप से धार्मिक नहीं है, परन्तु जितना प्रयत्न प्राचीन विद्याओं के खोज में करती है उतना ही प्राचीन वा नवीन धर्मों में। अत एव हमने कदापि किसी आर्य सभासद् को धर्म-शिक्षा निमित्त मिलाने को नहीं कहा।

३. हमने कदापि किसी आर्यसमाजी को वैसे रूप से अपने में मिलाने के लिये अनुराग वा प्रयत्न नहीं किया, परन्तु कुछ एक पुरुषों को स्वदेश हितैषी समझ अलग आप तौर पर अपने में लेना चाहा कि वह हमारे सहायक हों जैसे भले मनुष्य स्वदेश और भूगोल को उन्नत कर सकें॥ वह आर्यसमाजी हो वा ईसाई वा मुसलमान वा वेदान्ति, यह विवेक हम कदापि नहीं करते, हमने केवल उनसे ही पूछा या कहा जिनको यथार्थ सत्य प्रेमी देखे, और हमने कदापि स्वप्न में भी किसी पुरुष को हमारे वा और के निमित्त मत परिवर्तन वा परित्याग करने की शिक्षा नहीं की॥ और हमारे चित्त में तो

इस प्रकार का संस्कार भी न था, किन्तु अब आप ने जो करनेल ओलकट साहिब को एक दूर का विचार प्रदर्शन किया कि वह मनुष्य जो आर्य्यसमाजी है उन्हें चाहिये कि वह एक वा पचाश अन्य सभाओं में शामिल न हो जिसके नियम चाहे विरुद्ध अपनी सभा से न हो जिसे वह अच्छा समझता है ।। हम जानते है कि रोम देश के पोप ने शिष्यार्थ ऐसे ही नियम स्थापित किये थे बस वह यही है ।।

४. आप फिर अब हमसे पूछते है जैसे भी आपने पत्रिका में जिस का हवाला देते हैं पूछा था कि हमने आपकी सभा के अध्यक्ष, वा सभासद् वा गुरु कहलाना कब स्वीकार किया ।। इसके प्रत्युत्तर में हम आपके चित्तकाग्रवृत्ति चाहते है ।। सन् १८७९ ई० सहारनपुर की मुलाकात में आपने करनेल ओलकट को मुखत्यार नाम लिख दिया था कि वह आप की ओर से हमारी जनरल कौन्सल में सम्मति प्रकाशित किया करें। और हमारी सब कमेटियों में आपके प्रतिनिधि काम दिया करे। और आप जब सभासद् थे तो आपने लिख कर यह सम्मति प्रकाश की कि हरिश्चन्द्र चिन्तामणि को इस सभा में से च्युत वा निकालना चाहिये जिस पर आपने दोषारोपण किये पश्चात् उसकी परीक्षा की गई और निकाला गया। आपको यह सब बातें विस्मृत हो गई होंगी, परन्तु यह सब पत्र हमारी सभा के और पत्रों में नत्थी किये सुरक्षित पड़े हुए हैं, और यदि आवश्यकता होगी तो दिखला सकेंगे और इससे पूर्व्व जब अभी हम अमरीका में थे आपके देखने के लिये आर्य समाज की थीओसोफीकल सोसाइटी का नया डिप्लोमा आर्य्यावर्त में आपके देखने के निमित्त भेजा गया था, आप ने उसको प्रमाण किया और अपने हस्ताक्षर किये और मोहर लगाई और यह आपने आर्य समाज के थिओसोफिस्टों के परमाधिकारी हो कर की और यह बात सन् १८७८ ई० के आदिकाल की है ।[1]

५. जैसे मैं पूर्व्व कह आई हूं और जो वेदविषयक मेरी सम्मति है उससे कदापि न हटूंगी, किन्तु मेरा प्रेम और श्रद्धा तद्विषक जो

---

१. मेरे पास स्वामीजी की एक और चिट्ठी भी है जिसका तर्जुमा (उल्था) श्यामजी कृष्णवर्मा ने किया था और जो हमारे पास अमरीका में पहुंची थी — उसमें स्वामी जी ने डिपलोमा की पहुंच लिखी थी और स्वामी जी की लिखी हुई और हस्ताक्षर की हुई सनद हमारे पास है ।।

कि पदार्थों वा महान् सत्याधार है उसमें प्रतिवर्ष दृढ़तर होता जाता है ।।

६. थीओसोफिकल सोसाइटी आर्य समाज से विरुद्ध हो गई है इस बात के विवाद करने की कुछ आवश्यकता नही है क्योंकि यह विचार मूर्खता का है और हमको तो इन बातों का विचार भी नहीं था ।

७. आप कहते है कि थीओसोफिकल सोसाइटी एक तरह से मुसलमानों जैनों और अन्य मतावलम्बियों को पक्षपात और घृणा छोड़े बिना और जो स्वमतानुसारी नहीं है उनके प्रति घृणा और पक्षपात जताते हुए भी ऐसे पुरुषों को अपने में प्रविष्ट कर लेती है यह सब भ्रम युक्त है हम ऐसे जनों को कदापि स्वीकार नहीं करते, ईसाइयों वा अन्य मतावलम्बियों को किसी देश के हों यावत् पर्यन्त वह इस बात का स्पष्ट रूप से प्रकाश न करें कि हम सब मनुष्यों को अपने अपने अनुभव के अनुसार उपासना करने देंगे और सबको भ्रातृवत् जानेंगे ठीक ठीक जैसाकि अपने मतवालों को ।।

यह सत्य है कि इन नियमों पर बहुत थोड़े ईसाई वा मुसलमान हमारे में मिलते हैं परन्तु जैसे आपकी आर्य्य समाज में बहुत थोड़े पुरुष है जैसे हमारी थीओसोफिकल सोसाइटी में भी ।।

८. मेरे अपने धार्म्मिकभाव वा यदि आप अधार्म्मिकभाव कहैं तो इस का हमारी सभा से कुछ सम्बन्ध नहीं है इसलिये कि मैं कदापि किसी पुरुष को शिक्षा वा स्वमत ग्रहण करने का प्रयत्न नहीं करती । हमारी सभा के विषय में जैसे पूर्व्व कह आये हैं कि यह न तो धार्मिक है और न जाति नियामक है ।।

९. प्रत्येक अवस्था और प्रति अवसर में आर्य्यवर्त में आने से पूर्व और अब तक आलकट और मैं पूरे सामर्थ्य से उपस्थित होकर आप के सहायकारी रहे हैं हमने वाणी और मुद्रित पत्रों द्वारा आपका यश वा प्रशंसा प्रकट की और यह निश्चय है कि आप हमसे अधिक सच्चे सुहृद् वा पूर्ण सहार्द कदापि न पाओगे ।। मुझे शोक है कि आप इन सब बातों को जान बूझ कर और इन बातों को सिद्धि में बहुत से प्रमाण और प्रदर्शक कर सकते है आप अब ऐसा कहते है कि हम आर्य्य समाज की हानि करने में उद्यत है ।।

१०. हमने अपनी सुसाइटी की सकल शाखाओं को आर्य समाज की शाखा में मिलाकर और आपको उसका मुख्याध्यक्ष बना कर अपनी भक्ति प्रकाश की आर्य्यसमाज ने उसके नियम में और तो कुछ नहीं किया किन्तु आप प्रकाश रूप से अब हमारी सभा (थिओसोफिकल) के प्रतिकूल उपदेश करते है कि यह सभा हमारी विरोधी है, जो कि है नहीं ॥

मुझे निश्चय है मैने आपकी सब बातों का प्रत्युत्तर दे दिया, और अपना शुद्धभाव प्रकट करती हूं कि हमारा मित्रभाव और भ्रातृभाव हम में और आप से सदा बना रहै ॥

आपकी सदा विश्वासिका
(हस्ताक्षर) च, पी ब्लेवेटस्की

यदि आप को ऐसी ही इच्छा हो तो हम इस वर्ष से अपने पत्रों वा नियमों में से आर्य्यसमाज के महान् अध्यक्षता से आप का नाम हटा देवें और यूरप व अम्रिका में सब पत्रों में यह विज्ञप्त कर दें कि अब आप उनका महान् अध्यक्ष बना नहीं चाहते परन्तु जब तक आप मुझे लिखकर ऐसा हुकम नहीं भेजेंगे तावत पर्यन्त मैं नहीं करूंगी ॥

च० पी० वी०

—:o:—

[पूर्ण संख्या २४४] पत्र-सूचना

[रा० ब० गोपालराव हरि देशमुख का पत्र][1]

—:o:—

[पूर्ण संख्या २४५] पत्र

ता० १८ जन्युआरी १८८०[2]

---

१. इस पत्र की सूचना अग्रिम पूर्ण संख्या २४५ के अन्त में (पृष्ठ ३४४, पं० ९-१० पर) मिलती है। पत्र उपलब्ध नहीं हुआ। यह पत्र १८ जनवरी १८८० को अथवा उस से पूर्व लिखा होगा।

२. माघ कृ० ३ सं० १९३७ वि०। यह पत्र म० मुंशीराम द्वारा सम्पादित 'ऋ० द० का पत्र व्यवहार' भाग १ में पृष्ठ २६४-२६७ पर छपा है।

विशेष—इस पत्र के आरम्भ में १८ जनवरी १८८० लिखा है। इस में जैन मत संबंधी पुस्तकों की उस सूची के विषय में भी उल्लेख है जो सूची

यह सब पुस्तक[1] अभी हमारी पास मौजुद है परन्तु हम को कुंवर श्यामलालजी ने विदित किया कि प्रत्येक पुस्तक में क्या विषय है सो लिख भेजना चाहिये जिस लिये मैं अभी फुरसत मीलते ही प्रयत्न कर रहा हुं जो तैयार होते ही मैं आप को लिख भेजने वाला था परन्तु अभी असा सुना गया कि आप हमारे पर कृपा करके थोडे दिनों मे पधारने वाले हो जिससे बाकी रहा काम आपके समक्ष ही होगा।

लाहोर आर्य्यसमाज द्वारा माडम ब्लेवाटसकी को देने के लिये आपका पत्रका अंग्रेजी भाषांतर आया था सो संपुरद कर दिया और इन्हों का प्रत्युत्तर भी हमको लाहौर आर्य्यसमाज द्वारा भाषांतर हो के आपको भेजने के लिये आया था सो नकल रखके आज भेज दिया है[2] क्योंकि आप जब पधारोंगे तथा अवलोकार्थ विलंब न होवे और दोनों पत्र हमने हारनएबल रावबाहदुर गोपालराव हरीदेशमुख को पढाअे थे कि जिससे आपके साथ इन्हों का मेलाप हो पत्र संबंध में कुच्छ सन्देह न रहवे।

कच्छ दरवार के राणा जालमसिंह जी यहां पधारे है जो आप को मीलने की बड़ी अभिलाषा करते है वेसे रावबहादुर माहदेव गोविंद रानेडे भी अभी थोड़े दिनों से पधारे है सो मात्र दो मास माजीस्ट्रेट के काम में नियत हुअे है सो फिर चले जायगे और राव-

---

इस पत्र के पूर्व (पृष्ठ ३३४-३३६) छप चुकी है। और उक्त सूची वाले पत्र (पू०सं० २४१)पर १५ जनवरी १८८१ लिखा हुआ है, उस पत्र में भी जैनों की पुस्तकों की उक्त सूची का वर्णन है। १५ जनवरी १८८१ का पत्र, तदनन्तर जैनमत सम्बन्धी पुस्तकों की सूची, तदनन्तर १८ जनवरी १८८० का पत्र इन तीनों पर पत्र लेखक महाशय सेवकलाल कृष्णदास जी का ही लिखा हुआ पृष्ठ संख्या क्रमशः १ से ८ तक वर्तमान है। अतः सिद्ध होता है कि ये तीनों एक ही साथ श्री स्वामीजी महाराज की सेवा में भेजे गए थे। हमने तिथि क्रमानुसार पत्रों को छापने के लिए आगे पीछे कर दिया है। लेखक महाशय ने भूल से इस पत्र पर ईसवी सन् ठीक न लिखा। १५ जनवरी के पत्र में आगरे में निवास करने का उल्लेख है। आगरे में स्वामी जी महाराज २७-११-८० से १०-३-८१ तक रहे थे। अतः यहाँ सन् १८८१ ही चाहिये।

१. अर्थात् पृष्ठ ३३४-३३६ पर छपी पुस्तकें।

२. यह उत्तर इस पत्र से पूर्व पूर्ण संख्या २४३ पर छपा है।

बहादुर भोलाश्नाथ साराभाई भी मीले थे वे बड़ी प्रिती बताते है और मुजको कहाकि स्वामीजी जब पधारने वाले हो हम को लिख-भेजना मैं अमदाबाद में इन्हों की मुलाकात करना चाहता हुं और वैसे महापुरुष के दरशन और परोणागत से बड़ा लाभ होता है परन्तु हम अच्छी तराह जानते है कि वीना खर्च भेजे आपका आना कठीन है क्योंकि आपकी पास विद्या का भंडार है कुच्छ धन का नहीं इस लिये अवश्य खर्च भेजना चाहिये जिस से हमने राणा जालमसिंहजी को कहा कि आपने आवश्य यह सुभ कार्य्य में आश्रय देना चाहिये जिससे इन्होंने बड़े आनन्द से आपके यहा पधारने का जो कुच्छ अग्नीगाडी[1] आदि का आपके साथ के मनुष्य सहित खर्च हो देने को कबुल किया परन्तु आप शीघ्र पधारो इतना चाहया जिससे अपने को विशेष खर्चा होगा इसका भी विचार नकरता कवी रतन सीजी को खास आप के खरचके लिये दाम देके आज संध्याकी गाडी में रवाना हो जाने की आज्ञा करदीहये जो अमदाबाद के नवीन रस्ते से आपके पास आपहुंचेंगे।

हमने कल संध्या को ऐसा सुना की आपने पूर्णानन्द स्वामी को आपके उतारा के लिये व्यवस्था करने को लिखा था जिन्होंने सब तजवीज कर रक्खी है इसका निश्चय मैं कल पूर्णानन्दजी को मील के करूंगा तो भी कृपा करके आप शिघ्र प्रत्युत्तर लिख भेजना जिस से और सब व्यवस्था में कर सकुं। केशवलाल निर्भयराम जी का सब हिसाब का निकाला[2] कर दिया है। वो कुच्छ विचित्र बुद्धिका मनुष्य हो गया है इस विषय में आप पधारोंगे नंतर सब विदित्त किया जायगा अब कुच्छ अपना इन्ह से सम्बन्ध नहीं।

सब आर्य्यसमा[ज]स्थों ने मनुष्य गणना होगी जब आपकी आज्ञा-नुसार (जो मुलतान आर्य्यसमाज ने विदित की[3]) पत्रक भर देने का

१. अर्थात् रेल।

२. निकाला अर्थात् फैसला।

३. मुलतान आर्यसमाज के मन्त्री मास्टर दयाराम ने ऋ० द० से 'जन-गणना के समय आर्यों को किस प्रकार खाना पूरी करनी चाहिये' यह पूछा था। मास्टर दयाराम का यह पत्र तो उपलब्ध नहीं हुआ। उनके पत्र का जो उत्तर ऋ० द० ने ३१ दिसम्बर १८८० को दिया था वह 'ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन' में पूर्णसंख्या ५२३ (भाग १, पृष्ठ ५७०) पर छपा है। प्रतीत

अतरंग सभा में ठहराव हुआ है जो सब समाजस्थों को विदित किया जायगा।

सब समाजस्थों के नमस्ते
मैंहु आपका
आज्ञांकित सेवक
सेवकलाल कृष्णदास
मंत्री आर्य्यसमाज

ता. क.

रा० रतनसी कवी को राव बहादुर गोपालरावजी ने पत्र[1] आप को देने के लिये दीया है।

—:०:—

[पूर्ण संख्या २४६] पत्र

वैदिक ❀ यन्त्रालय ❀ बनारस[2]

संख्या। ता १९ ज० सन् १८८१[3]

नमस्ते !

भगवन्

होता है ऋ० द० के अनुसार ही मास्टर दयाराम ने सब आर्यसमाजों को सूचित किया होगा।

१. रतनसी कवि को राणा जालिमसिंह जी तथा सेवकलाल कृष्णदास आदि ने 'ऋ० द० को बम्बई लाने के लिये आगरा भेजा था(द्र० यही पत्र, पृ. ३४३, पं० १२-१५)। रावबहादुर गोपालरावजी का ऋ. द. के नाम लिखा पत्र (जिसका यहां संकेत किया है) उपलब्ध नहीं हुआ। परन्तु सेवकलाल कृष्ण दास राणा जालिमसिंह जी तथा रा० ब० गोपालराव हरिदेशमुख को ऋ० द० ने जो प्रत्युत्तर में पत्र लिखे वे 'ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन' में क्रमशः पूर्ण संख्या ५४१, ५४२, ५४३ (भाग १, पृष्ठ ५८४, ५८५) पर छपे हैं।

२. यह पत्र म० मुंशीराम द्वारा सम्पादित 'ऋ० द० का पत्र व्यवहार' भाग १, के पृष्ठ ४०५-४०८ पर छपा है।

३. माघ कृ० ४ सं० १९३७ वि०। यह पत्र ऋ० द० के १७ जनवरी १८८१ के उत्तर में लिखा गया है। द्र० 'ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन' पूर्ण संख्या ५३१ (भाग १, पृष्ठ ५७४)। पत्र के अन्त में ज्वालादत्त के हस्ताक्षर नहीं हैं। परन्तु पत्र उसी का है। यह पूर्वापर के पत्रों की तुलना से स्पष्ट है।

यजुर्वेद के पृष्ठ ७ अ० आ० ५० तक भागे। आप के बार बार लिखने की कुछ आवश्यकता नहीं किन्तु मैंने जब से शुद्धि पत्र बनाया है तब से अपने काम में आप ही लज्जित हूं क्योंकि और बदनामी तो पीछे है प्रथम तो इस विषय में यही लोग कहेंगे कि शोधने वाला महा मूर्ख है इसी से अपने काम के लिये आपको दो दफे अवकाश के लिये लिखा परन्तु उस विषय में आपने दृष्टि न दी अब जो उचित हो तो इतना मानिये कि मुझे जो आपने भाषा बनाने को कहा सो बनाऊंगा और शोधूंगा इससे अधिक चिट्ठी पत्री वा हिसाब मेरे लिये रहे परन्तु और इस से अधिक काम करने को समय नहीं मिलता और जो करूंगा तो सब गड़बड़ होगा सफाई से नहीं होगा क्योंकि जो डेढ़ सौ वा दो सौ श्लोक लिखे जाते हैं उस प्रकार के ६ सौ वा ७ सौ मेरे लिखे शुद्ध हो सके सो न होंगे यह अपने सब काम के लिए दृष्टान्त देता हूं इसी प्रकार जितना काम दश्रो किसी विधि जहां तक करि सकूंगा तहां तक करि लेऊंगा परन्तु वह सब काम जलदी का किया हुआ साथ सफाई के हो सो नहीं हो सकता है। आगे आप को अखतयार है जो चांहो सो कीजिये मुझसे जहां तक अपने काम की सफाई होगी उसमें चूक नहीं करूंगा यह प्रतिज्ञा करता हूं अधिक काम व्याकरण में संस्कृतादि बनाना और उसकी कांपी लिखना यह आगे के पुस्तकों में होगा। इसे आप अपने पास ले लीजिये जैसा चांहो वैसा संस्कृत बनवा कर वा बनाकर कांपी लिखा के भेजते जाइये। तो सब काम अवकाश से होगा। अथवा जो आप की मरजी हो सो कीजिये। मैं कुछ और नहीं कह सकता हूं इतना तो पूर्व लिखे के अनुसार कहूंगा कि

अधिगतं विधिवन्मम लेखनं न च तथा स्मृतभारभविभ्रशंत:
भगवता प्रथिता ननु मत्कृता–बधरा छवराय गया इति।

अघवरा. इत्यत्र अघेषु दोषेषु वरातिशयिता वक्ष्यमाणा पूर्वोक्ता वागिति संबध:।

भीमसेन के विषय में जो आपने लिखा सो उस का पंडिताई को धन्यवाद देता हूं

मैंने जो नित्यत्व, किया है,

निर्देश, इन के विषय में लिखा है उन में किया है यह कुछ अशुद्ध नही किन्तु भाषा के कुछ लालित्य भाव को देख के दिया है लिखा है। नित्यत्व और निर्देश के विषय में फिर विचार लेना उन में शंका समा[धा]न वहुत हैं और वे पत्र में नही लिखे जा सकते किन्तु जब आप आवेंगे तब आप ही के सन्मुख जिज्ञासु होकर कर लेऊंगा २०। ३४।३५ इन संख्याओं की जगह १०।३५।२५ ये संख्या मैंने वनाई ही नही इन का लिखना कैसे हुआ।

टाइप लिख चुका हूं।

लाजरस साहिब वा मुम्बई के शोधने वालों को शोधने से अधिक काम हो तो शोधने में सफाई उनसे भी कभी नही हो। यद्यपि मुम्बई का हाल शोधन का अनुमान से जानता हूं परन्तु साहिब के शोधने वाले का वृत्तांन्त प्रत्यक्ष है। किमधिकमधिकोक्तिभिः।

फारम गिन कर लिखूंगा वा सादीराम जी लिखेंगे।

—:०:—

[पूर्ण संख्या २४७] पत्राशय

वैदिक यन्त्रालय का खजांची और ऊपर की देखभाल मैं करूंगा।[1]

सुन्दरलाल

—:०:—

[पूर्ण संख्या २४८] पत्र-सूचना

[लाला कालीचरण रामचरण फरुखाबाद का नं० ४०१ ता० ९ फर्वरी १८८१ का पत्र][2]

—:०:—

१. यह आशय ऋ० द० के ला० कालीचरण रामचरण के नाम लिखे गये पूर्ण संख्या ५५२ (भाग १, पृष्ठ ५९२) के पत्र में निर्दिष्ट है।

२. इस पत्र की सूचना ऋ० द० के कालीचरण रामचरण के नाम लिखे गये पूर्ण संख्या ५५२ (भाग १, पृष्ठ ५९२) के पत्र से मिलती है। इसी पत्र में पत्र नं० ४०१ तथा ९ फर्वरी १८८१ का भी निर्देश है।

[पूर्ण संख्या २४९]　　　पारसल-सूचना

[गोपालराव हरि, फरुखाबाद ने छपाने को पुस्तक भेजी][1]

—:०:—

[पूर्ण संख्या २५०]　　　पत्र

ओ३म्[2]

श्री ६ स्वामी जी महराज शेति जग लिखित बम्बई शे बालमकन्द की प्रनाम भोत कर्के आगे रुपिया २५०)केश्वलाल निर्भयराम कू प्राण जीवनदास मसटर के मारफत दे दिया है रसीद चूकते कि फरुखाबाद कू भेज दि है रुपिया ३१।।)पुस्तक चतुर्थ वर्ष के वेदभाष्य तक के आप का जमा किया बाकि २१८।।) फरुकाबाद से मूजरे लिये मैं आप की कृपा शे भात खुशि हुं आपको पर्मातमा देव खुसि राखे पत्र उलटा दीजियो सब हाल लिखियो

फलगुण वदि चतुर्दसी[3]
[बालमकन्द, बम्बई]

—:०:—

[पूर्ण संख्या २५१]　　　पत्र-सूचना

[लाला मूलराज एम० ए० का २८ फवरी १८८१ का पत्र][4]

—:०:—

१. इस पारसल की सूचना ऋ० द० के प० गोपालराव हरि (फर्रुखाबाद)को पूर्ण संख्या ५६१ (भाग १, पृष्ठ ५६७) के पत्र से मिलती है।

२. यह पत्र म० मुंशीराम द्वारा सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १, पृष्ठ ३०३-३०४ पर छपा है।

३. यहां संवत् का उल्लेख नहीं है। पत्र की पीठ पर "पत्र पहुंचे आगरे, स्वामी जी श्री दयानन्द जी के पास" लिखा है। पत्र पर डाकघर की मोहर २ मार्च की लगी है। स्वामी जी महाराज २८ नवम्बर १८८० से १० मार्च १८८१ तक आगरा रहे थे। तदनुसार यह पत्र फा० कृ० १४ सं० १९३७ अर्थात् २७ फरवरी सन् १८८१ को लिखा गया था।

४. इस पत्र की सूचना ऋ० द० के द्वारा मूलराज एम० ए० को लिखे गये पूर्ण संख्या ५५८ (भाग १, पृष्ठ ५६६) के पत्र से मिलती है।

[पूर्ण संख्या २५२] पत्र

मुंबई ता० ८ मार्च १८८१[1]

श्रीमद पंडित जी नमस्ते

आपका रजिस्टर पत्र[2] कल संध्याको मीला पढ़ के मीले जितना आनंद हुआ इसका प्रत्युत्तर शनीवारको[3] सविस्तर लिखेंगे क्योंकि सब हिसाब की बही हमारा कारभारीके पास है और वे गुरुवार को 'वसई' से निश्चय आजायगा परसु ही गया है। मेरेको कुच्छ हरीश्चंद्र जी की नाई धर्मार्थ द्रव्य की अपेक्षा नही ईश्वर कृपा आर हमारा पुरुषार्थसे व्ययसे अधिक द्रव्य प्राप्त होता ही जाता है।

म जो वेदभाष्य मुंबईस्थ ग्राहकों को भेजता हु जिसका सिपाई को दरमाया देता हु सो आपसे लेने के लिये नहीं परंतु मैं एसा समझता हु कि प्रत्येक आर्यसभासद ने अपनी यथाशक्ति यह स्वदेश उन्नतिक कार्य साह्य करनी चाहिये जिससे मैं प्रति सप्ताह में दो वेर दाम वसूल करने के लिये ग्राहकों के घर को जाता हूं रु० १०० भेजे और पूर्णिमानंतर और रु० १०० भेज दुंगा। प्रत्येक ग्राहक पर क्या बाकी है निश्चय करना कठिन होता है और कितनेक को अंक कम पहुचे है जिसको दिये पीछे दाम मिलेंगे। इति।

मैं हुं आप का आज्ञांकित् सेवक
सेवकलाल कृष्णदास मंत्री आ० स०

—:०:—

[पूर्ण संख्या २५३] अभिनन्दन-पत्र

आर्यसमाज आगरा का अभिनन्दन पत्र (ऐड्रेस)[4]

ओं

प्रशंसापत्र आगरा आर्यसमाज की ओर से॥

धन्य है सत्यस्वरूप, सर्व व्यापक, सर्व गुण सम्पन्न, ईश्वर को कि

---

१. फाल्गुन शु० ८ सं० १९३७ वि० मंगलवार। यह पत्र म० मुंशीराम द्वारा सम्पादित 'ऋ० द० का पत्र व्यवहार' भाग १, पृष्ठ २५१ पर छपा है।

२. यह पत्र हमें उपलब्ध नहीं हुआ।

३. अर्थात १२ मार्च १८८१ को।

४. यह अभिनन्दन पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० के पत्र व्यवहार' भाग १, पृष्ठ ३८१-३८४ पर छपा है।

जिस के कृपा कटाक्ष से संसार के कल्याणार्थ और माया-तमावृत, वा मोह-विमोहित जीवों के निस्तारार्थ सत्य विद्या और उस विद्या के प्रचारकों की सृष्टि हुई है।

उसी कृपालु ईश्वर ने हमारे अज्ञान अन्धकार संयुक्त मनों को सत्य स्वच्छ अमोघ आनन्दमय पदार्थ से प्रकाश करने के लिये श्री महानुभाव, महात्मा गुणागार दयासागर श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी को इस स्थान पर भेजा, कि जिन के सूर्यवत् प्रकाश से सत्यावलम्बी जनों के कोमल कमलसम सकुचेचित् हृद तत्क्षणात् प्रफुल्लित हो गये और मोह-विमोहित जनों को उनके प्रभाकरवत् प्रभा से ज्ञानचक्षु प्रकाशित हो गये, उक्त महानुभाव के शुभागत से असत्य का ह्रास और सत्य का प्रकाश हुआ।

धन्य है ऐसे वीर्य्यशाली सत्पुरुषको कि जिन्होंने अपने तन मन और धन को केवल परोपकार में ही लगाया, सुफल है उनकी विद्या कि जिसने संसार की अविद्या विनाशार्थ उसका प्रकाश किया, सुफल है उनका पुरुषार्थ जिन्होंने असत्य सागर से जीवरूपी पोत को निमग्न होने से बचाया, और सत्य काण्डारी की सहायता से संसार सागर में हमारा खेवा पार लगाया, और वेदों के उद्धार से और उस के सत्य अर्थों के प्रकाश से जीवों को भ्रमजाल से छुडाया और इन्हीं महात्मा ने यथार्थ आर्य धर्म का (कि जो सहस्रों वर्ष से अंध कूप में पड़ा था) पुनः प्रकाश करके उद्धार किया।

हम उस समय के सौभाग्य को तोल नहीं सक्ते कि जब हम ऐसे सत् विद्या प्रकाशक के समीपस्थ थे और उनके सत् उपदेशों से अज्ञान का विनाश होता था, क्या हम अब उसके विपरीत न समझें कि जब हम अपने सत् प्रकाशक के आगमन का आकार रहित करते हुये देखते हैं परन्तु कुछ दुःख का विषय नहीं है क्योंकि हम स्वार्थी नहीं हैं और परित्याग भी उनका १ उपदेश है, यदि सूर्य एक ही स्थान पर बांध दिया जाय, तो सारे भूगोल में प्रकाश नहीं हो सक्ता इस कारण उन का और आर्य्या बंधूओं के उपदेशार्थ यहां से जाना भी आनन्द का समय है, और जहां पर उनका गमन होगा उन को भी ऐसा ही सुख लाभ होगा।

अब हमारी श्री महाराज आप से यह प्रार्थना है, हम अल्पज्ञ जनों पर सदा सर्वदा कृपा रक्खेंगे और अपने शुभ समाचारों से ज्ञात करके

आनन्दित करते रहेंगे अब हम सर्व शक्तिमान् ईश्वर से इस समय यह प्रार्थना करते हैं, कि आप को आरोग्य रख कर आपके परोपकार संयुक्त वाञ्छा को परिपूर्ण करे।

आप का दास, यमुनादास बिश्वास मन्त्री आर्य्यसमाज

क्रिशननारायण, सनरमक, भागवतप्रसाद, हरीकिशन, जवालाप्रसाद, भगवानदास, लक्ष्मणप्रसाद, मा० मथरादास, प्रभूदयाल, प्रागयनारायण, गंदालाल, सोहनलाल, गिरवरलाल,[1]

—:०:—

[पूर्ण संख्या २५४] पत्र-सारांश

कलकत्ते की सभा के विषय में लिखें। नये ग्रन्थ कौन से छपे हैं। भागलपुर जवनपुर (जौनपुर) काशी, मिर्जापुर आदि में मुसलमानों के उपद्रव हुए हैं। मुंशी इन्द्रमणि के मुकद्दमे का क्या हुआ। दांत मजबूत होने की औषधी लिखें ···· ।[2]

स्वामी कृपाराम

—:०:—

[पूर्ण संख्या २५५] पत्र-सारांश

प्रश्न—(१) सन्ध्योपासन और गायत्र्यादि नित्यकर्म सब वर्णों के लिये अलग अलग हैं वा एक ही।

(२) कायस्थ शूद्र हैं अथवा किस वर्ण में आते हैं।

(३) मुसलमानादि वेदिक मत में आवें तो उनके साथ कैसा व्यवहार करें।[3]

कन्हैयालाल चौबे

---

१. इस अभिनन्दन पत्र पर तिथि का निर्देश नहीं है। पण्डित देवेन्द्रनाथ संकलित जीवनचरित भाग २, पृष्ठ ६३५ से ज्ञात होता है कि यह अभिनन्दन पत्र आगरा समाज ने १० मार्च १८८१=फा० शु० ६ बृहस्पतिवार सं० १९३७ को दिया था।

२. यह पत्र सारांश ऋषि दयानन्द के ३१ मार्च [१८८१], पूर्ण संख्या ५६८ (भाग २, पृष्ठ ६०५) के पत्र के आधार पर बनाया है। मूल पत्र उपलब्ध नहीं हुआ।

३. यह पत्र सारांश ऋ० द० के १६ अप्रेल १८८१, पूर्ण संख्या ५७० (भाग २, पृष्ठ ६०८) के पत्र के आधार पर संगृहीत किया है।

[पूर्ण संख्या २५६] पत्र

No. 41.

Arya Samaj Office,[1]
Lahore, 28th April 1881.

To

Swami Dayanand Saraswati,
Suprime Chief of Arya Samajes in India.

Revered Swamiji,

The nephew of Lala Nihal Sing member of the Lahore Arya Samaj has absconded from his house and probably he may come there to see you.

His name is Purtab Singh, his age about 15 or 16 years, has fair complexion and short hairs over his head. He wears a white turban and a jacket over his koorta which has silver buttons and a Dhotee.

Should he come to you be kind enough to inform the Lahore Arya Samaj by a telegram and keep the boy with you.

But if he is not there you need not telegram to us.

My respectful Namaste to yourself.

Yours obediently,
Rattun Chand Bary,
Secretary.

भाषार्थ

आर्यसमाज कार्यालय,
लाहौर, २८ अप्रैल १८८१

---

१. यह पत्र वैदिक मैगजीन (गुरुकुल कांगड़ी) पौष १९६५ वि० में छपा था।

सेवा में,

स्वामी दयानन्द सरस्वती,
भारत की आर्यसमाजों के सर्वोच्च अध्यक्ष

आदरणीय स्वामी जी,

लाहौर आर्यसमाज के सदस्य लाला निहालसिंह का भतीजा [या भान्जा] अपने घर से भाग गया है। सम्भवतः वह आपके पास आपसे मिलने आयेगा। उसका नाम प्रतापसिंह है और उसकी आयु लगभग १५-१६ साल की है उसका रङ्ग गोरा है तथा सिर के बाल छोटे हैं। वह सफेद पगड़ी पहने है तथा कुर्ते पर जाकट है जिसमें चांदी के बटन लगे हैं। वह धोती पहने हुए है।

यदि वह आपके पास आये तो आप कृपया तार भेजकर लाहौर आर्यसमाज को सूचित कर दें तथा उस लड़के को अपने पास ही रख लें।

आपको मेरा आदरपूर्ण नमस्ते।

आपका आज्ञाकारी,
रतनचन्द बेरी,
मन्त्री

—:०:—

[पूर्ण संख्या २५७] पत्र-सूचना

[भाई जवाहरसिंह का पत्र][1] लाहौर

—:०:—

[पूर्ण संख्या २५८] पत्रांश

यदुनाथ मित्र को ४० रु० मासिक पर नियत किया है।[2]

कालीचरण रामचरण

—:०:—

१. द्र० ऋ० द० का १२ मई १८८१, पूर्ण संख्या ५७४ (भाग २, पृष्ठ ६११) का पत्र। उस में मैडम ब्लेवेस्टकी के पत्र का उलथा भेजने का निर्देश है। साथ में जवाहरसिंह का पत्र भी रहा होगा।

२. यह पत्रांश ऋ० द० के १२ मई १८८१, पूर्ण संख्या ५७५ (भाग २, पृष्ठ ६१२) के पत्र की प्रथम पंक्ति से जाना जाता है।

[पूर्ण संख्या २५९] पत्र-सारांश

आप यहां पधारें। सांभर के रेलघर पर रथ बहल और ऊंट इत्यादि सवारी भेज देवेंगे।[1]

सरपंच (चुरू के सेठों का)

—:o:—

[पूर्ण संख्या २६०] पत्र-सारांश

[पं० सुखराम त्र्यम्बकराम का पत्र।[2]]

—:o:—

[पूर्ण संख्या २६१] पत्रांश

फर्रुखाबाद की पाठशाला में संस्कृत का प्रचार बहुत कम है और अंग्रेजी वा उर्दू फारसी अधिक पढ़ाई जाती है।[3]

कालीचरण रामचरण

—:o:—

[पूर्ण संख्या २६२] पारसल-सूचना

[राजा दुर्गाप्रसाद द्वारा काशी से १०० आम भेजे गये][4]

—:o:—

---

१. यह पत्र सारांश ऋ० द० के २३ मई १८८१, पूर्ण संख्या ५७७ (भाग २, पृष्ठ ६१५, पं० १३-१५) के पत्र में उद्धृत है।

२. इस पत्र की सूचना पं० सुखराम त्र्यम्बकराम के अग्रिम पूर्ण संख्या २८५ (भाग ३, पृष्ठ ३६६, पं० २७) से मिलती है।

३. यह पत्रांश ऋ० द० के २२ मई १८८१, पूर्ण संख्या ५७७ (भाग २ पृष्ठ ६१४) के पत्र में निर्दिष्ट है।

४. इस पारसल की सूचना ऋ० द० के पूर्ण संख्या ५७९ (भाग २, पृष्ठ ६१६) के पत्र से मिलती है।

[पूर्ण संख्या २६३] पत्र-सूचना

[राजा दुर्गाप्रसाद फर्रुखाबाद का पत्र (कार्ड)][1]

—:o:—

[पूर्ण संख्या २६४] पत्र-सूचना

[मैडम ब्लेवेस्टकी, बम्बई][2]

—:o:—

[पूर्ण संख्या २६५] निमन्त्रण-पत्र-सूचना

[अजमेर निमन्त्रण भेजकर मसूदा बुलाया। निमन्त्रण पत्र पं० वृद्धिचन्द के हाथ भेजा।][3]

रावबहादुरसिंह (मसूदा]

—:o:—

[पूर्ण संख्या २६६] पत्र-सूचना

[रायपुर बुलाने के लिये तीन पत्र आये][4]

ठा० हरिसिंह

—:o:—

१. यह पत्र-सूचना ऋ० द० के १० जून १८८१ पूर्ण संख्या ५८१ (भाग २ पृष्ठ ६१७) के पत्र से मिलती है।

२. यह पत्र-सूचना ऋ० द० के २२ जुलाई १८८१, पूर्ण संख्या ५८७ (भाग २, पृष्ठ ६३५) के पत्र से मिलती है।

३. यह पत्र-सूचना पं० लेखरामकृत जीवनचरित हिन्दी सं० पृष्ठ ५८३ पर उपलब्ध होती है। निमन्त्रण पत्र अजमेर भेजा गया था। ऋ० द० अजमेर में ५ मई से २३ जून १८८१ में विराजमान थे। अत: यह निमन्त्रण-पत्र इसी अवधि के बीच किसी दिन भेजा गया होगा।

४. ठा० हरिसिंह द्वारा रायपुर बुलाने के लिये मसूदा भेजे गये तीन निमन्त्रण पत्रों का उल्लेख पं० लेखरामकृत जीवनचरित हिन्दी सं० पृष्ठ ५८५ पर मिलता है। तीसरा पत्र सम्भवत: १४ अगस्त १८८१ के अगले दिन पहुंचा होगा। १८ अगस्त को ऋ० द० मसूदा से रायपुर के लिये रवाना हुये थे। रायपुर एक अत्यन्त छोटी रियासत है। ब्यावर से आगे मारवाड़ जंक्शन के मार्ग पर हरिपुर स्टेशन पड़ता है। उस से रायपुर २ मील (लगभग ३ किलोमीटर) दूर है। इन पत्रों की सूचना हमने एक स्थान पर संगृहीत की है।

[पूर्ण संख्या २६७] पत्र-सूचना

[हरवान जी चारण का पत्र रायपुर में यज्ञ कराने के विषय में][1]

—:०:—

[पूर्ण संख्या २६८] अभिनन्दन-पत्र-सूचना

[राव बहादुरसिंह (मसूदा) के द्वारा अभिनन्दन पत्र पढ़ा गया][2]
१८ अगस्त १८८२

—:०:—

[पूर्ण संख्या २६९] पत्र-सूचना

[आनन्दीलाल, मन्त्री आर्यसमाज मेरठ का पत्र][3]

—:०:—

[पूर्ण संख्या २७०] पत्र

बम्बई

ता० १६ सपटेम्बर १८८१[4]

श्रीमद् परमहंस परिव्राजकाचार्य्यानेक गुणसम्पन्न विराजमान वेद विहिताचार धर्म्म निरूपक पण्डित दयानन्द सरस्वती स्वामी जी प्रति नमस्ते। आप की ओर से लाला रूपसिंह जी कोहाट से देश यात्रा करते करते आप के दर्शन से कृतार्थ होके ता० १३ की सन्ध्या

---

१. इस पत्र का निर्देश पं० लेखराम कृत जीवनचरित हिन्दी सं० पृष्ठ ५८७ पर मिलता है। यह कब लिखा गया, यह ज्ञात नहीं। सम्भवतः मसूदा में ऋ० द० के निवास काल में भेजा गया हो।

२. इस अभिनन्दन पत्र के पढ़ने की सूचना पं० लेखराम कृत जीवन-चरित हिन्दी सं० पृष्ठ ५८५ पर मिलती है। वहीं के वर्णन के अनुसार ऊपर तारीख का निर्देश किया है।

३. इस पत्र की सूचना ऋ० द० के ११ सितम्बर १८८१, पूर्ण संख्या ५६० (भाग २ पृष्ठ ६३६) के पत्र से मिलती है।

४. आश्विन कृ० ६ सं० १६३८ वि०। यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित ऋ० द० का पत्र व्यवहार भाग १, पृष्ठ २५२-२५४ पर छपा है।

को पधारे है, जिन्हो का मुम्बई आर्यसमाज ता० १८ को "स्वदेशोन्नति" विषय में व्याख्यान होगा, जो कल दुपेर को दो बजे डाकटर मोरेश्वर गोपाल देशमुखजी के साथ पुने को शेहर देखने और हांनरेब्ल गोपालराव हरिदेश मुखजी और महादेव गोविंद रानेडे आदि सभ्य पुरुषो की मुलाकात को गये है जो कल प्रातः काल १० बजे फिर लोट आवेंगे।

इन्हों से आप की अत्र पधारने की कृपा सुनते ही समाजस्थो में बडा आनन्द हो रहा है और आपके लिये निवास स्थान व्याख्यानादि व्यवस्था करने को तत्पर हो रहे है, मात्र खोटी[1] आप कितने दिन पीछे पधारोगे वे जान लेने की है जिससे सब व्यवस्था यथा साङ्ग बन सके, इसालये कृपा करके शिघ्र विदित करना कि आप का पधारना कितने दिनों में होगा और आप को वाट खर्च के लिये कितने रुपये और काह भेजा जावे, जिससे हम सब व्यवस्था शिघ्र कर लेवे।

राव बाहदुर भोलानाथ साराभाई ने हम को कहा है कि स्वामी जी जब कृपा करके पधारने वाले हो············दित कर देना, हम अमदाबाद और पाहल··············जी के लिये सब व्यवस्था करेंगे और गोपालराव आदि सभ्य पुरुषों ने जब आप पधारने वाले हो इन्हों को विदित करने का हम को कह रक्खा है जो आप से प्रत्युत्तर मीलते ही विदित किया जायगा।

जैनो के और पुस्तक प्राप्त करने का प्रयत्न चल रहा है मीलते ही आपको विदित किया जायगा और २३० पुस्तक आप के बीन देखे मेरे पास है आप कहो तो भेज दुंगा।

आपने जो पुस्तक फिर लोट दिये हम को मीले है परन्तु आप का मुकाम मालुम न होने से रसीट न भेजी गई सो क्षमा करना।

कृपा करके इस पत्र का प्रत्युत्तर शीघ्र ही लिखना इति।

मैं हूं आप का आज्ञांकित सेवक
सेवकलाल कृष्णदास
मुंबई जग जीवनकिका स्ट्रीट घर न० ६१

---

१. 'खोटी' शब्द गुजराती का है। इस का अर्थ देरी वा विलम्ब है। सम्भवतः इसी का तात्पर्य 'आप कितने दिन पीछे पधारेंगे' शब्दों से कहा है। अथवा 'मात्र मोटी बात' पाठ लिखना अभिप्रेत रहा हो।

[पूर्ण संख्या २७१] पत्र

संम्वत् १९३८ आश्विन शु० ६ गुरु[1]

श्री म० महाराज बहुशोऽभिवादये

जो जो पुस्तक आपने मंगवाये हैं वे भेजे जाते हैं रसीद में संख्या भी लिख दी है। और आपकी प्रथम पारसल कि जिस की अब बिलटी भेजी है मिल गई उसकी रसीद भी भेज चुका तथा ऋ० यजु० के पत्रे और अन्वयार्थ आये उनकी भी रसीद आपके निकट भेज दी पहुंची होगी। और यजुर्वेद के पत्रे १६२–से १८७ तक भेजता हूं। और स्त्रैणताद्धित के थोड़े से पत्रे भेजता हूं कि आप देख लेवें। इस विषय मे मैं लिख भी चुका हूं कि इन पुस्तकों के इस प्रकार शोधने में वेदभाष्य की भाषा बनने में हानि होती है। अब आप विचार लें कि शोधना चाहिये वा नहीं। जो वेदभाष्य का सा शोधना इन व्याकरण के पुस्तकों का भी हो तो मैं भाषा बना सकता हूं कि जितनी आप चाहते हैं और देख के प्रसन्न रहें। मुझ को बड़ा शोक यह है कि आप मेरे काम को देखते नहीं। दिनेशराम आदि लोगों ने जैसा काशिका में लिखा है वैसा ही इन पुस्तकों में लिख दिया बहुधा तो काशिका का संस्कृत ही रख दिया है। उसमें बहुतेरा महाभाष्य से विरुद्ध भी है। किसी वार्त्तिक वा कारिका का अर्थ नहीं लिखा बहुतेरे सूत्र जो मुख्य लिखने चाहिये नहीं लिखे बहुत से वार्त्तिक कारिका भी छूट गई हैं कि जो अवश्य लिखनी चाहिये यह हाल मेरे बनाये संधिविषय नामिक और कारकीय में भी कहीं आपने देखा बराबर लिखने योग्य बातें लिखता गया। अब छप गये पर भी परीक्षा हो सकती है कि सामासिक और कारकीय में कितना अन्तर है। आप मेरे काम को देख के एक वार अकस्मात् जयपुर में प्रसन्न हुए तब इनाम दिया और कहने लगे कि ले भाई भीमसेन चाहे रहो वा जाओ यह देते ही हैं फिर अजमेर में चलते समय इस प्रतिज्ञा पर कुछ दृष्टि न की अस्तु मुझ को इन बहुत बातों से प्रयोजन नहीं। अब आप जैसी आज्ञा देवें मैं करने को उद्यत हूं। आज्ञा पालन भी मैंने बहुत दिनों से की और अब भी जैसा आप कहेंगे

---

१. २९ सितम्बर १८८१। यह पत्र म० मुंशीराम द्वारा सम्पादित 'ऋ० द० का पत्र व्यवहार' भाग १, के पृष्ठ ३९-४०-४१ पर छपा है।

वैसा ही करूंगा। जो भाषा ठीक ठीक चाहें तो वेदभाष्य का सा शोधना इस का भी कर सकूंगा। वेदभाष्य में इतना शोधना होता है कि भूमिका कही छूट गई किसी मन्त्र का अन्वय छूट गया बना दिया। किसी पद का अर्थ पदार्थ में रह गया रख दिया। बहुतेरे पद पदपाठ में नहीं होते मन्त्र देख के रख देता हूं। बहुतेरे स्वर अशुद्ध होते हैं बना देना। वाकी कम्पोस में जो अशुद्धि हो। अब आप उत्तर शीघ्र देवें। और मैं यहां दिन का और ८ घण्टे का ही नियम नहीं समझता रात्रि को भी बराबर काम करता हूं। और बिगड़ना बनना भी इस काम का यही जानता हूं कि मेरा ही है। इति शमस्तूभयत्र।

भवदनुग्रहाकांक्षी
भीमसेन शर्म्मा

—:o:—

[पूर्ण संख्या २७२] **पत्र**

[1]यजुर्वेद की संहिता के ३ पुस्तक जो रावसाहब बहादुरसिंहजी के समीप भेजने को लिखा[2] सो मूल लखनऊ के छापे का वा महीधर का टीकावाला कलकत्ते के छापे का भेजा जावे सो लिख दीजिए। और राव सा० जी के लिये जो पुस्तक लिखे सो इसी बंडल में भेजते हैं उन को आप देदीजिये। आगे जो जो छपेंगे भेजा करूंगा।

प्रबन्धकर्ता **दयारामशर्म्मा**

[3]पंडित सुनदरलाल वा वालमुकुन्द वा दयाराम की नमस्ते

ता० २८-८-८१[4]

—:o:—

१. यह पत्र पूर्व छपे पूर्ण संख्या २७१ के पत्र के अन्त में म० मुंशीराम द्वारा सम्पादित 'ऋ० द० का पत्र व्यवहार' भाग १, पृष्ठ ४२ पर छपा है। इस पर टिप्पणी दी है—पण्डित भीमसेन जी के पूर्व पत्र पर ही वैदिक यन्त्रालय के प्रबन्धकर्त्ता दयाराम शर्मा की ओर से पण्डित भीमसेन जी के अक्षरों में इस पैरे का लेख है।

२. यह पत्र हमें उपलब्ध नहीं हुआ। पत्र-सूचना भी भूल से छापनी रह गई।

३. यह पैरा दूसरे प्रकार के अक्षरों में है। म० मुंशीराम।

४. पूर्व पूर्ण संख्या २७१ के आरम्भ में लिखे 'आश्विन शुक्ला ६ गुरुवार'

[पूर्ण संख्या २७३] पत्र-सारांश

नं० २९

श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज नमस्ते।[1]

आपके पास यह थियोसोफिस्ट भेजता हूं। अपने दिवाली का उत्सव अब के पत्र द्वारा निवेदन करूंगा।

२४-१०-८१ मुन्नालाल

—:०:—

[पूर्ण संख्या २७४] पत्र-सूचना

[महाशय रूपसिंह का गुजरांवाले से भेजा गया कार्ड][2]

—:०:—

[पूर्ण संख्या २७५] पत्र

ओ३म्

श्रीयुत महाराज गणषोऽभिवादये। ता० ३ नवम्बर[3]

आपका पत्र आया[4] समाचार विदित हुए। यहां सब लोग प्रसन्न हैं आप भी होंगे।

ऋग्वेद के पत्रे जो आपने भेजे थे उनकी भाषा संस्कृत के अनुकूल करदी उन ८१३ से-८५० पत्रों को भेजता हूं और यजुर्वेद के १२ अ० में भी दो चार पत्रों की भाषा बनी है सो इस महिने की १५ ता०

को २९ सितम्बर सन् १८८१ होता है। अतः यहां २८-८-८१ लिखना अशुद्ध है। २९-९-८१ होना चाहिये।

१. मुन्नालाल, सं० 'देश हितैषी' अजमेर का यह पत्र-सारांश 'देशहितैषी' के रजिस्टर में पत्र सं० २९ पर उद्धृत है। देखो ऋ० द० का पूर्ण संख्या ५९४, (भाग २, पृष्ठ ६३८) की टि० २।

२. यह पत्र सूचना ब्र० रामानन्द के २ नवम्बर १८८१, पूर्ण संख्या ५९९ (भाग २, पृष्ठ ६४४) के पत्र में मिलती है।

३. सन् १८८१ तदनुसार कार्तिक शुक्ला १२ बृहस्पतिवार १९३८॥ यह पत्र म० मुंशीराम द्वारा सम्पादित 'ऋ० द० का पत्र व्यवहार' (भाग १, पृष्ठ ५६-५७ पर छपा है।

४. यह पत्र हमें उपलब्ध नहीं हुआ।

तक जहां तक होगा शीघ्र भेजूंगा और यह तो बात ठीक है कि मेरे पास से भाषा बनकर जब तक पत्रे न पहुंचेंगे तब तक वहां कि भाषा नहीं बन सकती। मैं जितना कर सकता हूं उसमें कालात्यय कभी न करूंगा। मेरे परिश्रम को आप छपे हुए पत्रे और कापी का मेल करने जान सकते हैं। इस बात का अहङ्कार नहीं करता किन्तु यह भी चाहता हूं कि आप जैसे ज्वालादत्त की भूल मुझ से निकलवा कर यहां भेजा करते थे वैसे अब मेरी भी भूल किसी से निकलवा कर भेजा करें जिससे आगे को सचेत होऊं। और कार्य भी विशेष अच्छा होवे और अभी छपने के लिए यहां कापी विशेष है जब मंगाने की आवश्यकता होगी तब मैं आप ही विदित कर दूंगा। और यन्त्रालय के सब प्रबन्ध निर्विघ्न चले जाते हैं।[1]

[2]आगे इस महीने की १ तारीख से यह प्रबन्ध हुआ है प्रति मास २५ फरमै और २ टंटिल पेज छपा करें इसमें कमी होगी तौ नौकरी पर जुरमाना होगा और अब कुल खर्च यन्त्रालय को अमले का ११०) महीना है और बनारस मैं १२७॥) का खर्च था और १० तथा १२ फरमे से अधिक किसी मास मैं नहीं निकले सो जो कुछ इसका नफा नुकसान है आप निश्चय करते रहै॥

चर्ण सेवक   सुन्दरलाल

—:०:—

[पूर्ण संख्या २७६] पारसल-सूचना

[पं० भीमसेन द्वारा]

ऋग्वेदभाष्य के पत्रे ८१३-८५० तक।[3]

—:०:—

१. इस पत्र का अक्षर तो पण्डित भीमसेन जी का है, परन्तु पत्र के अन्त में भीमसेन का हस्ताक्षर नहीं है। म० मुंशीराम

२. पण्डित भीमसेन जी के पत्र के नीचे एक ही कागज पर यह पत्र राव बहादुर पण्डित सुन्दरलाल जी का है।

३. इस पारसल की सूचना पूर्व मुद्रित पूर्ण संख्या २७५ (पृष्ठ ३५९) से मिलती है।

[पूर्ण संख्या २७७] पारसल-सूचना

[दयाराम, वैदिक यन्त्रालय द्वारा]
स्त्रैणताद्धित का नोट (टिप्पणी)[1]

—:o:—

[पूर्ण संख्या २७८] पत्र-सूचना

[लाला मूलराज एम० ए० का पत्र][2]

—:o:—

[पूर्ण संख्या २७९] पत्र-सारांश

गोकरुणानिधि पुस्तक का इंगलिश भाषा मे भाषान्तर कर दूंगा।[3]

मूलराज एम० ए०

—:o:—

[पूर्ण संख्या २८०] पत्र-सारांश

प्रश्न १—मांस खाना बुरा वा अच्छा है ?
प्रश्न २—मैं अंग्रेजी पढ़ूं वा संस्कृत ?
६ दिसम्बर १८८१ रूपसिंह[4]

—:o:—

१. इस पारसल की सूचना ऋ० द० के पूर्ण संख्या ५९६ के पृष्ठ ६३९ की प्रथम पंक्ति में मिलती है। भीमसेन लिखित और दयाराम प्रबन्धकर्ता वैदिक यन्त्रालय द्वारा भेजी गई टिप्पणी ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन के पूर्ण संख्या ५९७ (पृष्ठ ६४०-६४२) के नीचे टिप्पणी के रूप मे छापी है।

२. इस पत्र की सूचना ऋ० द० के १२ नवम्बर १८८१, पूर्ण संख्या ६०० (भाग २, पृष्ठ ६४४, पं० १८) में मिलती है।

३. यह पत्र-सारांश ऋ० द० के ९ दिसम्बर १८८१ पूर्ण संख्या ६०३, (भाग २, पृष्ठ ६४६) में मिलता है।

४. पत्र का उक्त अंश ब्र० रामानन्द के १३ दि० १८८१ पूर्ण संख्या ६०४ (भाग २, पृष्ठ ६४७) में मिलता है। पत्र की तारीख भी वहीं निर्दिष्ट है।

[पूर्ण संख्या २८१] पारसल-सूचना

[पं० भीमसेन द्वारा]

यजुर्वेद अ० १२ के पत्रे। स्त्रैणताद्धित और हिसाब।[1]

—:०:—

[पूर्ण संख्या २८२] पत्र

मुम्बई
ता० १७ डिसम्बर १८८१[2]

श्रीमद् परमहंसपरिव्राजकाचार्य्य अनेक [गु]णसम्पन्न वेद विहाताचार धर्म्म निरूपक पंडित दयानन्द स्वरसती स्वामीजी प्रति नमस्ते। आपका कृपा पत्र ता० १३ का चितोड़ से लिखा मीला[3] और पढ़ के बड़ा आनन्द हुआ जो समाजस्थों को पढाने का तुर्त छपाके भेज दिया जायगा, और ता० १४ जान्युआरी शनीबार की सन्ध्या को आर्य्यसमाज की अेक विशेष सभा नवीन व्यावस्था करने के लिये एकत्र करने का निश्चय किया है जिस के पूर्व आपका पुनः आगमन होने से सब व्यावस्था ठीक-ठीक होगी और आपकी पुनः-पुनः आगमन की अपेक्षा ईश्वर कृपा से मीट जायगी। आपकी आज्ञानुसार बालकेश्वर में जिस स्थान पर आपका प्रथम मुकाम हुआ था इसी स्थान का प्रबन्ध कर रक्खा है और कृपा आप करके "कामखाला" स्टेशन का टीकट लेना वांह सब समाजस्थ आपको लेने को पधारेंगे और एक वा दो समाजस्थ 'थाणे' तक आपको लेने को आयगे। पुना, अहमदाबाद और बडोदा को पत्र आपके पधारने के विषय में आज लिख भेजता हु और पोस्ट आफिस में भी जिससे सब व्यवस्था ठीक ठीक हो। आप कृपा करके अेक दिन पूर्व तार भेजो तो सब वतमान

---

१. इस की सूचना पं० भीमसेन के १८ दिसम्बर १८८१, अग्रिम पूर्ण संख्या २८३ के पत्र में मिलती है।

२. पौष कृष्ण ११ सं० १९३८। यह पत्र म० मुंशीराम द्वारा सम्पादित 'ऋ० द० का पत्र व्यवहार' भाग १, पृष्ठ २५४-२५५ पर छपा है।

३. यह पत्र हमें नहीं मिला।

पत्रों में प्रसिद्ध करने की बड़ी सुगमता हो वा खंडवे से भेजो तो भी ठीक है इति

मैं हुं आपका आज्ञांकित् सेवक
सेवकलाल कृष्णदास

—:०:—

[पूर्ण संख्या २८३] **पत्र**

ओ३म्

सम्वत् ३८ पौ० कृ० ११ ता० १८ दिशम्बर[1]
वैदिक यन्त्रालय
प्रयाग

श्रीमहाराज अभिवादये

पत्र आपका आया[2] मेरे विषय में आपने लिखा सो ठीक है फिर ऐसा तो नहीं हुआ कि कुछ भी भाषा बना कर न भेजी हो पीछे जो ७ ता० दि० को पत्रे यजु० अ० १२ के और वेदभाष्य स्त्रैणताद्धित और हिसाब भेजा है उस की पहुंच आपने नहीं लिखी कदाचित् पीछे पहुंचा होगा। और यजु० १२ अध्याय भी बड़ा है स्त्रैणताद्धित की कापी यहां सब रक्खी है कदाचित् आप देखा चाहें तो भेज दिये जावें। और अभी स्त्रैणताद्धित छप चुके कोई १५ दिन हुए हैं आप १॥ महिना किस विचार से लिखते हैं उस का शुद्धिपत्र बनाया उस में भी कुछ काल ही लगता है। अब आख्यातिक के ३ फारम छप चुके हैं। शोधना इसी का नाम है कि जैसी कापी हो उस में प्रति पृष्ठ डयोढ़ा तक काटा बनाया जावे। और अब ३० सूत्र लिखे हैं वहां (१) २८ सूत्र लिखे गये तो वह बलकुल लौट जाना नवीन बनाना है। मुझ को इस बात की बहुत चिन्ता रहती है कि आप के नाम से जो पुस्तक बनते हैं। उन में कुछ अशुद्धि न रह जावे और सब से अपूर्व होवें। मेरे काम को देखने वाले पं० सुन्दरलाल जी। पं० देवीप्रसाद।

---

१. १८ दिसम्बर सन् १८८१ पौ० कृ० १२ है। उस दिन एकादशी का भी योग रहा होगा। यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित पत्रव्यवहार भाग १. पृष्ठ ५८-५९-६० पर छपा है।

२. यह पत्र उपलब्ध नहीं हुआ।

और पं० दयाराम जी हैं परन्तु ये लोग शुद्ध अशुद्ध व्याकरण वा वेद-भाष्य को नहीं देख सकते इन बातों को आप अवश्य देखा करें स्त्रैण-ताद्धित को ही देखें कि इसका पूर्व रूप कैसा है और अब कैसा छप-वाया गया जब तक व्याकरण के पुस्तकों के छपने में गड़ बड रहेगा तब तक वेदभाष्य की भाषा कम बनेगी अब इस महिने के अन्त में भी कुछ भाषा तयार हो सकेगी भेजूंगा आगे आप जैसा कहैं उप-स्थित हूं।

आप के लेखानुसार कृदन्त आख्यातिक को अन्त्य में ही छपवाया जावेगा परन्तु इस विषय में पण्डित देवीप्रसाद आदि का विचार यह है कि जो विषय छपवाया जावे वह पूरा पूरा छपे कुछ छूटे नहीं। सो कृदन्त विषय में भी कृदन्त के सब सूत्र यथा क्रम से छपने चाहिये इस में जैसी आपकी आज्ञा हो सो किया जावे। और आख्यातिक को कुछ रोक कर बीच में अव्ययार्थ छपवा दिया है। बहुत शीघ्र इस महीने में आप के पास पहुंच जावेगा। परन्तु इस का नम्बर ताद्धित के आगे नवम पुस्तक रहेगा वा आख्यातिक नवम रहेगा सो आप कृपा करके आज्ञा शीघ्र देवें इति—

आपका सेवक
भीमसेन शर्म्मा

—:o:—

[पूर्ण संख्या २८४] पत्र

श्रीगुरुचर्णेषु नतय:[1]

आप के २ पत्र १ कार्ड[2] आया और श्रीयुत आर्य्यकुल दिवाकर महाराणा जी ने सतकार किया उस के सुन्ने से अत्यन्त आनन्द हुआ

१. यह पत्र सं० १९३८ पौष कृष्ण ११ (१८ दिसम्बर १८८१) के भीम-सेन के लिखे हुए पत्र के नीचे एक ही कागज पर लिखा गया है (देखो म० मुंशीराम द्वारा सम्पादित पत्रव्यवहार भाग १, पृष्ठ ६० की टिप्पणी)। अत: यह भी सं० १९३८ पौष कृष्ण ११ (१८ दिस० १८८१) का है। यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित ऋ० द० के पत्र व्यवहार' भाग १, पृष्ठ ६० —६१ पर छपा है।

२. ये दो पत्र और एक कार्ड हमें उपलब्ध नहीं हुए।

अब के मास के अंक में उन की प्रसंनता का विज्ञापन दिया जायगा[1] और जो पुस्तके आपने मगाई है आज इन्दौर को भेजी जायगी माघ के मेले मं जो कोई विद्यामान पुरुष मिलेगा तौ उस को नौकर कर लैंगे ।

आपने जो भीमसेन के मध्ये लिखा था सो उसको पढ़ कर वह वुहत उदास हुए थ पर मैंने उन को समझा कर राजी किया असल वात यह हैं कि वुह वैठा नही रहता है न सुस्ती करता है पर जो पुस्तक व्याकरण की आती है उनको उस को फिर कर लिखना पढता है यह काम हर ऐक मनुष्य का नही जिस ने आप से विद्या पढी होय, और आपका अभिप्राय जाने वुह ही इन पुस्तकों को शोध सकता है और आप को यह भी लिखना मुनासिव नही कि ५) महीना शोधने का मिलता है जव ज्वालादत चला गया उस समय मैं सिर पटक कर [रह] गया और कोई योग्य पुरुष पुरुफ शोधन को १०)वा १५)महीने को भी न मिला और जितना काम भीमसेन करता है उतना काम करने वाला अव २०) तथा २५) महीने से कम को नही मिलेगा इससे मैं उस को वडी प्रीत से रखता हूं आप के पास जव कुछ भाषा आदि वस्तु न पहुचे आप निश्चय लिख भेजा कीजिये कि अमुक वस्तु नही आई सो जलदी भेजो और जहां तक होगा वुहत शीघ्र आप की आज्ञा का पालन किया जायगा परन्तु यह न लिखना चाहिये कि अमुक मनुष्य कमचोर है वा हरामखोरी करता है क्योंकि एसे अप शब्द के सुन्ने से उस की प्रीति आप से हट जाती है और वैमनस हो कर वुह चला जाता है फिर हम को वैसा मनुष्य मिलता नही इस मैं यन्त्रालय के प्रबंध मेहरज होता है नही [तो] आप सर्वस्य मालक ही है जिस का अपराध देखैं निश्चय लिखें कोई क्यों न हों पर आप एसा पत्र अलग मेरे नाम भेज दिया करै जव मैं उस का उत्तर लिखू और मेरा उत्तर यथोचित न समझा जाय तव आप जी चाहै जिस को वैसा लिखै। महाराजा हुलकर ने १ वर्ष से वेदभाष्य वंद कर दिया और जो रुपैया चाहिये सो भी नहीं भेजा यदि उन के कारा-वारी से मुलाकात होय तो जिकर कर दैना ।

आपका चरण सेवक

सुन्दरलाल

---

१. यह विज्ञापन कहां दिया गया, हमें ज्ञात नहीं हुआ ।

[पूर्ण संख्या २८५] पत्र

मु: **चीखली** जिल्ले सुरत, वाया बिल्लिमोरा.
ता० २६-१२-८१[1]

ॐ

नमः सर्वात्मने श्रीजगदीश्वराय ।
॥ विज्ञापन पत्र ॥

स्वति श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य अनेक गुण सम्पन्न विराजमान श्रीमद्वेद विहिताचार्य धर्म निरूपक श्रीमच्छ्रेष्टोपमा युक्त सकलोत्तम गुण भूषित जगद्विख्यात पंडित श्रीयुत स्वामी दयानन्द सरस्वति जी प्रति चीखली जिल्हे सूरतसेली० आज्ञानुयायी सेवक कविमनः सुखरामत्र्यम्बकराम के साष्टांगदंडवत् प्रणाम आप, आप की परमपवित्र सेवा में मान्य कीजिये. विशेष नम्रतापूर्वक विनंति यह हैं कि, परम दयालु परमात्मा की कृपा से और आप जैसे परम प्रतिष्ठित सद्गुरू की सहाय से मैं कुशल और आनंदित हूं आप की कुशलता का वर्त्तमान समाचार से ज्ञात होने को सेवक शुद्ध अंतःकरण से प्रतिदिन अत्यंत उत्सुकता पूर्वक मार्ग प्रतिक्षा कर रहा हैं अर्थात् आप आप का महा अमूल्य समय में से मात्र एक पांच मिनिट का अवकाश मिला कर मैं एक आपका अज्ञान— बालक की हठ पूर्ण करने के लिये पत्र दर्शनका अतिदुलभ लाभ देने को श्रम लेके कृपा कर दीजिये सेवक की उक्त दरखास्त को आप की ओर से यत्किंचित् भी टेका मिलने से सेवक का अन्तःकरण में कृतार्थ हो गये समान आनन्द पैदा होवैगा ! आशा करता हूं कि इस पत्र में अधोलिखित और निम्नलिखित हकीकतादिक के सम्बन्ध में आप का हस्ताक्षर सहित पत्रिका अवश्य आप की और से शीघ्र प्राप्त हो जावैगी इतना आरंभ ही से विस्तार करने का सत्य क्या प्रयोजन हैं सो आपने यथावत् समज लिया होगा तो भी निवेदन करता हूं कि, सेवक ने आप के ऊपर पूर्व एक पत्र भेजा था जिन को आज अनुमान न्यून से न्यून पांच—छे मास हुए होगें[2] तौ भी उन का अब तक मुझ को कुछ भी

---

१. पौष शु० ६ स० १९३८ वि० । यह पत्र म० मुंशीराम द्वारा सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १, पृष्ठ २८९-२९२ पर छपा है।

२. यह पत्र हमें प्राप्त नहीं हुआ।

उत्तर मिला नहीं है. अस्तु इस बात का मेरे मन में कुछ अंदेशा नहीं हैं. क्योंकि, आप को ऋग्वेदादि मन्त्र भाष्य बनाने में भोजन करने की भी फुरसत मिलनी मुश्कील हैं तो पत्र आदिकों के यथावत् उत्तर लिख भेजने का अवकाश मिलना यह तो केवल असंभवित ही हैं सो मैं बरोबर जानता हूं.

स्वामिजी महाराज !,

जैसे चंदन वृक्ष के मूल मे भुजंग रहते हैं, शाखा के विषै बंदर, शिखर के विषै विहंगम, और कुसुमादि के विषै भ्रमरादि प्राणी निवास कर के उन को पीडा करते हैं तथापि चन्दन वृक्ष अपना शीतलता आदि गुण कदापि छोडता नहीं हैं !!! वैसे ही मेरे जैसे अज्ञान जन निरर्थक आपको, आपने आरंभित उत्तमोत्तम धर्म कार्य मे वारम्वार ध्वंश कर के अमोल्य काल को व्यर्थ व्यतित करने की युक्ति रच के नाहक सताते रहते हैं तो भी आप अपना धैर्य से कभी मुक्त होते नहीं हों किन्तु शांत वृत्ति रख के बड़ी गम्भीरता से सभो के चित्त का समाधान करते हो यह बात मुझे कुछ कमती आश्चर्य पैदा करने वाली नहीं है !!! हम आर्यावर्तीय—भारत वासियों का और भारत भूमि का धनभाग्य है कि, जिस समय इस देश भर मे चारो ओर पाखंड धर्मरूप अमावास्या का घोर अन्धकार फैल रहा है ऐसा अन्धकार का लाभ ले के केवल स्वार्थी ठग धर्माचार्य रूपी शृगाल आदिक हिंसक प्रानी अपना अपना स्वार्थ–शिकार–शव के ऊपर बडे आनन्द मे जहां वहां सर्वत्र भूक रहे थे—हैं उस समय वहां आप जैसे भारत भूषण पुरुषोत्तम नरवीर पंचानन को किम्वा अज्ञान तिमिर छेदक दिवाकर को परम दयालु परमा[त्मा] ने उत्पन्न किये. जिन की भयंकर गर्जना और प्रचंडशब्द तेज सून वा देख क उक्त प्रानी केवल भयभीत हो गये हैं और दूर ही से देख वा सुन के भागते फिरते हैं और छीप जाते है किन्तु किसी की क्षण भर भी सन्मुख होने की शक्ति दिख पडती नहीं हैं अर्थात् सब विमुख ही हो गये हैं।

अब आप को विदित् करने को मेरी मूल मतलब क्या हैं सो विदित् करता हूं:—

स्वामी जी महाराज, आरंभ से लेके आज दिन पर्यंत आपने जिन जिन विषयों के ऊपर जहां जहां व्याख्यान दिये हैं वह सभों का संग्रह (सत्यार्थप्रकाश के बिना अन्य) पुस्तक के आकार मे मुद्रित होके

प्रकाशित हुआ हैं ? और यदि कोई लिया चाहें तौ कहीं भी मिल सकेगा ? "अहमदाबाद गुजरात वर्नाक्युलर सोसैटी ने अवल्ल 'दयानन्द सरस्वति नु भाषण' नाम ग्रन्थ की मात्र एक प्रत उक्त पुस्तकालय मे रखने के लिये खरीद करके ली हैं जिनकी कीमत रु० ०।।।) हैं'[1] वह पुस्तक कौनसा हैं ? मंत्र भाष्य मे जो लिस्ट दिया जाता हैं सो मुझे यथावत् मालुम हैं अर्थात् उस्से भिन्न अब यहां से इस पत्र बंद करने की आज्ञा लेता हूं. इस पत्र बडी त्वरा से लिखा गया है इस लिये अनेक दोष आपके दिखने मे आवैगा वह सभो को कृपा करके क्षमा कीजिये और लेके प्रति उत्तर का लाभ सत्वर दीजिये. ईति विज्ञप्ति । किमधिकम् ता० २६-१२-८१[2]

मुः—चीखली जिल्ले सूरत.	हस्ताक्षर कविमनः
वाया बिली मोरा.	मुखराम त्र्यम्बकराम

—:०:—

[पूर्ण संख्या २८६] पत्र

ओं[3]

सद्धे श्री बराजमान स्कल गुनन्धान अनेक उपमा योग स्वामी दयानन्द स्रेस्तीजी इते लखते नागोद से पण्डित भ्वानादत का न्मसते बंचना जब आप अजमेर में थे सो आप के वास्ते कमलनेन के पास चठी भेजी थी[4] सो आपने कहा था के नागोद के राजा जब बुलावेंग हम आवंग प्रनतु राजा उचहरे कइ साल से रहते है और मेरे उपदेस से यहां के आदमी आपके द्रसन चाहते है और राजा के खजानची

१. 'दयानन्द सरस्वती नु भाषण' नाम की पुस्तक को अहमदाबाद की 'गुजरात वर्नाक्यूलर सोसाइटी' के पुस्तकालय में ढूंढ़ने का बहुत प्रयास किया, परन्तु हमें यह पुस्तक नहीं मिली । यह 'ऋषि दयानन्द के पूना-प्रवचनों' का गुजराती अनुवाद है । विशेष देखिये 'ऋषि दयानन्द सरस्वती के शास्त्रार्थ और प्रवचन' पृष्ठ २५३; 'पूना और बम्बई प्रवचन' पृष्ठ १३ ।

२. पौष सु० ६, सं० १९३८ वि० ।

३. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १, पृष्ठ २२५-२२६ पर छपा है ।

४. यह पत्र हमें उपलब्ध नहीं हुआ ।

तु[ल]सीदास बाजपइ बहोत इजतदार अपका द्रसन चाहते है सो जब बमबइ से वापस आवगे तो आप हमको जरूर ही द्रसन देना और आपके आने से यहां स्माज भी हो जावेगा और राजा सुनक उनहरा से जरूर द्रसन करेंगे इस्वास्ते प्रयाग के रास्ते में सत्तना इसटेसन है है जस्वकत आप लखें उतने आदयं के वास्ते स्वारी द्रकार हो भेज दे और राजा भी वेदांती है आपका बड़ा स्तकार होगा क्यों के आप प्रयाग जावे होगा रस्ते मे सतना रेल का इसटेस्न है दो चा रोज को आवन जवाव जलदी भेजयो और जरूर आयो जवाब पण्डित भ्वानीदतनका न्वीस—नागोद रयास्त।[1]

—:o:—

[पूर्ण संख्या २८७] पत्र-सूचना

[मुन्शी लक्ष्मणस्वरूप वकील का पत्र][2]

—:o:—

[पूर्ण संख्या २८८] पत्र

ओ३म्[3]

अविद्यांधकार निवारक गुरूत्तम श्रीयुत स्वामी दयानन्द सरस्वती

---

१. इस पत्र पर तिथि नहीं है। पत्र से विदित होता है कि इस पत्र में अजमेर आर्यसमाज के मन्त्री कमलनयन का तथा नागोद में समाज की स्थापना की सम्भावना का उल्लेख किया है। अत: यह पत्र सं० १९३८ में अन्तिम बार स्वामी जी महाराज के बम्बई जाने के समय लिखा गया था। बम्बई में इस बार स्वामी जी महाराज सं० १९३८ पौष शु० १० से सं० १९३९ आषाढ़ शु० ८ (३०-१२-८१ से २४-६-८२) तक रहे थे। अत: इसी समय के मध्य में कभी लिखा गया होगा।

२. इस पत्र की सूचना अग्रिम पूर्ण संख्या २८८ (पृष्ठ ३७०, पं० १) से मिलती है। लक्ष्मणस्वरूप वकील का एक पत्र आगे पूर्ण संख्या ३०८ (भाग ३) पर छपा है। पूर्ण संख्या २८८ से विदित होने वाला पत्र अगले पूर्णसंख्या ३०८ के पत्र से भिन्न रहा होगा, क्योंकि दोनों में लगभग साढ़े तीन मास का अन्तर है।

३. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १, पृष्ठ ३८९-३९० पर छपा है।

जी महाराज नमस्ते आज ही एक पत्र मुन्शी लक्ष्मण स्वरूप वकील ने भी आप के पास भेजा है[1] उस से मुन्शी बख्तावरसिंह के मुकद्दमे का हाल प्रकट हुवा होगा कल शनिवार को मुन्शी जी शाहजहांपूर जावेंगे और इन्हीं पंचों से फैसला कराने की नालिश करेंगे ।।

मैंने आप को यह पत्र इस लिये लिखा है कि मुम्बई में १ **शरीफ-स्वालह मुहम्मदी का पुस्तकालय** है उसमें **वेद स्वर विधान**[2] नामक १ पुस्तक है मैंने कई पत्री आर्य्यसमाज मुम्बई और उक्त पुस्तकालय में भेजी हैं परन्तु कुछ उत्तर न मिला अब मुझ को पूरी आशा है कि पुस्तकालय का और पुस्तक का पता लग जायगा क्योंकि आप सब प्रकार खोज लगा लेंगे इस कारण आप से प्रार्थना कर्ता हूं कि आप इस पुस्तक को मंगा कर देखिये कि कैसी है अथवा खरीदनी चाह्ये वा नहीं यदि अच्छी हो तो १ प्रति यहां भी भेजिये । और १ यह आप से पूछना चाहता हूं कि द्रोपदी के ५ प्रति थे या क्या ।

आप का दासानुदास
ललिता प्रसाद पुस्तकाध्यक्ष
आर्य्यसमाज मेरठ

ता० ६ ज० ८२[3]

—:०:—

[पूर्ण संख्या २८६] तार-सारांश

महाराज जी मैं आ गया हूं । अब कृपा करके जल्द दर्शन दीजिये ।[4]

तुकोजी राव होल्कर (इन्दौर)

—:०:—

१. यह पत्र हमें उपलब्ध नहीं हुआ ।

२. यह पुस्तक हमारी दृष्टि में नहीं आई । इसे ढूंढना चाहिये ।

३. माघ कृ० २ सं० १९३८ वि० ।

४. यह अभिप्राय दयानन्द दिग्विजयार्क भाग ३, पृष्ठ ४७ की टिप्पणी में है । तथा पं० लेखराम जी कृत जीवनचरित हिन्दी सं० पृष्ठ ५९५ पर भी निर्दिष्ट है । तिथि तारीख अज्ञात है ।

[पूर्ण संख्या २९०]　　　　पत्र

वैदिक यन्त्रालय प्रयाग

संख्या ४८।　　　　ता० १ फरवरी सन् १८८२[1]

श्री स्वामी जी महाराज जी योग्य पं० सुन्दर लाल वा दयाराम तथा भीमसेन का अभिवादन विदित हो

पत्र आप का आया[2] हाल जाना। अब कुल पुस्तक २० पौंड के कागज पर छपते हैं। पहिले २४ पौंड पर वेदभाष्य और २० पौंड पर अन्य पुस्तक छपते थे सो ज्ञात हो। और आप की आज्ञानुसार वर्ष वर्ष का पुस्तकों का हिसाब तयार करके भेजा जावेगा। परन्तु प्रयाग में यन्त्रालय १ अप्रेल सन् १८८१ को आया है सो अब ३० अप्रेल[3] सन् १८८२ को वर्ष पूरा होगा। सो १ मई तक मैं हिसाब तयार करके भेजूंगा। लाला बल्लभदास जी का हिसाब पिछले रजिष्टरों में मिला नहीं है इस से नहीं लिखा अब फारसी के रजिष्टर जो लाला शादीराम के लिखे हैं उन को पं० सुन्दरलाल जी आप खुद देख कर अब के पत्र में आप को लिखेंगे। और हम ने छब्बीस २६ फरमें का ठेका जो दिया था सो न चल सका इस में पं० देवीप्रसाद और विश्वेश्वर सिंह जी ने भी बहुत प्रयत्न किया तथापि न चल सका सो अब २० फारम से अधिक एक महीने में नहीं छप सकते। तथा अव्ययार्थ के पुस्तक में कोठे बनाने से और भी देरी हुई। और अब आख्यातिक का भूमिका सहित छ, फारमा छप गये हैं आगे को छपता जाता है। और इस पुस्त[क] के बिलकुल लौटने और नवीन बनाने में सब महाभाष्य सिद्धान्त और काशिका पुस्तकों का होता है इस से छपने के लिये नवीन कापी बनाये में देर होती है और आप के यहां से ठीक ठीक शुद्ध कापी आवे तो इतनी ढील न हो।

कागज का प्रबन्ध मुम्बई से हो जाना बहुत ही अच्छा है। इस

---

१. माघ शु० १३ सं० १९३८ वि०। यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्र व्यवहार' भाग १, पृष्ठ ६२-६५ तक छपा है।

२. यह पत्र उपलब्ध नहीं हुआ। इसी पत्र के आधार पर ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन में पूर्ण संख्या ६१२ भाग २, पृष्ठ ६५४, पर पत्र सारांश बनाकर छापा है।

३. १ अप्रेल के अनुसार ३१ मार्च को वर्ष पूरा होता है।

का प्रबन्ध आप निश्चित कर लीजियेगा और अपने सामने एक बेल (रोल ?) कागज का जिस में २४ रीम होते हैं वह भेजवा दीजियेगा। चाहे जसे पौंड का जैसा आप मुनासिब जानें। और मेरे पास कागज वाले का पता लिख भेजिये कि मैं आगे को उसी से कागज मगाया करूं। और छपने की श्याही का भी प्रबन्ध वहीं से कर दीजिये वहां से कागज के साथ श्याही भी आजाया करे। आप ने जो जो पुस्तक जब जब जहां जहां मंगाये बराबर भेजे। वे पुस्तक कौन से हैं कि आप ने मंगाये और यहां से न गये। जो आप की भेजी चिट्ठी ही मेरे पास न आई हो तो मैं लाचार हूं जंसे कि आप ने महाराजे उदयपुर का इश्तिहार भेजा[1] और मेरे पास आज तक नहीं आया है कहीं डाक में मारा गया मैं लाचार हूं। अब उस विज्ञापन को कृपा करके शीघ्र भेज दीजियेगा। मेला[2] अच्छा हुआ भीड़-भाड़ ३०००००० तीस लाख करीब बहुत हुई। फिर बीमारी हैजे की अमावास्या को जो फैल गई इस से सब मेला उठा दिया गया। मासिक हिसाब २४ जनवरी को आप के पास भेजा है सो पहुंचा होगा। देर या हुई कि आर्य्यभाई बहुत लोग वैदिकयन्त्रालय में ठहरे थे उन के आदर सत्कार से तयार न कर सका। सो माफ करना और सब लोग यहां से प्रसन्न गये। हम लोगों को महाराजे उदयपुर की पदवी ठीक ठीक मालूम नहीं थी और आप का भेजा विज्ञापन आया नहीं फिर सज्जन कीर्ति सुधाकर जो अखबार उदयपुर से आता है उस के आदि में जो महाराजा की पदवी लिखी है वही हम ने छपवादी[3] सो आप के देखने को भेजते हैं सो देख लीजिये। आगे आप जैसी आज्ञा करें उन के विषय में फिर छपवा दिया जावे। जब तक आप के वेदाङ्गप्रकाश और दूसरी बार सत्यार्थप्रकाश न छप जायगा तब तक इस यंत्रालय में दूसरा पुस्तक नहीं छपेगा। और जो आवश्यक होगा उस में आप की आज्ञा ली जावेगी। और मेले में कोई प० वा मुंशी नहीं मिला।[4]

---

१. इस इश्तिहार का परिज्ञान हमें नहीं हुआ।

२. अर्थात् कुम्भ का मेला।

३. कहां छापा, क्या छापा हमें इस विषय में कुछ भी ज्ञात न हो सका।

४. यहां तक का यह पत्र पण्डित भीमसेन जी के अक्षरों में लिखा हुवा है इस के आगे राव बहादुर पण्डित सुन्दरलाल जी के अक्षरों में अङ्कित है। म० मुंशीराम।

आगे हम को टैप अधिक ढलवाने के वास्ते सीसा और सुरमा चाहिये विलायती देसी जो मिलता है उससे काम नहीं चलता यदि मुंबई से उस के मंगाने का प्रबंध हो जाय तौ बहतर है ॥ आगे मुनसी और पंडित की हम को भी बड़ी तलास है पर ढब का कोई मनुष्य नहीं मिलता हे। लाहौर से लाला जवाहिर सिंघ मंत्री आर्य्यसमाज के आये उन से भी कहा उन्होंने कहा कि प्रयाग मै तो नही पर लाहौर मे वुहत मिल जायंगे और उन्होंने यह भी कहा कि जो यह यंत्रालय लाहौर मै उठ जाये तौ वहां के समाज के मेमबर वडी उन्नति करें मैने कह दिया कि मुझ को कुछ उजर नहीं है श्री स्वामी जी महाराज की आज्ञा मंगा लो सो निश्चय है कि इस मध्ये मै आर्य्य समाज के लोग आपको लिखें[1] ॥ हिसाव आप को सब चीज का वुहत दुरुस्ती के साथ भेजा जायगा पर हाल में कोई मनुष्य एसा नही हे कि जो अछे प्रकार से काम करे जब तक वावू यहां थे तब तक तौ वुह खुद देखते भालते थे जब से वुह चले गये है तब से सिरफ दयाराम ही है सो लिखने पढ़ने का काम जेसा चाहिये वेसा नही होता है मै भी इस बात को खूब जानता हूं पर जब तक को मुनसी अच्छा नही मिलेगा तब तक यह ही दिक्कत रहेगी—और पं० भीमसेन भी कहते है कि हमारे पास काम वुहत वढ गया है सो यदि आप की आज्ञा होय तौ ज्वालादत को फिर वुला लै १५) महीना लेगा पर उस को आप की आज्ञा विना वुला नही सकते है ॥

—:०:—

[पूर्ण संख्या २९१] पत्र

॥ ओ३म् ॥

॥ स्वामी जी महाराज श्री दयानंद सरस्वती जी की सेवा मे—

नमस्ते पत्र आप का प्राप्त होने[2] से परम प्रमोद हुवा आपनै गो

---

१. यह पत्र पं० चमूपति जी द्वारा सम्पादित ऋ० द० का पत्रव्यवहार भाग २, पृष्ठ ४३ पर छपा है।

२. यह पत्र हमें नहीं मिला। इसी पत्र के आधार पर ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन में पूर्ण संख्या ६१५, ६१६ भाग २, पृष्ठ ६५६, ६५७ पर पत्र-सूचना वा पारसल-सूचना बनाकर छापी है।

रक्षा निमित्त आधीशो के हस्ताक्षर करवाने के विषय में लिखा सो निवेदन किया गया और आज्ञानुसार लिखा जाता है कि आप अपनी प्रतिज्ञानुसार वह पत्र शीघ्र प्रेषण कीजिये जिस पर हस्ताक्षर करवाणे अपेक्षित है आपने अपने पत्र में लिखा कि तुमारे पास उक्त विषय का पत्र मैंने प्रेरणा किया परन्तु मेरे दृष्टि पथ न हुआ मरुस्थलेश्वर भी यहां मधु[1] मास के प्रारम्भ में आवने वाले है यह अवसर भी उत्तम है । इत्यलम् सं० १९३८ फाल्गुन कृष्णा ७ शुक्रे[2] ।

आपका छात्र कविराजा श्यामल दास राज्यानी

उदयपुर वास्तव्य

—:o:—

[पूर्ण संख्या २९२] पत्र

खुबचंद
केवलचंद
नं० १७९

श्रीनासीक[3]

॥ श्री ॥

॥ श्रीयुत दयानन्द स्वामी जी
मुम्बई

॥ नमस्ते

केवलचंद खुबचंद सेठ के नाम से आज तक वेद भाष्य के हिसाब बाकी समेत आ वल से, वसुल समेत उतार कर भेजने की आज्ञा होने के वास्ते बीनंती है—

द० केवल का

ता० १५ फेब्रु० ८२ बुद्ध०[4]

—:o:—

[पूर्ण संख्या २९३] पत्र

ओ३म तत्सत्[5]

श्रीयुत पूज्यवर विद्वज्जन भूषन श्री ६ पण्डित दयानन्द सरस्वती

---

१. अर्थात् चैत्र मास में। २. १० फरवरी १८८२।

३. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्र व्यवहार' भाग १, पृष्ठ २९८, २९९ पर छपा है। ४. फाल्गुन कृ० १२ सं० १९३८ वि०।

५. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्र व्यवहार' भाग १, पृष्ठ ९२ पर छपा है।

जी महाराज को अभिवादन आपु की कृपा से मैं प्रशन्न हूं आपु की प्रशन्नता उस सर्व शक्तिमान् से नित्य वा चाहता हूं मैं मैनपुरी से व सवव मुकदमैं भरोलि के हाजिर होने से रह गया कि भरोलि वालो ने अपने मुकदमैं की पेरवी को कहा कि उस की पत्री मैनपुरी भेज चुका हूं आशा है कि पहुची होगी अपना दास मुझ को समझ कर कृपा का पात्र वनाऐं हिये विनती यह है मंने सुना है कि मोहनलाल साहूकार वहीं हैं उनसे आपु कृपा करिकै आज्ञा दै देवे कि एक जेवघडी मेरे वास्तै खरीदि करिकै भेजि देवै उसे वास्तै ३०) रुपै में भेजता हूं ओरु जो कुछ जादा लगि जावे सो उस [का] पता ठीक ठीक लिखें वहा को भेजि दूंगा ओरु ४०) आपु के पास धरमार्थ में भेजता हूं उसमें २०) खास मेरे ओरु २०) अमरचंद कोठीवाल रुपधनी के कुल्लि ७०) रुपैया का मनीआर्डर करिकै भेजता हूं

तारीख २५ फरवरी[1] फालगुण सुदी ८ सम्वत् १९३८

आपुका दास—

जालिम सिंह रुपधनी का

—:o:—

[पूर्ण संख्या २९४]   मनीआर्डर-सूचना

[जालिमसिंह रुपधनी द्वारा भेजा गया ७० रु० का मनीआर्डर][2] २५ फर्वरी १८८२।

—:o:—

[पूर्ण संख्या २९५]   पत्र

वैदिक यन्त्रालय प्रयाग

संख्या २७५   ता० २७ फ० सन् १८८२[3]

नमस्ते !

भगवन् प्रतिष्ठित आचार्य्य अभिवादये

पत्र आप का आया[4] हाल विदित हुआ। रामाधार वाजपेयी

---

१. सन् १८८२।   २. इस मनिआर्डर की सूचना पूर्व मुद्रित पूर्ण संख्या २९३ के पत्र से मिलती है।

३. फाल्गुन शु० १० सं० १९३८ वि०। यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १: पृष्ठ ४२, ४३, ४४ पर छपा है।

४. यह पत्र हमें उपलब्ध नहीं हुआ। इसी पत्र के आधार पर ऋ० द०

लखनऊ ने जो हिसाब[1] जमा खर्च और बाकी का भेजा है उस हिसाब के रजिष्टर यहां नहीं हैं मेरठ में हैं वे आवें तो मेल किया जावे। छपने के विषय में भैरों कम्पोजीटर जब से चला गया तब से कम्पोजीटरों का प्रबन्ध ठीक ठीक नहीं चला इसी से कम छपा अब ता० १ मार्च से पं० देवी प्रसाद ने स्वीकार किया है कि हम प्रतिदिन देख कर प्रेस का प्रबन्ध करेंगे। सो अब अगले महीने से जिस महीने में जितना छपेगा सकारण आप को लिखा जावेगा। और इस महीने के भी हिसाब के साथ लिखेंगे। अब आप भी कापी शीघ्र भेजा करें ऋ० की कापी के लिये आप को कई बार लिखा अब तक नहीं आई जब कापी न होगी तो भी छपने में हानि हो सकेगी। पुस्तक मंगाने के विषय में आप का एक ही पत्र आया था। उस को देख कर शीघ्र ही पुस्तक भेज दिये आपके पास पहुंचे भी होंगे। परन्तु प्रथम पत्र में बीस बीस लिखे थे अब दश दश लिखे हैं गोकरुणानिधि अब नहीं रहा। और शिक्षापत्री नहीं भेजी थी सो अब १ भेजते हैं। वेदभाष्य का मासिक अंक यजु० ३४। ३५। और यजुर्वेद के पत्रे भाषा बना के ३३८-से-३६३ तक भेजता हूं बाकी पीछे भेजूंगा।

भवदाज्ञानुसेवी
भीमसेन शर्म्मा

[2]पेहले पत्र मे शिक्षापत्री नही लिखी थी। दूसरी चिट्ठी मे है सो जाननो-और सेवकलाल जी को कागज का हिसाव भेजदीना है जो तिनों ने मागा था आर मुन्शी इन्द्रमणी से मे ने तगदा किना तो विनो ने जवाव दीया कि हम ने पार साल के अघन[3] तक का हिसाब आगरे मे स्वामी जी से कर लिना है सो आप ने क्या वसूल बाकी

के पत्र और विज्ञापन में पूर्ण संख्या ६२१ क (भाग २, पृष्ठ ६५६) पर पत्र-सूचना छापी है।

१. रामाधार वाजपेयी के नाम ऋ० द० का पूर्ण संख्या ६१६ भाग २ पृष्ठ ६५८ का पत्र भी देखें।

२. पण्डित भीमसेन जी के पूर्व २७ फरवरी १८८२ (फाल्गुन शु० १० स० १९३८) के पत्र पर ही इस पैरे का लेख अन्य प्रकार के अक्षरों मे है। लेख के अन्त में लेखक का नाम नहीं है परन्तु अनुमान से ज्ञात होता है कि यह लेख वैदिक यन्त्रालय के प्रबन्धकर्त्ता का होगा। म० मुंशीराम

३. अर्थात् अगहन।

कीना है और मैं विन से कब से हिसाब रखू सो लिखना और लाला मदन सिंह बी० ऐ० शाहाबाद जिला अम्बाले के कहते है कि स्वामी जी को लाहौर मे आय थे तब मैंने २।) विन को दिया था सो आप कृपा करके लिखना मेरे यहा ना अंक मे छपा ना वही मे जमा है ता० ११ अप्रेल सन् ८० से लेके आज तक की है वहो जमा खर्च की आगे की मेरठ मे है—

—:o:—

[पूर्ण संख्या २९६] पारसल-सूचना

[वेदभाष्य का मासिक अंक ३४-३५ और यजुर्वेदभाष्य के पत्रे ३३८-३६३ तक][1]

—:o:—

[पूर्ण संख्या २९७] पत्र

ओम्

लखनौ ता० १ मार्च सन्न १८८२[2]

स्वामि जी नमस्ते

आपका कृपा पत्र आया तारीक २० का लिखा हुआ[3] शनीश्चर के दिन ता० २६ को मिला और जो आप ने लिखा हाल मालूम हुआ और मैंने वैदिक यन्त्रालय को लिखा है कि मेरा हिसाब शीघ्र भेज लेवें और आप की कृपा से मेरे पास आपका हिसाब आद्यंत तक बहुत ठीक है जिस की एक नकल आप की शरण में भेज दी है और उसी की नकल वैदिक यन्त्रालय में पहुच गयी है और आप के कार्य्य के लीये तन मन और धन अर्पण है जिस कार्य्य मे आप सर्वदा प्रवर्ति[त]

१. इस पारसल की सूचना पं० भीमसेन के पूर्व मुद्रित पूर्ण संख्या २९५ के पत्र (पृष्ठ ३७६) में मिलती है।

२. फा० शु० १२ सं० १९३८ वि०। यह म० मुंशीराम द्वारा सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १, पृष्ठ ३३८-३३९ पर छपा है।

३. यह पत्र ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन के पूर्ण संख्या ३१९ (भाग २, पृष्ठ ६५८) पर छपा है।

हैं और कोई गडवड यहां के आर्य्यसमाज में नही है और बहुत उत्तम नेम आर्य्य में चलने हैं ॥ हम लोगों को अत्यंत आनन्द की अवस्था है कि जो आप व्याख्यान गोरक्षण के विषय में होता है आशा है कि ऐसे आप के दृढ़ पुरुषार्थ से ईश्वर की कृपानुसार आर्य्यावर्ति देश की बहुत शीघ्र उन्नयती होगी ।। विदित हो कि हम लोगों की अभिलाषा आप के दर्शन की बहुत है सो जो आप को अवकाश हो और परिश्रम्य न हो तो ज्येष्ट मास में अवश पावन कीजिये और अगर आप को परिश्रम्य न हो तो १४ अष्ट पहलू मूगों[1] के दाने भेज दीजिये जो कि वज[न] में १४ तोले के होंय और कृपा कर के उन ककीमत स्वहस्ताक्षर कर के पत्र में परेरत कर दीजीये ।।

आप का..................

रामाधार बाजपेई

वा यदि कोइ भद्र पुरुष वहां का लखनउ की कोई वस्तु मागे तो हम भेज देंगे और अगर हम किसी की इच्छा करै तो वह भजदे यसा कुछ प्रवन्ध कर दिजिए ॥

—:o:—

[पूर्ण संख्या २९८] पत्र

ओ३म्[2]

श्रीस्वामीची महाराज नमस्ते

आप का २४ फर्वरी का लिखा पत्र बाबू शिवनारायणजी के पास पहुंचा[3] यहां तक तो हाल आप को मालूम हो गया होगा कि लाला बखतावरसिंह ने पंचायत में अपना मामला फसल कराने से इन्कार किया उसके पीछे शाहजहांपुर के मातहत जज ने यहां १०) रुपये के कागज पर नालिश की गई कि जज मातहत इन ही पंचो से मुकद्में का फैसला करावे इसके लिये ९ फरवरी मुकर्रर हुई यहां से मुन्शी लक्ष्मण स्वरूप और मुन्शी कामता प्रसाद परवी मुकद्में के लिये भेजे

१. मूंगों अर्थात् प्रवालों के।

२. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्र व्यवहार' भाग १, पृष्ठ ३१७-३१९ पर छपा है।

३. यह पत्र उपलब्ध नहीं हुआ। इसी पत्र के आधार पर ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन में पूर्ण संख्या ६२२, भाग २, पृष्ठ ६६० पर पत्र-सूचना छापी है।

गये लाला बख्तावरसिंह ने अपनी तर्फ से बारिस्टर नियत किये ३ दिन तक बहस रही निदान हाकिम ने हमारा दावा खारिज किया और खर्चा अपना अपना अपने जिम्मे। हाकिम ने यह भी कहा कि जो तुम को दावा है तो नम्बरी नालिश अदालत में करो हम पंचायत में मुकद्दमा नहीं भेजेंगे अभी नकल मुकद्दमें की नहीं आई है जब नकल आ जायगी फौरन इस हुक्म का अपील हाईकोर्ट में किया जायगा—

आपने सुना होगा कि कर्नल अल्काट साहिब २५ फरवरी को मेरठ में तशरीफ लाये और यहां थियोसाफीकल सुसाइटी की शाख नियत हुई अब संभव है कि कोई मिम्बर आर्य्यसमाज थियोसाफिकल सुसाटी में होना चाहे या थियोसाफीकल का मिम्बर आर्य्यसमाज में भरती होना चाहे तो इस अवस्था में क्या किया जावे आया थियोसाफीकल सुसाटी के मिम्बर को आर्यसमाज में भरती करें या नहीं और किसी आर्य को सुसाटी में भरती होने की आज्ञा दे या नहीं और अगर नहीं तो क्यों परन्तु आप को इस्के उत्तर लिखने में इस बात का भी ध्यान रहे कि पहले से भी यह चला आता है कि एक ही मनुष्य दोनो जगह का मिम्बर है और न दोनो सुसाटियों के नियमों में यह बात है कि एक का मिम्बर दूसरी जगह शामिल न हो—

इस्का उत्तर शीघ्र दीजिये।

९।३।८२।[1] मैं हूं आपका सेवक
और समाज का मंत्री
राम शरणदास, मेरठ
समाज की तर्फसे नमस्ते पहुंचे

—:०:—

[पूर्ण संख्या २९९]   पारसल-सूचना

[पं० कृपाराम द्वारा भेजा गया ब्राह्मी का पारसल][2]

—:०:—

१. चैत्र कृ० ४ सं० १९३८ वि०।

२. इस पारसल की सूचना ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन पूर्ण संख्या ६३६ भाग २, पृष्ठ ६६७ के पत्र से मिलती है। पारसल १०-१२ मार्च के आस पास भेजा होगा।

[पूर्ण संख्या ३००] पत्र

भारतमित्र कार्यालय।[1]

नं ६० क्रौस ष्ट्रीट कलकत्ता, १८८

ओं श्री १०५ मान् स्वामि दयानन्द सरस्वति

स्वामि समीपेशु नमोनमः

महाशय !

निवेदन यह है कि आप के भेजे हुए दो पत्र[2] पहुंचे-गोरक्षा एक बड़ा उत्तम और आवश्यक काम है आशा है कि सर्व शक्तिमान आप के इस शुभ परिश्रम को सफल करेंगे जिस्से गवादिक पशु इस दुःस्सह दुःख से बचें और जगत का अतीव उपकार होगा हमारे यहां एक ज्ञान वर्द्धिनी नामक सभा है उस्में आप के भेजे हुए कागज विचारार्थ पढ़े गये सो सब सभासदों की यही तजवीज हुई कि एक दिन केवल इसी शुभ काम के निमित्त सभा की जावे और उस्में शहर के माननीय देश हितैषी महात्मा निमन्त्रित किये जावें-क्योंकि इस्में बहुत लोगों के दस्तखत उन के द्वारा हो जावेंगे

सो स्वामिन् यह सभा होने ही वाली थी कि हम लोगों को एक झंझट सी आपड़ी जिस्से यह शुभ और अत्युत्तम काम कुछ दिन के लिये रुक गया— वृत्तांत यह है कि १६ मार्च के अखबार में हम ने एक प्रस्ताव हुगली पुल के ठेकेदार की बाबत छापा है जिसपर ठेकेदार साहब नालिश करने पर तैयार हैं—इस्में एक शब्द रामफटाका धारी लिखा है यह लोग इस शब्द से अपनी मत निन्दा समझ बैठे हैं आप भी अवश्य कृपा करके इस प्रस्ताव को देखें और यह भी लिखें कि "रामफटाका" तिलक विशेष का नाम है वा नहीं—नहीं तो यह कैसा शब्द है और जो अनुमति लिखने योग्य हो सो अवश्य लिखें और यह भी लिखें कि कलकत्ते आने की भी इच्छा रखते हैं वा क्या —इस स्थान में सदुपदेश की बहुत जरूरत है जब हम लोग आपके

१. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग २, पृष्ठ ६६-६८ पर छपा है।

२. एक गोरक्षा पर सही करनेवाला, दूसरा जिसके अनुसार सही कराना है। देखो ऋ०द० के पत्र और विज्ञापन पूर्ण संख्या ६२८-६२९(भाग २, पृष्ठ ६६३-६६५)।

श्रीमुख से उपदेश सुनेंगे तो अपना भाग्योदय समझेंगे और कृतार्थ होंगे—

झंझट दूर होने पर उक्त काम में अच्छी तरह से मनोयोग से उद्योग किया जावेगा

रामफटाका शब्द का निर्णय कृपा पूर्वक शीघ्र लिख भेजें और गोरक्षा का एक एक पत्र निम्नलिखत महाशयों के पास भी सीधे बम्बई से भेजदें

१ महाराजा ज्योतेंद्र मोहन ठाकुर कलकत्ता०
२ राजा राजेन्द्रमलिक बहादुर० ,,
३ राजा कमल कृष्ण बहादुर० ,,
४ इंडियन ऐसोसीएशन० ,,
५ बृटश इडियन एसोशीएशन० ,,
६ साधारण ब्राह्म समाज० ,,
७ महर्षि दिवीन्द्रनाथ ठाकुर० ,,
७ सेक्रेटरी फेमली लिटरेरी कलब० ,,

इत्यलं
आपका दास
मनोहर दास क्षत्री
अबैतनिक कार्य्य सम्पादक, भा० मित्र[1]

—:o:—

[पूर्ण संख्या ३०१] **पत्र-सारांश**

सब समाजों को आर्य भाषा पढ़ाई जाने के लिये कलकत्ते को पत्र लिखने को प्रेरित करें।[2]

१९ मार्च १८८२

दयाराम
मन्त्री आ० स० मुलतान

---

१. इस पत्र पर तिथि का उल्लेख नहीं है, परन्तु बम्बई से गोरक्षा सम्बन्धी पत्र भेजने का उल्लेख होने से विदित होता है कि यह पत्र श्री स्वामी जी महाराज के १२ मार्च से १६ मार्च सन् १८८२ तक विविध व्यक्तियों तथा सम्पादकों के नाम बम्बई से भेजे गये पत्र के उत्तर में लिखा गया है। इस पत्र के मध्य में १६ मार्च का उल्लेख होने से यह पत्र मनोहर-दास क्षत्रिय ने १६-२० मार्च के मध्य लिखा होगा।

२. मास्टर दयाराम का मूल पत्र पं० भगवद्दत्त जी के संग्रह में था। वह

[पूर्ण संख्या ३०२] पत्र

अल्मोड़ा ता १६ मार्च ८२[1]

सिद्धीश्री वमवई शुभस्थाने सर्व उपमायोग्य श्री ६ मत्स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के चरणन तल किशनलालसाह अल्मोड़ा वाले का अनेक भांति दंडवत प्रणाम पहुंचे यहां के समाचार भले हैं आप की कुशल मंगल हमेशह श्री भगवान जी से चाहता हूं आपका कृपा-पत्र चैत्र वदी ११ बुधवार संवत् १९३८ का वंबई से मेरे पास पहुंचा[2] जिस वात के लिये आपने मेरे ऊपर आज्ञा करी है मैं जहां तक मुझ से हो सकेगा उद्योग करूंगा पर मैं गरीब आदमी हूं सायद यहां के ब्राह्मण लोग जिन्का यहां वडा जोर है और जो आप से और आप के सेवकों से हमेशह विपरीत रहते हैं इस काम में विघ्न करता न बने इस कारण से कि यह काम एक बनिए के हाथ से होता है समझ के सो मैं आप से एक अर्ज करता हूं कि जैसा आपने दो पत्र मेरे पास भेजे हैं उसी तरह के पत्र तबसील जैल मनुष्यों के पास भेज देवें तो अवश्य वे लोग कोशीस कर के इस काम को कर दगे

[अलमोड़ा]

राजा भीमसिंघ अल्मोड़ा
पंडित बद्रीदत्त जोशी सदर अमीन अल्मोड़ा
ऐ भवानी दत्त जोशी ए ऐ कमिश्नर ऐ
ऐ बुद्धीवल्लभ पंथ इन्सपेक्टर स्कूल ऐ
ऐ गोपीवल्लभ जोशी तहशीलदार गल्ली ऐ

देश-विभाजन के समय नष्ट हो गया। मास्टर दयाराम के पत्र की पीठ पर ऋषि दयानन्द ने जो पत्र लिखा था उसे पं० भगवद्दत्त जी ने ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन में छपवा दिया था। द्र०— पूर्ण संख्या ५८७, भाग २, पृष्ठ ६३८। इसी के नीचे पं० भगवद्दत्त जी ने जो टिप्पणी लिखी है, उसी के आधार पर हमने उपर्युक्त पत्र-सारांश बनाया है।

१. चैत्र शु० १०, स० १९३८ वि०। यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्र व्यवहार' भाग १, पृष्ठ ३९२-३९५ पर छपा है।

२. यह पत्र हमें नहीं मिला। यह गोरक्षा सम्बन्धी पत्र था इसी पत्र के आधार पर 'ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन' भाग २ में पूर्ण संख्या ६३०, पृष्ठ ६६६ पर पत्र-सूचना छापी है।

नैनीताल

लाला अमर नाथ साहूकार नैनीताल
पंडित बद्रीदत्त जोशी वकील ए

राणीखेत

पंडित जीवानन्द जोशी क्लारक चंम्फावत लोहाघाट
लाला तुलाराम वेणीराम साह कोठीवाल अस्कोट
डाकखाना अल्मोडा
रजवार तुश्करपाल तालूकेदार अस्कोट ,, ,,

गढवाल

महराजा टिहरी गढ़वाल
रावल मंदिर बद्रीनाथ ऐ
ऐ ऐ केदारनाथ ऐ
पंडित तारादत्त पांडे हेडक्लारक ऐ
ऐ गंगादत्त उप्रेती ए ए कमिश्नर
ऐ गईदत्त जोशी सदर अमीन

हलद्वाणी

पंडित देवीदत्त जोशी पेश्कार हलद्वाणी

रामनगर

छत्री गोपीवल्लभ चेलवाल पेश्कार रामनगर

अल्मोडा

उधोदास आचारी
पंडित तारादत्त तेवाडी डुबकिया
ऐ शंभूदेव ऐ ऐ
ऐ ईश्वरीदत्त ऐ ऐ

सास्त्री नीलकंठ असकोट मारफत रजवार साहब असकोट डाकखाना अल्मोडा

मैं बहुत चाहता हूं कि आप से भेंट होवे और अल्मोडा के लोग भी जाने की आप कैसे हैं और आपका मत क्या है पर लाचारी अमर है मेरे पास [illegible] नहीं है जो आप को इस शहर में आने के लिये कष्ट दूं ईश्वर [illegible] हीं जो एक बार आप

के दरशन आनन्द बाग में बनारस में हुए थे चार बजे सांझ के समय ता ४ या ५ जनवरी सन ८० में हम चार पांच आदमी आप के दरशन को आये थे बलके आप ने हम से पूछा था कि आप कहां के रहने वाले है हम ने पहाड के कहा था आप ने कहा कि कुछ प्रश्न किजिए क्योंकि पहाड के आदमी अकसर प्रश्न किया करते हैं पर हम लोगों ने कुछ न कहा बाद को दंडवत कर के विदा हो गये। पत्र की पहूंच लिख भेजिए। अनेक दंडवत प्रणाम करते हुवे

मैं आप का सेवक
किशनलाल साह

—:०:—

[पूर्ण संख्या ३०३] पत्र-सारांश

पं० कालूराम जी का जयपुर आना सफल रहा। जयपुर में गो-वध-निषेध का प्रबन्ध हो गया। जयपुर के महाराजा की ओर से गौवों का निर्यात नहीं होगा। यहां 'आर्य धर्म सभा' की स्थापना की है।[1]

४ अप्रेल १८८२ (=वै० कृ० १, सं० १९३९)

नन्दकिशोरसिंह, जयपुर

—:०:—

[पूर्ण संख्या ३०४] पत्र

(ओ३म्)[2]

श्री स्वामी जी महाराज पत्र आप का आया[3] हाल विदित हुआ आपकी शिक्षा तो मेरे लिये अमृत है। भाषा के पत्रे बना के एक मास में एक बार मासिक अङ्क के साथ भेजा ही करता हूं शिथिलता

---

१. यह पत्र-सारांश ऋ० द० के पूर्ण संख्या ६५३ (भाग २, पृष्ठ ६८३, ६८५) पत्र के आधार पर बनाया है। तारीख का निर्देश भी उसी पत्र में है।

२. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्र व्यवहार' भाग १, पृष्ठ ४५-४६ पर छपा है।

३. सम्भवत: २३ मार्च १८८२ का पूर्ण संख्या ६४४ (भाग २, पृष्ठ ६७२) का पत्र।

यही है कि गत महीने में भाषा कुछ कम भेजी सो श्री महाराज आप के लिये कई बार लिखा कि सब व्याकरण के पुस्तकों को देखकर आख्यात की नवीन रचना करनी पड़ी है। यह भी विचारा था कि शोधकर दूसरे से शुद्ध नकल करवा लूं तो मुझ को कुछ काल विशेष मिले और दो चार पत्रे शोधकर लिखवाये भी उस में मेरा परिश्रम तो कम न हुआ विशेष व्यय होने लगा तब अपने आप ही लिखने लगा दिनेशराम का लिखा नहीं शोधा उसके २ पत्रे परीक्षार्थ भेजता हूं और ऋग्वेद के पत्रे जो आप के यहां से छपने को आते हैं उन में विशेष अशुद्धि निकलती हैं और यजुर्वेद में इतनी नहीं इसका कारण आप जान सकते हैं। ऋग्वेद के भी २ पत्रे भेजता हूं देखिये इन में भी कुछ समय लगता ही होगा। मैं इस बात को निश्चय कहता हूं कि यदि यंत्रालय के कार्य के काल का जो नियम है उसी समय जो मैं काम किया करूं तो कभी काम न चले और बहुत सी गड़बड़ हो अब मैं ३६४–से–४१५ तक यजुर्वेद को भाषा के पत्रे भेजता हूं आगे यजुः और ऋ० के पत्रे छपने के लिये जो तय्यार हों आप भेजिये। और इन मेरे भेजे पत्रों की परीक्षा करके लौटा दीजिये। गोकरुणानिधि छप रहा है अगले महीने में आप के पास पहुंचेगा और सब प्रसन्नता है। आगे जो आज्ञा हो सो लिखिये। आख्यात के १२ फारम छप चुके हैं भ्वादिगण में थोड़ा ही बाकी है।[1]

भवदनुग्रहापेक्षी

भीमसेनशर्म्मा

—:०:—

१. इस पत्र पर तिथि तारीख का कोई निर्देश नहीं है। ऋषि दयानन्द ने २३ मार्च १८८२ को सुन्दरलाल अधिष्ठाता वैदिक यन्त्रालय को लिखा था—'भीमसेन अब भाषा बहुत ढीली बनाता है, उस को शिक्षा का देना "आख्यातिक कितना छप चुका है" इन तीनों बातों का उत्तर भीमसेन के इस पत्र में है। अतः यह पत्र भीमसेन ने मार्च के अन्त में अथवा अप्रैल १८८२ के प्रथम सप्ताह में लिखा होगा।

[पूर्ण संख्या ३०५] **पत्र**

ओम्

कासगंज जिलअ एटा

६-४-८२ ई०[1]

श्रीमच्छ्रेष्ठोपमा ब्रम्हविद्या प्रवतक सद् धर्म्मोपनिष्ठ श्रीपरिवाजक स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज को बुलाकीराम गुप्त का अभिवादन बंचनें आगे श्रीमान् आपु से आशा है कि चूड़ाकर्म के विषय के अभीष्ट मन्त्र कि जिनके प्रतीक नीचे लिखे है और संस्कार विधि[2] से पाये गये हैं उन को आपु पूरे पूरे लिखवा कर डांक द्वारा यहां भिजवाइ दीजिये तौ बड़ी ही दया होगी शीघ्र मन्त्रों की चाहना हैं और प्रतीक ये है

(यउदकेनेहेतीति) १ (अदिति केशान्) २ (औषधेत्रायस्वैनमिति) ३

ये प्रतीक आर्यसमाज फर्रुखाबाद को भी पत्र द्वारा भेजे थे वहां से यही उत्तर मिला कि प्रशंसित स्वामी जी के पास बंबई आर्यसमाज से मिलेंगे आपु शीघ्र दया करिके भेजिये तौ कार्य की पूर्त्ति होवे ॥

पं० दिनेशराम शर्म्म[3] का अभिवादन और टीकाराम वा भगवान दास गुप्त का अभिवादन बंचने और गोरक्षा के विषय में हस्ताक्षरों के विषय में जो इस्तहार बंबई आर्यसमाज में छपा है उस की प्रति भेजि दीजिये अग्रे किं[4] द० **बुलाकीराम गुप्त**

रामप्रशाद शर्म का अभि० गोपालदत्त शर्मणो नमस्ते

—:o:—

---

१. **वैशाख कृ० ६ सं० १९३९ वि०।** यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्र व्यवहार' भाग १, पृष्ठ ३९३-३९४ पर छपा है।

२. द्र०— संस्कारविधि प्रथम संस्करण (सं० १९३३), पृष्ठ ४७, पं० ७, ८, १२।

३. यह दिनेशराम शर्मा वही है, जो ऋ० द० की पाठशाला फर्रुखाबाद में पढ़ा था और इसे कासगंज की पाठशाला में अध्यापक नियुक्त किया था। यह ऋषि दयानन्द के पास लेखक के रूप में भी कार्य करता रहा है। यह बहुत धूर्त प्रवृत्ति का व्यक्ति था। द्र०—ऋ० द० के ग्रन्थों का इतिहास, परिशिष्ट ६, पृष्ठ ८६-८७ तथा पं० देवेन्द्रनाथ सं० जीवनचरित भाग २, पृष्ठ ६०९।

४. इस पत्र का उत्तर प्राप्त नहीं हुआ।

[पूर्ण संख्या ३०९] **पत्र**

दानापुर १३ अप्रैल १८८२ ई[1]

स्वामी जी नमस्ते

स्वामी जी आप के संग एक सप्ताह व्यतीत[2] कर के हम सभी ने बड़ा आनन्द उठाया विशेस कर के उन शिक्षाओं से जो कृपा कर के आप हम लोगों को देते रहे। आप [कि] यहाँ से बिदा होकर हम लोग अजमेर पहुंचे और वहां के प्रधान वः हरनामसिंघ ने बड़ी प्रीति पूवक बर्ताव किया और बड़ा व्याख्यान हमारे पंडित तथा प्रधान ने दिया वहां से चल कर दिल्ली गै वहां से मथुरा।

मथुरा में नैनसुख[3] से मल कर बड़ा आनन्द प्राप्त हुआ उन्होने हम लोगों का बहूत ही सत्कार किया और उन के सतसंग कुशलता देख कर बहुत प्रसन्न हुए वहां भी आर्य्यसमाज नियत हुआ है सन्ध्या के समय नैनसुख जो हम लोगों को समाज में ले गे और वहां एक छोटा सा व्याख्यान हुआ जनकधारीलाल ने दीया तदनन्तर आगरा आये वहां एक सभासद जिन का नाम वावु सोहनलाल है औ जो कासी करिय से मथुरा गये थे और हम लोगों के साथ गये थे अपने मकान पर हम लोगों को ले गै और यथोचितसत्कार किया और अपने साथ हो कर ताज को देखलाया जिस्से चित्त बहुत बहुत प्रसन्न हूआ और दूसरे सभासद ने मेडिकल कालेज में ले जा कर मनुष्य के सरीर का जोड़ तोड़ भली भांति देखलाया सन्ध्या के समय वहां के मन्त्री वावु जमनादास विश्वास से मीले और उन से वार्तालाप कर के बहूत

---

१. वैशाख कृ० १०, सं० १९३९ वि०। यह म० मुंशीराम सम्पादित ऋ० द० का पत्रव्यवहार भाग १, पृष्ठ ४२८-४३१ पर छपा है।

२. रामनारायणलाल अपने दो साथी पं० आदित्य नारायण और बा० जनकधारीलाल के साथ ऋ० द० के दर्शन करने २० मार्च १८८२ को बम्बई गये थे। उसी की ओर यह संकेत है। इस का संकेत ऋ० द० के पूर्ण संख्या ६३६ (भाग २, पृष्ठ ६६७) के पत्र में भी है। ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन भाग २, पृष्ठ १००४ पर इस विषय में दी गई टिप्पणी को शुद्ध कर लें।

३. अर्थात् नयनसुख जड़िया। ये पढ़े लिखे तो नहीं थे, परन्तु गुरुवर विरजानन्द दण्डी की पाठशाला में आया जाया करते थे। अध्ययन काल में ही ऋ० द० के साथ इन का विशेष सम्बन्ध हो गया था।

आनन्दीत हुए वारता के मद्य में उन ने एक यह एक बात कही कि जगन्नाथ इत्यादिक जो आर्य्यधर्मके वीसये मैं छोटे-छोटे ग्रन्थ लिखा करते है उन में बड़े-बड़े आर्य्यधर्म से विरुद्धच है बाते भी लिखी है कि जिस से भविष्यत में बड़ी हानी हो सक्ती है और आर्य्यों में भेद डालने के कारण हो सक्ते है इस लीये किसी प्रवन्ध से ईस को रोकना अत्यन्तावश्यक है।

लाहौर—मेरठ-फरुक्खाबाद मे दो चार वुद्धचीमान नियत कर दीये जावें और इस का नोटिस समाजों में भेज दीया जावे कि जो कोई ग्रन्थ वनावे (आर्य्यधम्म विशयक) तो उन बुद्धचीमानों से पहले देखाकर पीछे यन्त्रालय में भेजे। और विना ऐसे किये हूये वह ग्रन्थ प्रामाणिक न समझा जावे। स्वामी जी महाराज ! हम लोगो के समझ में वाबु जमुनादास विस्वास का यह कहना बहुत ठीक मालुम पड़ता है इस लिये आप से वणन किया आशा है कि आप भी इस विषय मे कुछ विचार कीजियेगा आगरा से चलकर कानपुर में पहुंचे वहां पण्डित शिवसहाया और उन के पुत्र रामनरायन ने हम लोगों का बहुत सत्कार किहा वहां से लखनउ आये और रामाधर वाजपेयी के यहां उतरे नोटिस तुरन्त दिया गया और सन्ध्या को सब सभासद् एकत्र हुए और हमारे प्रधान और पण्डित जी ने व्याख्यान दिये। सब सभासदों से मील कर अयोद्धया में और काशी में होते हुए ७ अप्रैल को दानापुर आप की कृपा से आनन्द सहित पहुंचे।

स्वामीजी महाराज जहां जहां आज समाज में हम लोग गै वहां के सभासद् ऐंसे प्रेम से वर्ते कि मै समझता हूं कि अपना कोई सहोदर भाई भी न करेगा धन्य आप हैं कि जिन के दया से यह फल आर्य्यावर्त्त में दीखने लगा यहां का मेवा तो फूट सारे संसार में विख्यात हो गया है। धन्य आप हैं जिन के यत्न से यह एक्यता की लता सहसो वर्ष के पश्चाद् पुनः इस देश में उग चली है।

स्वामी जी ! अफसोस यह है कि मेरठ आर्य्यसमाज और फरुक्खाबाद आर्य्यसमाज के दर्शन नहीं हुए इस का कारण यहो है कि जब अहमदाबाद से आगे बढ़े तब कुछ गर्मी अधीक वोध होने लगी और प्रधान साहब के नाशिका से कुछ रुधिर प्रघट हुआ पस घर पहुंचने में जितनी शीघ्रता सुभीते से के साथ हो सका क्या गई।

स्वामी जी महाराज ! जीस दिन हम लोग यहां पहुंचे उसी दिन

बाबु माधोलाल जी हजारी बाग से ६ मास की छुट्टी ले कर यहां पहुंचे उन के वृद्धच चचा बहुत बीमार थे तार भेजा गया था इन के आने पर जब अच्छी तरह बाते हो चुकीं उस के कैक घंटे पश्चात् उन का देहांत हूआ। बाबु माधोलाल ने वैदिक बिद्धी के साथ उन का दाह क्रीया किया। बहुत से सभासद उस समय उपस्थित थे

भाग्य से हम लोग भी पहुंच गये थे हमारे पंडोल जी महाराज संस्कार विधि के अनुकूल वैदिक ऋचाओं का पाठ करते थे और घृत की आहुति दी जाती थी।

रामानन्द जी नमस्ते।

हम लोग भलीभांति अपने घर पर पहुंचेगे रास्ते में किसी प्रकार का विघ्न नहीं हूया आसा है कि आप भीं आनन्द से है। गिरानन्द बाबा कमीसिघ और पस्तट्ठा[1] जी से हम लोगों का नमस्ते कह दीजियेगा।

आप का दास

रामनरायन लाल

दानापुर १३ अप्रैल। १८८२[2] मन्त्री आर्यसमाज दानापुर

—:०:—

[पूर्ण संख्या ३०७] पत्र-सूचना

[लाला मूलराज जी एम० ए०][3]

—:०:—

[पूर्ण संख्या ३०८] पत्र

ओं[4]

विद्वद्भूषण चतुर्वेद विचक्षण श्रीमत्स्वामी दयानन्द सरस्वती जी

---

१. इन व्यक्तियों के सम्बन्ध में हमें ज्ञान नहीं हैं। ये बम्बई में रामनारायण लाल आदि को मिले होंगे।

२. वैशाख कृष्णा १० सं० १९३९ वि०।

३. ऋ० द० के पूर्ण संख्या ६५८ (भाग २, पृष्ठ ६८७) के पत्र में दो दो पत्र मिलने का संकेत है। एक पत्र की सूचना हमने यहां बनाकर दी है, दूसरे की आगे पूर्ण संख्या ३१० पृष्ठ ३९२ पर दे रहे हैं।

४. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्र व्यवहार' भाग १, पृष्ठ ३१५-३१६ पर छपा है।

महाराज को लक्ष्मण स्वरूप वकील का प्रणाम—मु० बखतावरसिंह के मुकद्दमे के लिये में इलाहाबाद गया था और हाईकोर्ट के वकीलों को मातहत जज शाहजहांपुर की राय दिखलाई ॥ उस वक्त तो निश्चित् सम्मति नहीं दी परन्तु अब द्वारिका प्रसाद बेनरजी जो बडे बुद्धिमान्, प्रसिद्ध और वकील सर्कार भी हैं इस पत्र द्वारा नजरसानी की सम्मति देते हैं और २००) महनताना मांगते हैं यदि आप उचित जानें तो कोरे कागज पर अपने हस्ताक्षर कर भेज दीजिये—असल चिट्ठी उक्त बाबू जी की आप को देखने को भेजता हूं[1]

आप का किङ्कर ज्योतिस्स्वरूप सविनय प्रणाम करता है और एक संदह की निवृत्ति चाहता है—और वह यह है—कि आप के वेदाङ्ग प्रकाश में सिद्धान्त कौमुदी से सूत्र कम मालूम होते हैं–ताद्धित: सिद्धान्त के तद्धित से बहुत कम है—कृपा कर के इस का कारण लिखिये—या तो आप अगले अङ्कों में शेष सूत्र देंगे—या वह पाणिनीयाष्टाध्यायी में नहीं—या छोड़ दिये हैं—मुझ से कई आदमी जो खरीदना चाहते हैं पूछ चुके हैं—उत्तर शीघ्र दीजिये—[2]

आप का दास
लक्षमण स्वरूप
महल्ला खंदक, मेरठ—

Allahabad :
16th April 1882.[3]

LALA LUCHMUN SUROOP

Dear Sir,

In the case of Dyanund Saruswati I cannot advise an appeal but the order of the Sub-Judge may be revised by the High Court under Sec. 622 of the Code. If you then you feel disposed to take action

---

१. यह अंग्रेजी में लिखी चिट्ठी इसी के नीचे छाप रहे हैं।

२. इस पत्र पर तिथि तारीख नहीं है। नीचे छापे जा रहे अंग्रेजी पत्र की तारीख के आधार पर यहाँ जोड़ा है।

३. वैशाख शु० २, सं० १९३९ वि०। यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १, पृष्ठ ३१७ पर छपा है।

in the matter as I have indicated please send me the necessary Vakalatnama from Dyanund Saruswati and a fee of Rupees two Hundred for myself and another Council. who will have to be employed-besides Rupees 16 to cover all other incidental charges expenses.

Yours faithfully,
DWARKA NATH BANERJI.

—:o:—

[पूर्ण संख्या ३०९] पत्र

गवर्मिंट कालेज, लाहौर।
ता० २३-४-८२[1]

श्री ५ पण्डित दयानन्द सरस्वती जी महाराज नमस्ते। हम शिवनाथ और लक्ष्मीनारायण गवर्मिंट कालेज के विद्यार्थी आप के रचित वेदभाष्य को पढना चाहते है और इस कारण हमने प्रियाग वैदिक यन्त्रालय मे चिट्ठी भेजी थी और दश १०) रुपये का मनिऑरडर भी भेजा था उस चिट्ठी का उत्तर हम इस मे भेजते हैं

चूंकि हम विद्यार्थी है और बहुत रुपया इकट्ठा नहीं बचा सकते इस कारण हमने उन्हें लिखा था कि हम कम से कम दश रुपये साल भेजते रहेंगे आप हम को प्रथम से आज तक के नमबर भेज दे और आगे को भेजते रहैं और यह भी प्रतिज्ञा की थी कि जब हमारे पास जियदा दाम होंगे तो और भी भेजते रहेंगे बल्कि होसका तो इसी साल के अन्दर पिछली सारी कीमत भेज देंगे

अब हमें आशा है कि आप उनको आज्ञा दे देंगे कि वह हमारी दरखास्त को मन्जूर करे और वेदभाष्य पिछले भेज दें और आगे को भेजते रहैं

आप के दासानुदास
शिवनाथ औ लक्ष्मीनारायण

---

१. वैशाख शु० ६, सं० १९३९ वि०। यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १, पृष्ठ ३०९-३१० पर छपा है।

स्टूडेंट गवर्मिंट
कालेज लाहौर

SHEO NATH & LACKSHMI NARAYAN
Student Govt. College,
LAHORE.

—:o:—

[पूर्ण संख्या ३१०] पत्र-सूचना

[लाला मूलराज जी एम० ए०][1]

—:o:—

[पूर्ण संख्या ३११] पत्र-सूचना

[लाला जीवनदास, लाहौर का पत्र][2]

—:o:—

[पूर्ण संख्या ३१२] पत्र-सूचना

[लाला कालीचरण का पत्र][3]

—:o:—

[पूर्ण संख्या ३१३] पत्र

Simla Argus Press[4]
Simla 1st May 1882.

---

१. ऋ० द० के पूर्ण संख्या ६५८ (भाग २, पृष्ठ ६८७) के पत्र के आरम्भ में दो पत्र आने का उल्लेख है। उनमें से एक सूचना पूर्व पूर्ण संख्या ३०७, पृष्ठ ३८९ पर दी गई है, दूसरे की यहां दी जा रही है।

२. इस पत्र की सूचना ऋ० द० के पूर्ण संख्या ६५९ (भाग २, पृष्ठ ६८८) के पत्र में मिलती है।

३. इस पत्र की सूचना ऋ० द० के पूर्ण संख्या ६६१ (भाग २, पृष्ठ ६९०) के पत्र से मिलती है।

४. यह पत्र वैदिक मैगजीन (गुरुकुल कांगड़ी) पौष १९६५ वि० में छपा था।

Sir,

I have received your communication regarding the Theosophists. I am sorry that I can not insert it in the paper, except as an advertisement. If you wish it to appear as such, kindly send me Rs. 10. I expect it will make two columns of print, and my rate for such is Rs. 5 a column.

I am Sir,
Yours obediently,
W. H, Carey,

भाषार्थ

शिमला, आरगस प्रेस,
शिमला १ मई १८८२,

महोदय,

थियोसोफिस्टों के बारे में भेजी गई सूचना मुझे मिल गयी है। मुझे खेद है कि मैं इसे एक विज्ञापन के अतिरिक्त अन्य किसी रूप में अपने पत्र में प्रकाशित नहीं कर सकता। यदि आप इसे इस रूप में प्रकाशित देखना चाहते हैं तो कृपया मुझे १० रुपये भेज दें। मेरा अनुमान है कि छपने पर यह सामग्री दो कालम में आयेगी, और मेरे पत्र में विज्ञापन का दर ५ रुपये प्रति कालम है।

मैं हूं श्रीमान्,
आपका आज्ञाकारी,
डब्लू० एच० केरी

—:•:—

[पूर्ण संख्या ३१४] पत्र

[1]सिद्धश्री सर्वोपमा योग्य विज्ञात विज्ञ श्री स्वामी जी महाराज स्वामी दयानन्द जी को ताबेदार चुन्नीलाल का प्रणाम व दण्डवत

१. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १, पृष्ठ ३९६-३९७ पर छपा है।

पहुंचे अर्सा १॥ डेढ़ वर्ष का हुआ कि मुज को आप के दर्शन मैनपुरी में हुये थे तब से प्रारब्ध न्यनि होने की बजे से अब तक मौका दर्शनों का नहीं हुआ मालूम नहीं बम्बई कितने दिनों तक आप के उत्तम विख्यानों से पवित्र होती रहेगी यहां हजारों आदमी दर्शनों की अभिलाषा में हैं मेरा नाम चुन्नीलाल जिलेदार नहर गंग मैनपुरी में आप के दर्शन हुये थे अब आजकल मैं अपने घर गंज दारानगर जिला बिजनौर में ठहरा हुआ हूं आशा है कि आप के आनन्द का पत्र मुज के गंज दारानगर में ही मिलेगा दूसरी प्रार्थना यह है कि १ विद्यार्थी अष्टाध्याई महाभाष्य पढ़ना चाहता है उस्के खाने कपड़े आदि का सब प्रबन्ध हो गया है कृपा करके जिस शाला में अच्छा पढ़ना होवे वहां भेज दिया जावे मुज को ठीक मालूम नहीं कि किस शाला में अच्छे पढ़ने का प्रबन्ध है कृपा करके उस शाला के नाम से मुत्तलै कीजिये ताकि उक्त विद्यार्थी को भेजने का वंदोवस्त किया जावे दया कर के नवेदन पत्र का उत्तर शीघ्र मिल जावे बड़ी कृपा होगी।

आप का तावेदार
चुन्नीलाल
मुकीम हाल गंज दारानगर
जेष्ट कश्ना ३ संवत् १९३९[1]

Choonee Lall Ziladar
Dara Nugur
District BIJNOUR
N.W.P

—:०:—

[पूर्ण संख्या ३१५] पत्र

[2]भगवन् श्री स्वामिन् महाराज ! आप के निकट से अभी ऋ० के पत्रे छपने को नहीं आये कापी भेजने में ऐसी देर हुआ करेगी तो छापने में हानि होगी अब आप कृपा करके ऋ० की कापी छपने के

१. ६ मई सन् १८८२।

२. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १: पृष्ठ ४८ पर छपा है।

लिये अति शीघ्र भेजें। और यहां अक्षर बन के यथार्थ काम कभी नहीं चल सकता क्योंकि यहां कम से कम चार पांच महिने में तो अक्षर तयार होंगे और खर्च में कुछ बहुत भेद भी नहीं पड़ेगा इस लिये सवा सौ या डेढ़सौ रुपयों का दो फांड पूरे का अक्षर अवश्य लेना चाहिये और शीशा की भी अपेक्षा है जो अक्षर जिस समय कम पड़ता है वह मिस्त्री उसी समय ढाल देता है। इस के लिये शीशा भी अवश्य भेजना चाहिये। अब काम बहुत यथार्थ चलता है कर्त्ता और कर्म का वैगुण्य विशेष नहीं है केवल साधन के वैगुण्य से कमती है जब साधन भी यथार्थ होवें तो एक फार्म प्रतिदिन निकल सके। इति। इस पत्र का उत्तर अति शीघ्र दीजिये क्योंकि आप के ही काम [की] हानि होती है। तनखा अधिक दी जाती है और काम कम होता है।

ता० १० मई[1]

ह० भीमसेन शर्म्मा

—:०:—

[पूर्ण संख्या ३१६] पत्र

[2]श्री स्वामिन महाराज ! आप के २ कृपापत्र आये[3] उत्तर नहीं दे सका पीछे से सब बात का उत्तर लिखूंगा आप ने शीशे के भेजने का जो प्रबन्ध कि[या] सो तौ ठीक है पर यहां का ढला अक्षर ऐसा अच्छा न होगा जेसा मुम्बई का इस्से प्रार्थना यह है कि यदि हो सके तौ नीचे लिखा हुआ टँप भिजवादें तो वहुत उत्तम होगा और जो संयुक्त अक्षर हुआ करेंगे वा जिन की कमी पडा करेगी वह यहां बन जाया करेंगे—पं० ज्वालादत्त को कल पत्र लिख भेजा है वह यहाँ रह कर १ मांस पं० भीमसेन के साथ काम करे[4] फिर यह प्रबन्ध रहा

---

१. यहां सन् का उल्लेख नहीं है। इससे अगले पूर्ण संख्या ३१६ के सुन्दर लाल के तथा १३ मई १८८२ को लिखे हुए स्वामी जी महाराज के पूर्ण संख्या ६६४ (भाग २, पृष्ठ ५९३-५९४) के पत्र को मिलाकर पढ़ने से ज्ञात होता है कि यह पत्र १० मई १८८२ तदनुसार ज्येष्ठ कृष्णा ८ बुधवार सं० १९३९ को लिखा गया था।

२. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्र व्यवहार' भाग १, पृष्ठ ४९ पर पूर्व मुद्रित (पूर्ण संख्या ३१५) पं० भीमसेन के पत्र के पश्चात् छपा है।

३. ये पत्र हमें प्राप्त नहीं हुए।

४. इस पत्र का उत्तर ऋ० द० ने १३ मई १८८२ पूर्ण संख्या ६६४

करैं कि १ पंडित आप के साथ और १ यंत्रालय में और वर्ष दिन पीछे बदली हो जाया करे इसमें हमारा काम भी निकल जाया करेगा और वह भी १ वर्ष तक अपने ग्रहस्थ में रह लिया करेगें ।। शेष दूसरे लिखूंगा और आप कृपा करके स्याही भेजवा दीजिए छपने के लिये पत्र में बिलकुल नही है सो आप सेवकलाल कृष्णदास से कह दीजिये वे भेज देंयेंगे ।।

चरण सेवक
सुन्दर लाल[1]

—:o:—

[पूर्ण संख्या ३१७] पत्र

Lahore Arya Samaj,[2]
Dated 10th May, 1882.

To

Swami Dayanand Saraswati

Most respected Sir,

I humbly beg to acknowledge the receipt of your kind favor instructing me some moral truths as to guide me in foreign country.

I have, owing to considerable affection on my mother's part, and other certain inconveniences,

---

(भाग २, पृष्ठ ५९३-५९४) के पत्र में दिया है। **म० मुंशीराम जी की टिप्पणी**—"पण्डित भीमसेन जी के पूर्व पत्र पर ही इस पत्र का लेख है। जिस के अन्त में चरण सेवक सुन्दरलाल लिखा हुआ है। ज्ञात होता है यह वही रायबहादुर सुन्दरलाल हैं जिनके निरीक्षणाधीन वैदिक यन्त्रालय अनेक दिनों तक रह चुका है।

१. इस पर कोई तारीख नहीं है। पं० भीमसेन के १० मई १८८२ के पत्र पर ही लिखा होने से यह भी १० मई १८८२ का ही है।

२. यह पत्र वैदिक मैगजीन (गुरुकुल कांगड़ी) पौष १९६५ वि० में छपा था।

that I lately felt, declined to see England for the **present**.

Lalla Rattan Chand Bary, the Editor of "The Arya," has, already resigned the membership of Theosophical Society but on different grounds. This is his policy. "The Society," he said, "did not, in many cases, regard their essential principle of "Universal Brotherhood," and that it believes in false existences (i. e., devils) and society seems as doing no good for India. From above it appears that he has not stated the real cause of his isolation for the reasons best known to himself. Besides I have not seen myself that **"Resignation"** and what I have written here, is simply because I am told thus. Nevertheless I have no reason our Organ, please advise us in a special letter addressing to President.

The character of Pandit Akhya Nand is doubtful. Nothing is needed to comment.

A great agitation has been roused in Lahore among the Hindoos and Mohamedans in connection with National Language. Formers prove to be Hindee, while latter Urdoo. Successive lectures are going to be delivered from last fortnight and are still continuing.

We have given our whole of attention towards this noble cause. Lalla Mulraj, M. A., has been appointed by "**Bhasha Pracharni Sabha**" as a representative from Hindu Community to Education Commisson.

Sorry to learn that Munshi Kanaya Lal Alakh -Dhari of Ludhiana died on 1st instant.

I suggest you to establish an Anglo-Aryan College in India. Syed Ahmad Khan has once more given life to Mohamadans and that the main cause of that I see only is the Institution he has established in Aligarh. It is no difficult for us if a slightest movement be made.

Lala Devi Dyal, Editor of Vidya Prakash has written me a letter from Ajmere and he is going to Bombay. He has sent us a very good news, but we cannot put them in our journal unless they are confirmed.

I now close my humble letter with paying my sincere thanks to you as the sole Patriotic of the day.

I am sir,
Your most obedient servant,
Jawahar Singh,
Secretary, Arya Samaj,
Lahore.

भावार्थ

लाहौर आर्यसमाज,
१० मई १८८२

सेवा में,

स्वामी दयानन्द सरस्वती,

परमादरणीय महोदय,

मैं अत्यन्त विनम्रतापूर्वक उस पत्र की प्राप्ति स्वीकार करता हूं जिसमें आप ने विदेश जाने पर मुझे जिन नैतिक शिक्षाओं का पालन करना चाहिये, उनके सम्बन्ध में उपदेश दिया है। फिलहाल मैंने इंगलैण्ड जाने का इरादा त्याग दिया है। इसका एक कारण तो यह है कि मेरी माता का प्रेम इसमें बाधक है, कुछ अन्य असुविधायें भी इसमें कारण हैं।

"दि आर्य" पत्र के सम्पादक लाला रतनचन्द बेरी ने थियोसोफिकल सोसाइटी की सदस्यता से त्यागपत्र दे दिया है किन्तु इसके कुछ भिन्न कारण हैं। यह उनकी नीति है। वे कहते हैं कि यह सोसाइटी अनेक मामलों में विश्वबन्धुत्व के अनिवार्य सिद्धान्त को नहीं मानती तथा भूत प्रेत जैसी अनेक मिथ्या बातों में विश्वास करती है। उनकी राय में इस सोसाइटी से भारत का कुछ भी भला नहीं हो रहा है। इन बातों से ज्ञात होता है कि उन्होंने उन वास्तविक कारणों को प्रकट नहीं किया है जिनके फलस्वरूप वे थियोसोफी से पृथक् हुए हैं। परन्तु वे कारण भी वे खुद ही जानते हैं। इसके अतिरिक्त मैंने उनका त्यागपत्र देखा भी नहीं है। मैंने जो कुछ लिखा है वह सुनी हुई बातों पर ही आधारित है। तथापि इनके इस वक्तव्य पर अविश्वास करने का कोई कारण नहीं है। यदि हम "दि आर्य" को आर्यसमाज का मुखपत्र बनाना चाहते हैं तो कृपया प्रधान के नाम एक विशेष पत्र लिख कर अपना परामर्श दें।

पं० आख्यानन्द का चरित्र सन्देहास्पद है। इस पर कोई टिप्पणी करना व्यर्थ है। राष्ट्रभाषा को लेकर लाहौर के हिन्दुओं और मुसलमानों में महान् आन्दोलन उपस्थित हो गया है। हिन्दू हिन्दी का समर्थन करते हैं जब कि मुसलमान उर्दू का पक्ष लेते हैं। गत एक पखवाड़े से निरन्तर अपने मत के समर्थन में व्याख्यान दिये जा रहे हैं और यह सिलसिला जारी है। इस महत् उद्देश्य के लिये हमने अपना पूरा ध्यान लगा रखा है। शिक्षा आयोग के समक्ष गवाही देने के लिये हिन्दू समाज की ओर से भाषा-प्रचारिणी सभा ने लाला मूलराज एम० ए० को अपना प्रतिनिधि चुना है।

यह जानकर दुख हुआ कि मुन्शी कन्हैयालाल अलखधारी का इसी मास की पहली तारीख को निधन हो गया। मैं आपके समक्ष भारत में एक ऐंग्लो आर्यन कालेज खोलने का प्रस्ताव रखता हूं। सैयद अहमद खां ने एक बार और मुसलमानों को नवजीवन प्रदान किया है और इसका प्रधान कारण है उनके द्वारा उस शिक्षण संस्थान की स्थापना जो अलीगढ़ में की गई है। यदि हम थोड़ा भी आन्दोलन करें तो ऐसा करना हमारे लिये भी मुश्किल नहीं है।

'विद्याप्रकाश' के सम्पादक लाला देवीदयाल ने अजमेर से मुझे पत्र लिख कर सूचित किया है कि वे बम्बई जा रहे हैं। उन्होंने मुझे

एक बहुत अच्छी खबर भेजी है, किन्तु जब तक इसकी पुष्टि नहीं हो जाती, हम इसे अपने पत्र में नहीं दे सकते।

वर्तमान के एक मात्र देशभक्त, आपके प्रति अपना हार्दिक धन्यवाद करते हुए मैं अपने इस विनम्र पत्र को समाप्त करता हूं।

मैं हूं महोदय,
आपका अत्यन्त आज्ञाकारी,
सेवक,
जवाहरसिंह
मन्त्री आर्यसमाज, लाहौर।

—:o:—

[पूर्ण संख्या ३१८] **पत्र-सूचना**

[राजा दुर्गाप्रसाद, फर्रुखाबाद का पत्र][1]

—:o:—

[पूर्ण संख्या ३१९] **पत्र**

ओ३म्[2]

संख्या १२१

१। सिद्ध श्री मुम्बई बन्दर महा शुभस्थाने सर्व शुभ ऊपमा लायक श्रीमत्पण्डितवर दयासागर जगद्विख्यात पुज्य श्री ६ स्वामी दयानन्द जी महाराज योग्य लिखी इटावे से पं० ब्रजमोहन लाल शर्म्मा का सविनय प्रणाम अङ्गीकार हो अत्र कुशलं तत्रास्तु आगे सविनय समाचार जानते ।।०

१ आप के शुभ गुणगण तथा परोपकाररत स्वभाव देख और सुन कर परम आनन्द हुआ के अवश्य आप से मेरी अभिलाषा पूर्ण होगी—और वह अभिलाषा यह है के मुझ अल्पबुद्धि को आप से वेद शाखा तथा शिक्षान्तरगत अयोग वाह: वर्ग के विषय में कुछ पूछना, है सो मेरे पर कृपा कर परोपकार की रीति से दया कर पूछने की

---

१. इस पत्र की सूचना ऋ० द० के पूर्ण संख्या ६६५ (भाग २, पृष्ठ ६९५) के पत्र से मिलती है।

२. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्र व्यवहार' भाग १, पृष्ठ ३९१-३९२ पर छपा है।

आज्ञा दे कर अपना नाम सार्थक कर इस नाशवान संसार में जस लीजियेगा तो मेरे पर बड़ा ही अनुग्रह करियेगा—मुझे तो आप सरखे महा पुरुषों की रीति से अत्यन्त दृढतर विश्वास है के आप जरुर कृपा कर प्रश्न करने की आज्ञा देंगे क्योंके परम्परा सै यह रीति चली आई है के सत पुरुष परोकारार्थ बड़ा बड़ा श्रम करते रहे हैं तो ये कितनी बात है इस में तो केवल वाग् व्यापार ही है इस से आप जरुर इस बात को अंगीकार करैगे. बार बार ज्यादा क्या लिखूं इस पत्र का उत्तर कृपा कर श्रम न विचार प्रीति रीति सै शीघ्र ही भेजियेगा जिस सै चित्त शान्त हो और आपका जस गाऊं॥ जैसा हो वैसा पर उत्तर जरुर कृपा हो—ज्यादा क्या लिखूं आप बड़े हैं ज्यादा लिखना अविज्ञा है।

२ और जो कहिं पत्र में अस्त व्यस्त तथा अनुचित आदि दोष होय सो कृपा कर क्षमा करियेगा क्यों के मुझे आप योग्य पत्र लिखने की बुद्धि नहीं हैगी इस सै जैसे बड़े बालकों पर सदा कृपा रखते है एसे ही आप भी मेरे पर रक्खोगे. किमधिकम्।

द० आप के अनुचर पं० व्रजमोहन ला० श० के

ठिकाना-विश्रान्त घाट पर संख्या ५८

उत्तर के वास्ते टिकट एक भेजा है[1] सो अङ्गीकार करियेगा. चिट्ठी लिखी शुभ मिति ज्येष्ट शुक्ला ५ चंद्रवार सम्वत् १९३९ का मुताबिक तारीख २१ मई सन् १८८२ ईसवी[2] शुभम्

—:o:—

[पूर्ण संख्या ३२०] पत्र

तपोनीधी स्वामी महाराज[3]

मुकाम मंबई

सेवक खंडेराव पाडुरंग का नम्र नमोनारायण. आपने कृपा कर

---

१. उत्तर के लिये टिकट भेजने से ऋ० द० ने इस पत्र का उत्तर अवश्य दिया होगा; परन्तु यह उपलब्ध नहीं हुआ।

२. ज्येष्ठ शु० ४ सं० १९३९ वि०।

३. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १, पृष्ठ २९३ पर छपा है।

के खत भेजा[1] सो पोहचा हाल मालुम हुआ. आपके ठेरने के वास्ते जगा भान दादा के वाग में तजवीज की हे. वाहा पर पानी भी आछा है. दुसरी जगा बस्ती में घानी सोय कर नहीं हे. आप जिस रोज आवेंगे उस सध्याना देवेंगे. तावेदार सेबा करने में हाजर है. हम पर द्रष्टि रहे, हेवीदन्थापना तारीख २७ माहे मई सन् १८८२ ई[2] मुकाम खंडवा.

खंडेराय पाडुरंग
का० क्लार्क आफस कोर्ट

—:o:—

[पूर्ण संख्या ३२१] पत्र-सूचना

[ठाकोरदास मूलराज बम्बई का पत्र]
शास्त्रार्थ के विषय में काडं ।[3]
ज्येष्ठ सुद १५ ।[4]

—:o:—

[पूर्ण संख्या ३२२] पत्र

ओ३म्[5]

भगवन् नमस्ते कैई कृपा पत्र आये[6] परन्तु मैं उत्तर न दे सका

---

१. यह पत्र हमें प्राप्त नहीं हुआ ।

२. ज्येष्ठ शु० १० सं० १९३९ वि० ।

३. इस पत्र की सूचना 'ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन' के पूर्ण संख्या ६६८ (भाग २, पृष्ठ ६९८) के पत्र में मिलती है । ठाकर दास ने 'दयानन्द सरस्वती मुख चपेटिका' पृष्ठ ४० पर लिखा है—'इस पीछे हम मुम्बई में आकर टपाल (=पौस्ट आफिस) की मार्फत एक कार्ड स्वामी जी के पर शास्त्रार्थ करने के वास्ते लिखा', इस पत्र का उत्तर ऋ० द० की ओर से सेवकलाल कृष्णदास ने दिया था । द्र०—पूर्ण संख्या ६६८, (भाग २, पृष्ठ ६९८) ।

४. जून १८८२ । उक्त तिथि भी पूर्व संकेतित पूर्ण संख्या ६६८ के पत्र में दी है ।

५. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्र व्यवहार' भाग १, पृष्ठ ४२३-४२६ पर छपा है ।

६. ये पत्र हमें नहीं मिले । सम्भवत: इनमें से एक पत्र १३ मई १८८२

कारण यह है कि मैने प्रबन्ध किया था कि २० तथा २२ तथा २४ फर्मे प्रति मास छपा करें परन्तु यह कम्पाजीटर लोग बडे दुष्ठ जन होते हैं इन्होंने लडभिड कर भैरों वनारस वाले को निकाल दिया और फिर आप वदमाशी से काम करने लगे और १ अद्भुत बात यह हुई कि पं० देवीप्रसाद मंत्री आर्य्य समाज ऐसे विगड गये कि समाज से भी नाम कटा लिया और आप की भी बुराई करने लगे और हमारे अल्प बुद्धि पं० भीमसेन को भी बिगाड़ने लगे उन से व्याकरण पढ़ने का आरंभ किया सो पढना पढाना तो क्या आप की बनाई हुई पुस्तकों मैं भीमसेन से अशुधिया निकलवाया करे और उन को ऐसा कुछ समझा दिया कि आप स्वामी जी से भी अधिक बुद्धिमान पंडित हो और प० भीमसेन नट खट नहीं है पर भोला है संसार के छल छिद्र कुछ नहीं जान्ता है जैसे कोई बातौ पर चढ़ादे वैसा ही चढ जाता है ।। १० तथा १५ दिन तौ मुझ को क्रोध रहा और मैं किसी से नहीं बोला पर पश्चात क्रोध को शान्ति किया और स्वकार्य साधयेत० इस शब्द को स्मर्ण कर दौनो मनुष्यों को समझाना आरम्भ किया थोड़े दिन मैं भीमसेन तो सीधा हो गया पर देवीप्रसा[द] की पहली से बात तौ अब नहीं पर हां कुछ कुछ सीधे हुएं है अब कुछ हमारे अति-सहाई तौ नहीं है पर विरोधी भी नहीं रहे और कुछ कुछ सहाय भी करने लगे है यह कारण काम बिगडने का रहा --और दयाराम जी का यह हाल है कि विद्या और बुद्धि उनकी बुहत थोडी है और विना दूसरे की सहायता से काम कुछ नहीं कर सकते है इनसे केवल इतना ही भरोसा है कि आदमी ईमानदार हैं हाथ पैर से आप भी दिन भर मेहनत करते है और अन्य मनुष्यों को भी खूब देखा करते है ।। जब तक रामनारायण प्रयाग मै रहा यंत्रालय का काम बहुत अच्छी तरह से चला पर जब से वुह इटाये को बदल गया तब से अलवत्ता जरा गड़ बड़ रहता है मुझ को इतनी भी फुरसत नही कि १ घंटा नित काम करदूं दूसरे तीसरे दिन अब दयाराम जबरदस्ती मेरी छाती आ छढते हैं तब दब-दबा कर थोडा काम जो अत्यन्त जरूरी होता है कर देता हूं. पं० बालमुकुन्द से इतनी सहायता होती है कि महीने के अन्त

पूर्ण संख्या ६६४(भाग २, पृष्ठ ६६३-६६४) का हो सकता है। उसमे सीसा स्याही भेजने का उल्लेख है। उसकी प्राप्ति का निर्देश इस पत्र में सुन्दरलाल ३
ने किया है।

में एक वा २ दिन महनत कर के वेदभाष्य रवाने करा देते हैं ॥ पर काम यंत्रालय का चला जाता है किसी प्रकार से रुका नहीं है हां अलबत्ते बुहत सी बाते जो उन्नति की मैं सोचता हूं सो नहीं कर सकता हूं। आपने सीसा सुरमा सिहाई भिजवा दीना है और कागज की भी प्रबन्ध हो गया—अब दो बातें और चाहिए १ तौ दूसरा पंडित और २ दूसरा मैनेजर ॥ पंडित की जरूरत यो कि दो मनुष्य हौने से यह आराम है कि जब कभी कोई बीमार हुआ अथवा और हो कोई कार्य्य से काम न कर सका वा कभी मगरापन करने लगे तौ दूसरे आदमी उस की जगह कर दिया जावे नहीं तौ पंडित जी के विना सब काम मिट्टी है अर्थाति हुए और सब यंत्रालय पंडित जी के ही आधीन रहै इस कारण दूसरे पंडित की अति आवश्यक्ता है ज्वालादत्त को मैंने लिखा था सो आने को राजी तौ पर तंखाहे के वास्ते पैर फहलाता है न मालूम अपनी ही इच्छा से वा भीमसैन के इसारे से—मैं ज्वालादत्त का कार्ड आपके पास भेजता हूं जेसी आज्ञा होय आप लिख भेजें जो मासिक ज्वालादत्त को देंगे वह ही भीमसेन को भी देना पड़ेगा मेरी तजबीज यह है कि यह दौनौ मनुष्य नोकर रहें और १ यंत्रालय में और १ आपके पास काम करें और १ वर्ष पीछे बदली हो जाया करें। अर्थाति यंत्रालय वाला आप के पास और आप का पंडित यंत्रालय मैं बदल आया करें ॥ आप जेसी आज्ञा करे वैसा ज्वालादत्त को लिख दूं मैंने यह लिखा था कि १५) का मासिक और जब स्वामी जी के पास रहोगे तो भोजन अधिक मिलेगा—

मैनेजर की सहायता को दूसरा मनुष्य आवश्य चाहिये क्योंकि हिसाब किताब की सफाई रहै और पत्रव्यवहार अच्छी तरह से होय और तकाजा रुपैय का जल्दी जल्दी जाय आप समर्थदान और फरखाबाद को पत्र फौरन लिखदें और यह लिख दे कि जो राजी होय सो प्रयाग को चला आवै इस की बुहत आवश्यक्ता है कारण यह है कि अभी निश्चय तौ नहीं परन्तु ऐसा अनुमान होता है कि आज से १ [illegible] अर्थात् १ जुलाई को मुझे ३ महीने के लिये ब्रह्मा के [illegible] होगा सो कलकत्ते से ६ दिन का रास्ता जिहाज से है [illegible] और यहाँ दूसरे मनुष्य की आवश्यकता [illegible] कृपा कर के समर्थदान को और फरखावाद दोनों जगह को लिख भेजें कि फौरन प्रयाग चला आवै—

पिछले महीने मई मैं २० फार्म छपें है और आप की कृपा से २० तथा २२ से कम अब नहीं छपैंगे और १ बात और यह है जिस को सुन आप भी प्रसन्न होंगे कि आप के इस चरण सेवक को श्रीयुत जनरल बहादुर ने खिताब "रायबहादुर" की दिया है।। यह केवल आप ही के चरणे का प्रताप है ॥[1]

प्रयाग १ जून सन् १८८२[2]

चरण सेवक
सुन्दरलाल

—:०:—

[पूर्ण संख्या ३२३]   पत्र-सूचना

[खण्डेराव पाण्डुरंग का पत्र ।][3]

—:०:—

[पूर्ण संख्या ३२४]   पत्र

ओं[4]

सिरी स्वामीजी महाराज प्रमात्मा जायते ।।   नमस्ते रिसाले आरया दरपन से जो ३१ मई ८२ को जारी हुआ है बुहत शोग हुआ—मुनशी जगनाथ दास ने जो आरया प्रश्नोत्री[5] नाम ईक पुस्तक बनाई है ओर आमे उस पर शंका लिख भीजी मुनशी ईंद्रमुनजी प्रधान आरया समाज मुरादाबाद को भी सुनागिआ के आप्ने सखत सुस्त लिखा अब मुनशी जगन्नाथ दास ने आरया दरपन में असे शुबे लेखे है ।। जो आप की तरफ से सब मिमाजों कों शक में लानेवाली हैं अगरचे बसबब बदचलनी बखतावर सिंग के बोह

१. इस पत्र में लिखे 'दूसरे मैंनेजर का प्रबन्ध करें' का उत्तर ऋ० द० ने ११ जून १८८२ के पूर्ण संख्या ६७१ (भाग २, पृष्ठ ७००) के पत्र में दिया है।

२. ज्येष्ठ शु० १५, सं० १९३९ वि० ।

३. इस पत्र की सूचना अग्रिम पूर्ण संख्या ३२८ (पृष्ठ ४११,) के पत्र से मिलती है।

४. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्र व्यवहार' भाग १, पृष्ठ ३११-३१२ पर छपा है।

५. जगन्नाथ कृत आर्यप्रश्न[illegible]क्षा-पत्र' शीर्षक से 'ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन' के पूर्ण [illegible] (भाग २, पृष्ठ ७२६-७२७) पर छपा है।

रिसाला कुल समाजों में नहीं जाता लेकिन फिर भी वुहत जाता है महाराज जी अेसे अेसे काम सब किता हेके पुखता खेती प्र ओले पणते हैं अब प्राथना ये हे के आप कृपा कर के चुप हो रहैं और आगे को अेसे लाईकों का दिल न तोणो। अगर येह् वेनती मेरी आप मान लं तो अब कुछ नहीं गेआ मानना वाजब हैं वरना निफाक के सबब अेक अेक हो कर सब त्रफ फिर वेसा ही अंधेर मच जावेगा मुनशी ईंदरमुनीजी को मेने लिखा हे वुह भी उमेद हे के मान जाईगे

आप भी खिमा कीजई

७-५-८२[1] लेखराम[2] मंत्री

आरया सिमाज पेशावर

सब आरया भायों की ओर से दसबसना नमस्ते भाई करम सिगजी को भी नमसते॥

लेखराम—

—:०:—

[पूर्ण संख्या ३२५] पत्र

नोटिस[3]

Bombay, 13th June 1882.

To

Pandit Dyanand Surswatee Swamee

We are instructed by our client Lala Thakardas Moolraj inhabitant of Goojranwalla in Panjaub and now residing in Bombay, and a follower of the Jain religion, that you with a deliberate intention of

१. यहां महिना ५ (मई) अशुद्ध है। जून होना चाहिये। अर्थात् ७-६-८२। क्योंकि पत्र के आरम्भ में ३१ मई ८२ के आर्यदर्पण का उल्लेख है। आषाढ़ कृष्णा ६, सं० १९३९ वि०।

२. ये लेखराम श्री लेखराम आर्यमुसाफिर हैं।

३. यह नोटिस 'दयानन्द सरस्वती मुख चपेटिका' भाग १ के पृष्ठ ४१, ४२ पर छपा है।

wounding and offending the religious feelings, of our client and other followers of the Jain religion, inserted at pages 402 & 403 Chapter 12 of a book called Satya [rtha] prakas published by you, certain slokes (Stazas) belonging to certain other religion opposed to that of the Jains alleging that such slokes belong to the jain religion. That when you inserted the slokes in your said book you were perfectly aware that the principles of the religion to which the said Slokes belong were quite opposed to those of the Jain religion.

We are further informed by our said client that although our client has repeatedly asked you either to prove that such Slokes belong to the Jain Religion or to withdraw the allegations in your said book to the effect that such Slokes belong to the Jain religion and apologize to the followers of the Jain religion and our client for having grossly insulted and offended their religious feelings. You have from time to time put off our client by various evasive answers.

Under these circumstanses we are instructed to call upon you to withdraw the allegations from your said book to the effect that such Slokes belong to the Jain religion within a week from the service hereof and to apologize to our client and his co-religionists through some local daily papers in English and Goojrathi for such publication and discontinue to circulate your said book as long as the said Slokes are not taken out. In default of your compliance with the above request our elient will without further notice take such steps as may

be adviced in the matter holding you liable for consequence thereof.

Your's truly,
(Signed) Smith and Frere
Solicitors High Court

(गुजराती भावार्थ)

उक्त नोटीसनो सारांस[1]

मुंबई, ता-१३ मी माहे जून १८८२

पंडित दयानन्द सरस्वती स्वामी योग्य.

अमारो कुल जैनमतानुयायी लाला ठाकोरदास मूलराज रेवासी गुजरांवाला प्रांत पंजाब हाल मुंबईमां रहे छे एणे अमोने एवी रीतें खयर आपीके धर्मना सबंधमां जाणी बुजीने तेना मनने दुःख आपवा सारूं तमे पोताना सत्यार्थप्रकाश नामना पुस्तकनां बारमा समुल्लासमां पृष्ठांक ४०२-४०३ मां जैनधर्म थी विरुद्ध एवा बीजा कोई धर्मोना ग्रन्थोमांथी केटला एक श्लोक लेईने ते श्लोक जैनधर्मनाज छे एवो कहीने लख्या छे. उपला पुस्तकमां आप श्लोक लखती वखत जे धर्मना ग्रन्थोमांथी लीधा छे ते धर्मनो मत जैनधर्म थी अत्यन्त जुदो छे, एवी तमो ने पूरे पूरी खबर हती.

ए सिवाय अमने एवी खबर पडे छे के अमारा कुलें, "आवे श्लोक जैनधर्म विषेना होय तो ते कया ग्रंथना छे ते सिद्ध करी आपो नहीं तो आ जैन धर्मना श्लोक छे एवो जे तमें तमारा पुस्तकमां लख्युं छे ते तमारो लखवुं पाछो खेंची लईने जैन धर्मानुसारी लोकोना अने अमारा कुलना मनने जे धर्म संबंधी दुःख आप्युं छे, ते बाबतनी माफ मांगो" एवी रीतें तमोने घणा वखत जणाव्यु छतां तमें वखतें जुदा जुदा प्रकारना भलताज बाना आपो छो.

तो हवे अमारा कुलना कहेवा उपरथी तमोने एम जणावीयें छें-येंके तमोने आए नोटीस पोहोच्या थी एक अठबाडियामां उपला श्लोक जैनधर्मना छे एवुं जे तमारुं बोलवुं छे ते पाछुं खेंची लईने अमारा कुल तथा बीजा जैन मतानुयायी एओनी पासेंथी अहीं मुंबई-

१. अंग्रेजी नोटिस का यह गुजराती सारांश श्री 'दयानन्द सरस्वती मुखचपेटिका भाग १, पृष्ठ ४३-४४ पर छापा है।

मां निकलता रोजिंदा वर्तमान पत्र द्वाराए अंग्रेजी तथा गुजराती भाषामां उपला श्लोक लख्या बाबदनी माफ मागवी अने ते श्लोक ते उपला पुस्तकमांथी ज्यां सुधी काहाडी नाख्या न होय त्यां सुधी तेनी प्रत कोई ने आपवीं नहीं. एम जो तमे नहीं करशो तो हवे बीजी नोटीस तमोने आप्याविना अमोने बीजो विचार करवो पडशे अने ते बाबदं तमोने जवाबदार थतुं पडशे.

स्मिथ अने फ्रियर
हायकोर्टना सालिसिटर

—:•:—

[पूर्ण संख्या ३२६] ः

[1]श्रीमत् परिव्राजकाचार्य्य श्री ५ स्वामि दयानन्द सरस्वति जो नमस्ते—

विदित हो कि मैं लखनऊ से वदल कर एक मास के लगभग व्यतीत हुआ यहां गोण्डे में आया लखनऊ समाज में मेरी जगह बाबू हरनाम प्रसाद जी मंत्री हुए ईश्वर की कृपा और आप के अनुग्रह से लखनऊ समाज का द्वितीय वार्षिकोत्सव[2] बड़े उत्साह और आनन्द पूर्वक समाप्त हुवा—बहुत दिनों से आप का कुशल समाचार नहीं मिला एतदर्थ प्रार्थना है कि यद्यपि आप के अमूल्य समय में विघ्न होगा तदपि कृपा कर कुशल पत्र भेजये—यहां वेदादि का चरचा सर्वथा स्वप्नवत है केवल अपने उदर पोषण और विषय सेवन के सिवाय यहां के नगर निवासी वेद चरचा तो स्वप्न में भी न करते

१. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्र व्यवहार' भाग १, पृष्ठ ३९८-३९९ पर छपा है।

२. द्वितीय वार्षिकोत्सव कब हुआ, इसका परिज्ञान हमें नहीं हो सका। मन्त्री हरनाम दास के १० सितम्बर १८८२ के आगे छापे जा रहे पूर्ण संख्या ३५३ के पत्र में भी द्वितीय वार्षिकोत्सव का वर्णन है। लखनऊ आर्य समाज की स्थापना वैशाख कृष्णा १५ (३० होना चाहिये) रविवार संवत् १९३७ (=९ मई १८८०) को हुई थी। अत: द्वितीय वार्षिकोत्सव ९ मई १८८२ के पश्चात् मनाया गया होगा।

होंगे मैं अभी विदेशी होने से यहां कुछ वेद मत का चरचा नहीं कर सका समय पाने पर यथा शक्ति प्रयत्न किया जायेगा आप गोरक्षा विषय का समाचार लिखें कि कहां-कहां से हस्ताक्षर हो कर आ गए हैं और कितने हस्ताक्षर हो गए हैं और कृपा कर हस्ताक्षरार्थ जो आप ने दो पत्र छपवाए थे और लखनऊ में भी उन की प्रति आप ने वाजपेई जी के पास भेजी थी उन्हीं पत्रों की एक प्रति मेरे पास भी भेज दीजिये हस्ताक्षर कराने में यथा शक्ति प्रयत्न किया जावेगा और जितने हस्ताक्षर होंगे आपकी आज्ञानुसार सेवा में भेज दिये जायंगे और अब आपके पास शीघ्र वेदभाष्य पूर्त्यार्थ के पंडित नौकर हैं[1] । इति ॥—

आप का दास
चन्दन गोपाल

पता हस्ताक्षरी—
चन्दन गोपाल, ओवर सियर
दफ़्तर डिस्ट्रक्ट इञ्जिन्यर साहब
नगर गोंण्डा, देश अवध
Chandan Gopal–Overseer
C/o District Engr's Office
GONDA
Oudh PROVINCE

—:o:—

[पूर्ण संख्या ३२७] **पत्र-सारांश**

मुरादाबाद वाले जगन्नाथ निर्मित प्रश्नोत्तरी के विस्तार पूर्वक उत्तर प्रमाणों के साथ भेजिये ।[2]

कालीचरण राम चरण

—:o:—

१. इस पत्र पर किसी तिथि वा तारीख आदि का निर्देश नहीं है । इसमें आर्यसमाज के द्वितीय वार्षिकोत्सव, जो ९ मई १८८२ के पश्चात् मनाया गया होगा । उसका उल्लेख है । उसके लगभग एक मास बाद यह पत्र लिखा गया । अत: इसे जून १८८२ के मध्य में रख रहे हैं ।

२. इस पत्राशय का निर्देश बाबू दुर्गादास के नाम लिखे ऋ० द० के पूर्ण

[पूर्ण संख्या ३२८] पत्र

॥ श्री[1]

तपोनीधी स्वामी माहाराज

मुकाम बंबई

सेबक खंडेराव पाडुरंग का नमोनारायण. आप को चारि दीन हुये कार्ड चौठी के जवाब में भेजा पोहच गया होगा. आब आप बंबई से कब चलेंगे लीखेंगे. जगा आप के वास्ते बस्ती मे श्रीमंत राव साहाब भुसकुठी बरानपुर वाले ईन की हावेली तजवीज कर रखी है. और व[ा]ग मे भी जगा पहले देख रखी हे. वो भी मिल जावेगी. क्योकि महाराज सौघींप सरकार की सवारी कब आवेगी पका हाल नहीं मालुम होता. आब ईन दो जगे मे से जो आप पसंत करेंगे वाहा पर सामान रखवाने का बदोबस्त कीया जायेगा. बस्ती मे जरा आड़-चण होगी. बाग मे हावा पानी का सुख हे. लेकिन बस्ती में आपकी आने के सीधे जरा फासला होगा. आगर बरसाद न पड़ेगी तो बाग मे सब तजवीज करेंगे आपको मालुम होनेकु वीनंती की हे चलने के आवल कृपा करके खबर भेजेगे तो आछा होगा जास मे बंदोबस्त कीया जायगा. हे वीद न्याय पन्थां १७ माहे जुन १८८२[2] मुगे खंडवा

खडेराव पाडुरंग

का. क्लार्क आफ कार्ट

—:०:—

[पूर्ण संख्या ३२९] पत्र-सूचना

[बाबू नन्दकिशोरसिंह जयपुर का पत्र शास्त्रार्थ के विषयमें।][3]

—:०:—

संख्या ७०० के पत्र (भाग २, पृष्ठ ७३४ पं० १० से पं० १४) में मिलता है। वहां 'चिट्ठी पर चिट्ठी भेजने' का उल्लेख है। हमने एक पत्र बनाकर यहां रखा है।

१. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १, पृष्ठ २९४ पर छपा है।

२. वैशाख शु० २ सं० १९३९ वि०।

३. इस पत्र की सूचना ऋ० द० के पूर्ण संख्या ६६६ (भाग २, पृष्ठ ६९५, पं० २२) से मिलती है।

[पूर्ण संख्या ३३०] पत्र-सारांश

गोकरुणानिधि के विषय में ४० सहस्र मनुष्यों के हस्ताक्षर।[1]

राजाधिराज नाहरसिंह

—:•:—

[पूर्ण संख्या ३३१] पत्र

श्रीमत्परमहंस परिव्राजयाचार्य स्वामी[2]
श्री श्री दयानन्द सरस्वती समीपे

पत्र आपका चैत्र शुक्ला द्वितीया का लिखा[3] हुआ आया जिस के अवलोकन से परमानंन्द हुआ आप के आज्ञानुसार गोकरुणानिधि के विषय में पत्र पर चालीस सहस्र मनुष्यों की तर्फ से सही करके भेजी हैं[4] सो आप अवलोकन करेंगे आह के दर्सनों की अहर्निश अभिलासा रहती है क्युंकि आप जैसे महात्मावों के दर्सन से ऐहलौकिक और पारलौकिक दोनों सिद्धि मिलती है आपके पत्र का उत्तर भेजने में बिलंब हुआ इसका कारण राज्य कार्य की आवश्यकता हुई इस्से क्षमा करें और राजकुमारों की पाठशाला के विषय में ज्यो आपने लिखा के आर्यकुल भास्करों ने करना स्वीकार कर लिया है सो इस लिपी को देखकर अत्यन्त ही हर्ष हुआ क्योंकि बहुत दिनों से हमारी ये ही इच्छा और अभिलाषा थी बहुत दिन विदित हो जाने से ज्ञात नहीं होता के आप कहां स्थित है सो जहां पर आप होवे वहां से कुछ सूचना अवश्य कर देवें और यह भी प्रार्थना है कि जब मम्बई से इस

---

१. इस पत्र का आशय राजाधिराज नाहरसिंह जी के आगे पूर्ण संख्या ३३१ के पत्र में तथा ऋषि दयानन्द के पूर्ण संख्या ६८० (भाग २, पृष्ठ ७०८-७१०) के पत्र में मिलता है। वहां इसे रजिस्ट्री से भेजने का उल्लेख है।

२. यह पत्र प० चमूपति सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग २, पृष्ठ १७-१८ पर छपा है।

३. यह पत्र 'ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन' पूर्ण संख्या ६३९ (भाग २, पृष्ठ ६६९-६७०) पर छपा है।

४. इस पत्र की पहुंच और उत्तर ऋ० द० ने श्रावण बदी ४ मंगलवार सं० १९३९, पूर्ण संख्या ६८० (भाग २, पृष्ठ ७०८-७१०) के पत्र द्वारा दिया है।

तरफ गमन करने का मनोर्थ आप का होवे तो उस समय हम को कुछ सूचना जरुर करै और शाहपुरा भी पावन करैं और ये भी हमारी इच्छा है कि आपकी निर्मित की हुई पुस्तकै वेदान्त प्रकाश आदि मगबाई जावै सो इस विषय में भी आप लिखैं के वो कहां मिलती है है और जिन पुस्तकों का मगवाना आप हमारे वास्ते आवश्यक समझै उसका एक सूचक पत्र भी भेज देवैं और आप के किसी शिष्य की बनाई हुई एक पुस्तक जिसका नाम पोप लीला[1] है वो भी येदि आप के पास हो तो भेज देवैं कृपा करके कुशल पत्र भेजते रह किमधिकं बहुज्ञेषु मिती असाढ़ शुक्ला ८ सम्वत १९३८[2] को हस्ताक्षर राजाधिराज नाहरसिंहस्य ।

—:o:—

[पूर्ण संख्या ३३२] पत्र-सारांश

विशेष यहां का वर्तमान द्वितीय पत्र में लिखूंगा ।[3]

समर्थदान

—:o:—

[पूर्ण संख्या ३३३] पत्र-सारांश

गोरक्षा की सही भेजी ।[4]

रूपसिंह

—:o:—

१. इस का निर्देश 'ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन' पूर्ण संख्या ६६४ (भाग २, पृष्ठ ६९४) पर भी मिलता है । पृष्ठ ६९४ की टि० १ भी देखें ।

२. इस पत्र के आरम्भ में ऋ० द० के जिस पत्र के प्राप्त होने का उल्लेख है, वह चैत्र शुक्ला २, मङ्गलवार सं० १९३९ का है । द्र० 'ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन' पूर्ण संख्या ६३९ (भाग २, पृष्ठ ६७०, पं० १-२) । अत: राजा नाहरसिंह का पत्र भी सं० १९३९ का होना चाहिये । लेखक प्रमाद से संवत् १९३८ लिखा गया है । आषाढ़ शुक्ला ८, सं० १९३९ को तारीख २४ जून १८८२ थी ।

३. इस पत्र-सारांश का निर्देश ऋ० द० के पूर्ण संख्या ६८९ (भाग २, पृष्ठ ७१३) के पत्र में मिलता है ।

४. गोरक्षा की सही पहुंचने का उल्लेख ऋ० द० के पूर्ण संख्या ६८३ (भाग २) के पत्र में मिलता है । द्र०—पृष्ठ ७११, पं० ५-६ ।

[पूर्ण संख्या ३३४] पत्र-सूचना

[मुन्शी समर्थदान का पत्र][1]

—:०:—

[पूर्ण संख्या ३३५] पत्र

श्री[2]

श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य्य श्रीमान् स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज के चरणों में बरेली के आर्य्यसमाज के सभासदों का प्रणाम पहुंचे ॥ आगे आप के चरणों की कृपा से यहां एक आर्य्यसमाज ९वीं जुलाई सन् ८२ को स्थापित होकर अब तक प्रत्येक रविवार को आनन्द पूर्वक होता चला आता है आगे भी आशा है कि सदैव उत्तरोत्तर उन्नति को प्राप्त होता रहेगा परन्तु अभी नगर निवासी जन अल्प संख्यक हैं परमेश्वर उन के हृदयों में भी उपदेश देवें इसमें आप से यह प्रार्थना है कि आप कोई उपाय ऐसा बतलायिये कि सब समाज आर्य्यावर्त के एक सम्मत होकर समाजों के नियमानुसार विवाहादि सर्व कर्मों को करें और समाजों के स्थापन करने का जो अभिप्राय है सो यथावत् सिद्ध हो अब ऐसा न होना चाहिये कि समाज के लोग वेदरीति को तो मन से ठीक जाने परन्तु वास्तव में पोपलीला पर सब कार्य्य करें मेरी बुद्धि में यह आता है कि आप सब समाजों को इस विषय में एक एक पत्र भेजें यही सब बात उस में सूचित कर दें जहाँ जहाँ समाज है उन के प्रत्येक वर्ण के सभासदों की वर्ण सख्या प्रत्येक समाज को ज्ञात हो तो हम सब लोग आपस ही में सम्बन्धादि व्यवहार करें और अनार्यों से कुछ प्रयोजन न रहे उन से जब प्रयोजन आन पड़ता है तो वेदरीति पर कुछ करना नहीं हो सकता केवल पुराण और पोपरीति पर करना होता है जो कि आर्य्य धर्म के सर्वथा विरुद्ध है इस बात के न होने से निम्नलिखित दोष आन पड़ते हैं—

---

१. इस पत्र की सूचना ऋ० द० के पूर्ण संख्या ६८९ (भाग २, पृष्ठ ७१३) के पत्र में मिलती है।

२. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्र व्यवहार' भाग १, पृष्ठ ३६७-३७१ तक पर छपा है।

(१) समाजों के स्थापित करने से आर्य्यवर्त्त को उस समय तक कोई लाभ नहीं होगा कि जब तक उस के नियमानुसार सब कर्म न होंगे।

(२) अनार्यों को जो पुराण भट्टों के कहने पर चलते हैं समाजों पर इस बात पर व्यंगोक्ति करने का अवसर मिलता है कि तुम लोग केवल कहते ही हो पर कुछ कर नहीं सकते हो तुम से वे ही भद्रनर हैं जो अपने कथनानुसार कर्म करते हैं ।।

(३) देश हानि जो विवाहादि रीतियों में होती हैं अब तक आर्य्यों में भी हुई चली जाती हैं अब तक उन हानियोंसे बचने के लिये किसी आर्य्य समाज ने यथार्थ में कुछ नहीं किया जिस से इस देश की व्यवस्था सुधरती बालविवाह आदि कर्मों में विद्या धन बलादि का नाश होना इसी कारण सुधर्म्म सम्बन्धी कार्यों में पूरी पूरी श्रद्धा का न होना इत्यादि बड़े बड़े दोष हैं इन बातों को हम अल्प बुद्धियों की अपेक्षा आप बहुत अधिक जानते हैं इसी कारण आप से विज्ञप्ति की जाती है कि— जैसे आप ने अति श्रम करके सत्य धर्म प्रचार और देश हित के अर्थ बहुत से अनर्थों को दूर करने का उद्योग किया है और अपना तन मन धन आदि इस के निमित्त समर्पित किया है उसी प्रकार इस.........[1] को वास्तव में प्रचलित करने का भी आप ही उपाय कर सकते हैं आप केवल उपदेश कीजिये और उस के अनुसार चलने को आशा है कि सब समाज उद्यत होंगे कोई आप की आज्ञा के प्रतिकूल न करेगा इस से यह बात भी होगी कि जो लोग अपने भ्रातवर्ग और पौराणिकों के भय से समाज में नहीं हो सकते हैं परन्तु वास्तव में चित्त से आर्य हैं वे लोग आर्य्यों को नियमानुसार चलते देख कर और अपने धनादि को पोपों के झूठे जाल से बचता देख कर शीघ्र ही आन मिलेंगे और फिर समाज की बड़ी उन्नति होगी और अभिप्राय पूर्ण रूप से सिद्ध होगा यथावत परिश्रम का पूर्ण फल प्राप्त होगा और आर्य्यवर्त्त के अन्धकार का नाश होकर प्रकाश ही प्रकाश दीख पड़ेगा फिर पौराणिकों को भी आप की शिक्षा मानते ही बनेगी आज कलि के पौराणिकों को अपने व्यवहारों में हानि बहुत सहनी पड़ती है जब उन लोगों को यह ज्ञान होगा कि आर्य्य लोगों को वेद-

१. यहां पत्र के नष्ट हो जाने से कुछ शब्द नष्ट हो गये हैं।

रीति पर चलने से कइ बातों का लाभ है और हमारा सा क्लेश कोई नहीं सहना पड़ता तो अवश्य वे लोग सब झूठे झगड़े और बखेड़ों को छोड़ कर यथार्थ धर्म्म ग्रहण करेंगे।

आर्य्य सम्बन्धी जितनी पुस्तकें आप ने रची हैं उन के नाम मूल्य सहित लिखि भेजिये यह भी लिखिये कि वेदभाष्य जहां तक प्रणीत हो चुका है उस सब का क्या मूल्य है और कहां मिल सकता है और आगे के लिये क्या नियम है एक एक ग्रन्थ यहां की सभा के अर्थ हम लोग मंगवाना चाहते हैं सत्यार्थप्रकाश फिर छप चुका है वा नहीं वा पहिला ही अब तक प्रचलित है॥

आप के लिये लिखने की आवश्यकता पड़े तो किस पते से आप को पत्र शीघ्र मिला करेगा आप ही के नाम पत्र भेजा जावे वा किसी और सज्जन के द्वारा आप के पास भेजा जावे ॥[1]

आप का अनुचर
बरेली आर्य्यसमाज का मन्त्री
भोलानाथ
बकलम तुलसीराम प्रधान

—:०:—

[पूर्ण संख्या ३३६] पत्र

॥ श्रीराम जी ॥

स्वस्ति श्रीस्वामी जी महाराज श्री १०८ श्री दयानन्द सरस्वती जी की सेवा में उदयपुर निगम वास्तव्य कविराजा श्यामलदास को प्रणाम निवेदन होवे अपरञ्च। पत्र[2] तथा तार[3] आपको आयो परन्तु

---

१. इस पत्र पर कोई तारीख या तिथि नहीं है। पत्र में ९ जुलाई सन् १८८२ को आर्य समाज स्थापित होने का उल्लेख है। पत्र उस के बाद ही ही कभी लिखा गया होगा।

२. इस पत्र का आशय 'ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन' के पूर्ण संख्या ६८७ (भाग २, पृष्ठ ७१२) के पत्र में देखें। इस विषय पर पृष्ठ ७१३ की टिप्पणी सं० १ भी द्रष्टव्य है।

३. इस तार का सारांश 'ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन' के पूर्ण संख्या ६८८ (भाग २, पृष्ठ ७१३) पर छपा है।

वहुत न्यून सावकाश रयो तीसूं अठाम् तो सवारी वगेरा प्रबन्ध पहुंच सके नहीं परन्तु हाकम चित्तोड़ के नाम हुकम अठासूं पुग गयो हे सो आपके वास्ते म्यानो पहरो हलकारो तथा दूजा साथ वाला के सवारी भार बरदारी के वास्ते ऊटगाडी फोरन हाकम चित्तोड बंदोबस्त कारय देवेगा ओर। आगे को प्रवन्ध भी उत्तम रीति सूं कर देवेगा सो आपने कुछ भी 'श्रम' नहीं होवेगा आप कुमी के साथ चित्तोड होय उदयपुर पधार जावे परमानन्द की वार्ता हे कि आप के साथ कुछ दिन सत्संग में व्यतीत होवेगा।

सं० १९३९ श्रावण कृष्णा १०[1]

—:o:—

[पूर्ण संख्या ३३७]　　पत्र-सूचना

जोधपुर के महाराजा द्वारा जोधपुर बुलाने के लिये पत्र।[2]

—:o:—

[पूर्ण संख्या ३३८]　　पत्र-सूचना

[मन्त्री आर्यसमाज फरुखाबाद का पत्र]

विषय 'प्रश्नोत्तरी'।[3]

१४-७-८२[4]

—:o:—

१. प्रथम श्रावण कृष्णा १०, स० १९३९ = १० जुलाई सन् १८८२।

२. इस पत्र की सूचना पं० लेखराम कृत जीवनचरित हिन्दी सं० पृष्ठ ९०५ पर मिलती है। यह पत्र जोधपुर पहुंचने से १ वर्ष पूर्व किसी समय भेजा गया था। कहां भेजा गया था, यह अज्ञात है।

३. इस पत्र का निर्देश पं० भगवद्दत्त जी ने 'ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन' भाग २, पृष्ठ ५८८ की टिप्पणी नं० ३ के अन्तर्गत पृष्ठ ५८९ (प० ५-६) में किया है। वहीं पत्र संख्या और तारीख का भी उल्लेख है।

४. हमें इस तारीख में भूल प्रतीत होती है। प० भगवद्दत्त जी की टिप्पणी के अनुसार यह पत्र खण्डवा भेजा गया था। १४-७-८२ को ऋ० द० खण्डवा में नहीं थे, जावरा में थे। खण्डवा में ऋ० द० का निवास २४-

[पूर्ण संख्या ३३९] **पत्रांश**

संख्या ५२

पत्र आपका और ७ पृष्ठ प्रश्नोत्तरी के उत्तर में पहुंचे। छापने के विषय में अन्तरंग सभा से यह अनुमति मिली कि नया प्रेस एक्ट में छापने का विषय है।.........और जो १००० प्रति अलग छापी जावे वह भी ऊपर के कारणों से (मुझे छोड़) आप लिखें जिसके नाम से छपवाने का विचार किया जाये।[1]

—:•:—

[पूर्ण संख्या ३४०] **पत्र-सारांश**

प्रशासक [चित्तौड़गढ़] चूंकि दौरे पर गया है हुआ था इसलिये विलम्ब हुआ। प्रशासक आ गया है सर्व प्रबन्ध हो गया है आप पधारें।[2]

(स्वामी) आत्मानन्द

—:•:—

[पूर्ण संख्या ३४१] **पत्र**

(अङ्क २०)

आर्य्य समाज[3]

६-८२ से ४-७-८२ तक था। अतः यहां २४-६-८२ तारीख होनी चाहिये। दूसरा कारण यह है कि वहीं टिप्पणी में अगले पत्र (पूर्ण संख्या ३३९) पर पत्र संख्या ५२ दी है और तारीख १९-७-८२ लिखी है। ४-५ दिन में आ० स० फर्रुखाबाद ने २५ पत्र लिखें हों यह सम्भव नहीं है।

१. यह पत्रांश भी पं० भगवद्दत्त जी ने 'ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन' भाग २, पृष्ठ ५८८ की टिप्पणी ३ के अन्तर्गत पृष्ठ ५८९ (प० ९-१२ तक)। पर छापा है पत्र संख्या और तारीख का भी निर्देश वहीं पर किया है।

२. यह पत्र सारांश पं० लेखराम कृत जीवनचरित हिन्दी सं पृष्ठ ५७८ पर छपा है। वहीं स्वामी आत्मानन्द के पत्र पहुंचने की तारीख २३ जुलाई सन् १८८२ दी हुई है।

३. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १, पृष्ठ ३६९ पर छपा है।

लखनौ

[1]पण्डित रामाधार जी वाजपेइ उपप्रधान
आर्य्य समाज लखनौ

महाशय नमस्ते—

अन्तरङ्ग सभा[2] की आज्ञानुसार आप से निवेदन है कि छठी अगस्त को जो अन्तरङ्ग सभा हुई थी उस में आप नहीं पधारे यद्यपि आप की सेवा में सूचना पत्र भी भेजा गया था और आप ने उस पर हस्ताक्षर भी कर दिये थे—

जब प्रधान तथा उपप्रधान इन दोनों अधिष्ठाताओं में से एक भी उपस्थित न होगा तो विचारिये सभा का कार्य्य किस प्रकार चल शक्ता है. इस कारण आप को उचित है कि सभा में अवश्य पधारा करो—कदापि किसी कारण से आप उपस्थित न हो शकें तो कृपा करके आप अपनी सम्मति दीजिये कि इस के अर्थ क्या प्रबन्ध किया जावे—आशा है इस का उत्तर आप शीघ्र दीजियेगा—

आप का आज्ञाकारी
द० हरनामप्रसाद
मंत्री आर्य्य समाज, लखनौ।

—:o:—

[पूर्ण संख्या ३४२] पत्र

ओ३म्[3]

आर्य्यसमाज, लखनौ।

---

१. यद्यपि यह पत्र ऋ० द० के नाम नहीं लिखा गया है तथापि इस पत्र का संबन्ध हरनामदास मन्त्री आ० लखनऊ के १० सितम्बर को ऋषि दयानन्द को लिखे गये पत्र के साथ है। अत: पूर्वापर के सम्बन्ध ज्ञानार्थ हम इसे यहाँ छाप रहे हैं।

२. अन्तरङ्ग सभा ६ अगस्त १८८२ को हुई थी। यह अगली पूर्ण संख्या ३४२ के पत्र से ज्ञात होता है। अत: यह पत्र ६ अगस्त १८८२ के २-४ दिन पश्चात् लिखा गया होगा।

३. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्र व्यवहार' भाग १, पृष्ठ ३६६-३६७ पर छपा है।

अन्तरङ्ग सभा की आज्ञा से

मन्त्री

आर्य्यसमाज लखनौ

'नमस्ते;

विदित हो कि आपके पत्रावलोकनानन्तर अत्यानन्द प्राप्त हुआ– जो कि आप ने सूचना के विषय में निमंत्रणा की थी उस पर मैंने हस्ताक्षर योग्यता से किये क्योंकि कोई पुरुष उत्तम कार्य्य में सम्मति ले या हस्ताक्षर की आपेक्षा करे तो देना उचित है—और जो प्रधान के विना कार्य्य समाज का नहीं चलता है सो आप स्वतन्त्र करता हैं कौन कार्य्य प्रधान या उपप्रधान की सम्मति से करते हैं. और आपने लिखा कि समाज में नहीं उपस्थित हुये सो विचार की अवस्था है किस काल मैं जब से आप की सभा प्रथक होनी उपस्थित रहा और इस अन्तरङ्ग सभा में जो कि ६ अगस्त में हुई थी नही उपस्थित रहा हूं और जो सम्मति के विषय में आप ने लिखा है सो आप सब महाशयों को विदित है कि ऐक्य मत गत सभों में अन्तरङ्ग या साधारण सभा के कार्य्यों में जो मैं सम्मति देता था सो आप सब सभ्यगणों के विरुद्ध होती थी और आप सर्व महाशयों की ही निश्चित होती थी मुझ को केवली समझ कर ग्रहण नहीं करते थे सो अब मेरी सम्मति की आपेक्षा आप महाशयों को होनी न चाहिये—और जो कार्य्य मेरे अनुकूल आप निवेदन करें तौ मैं अवस्य ही ग्रहण करूंगा—

आप का शुभचिन्तक

द० पण्डित् रामसेवक मंत्री

आर्य्यसमाज, लखनौ।

—:०:—

[पूर्ण संख्या ३४३] पत्र

॥ श्रीः ।[२]

श्रीमत् यतिराज दयानन्द सरस्वतिभ्यो नमः

[illegible] यह पत्र [illegible] वाजपेयी को लिखा गया है। इसे यहां छापने [illegible] पृष्ठ ४१६ की टि० १ में देखें।

[illegible] अनुमति सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग २, पृष्ठ ४५ पर छपा है।

आप यहां ४ बजे राज्यभवन में पधारिये. यान ३।। बजे वहां पहुंचेगा[1]

सेवक श्यामलदास.

—:०:—

[पूर्ण संख्या ३४४] पत्र

श्रीमत्परमगुरुभ्यो नमो नमः[2]

भगवन्—आप की सेवा में गोरक्षा होने के अर्थ इस पत्र के साथ एक प्रार्थना पत्र ७२ सहस्र मनुष्यों की ओर से अपने हस्ताक्षर करके परम विनय पूर्वक भेजता हुं यदि दो मास का विलम्ब होय तो सूचित किया जाऊं—एक लक्ष्य संख्या पूर्ति हो सकती है और यह संख्या नगर फर्रुखाबाद और फतहगढ़ से जुदी है—ऐसा जानिए क्योंकि उन दोनों नगरों की संख्या समाज से आवेगी ॥ १३-८-८२[3]

ह० गोपाल राव हरिः

—:०:—

[पूर्ण संख्या ३४५] पत्र-सूचना

[द्विवेदी छगनलाल, मसूदा का पत्र][4]
सं० १९३९, द्वितीय श्रावण सुदि २.[5]

—:०:—

१. तिथि का निर्देश नहीं है। उदयपुर पहुंचने (११ अगस्त १८८२) के अनन्तर किसी दिन राजमहल में जाने के निमित्त लिखा गया।

२. यह पत्र दयानन्द दिग्विजयार्क के भाग २, पृष्ठ ७९ की टिप्पणी में छपा है।

३. द्वि० श्रावण कृ० ३०, रविवार सं० १९३९ दयानन्द दिग्विजयार्क के भाग २ पृष्ठ ७९ की टिप्पणी में मुद्रित। इस पत्र का उत्तर ऋषि दयानन्द ने द्वि० श्रा० शु० १२ शनिवार, सं० १९३९ (२६ अगस्त १८८२) को दिया। द्र० 'ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन' [illegible] पूर्ण संख्या ७०२ भाग २, पृष्ठ ७३६।

४. इस पत्र की सूचना [illegible] लाल के सं० १९३९ द्वि० श्रावण सुदि ९ मंगलवार के पूर्ण सं[illegible] मिलती है।

५. १५ अगस्त १८८२।

[पूर्ण संख्या ३४६] **पत्र**

॥ श्री रणछोड़राये जी[1]

श्री आदमाता जी

॥ सेवग की दंदोत मालुम होने कृपासु द्रस्टी बंणी रहे कृपाकर कामकाज लकावो कसे मड़ी दरसण जाये (वे)गा सरीर बेमार हेजी की देर है

॥ सीध श्री उदयपुर सुभस्थाने सर्वोपमा विराज्यमान अनेक ओपमायोग्य स्वामि जी महाराज श्री ५ श्री श्री श्री दयानंद सरस्वति जी योग्य देलवाड़ा से **राज राणा फतेहसिंह**[2] लिखतां डंडवत मालूम होवे अठाका समाचार श्री कृपा से भला है आप का सदा भला चाहिये आप पुज्य है अप्रंच कृपा पत्र आप का श्रा० कृ० १२ का लिखा[3] शुदि ४ इहां पंहुचा पढ़ने से बहुत आनंद हुवा आप ने इहां का कुशल क्षेम का समाचार मंगाया सो आप की दया से कुशल क्षेम है और आप उदयपुर पधारे सो समाचार कविराजा शामलदास जी के जवांनी सुनें और मैं भी पांच दस दिन में हाजिर होऊंगा क्योंके एक महीने बीमारी ज्यादा रही इस वास्ते अब आराम हुवां दरसनों के लिये हाजर होंऊगा आप के इहां पधारने से बहुत खुशी है जैसी दया द्रष्टी है वैसी रखियेगा

सं० १९३९ अधिक श्रा० शुदि ४[4]

परोपकारिणी सभा उदयपुर मसूदा शाहपुरा फरुकाबाद संबंधी पत्र आये हुये।

[राजराणा फतेहसिंह]

—:•:—

१. यह पत्र पं० चमूपति सम्पादित 'ऋ० द० का पत्र व्यवहार' भाग २ पृष्ठ १२६-१२७ पर छपा है।

२. उदयपुर के महाराणा सज्जन सिंह के निस्सन्तान मरने पर २४ दिसम्बर १८८४ में ये ही उदयपुर की गद्दी पर बैठे थे।

३. अधिक श्रावण कृष्णा १२, सं० १९३९ = १० अगस्त को लिखा हुआ ऋ० द० का पत्र हमें उपलब्ध नहीं हुआ।

४. १८ अगस्त सन् १८८२।

[पूर्ण संख्या ३४७] पत्र-सारांश

आर्य प्रश्नोत्तरी के उत्तर अजमेर पण्डित मुन्ना लाल जी के पास भेज दिये।[1]

कालीचरण रामचरण

—:०:—

[पूर्ण संख्या ३४८] पत्र

॥ ओ३म् ॥[2]

॥ सिद्ध श्री उदयपुर शुभ स्थाने सर्व शुभ ओपमा सकल गुण निधान सर्व शास्त्र संपन्न श्रीमत् परमहंस परिव्राजकाचार्य वर्य्यंत्वाद्यनेकगुण सम्पद्विराजमान श्रीमद्वेद विहिता चार धर्म्म निरूपक श्रीमत् स्वामी जी महाराज श्री श्री १०८ श्री श्री दयानन्द सरस्वती जी महाराज योग्य मसूदा से द्विवेदी छगनलाल का अनेकधानमस्ते मालुम होवे अत्र कुशलमस्ति तत्रास्त्वेवं अपरंच यहां से पत्र आप कूं द्वितिय श्रावण शुदि २ कूं दिया था[3] सो पहुंचा होगा और श्री हिजूर में[4] आप का आशिर्वाद कहा और बाला[5] की दवाई के वास्ते अरज की

---

१. इस पत्र सारांश का निर्देश ऋ० द० के पूर्ण संख्या ७०१ (भाग २, पृष्ठ ७३६) के पत्र में मिलता है।

२. यह पत्र पं० चमूपति सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग २, पृष्ठ ६५-६६ पर छपा है।

३. यह पत्र हमें उपलब्ध नहीं हुआ। पूर्व पूर्ण संख्या ३४५ पर पत्र-सूचना छापी है।

४. अर्थात् राव बहादुर सिंह, मसूदा (अजमेर) नरेश।

५. इस रोग में शरीर के किसी भी भाग से सूत जैसा पतला जीव निकलता है। यह कभी कभी हाथ डेढ़ हाथ का भी होता है। इसमें रोगी को बहुत कष्ट होता है। यह राजस्थान में अधिकतर पाया जाता है। इसे वहां की भाषा में 'बाला' कहते हैं। यह जीव गन्दे तालाब बावड़ी आदि के पानी में रहता है और पानी के साथ पेट में चला जाता है। रक्त के साथ घूमता और बढ़ता रहता है। जहां भी किसी कारण वश रुकावट होती है वहां फोड़ा होकर पकने पर अपना मुंह निकालता है। इसे पूरे रूप में निकलने में कई कई मास लग जाते हैं। यदि बीच में टूट जाये तो अन्य स्थान से

सो आप कूं पायलागन मालुम कराया है और बाला की दवाइयां माफक फरमाई सो मालुम होवे मेदा ऽ। पाव ऐरंड का बीज ऽ। पाव अलसी ऽ। पाव सींगो मोहोरा ऽ– एक छटांक सुहागा ऽ– ऐक छटांक अंजीर ऽ- ऐक छटाक आंबी हलद ऽ- ऐक छटांक ऐलया ऽ- ऐक छटांक कुचीला ऽ- ऐक छटांक नरकचूर ऽ- ऐक छटांक इन सब को पीस से शामिल करके पुलटिस बना लेवें[1] और नारू के मुंह अजैपालया की टिबकी लगावें सिवाय मूंह के और जगह नहीं लग सके क्योंकि और जगह लगन से फफोला हो जाता है पीछे उस नारू के चैतरफ कागज लगाणा मुंह खुला सा रख के फिर ऊपर लिखि दवायों का अंदाज माफक पुलटिस बना कर बांधना और दिन रात में दो दफै पुलटिस बांधना चाहिए नींब के पानी से धो धो कर पुलटिस बांधें जब तक कि आराम न हो और अर्से से आपका पत्र भी हिजूर में नहीं आया सो भेजना चाहिये और श्री हिजूर साहिब ने गोरक्षार्थ के नमूनें के वास्ते ताकीद फरमाई है सो कृपा करके जल्दी भेजना फरमावें और यहां सब तरह से आनन्द है यहां लायक कोई काय हो सो और कृपा पत्र लिखना फरमावें संवत् १९३९ द्वितीय श्रावण शुदि ९ भौमवार[2] ॥ लिखतां महता राजमल का अनेकधानमस्ते मालुम होवे सुदृष्टि बनी रहे।

[छगनलाल द्विवेदी]

—:०:—

निकलता है और बहुत कष्ट देता है। मैंने संवत् १९३५ में 'नन्दवई' ग्राम चित्तोड़ जिला में एक व्यक्ति के एक साथ ४-६ बाले निकलते देखे थे। एक ने जीभ में मुंह निकाला था। यदि ऐसे स्थानों पर पानी को मोटे कपड़े की दो तीन तह से छान लिया जाये तो यह रोग नहीं होता। मेरे पिता श्री गौरीलाल आचार्य नन्दवई में ४ वर्ष रहे, परन्तु पानी छानकर पीने का नियम पालने से वे इस भयङ्कर रोग से बचे रहे। मनुस्मृति (६।४६) वस्त्रपूतं जलं पिबेत् का विधान ऐसे अनेक रोगों से रक्षा करता है। यु० मी०

१. अगले १८ सितम्बर १८८२ का पूर्ण संख्या ३७६ के मसूदा नरेश बहादुर सिंह के पत्रानुसार इस दवा में हींग भी मिलानी चाहिये। बाले की यह दवा राव बहादुर सिंह ने ही लिखवाई थी। यह भी उसी पत्र से ज्ञात होता है।

२. भौमवार (मंगलवार) के दिन ९मी का भी योग था। २२ अगस्त १८८२।

[पूर्ण संख्या ३४९] पत्रांश

आर्य प्रश्नोत्तरी के खण्डन को किसकी ओर से प्रकाश करें।[1]

मुन्नालाल सम्पादक देश हितैषी, अजमेर

२४-८-८२

—:०:—

[पूर्ण संख्या ३५०] पत्र-सूचना

[मुंशी समर्थदान, प्रयाग][2]

३ सितम्बर १८८२

—:०:—

[पूर्ण संख्या ३५१] पत्र

॥ ओम् ॥[3]

.........भा. कृ. ६[4]

सिद्धि श्री १०८ मन्महानुभाव स्वामि दयानन्द

सरस्वतीभ्यः प्रणत्यानिवेदनम्

५१ मन्त्र यजु० भेजे हैं आपके पास पहुंचे होंगे इसमें (अ० २३ मं० १८) का नवीन उक्ति से मेरा कहा अन्वय है तथा (२३ अ० मं ३२) का अन्वय तीनि प्रकार से मैंने कहा है देखना चाहिये अब

---

१. इस पत्रांश को पं० भगवद्दत्त जी ने 'ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन' के पूर्ण संख्या ६९३, भाग २, पृष्ठ ७१६ पर छपे पत्र की टि० ३ के अन्तर्गत पृष्ठ ७१८ पर पं० २९ में उद्धृत किया है।

२. इस पत्र की सूचना ऋ० द० के पूर्ण संख्या ७०९ (भाग २, पृष्ठ ७४०) में मिलती है। तारीख का निर्देश भी वहीं किया हुआ है।

३. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्र व्यवहार' भाग १, पृष्ठ ४१९-४२२ तक पर छपा है।

४. यहां संवत् का उल्लेख नहीं है, परन्तु इस पत्र के पढ़ने से यह सं० १९३९ भा० कृ० ६ अर्थात् ३ सितम्बर १८८२ को लिखा गया है।

भाषा बनाने के लिये अभी जो मन्त्र आपने भेजे तथा पिछले १० मन्त्र मेरे पास और हैं आगे कांपी भेजना चाहिये।

भाषा बनाने के लिये गोंदगाद शिवदयालु से मुंशी करा रहे हैं यह तनिक शोच विचार के होना चाहिये इस भाषा बनाने में बहुत जगह कठिन पड़ती और आगे पीछे बहुत ख्याल रखने पड़ता इस काम में जो आप के पास दो बरस न रहा हो और जिसने आपका ठीक सिद्धान्त न जाना हो उससे इस भाषा का बनवाना इस काम का ढंग बिगडवाना है" क्योंकि जब तक मत्र भाष्य बना देने का सामर्थ्य जो मनुष्य कर लेवे उससे इस कामका कराना लडिकियोंका खेल खिलवाना है। पर तो भी मैं जानता हूं कि चाहे काम की सफाई हो या दुदशा हो दुसरे आदिमी का ज्वालादत्त के काम पर नाम कर ज्वालादत्त को स्वामीजी के काम से जवाव दिला देना मुंशी समर्थदान ने परम पुरुषार्थ समझा है क्योंकि यह मनीषि और भी कितनी ही कुचेष्टा मेरे लिये कर रहा है जो इसी प्रकार जैसी कि और चेष्टा कर रहा है करता रहा तो आपके कामसे मुझसे जवाब अवश्य दिलावेगा।

चकार की जगह और अर्थ तो लिखताही हूं पर कहीं कहीं बहुत चकार आ जाते हैं तो भाषा की रीति से सब चकार नहीं लग सक है, क्योंकि भाषा की रीति से बहुत पदों के अन्त में और शब्द आ सकता है प्रत्येक पद और और नहीं हो सकता। अप्यर्थक जहां चकार है वहां भी शब्द ही अर्थ होना चाहिये और यह पुनरर्थक चकार की योग्यता में आता है। पर तो भी जहां तक भी शब्द वचा मिले वहां तक मैं वचा देऊंगा। फारसी शब्दों के वचाने के लिये गमारू शब्द भी मिल जाय तो गमारू शब्द धर देता हूं जहां तक वच सकते वहां तक वचा भी देता हूं। पिछिला जो बण्डल ५० मंत्र का भेजा है उस में १०० मंत्र के तुल्य भाषा थी उसमें रात्रि को भी परिश्रम करता रहा हूं। १५ दिन आगे चिट्ठी भेजने का तो ढंग अच्छा लगे जो आप २०० मन्त्र भेजा करें क्योंकि १०० मन्त्र एक पक्ष के लिये वैसे हो चाहिये १०० मन्त्र आप भेजें तो जिस समय कांपी आवे उसी समय दुसरी कांपी के लिये पत्र देऊं तो १५ दिन पेस्तर पत्र दे सकता हूं इस से इस विषय में इतना निवेदन है कि—जिस में मेरी डिउढ लगी रहे तो पन्द्रह दिन पेस्तर पत्र का नियम बंधे॥

किमधिकेन

(**एकाचमेतिस्रश्चमे०**) इत्यादि जगहों में सब चकारों पर और और रखना तो ठीक नहीं। आप ने जो कोई अपूर्व युक्ति सोच रक्खी हो तो कृपा कर लिख भेजिये। मेरी शिच्छा के अनुकूल जो हाल आप लिखें उस को मेरे पत्र में लिखिये तो उन बातों को आप की आज्ञानुकूल अपने काम में मैं सम्हालता जाऊं मुंशी समर्थदान से मेरे विषय का मुझे हाल ठीक नहीं मिलता। आप ने लिखा था कि ज्वालादत्त १५ रोज पेस्तर कापी के लिये पत्र लिखा करे यह हाल रामचन्द्र ने आप की चिट्ठी का मुझ से कहा। मुंशी कहते हैं कि १५ पेस्तर हम से कह दिआ करो हम कांपी मगा दिआ करेंगे विश्वेश्वर ने हम से कहा कि भाषा का बंडल तुम आप बांध और एक पत्र उस की सब व्यवस्था का बंडल के साथ स्वामी जी को दिआ करो। मैं अपने हाथ बंडल बांधूं तो मुंशी को वे मन देखता हूं इससे बंडल नहीं बांधता बंडल अपने हाथ बांधूं तो ८वें रोज बंडल के साथ पत्र आप को दिआ करूं अलग जो पत्र भेजता हूं सो अपने पास से टिकट लगा कर भेजता हूं। इस प्रस्ताव में इतना निवेदन है कि मुझसे विगड़े सो मेरे लिये पत्र में लिखा कीजिये और कापी मेरे नाम भेजा कीजिये जो मेरे नाम कांपी भेजने में हानि हो तो न भेजिये। अत्र विषये बहु लेखनं विफली करणमिति भवन्तो विदां कुर्वन्त्वेतावतैवेत्यलम् ॥

इस पत्र के लिखने से मेरा यह अभिप्राय नहीं है कि असावधानी के अवलम्ब से इस काम को किसी तरह बिगाडू। तथापि जो मेरे लिये आप का अभिप्राय हो सो। मालूम हो।

भीमसेन·· अपनी अपनी नाराजी से जवाब दे दिया[1] मेरी स्थिरता में मुंशी समर्थदान प्रतिबंधक होगा।

किमधिकम्
कृपापात्र
ज्वालादत्त,

—:०:—

१. यहां पाठ होना चाहिये—'**भीमसेन को आपने अपनी नाराजी से जवाब दे दिया।**' इस विषय में ऋ० द० ने मार्ग० बदी ५ रवि १९३९—

[पूर्ण संख्या ३५२] पत्र-सूचना

[मुंशी समर्थदान का पत्र][1]
४ सितम्बर १८८२

—:०:—

[पूर्ण संख्या ३५३] पत्र

(अङ्क २२)

आर्य्य समाज[2]
लखनौ

श्रीमत् परिव्राजकाचार्य्य श्रीस्वामी दयानन्द सरस्वती समीपेषु स्वामिन् नमस्ते—

बहुत दिनों से आप का कोई पत्र नही आया सो कृपा पूर्वक अपनी प्रसन्नता से विदित किया कीजिये—

(२) समाज का संक्षेप से वृत्तान्त आप की दृष्टिगोचर होने और यथार्थ प्रबन्ध के निमित्त आप की सेवा में समर्पित करता हूं, जिस से कि यह समाज आनन्द पूवक चला जावे वह निम्न लेखानुसार जानना चाहिये—

(३) यह समाज वैशाख कृष्ण १५[3] वार रविवार सम्वत् १९३७ विक्रमी[4] में पण्डित् रामाधार जी वाजपेयि और बावू सरयूदयाल के उद्योग और स्वामी गङ्गेश[5] जी के कहने से आप ने स्थापित की,

---

२८ जनवरी १८८२ को समर्थदान को लिखे पत्र में लिखा है—'आज अत्यन्त अयोग्यता के कारण भीमसेन को सब दिन के लिये निकाल दिया है।' द्र०— पूर्ण संख्या ७४९, भाग २, पृष्ठ ७८२-७८३।

१. इस पत्र की तारीख की सूचना ऋ० द० के पूर्ण संख्या ७१० (भाग २, पृष्ठ ७४१) के पत्र से मिलती है।

२. यह पत्र म० मुंशीराम द्वारा सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १, पृष्ठ ३४९-३६४ तक पर छपा है।

३. यहां '१५' के स्थान में '३०' होना चाहिये। अमावास्या का संकेत पंचाङ्गों में ३० संख्या से किया जाता है।

४. अर्थात् ९ मई सन् १८८०।

५. स्वामी गङ्गेश का निर्देश 'ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन' के पूर्ण संख्या ७३ (भाग १ पृष्ठ ९२, प० ७-२८) में भी मिलता है।

जिस में कि आपने पण्डित इन्द्रनारायण जी मसलदां को प्रधान और पण्डित् रामाधार जी वाजपेई को उपप्रधान की पदवी पर स्थापित किया और इसी प्रकार उस समय पण्डित् रामदुलारे जी वाजपेयि जी मन्त्री, बाबू सरयूदयाल जी को उपमंत्री, पण्डित अयोध्याप्रसाद जी मिश्र को कोषाध्यक्ष और बाबू चन्दनगोपाल जी को पुस्तकाध्यक्ष की पदवियों पर नियुक्त किया था और अन्तरङ्ग सभा के अर्थ व्यवस्थापकों को उक्त महाशयों ने चुन लिया था—

(४) जब यह समाज स्थापित हुआ तो पण्डित् रामाधार जी वाजपेयि ने आप की पुस्तकों का भार समाज के समर्पित किया अर्थात् वह पुस्तकें जो समाज स्थापित होने से प्रथम आपने उक्त महाशय के समीप भेजी थीं और उन में से जो शेष रह गई थीं—समाज में देदीं—जिन को प्रथम वर्ग के पुस्तकों के हिसाब में दिखा चुके है—

यह समाज नियम और उप नियमानुसार सत्यप्रकाश नामक पाठशाला में पाक्षिक रविवार को होता रहा, इस समयान्तर में पण्डित् रामदुलारे जी वाजपेयि को नौकरी के कारण पीलीभीत जाने की आवश्यकता हुई तो उस समय सभा ने बाबू चन्दनगोपाल जी पुस्तकाध्यक्ष को उनकी पदवी पर और पण्डित् केशवनाथ जी पण्ड्या को बाबू चन्दनगोपाल जी की पदवी पर नियुक्त किया और प्रथम वर्ष पर्यन्त आनन्द पूर्वक समाज उसी स्थान में होता रहा जिसका सम्पूर्ण वृत्तान्त प्रथम वार्षिकोत्सव के समाचार से आप के विदित हुआ होगा, पुनः १ प्रति उस की आप की सेवा में अब भी भेजी जाती है—

(५) द्वितीय वर्षारम्भ के २ मास पश्चात् सत्यप्रकाश पाठशालाऽध्यक्ष ने वे निवेदन किया कि पाठशाला में आर्य और पौराणिक दोनों प्रकार के सभासद युक्त हैं इस कारण पौराणिक मतावलम्बी यहां समाज होने से अप्रसन्न हैं और इस कारण से पाठशाला के पारितोषिक के न्यून होने की सम्भावना है, इस लिये आर्यों को उचित है कि समाज अन्य स्थान में किया करें जिस से पाठशाला को किसी प्रकार की बाधा न हो, इस में हम लोगों ने भी पाठशाला की हानि समझ कर कुछ समय के लिये कि जब तक स्थान का प्रबन्ध हो गणेशगंज थाने के समीप मैदान में जिसमें कि प्रथम वार्षि-

कोत्सव भी कर चुके थे समाज करना आरम्भ किया—परन्तु यह वर्षा ऋतु का समय था सो एक दिवश ऐसा हुआ कि समाज के समय पानी आया और इसी कारण सभा शीघ्र विसर्जन की गई—

जब ऐसा हुआ तो पण्डित् रामाधार जी वाजपेई उपप्रधान साहब से निवेदन किया कि जब तक अन्य स्थान का प्रबन्ध न हो तब तक मेरे स्थान पर समाज हुआ करे। इस को सब ने स्वीकार किया और समाज उक्त महाशय के स्थान पर होने लगी—

(६) तत्पश्चात् पण्डित रामाधार जी वाजपेयि ने वेदभाष्य का कार्य्य भी सभा के समर्पण किया अर्थात् जो अङ्क वेदभाष्य के उनके मध्यस्थ आते थे वह समाज के मध्यस्थ आने लगे जिस विषय में आप की भी आज्ञा लेली गई थी—यह समाचार द्वितीय वार्षिकोत्सव में लिखे गये हैं वह आप को विदित हुये होंगे।

(७) इस समाज में व्याख्यानादि होने का समय प्रथम ४ बजे से ६ बजे तक रहा, यह समय थोड़े ही काल तक रहा परन्तु तत्पश्चात् बहुत विचार पूर्वक इस का समय ६ बजे से ८ बजे तक रक्खा गया और उप नियमानुकूल इसी समय में समाज होती रही—

(८) जब यह समाज पं० रामाधार जी के स्थाने मे होने लगा तो उक्त महाशय ने कुछ कालान्तर के पश्चात् एक बाल्यसमाज आरम्भ किया जिस का समय ४ बजे से ६ बजे तक रक्खा—इस में लड़के किसी किसी पुस्तक से लिख कर पढ़ते थे—अब एक दिवश ऐसा अवसर हुआ कि अन्तरङ्ग सभा के अर्थ जो विज्ञापन दिया गया उस का समय भी ४ बजे से ६ बजे तक रक्खा गया—और सभासद् समय पर उपस्थित हुये. और सभा कार्य्य आरम्भ होने ही को था कि एक बालक आसन पर बैठ कर कुछ पढ़ने लगा उस का आशय यही था कि आप श्रेष्ठ पुरुषों को ऐसा उचित नहीं—कि हमारी समाज के समय आप समाज करें और हम को निराश करें इस लिये हम निवेदन करते हैं कि आप इस समय अपनी सभा न करें जब हम कह चुके तब आप अपना कार्य्य करें इस बालक की अवस्था अनुमान १२ वर्ष के होगी और यह लेख भी इसका लिखा न था वरन लिखाया हुआ था—इस में पण्डित् रामाधार जी वाजपेई उपप्रधान जी ने लड़कों से कहा तुम पढ़ो तुम्हारे लिये समय है इस के उत्तर में बाबू चन्दनगोपाल जी पूर्व मन्त्री ने कहा कि जब विज्ञापन दिया गया

और आपने उस पर हस्ताक्षर भी किये तो आपको उचित था कि उस में समय बदल देते, जब उस में समय नहीं बदला गया तो अब भी नहीं बदला जा शक्ता—इस के उत्तर में रामाधार जी ने कहा कि बाल्यसमाज अवश्य होगी. तब एक सभासद बोले कि यह आप का स्थान है इसी से आप ऐसा ऐसा कहते हैं नहीं तो न कहते और जब समय पर सभा न होगी तो हम बैठ कर क्या करेंगी इस के उत्तर में पं० रामाधार जी ने कहा कि जिस की इच्छा हो बैठे जिस की इच्छा न होय वह जाय-- यह उन का वाक्य उस समय अनुचित तो लगा परन्तु समाज में विघ्न न पड़े इस कारण किसी ने कुछ न कहा—नमृता पूर्व्वक कह सुन कर समाज कार्य्य करना आरम्भ किया गया—

(९) इस के अनन्तर किसी अन्य सभा में उक्त महाशय ने बाबू चन्दनगोपाल जी मंत्री और पण्डित् केशवराम जी के विषय में ऐसा कहा कि यह दोनों अपनी सम्मति अनुकूल सब कार्य करते हैं—यह उन का कहना यथार्थ न था-- वरन जो कार्य्य उत्तम होता था और उस में उन की सम्मति उत्तम होती थी तो अन्तरङ्ग सभा के सभासद उस को स्वीकृत करते थे अन्यथा नहीं—यह नहीं कह सके कि ऐसा उन को कैसे भ्यासित हुआ—

(१०) जब द्वितीय वार्षिकोत्सव का समय निकट आया और अन्तरङ्ग सभा की आज्ञानुसार निमंत्रण पत्र भेजे गये तत्पस्चात् इस के प्रबन्धार्थ जो अन्तरङ्ग सभा पण्डित रामाधार जी वाजपेयि के स्थान पर की गई तो उस का समय ६ बजे से ८ बजे तक का रक्खा —अब देखिये जब सभा कार्य्य आरम्भ हुआ तो उक्त महाशय सन्ध्या के निमित्त उठ कर चले और पं० रामसेवक जी व्यवस्थापक को सायङ्काल का होम कराने के निमित्त बुलाया—इस पर मंत्री जी ने कहा कि उत्सव के ८ दिन रह गये हैं और आप पूजा को जाते हैं प्रथम यह महत् कार्य्य कर लेते, इस पर दोनों महाशयों ने कुछ भी ध्यान न दिया और अनुमान आध घण्टे से अधिक इस में उन का लगा—जब उक्त महाशय सभा में पधारे तो मंत्री जी ने सभासदों से उन के उठ कर चले जाने का कारण जिज्ञासा किया कि सभा से उठ जाना उनको उचित था अथवा नहीं। इसके उत्तर में सभासदों ने उपप्रधान जी से पूंछा तो उन्होंने उत्तर दिया कि सन्ध्या वन्दन से

अधिक समाज कार्य्य नहीं है और न इस समय सभा होनी चाहिये—इस के उत्तर में मंत्री जी ने कहा कि सभा का समय दो वर्ष से यही चला आता है और जो समय बदलने का विचार है तो नियम भी तब हो सक्ता है अब सभा दूसरा समय निश्चित करले इस समय ऐसा क्यों हुआ—और सन्ध्या वन्दन के विषय में तो समाज विषय भी अनेक प्रकार के धर्म सम्बन्धी शिक्षालिकारक और परोपकारक होने के कारण न्यून नहीं वरन अधिक हैं और इसका प्रत्यक्ष प्रमाण स्वामी जी ही महाराज को देखिये और तिसपर भी एक दिवश सन्ध्योपासन थोड़ी देर पश्चात् ही करते तो क्या हानि थी—द्वितीय आप को प्रायः रात के ८ वा ९ बजे सन्ध्योपासन करने का अवकाश हुआ है—इस विषय में अन्त को यह निश्चित हुआ कि आगे से जब सभा का कार्य्य प्रारम्भ हुआ करे तो उस समय कोई सभासद सभा की आज्ञा बिना न जावे—इसी सभा में पण्डित् रामाधार जी की अनुमति से तृतीय वर्ष के निमित्त साप्ताहिक समाज का होना निश्चित हुआ—

(११) यह द्वितीय वर्ष भी जिस आनन्द पूर्वक व्यतीत हुआ उस के समाचार तथा तृतीय वर्ष के लिये जो जो अधिकारी और व्यवस्थापक स्थापित हुये हैं उन का वृत्तान्त द्वितीय वार्षिकोत्सव समाचार से विदित हुये होंगे पुनः अब भी १ प्रति इसकी आप की सेवा में समर्पण करता हूं—

(१२) अब तृतीय वर्ष का आरम्भ हुआ जिस के एक मास पश्चात्[1] साधारण सभा में पं० केशवराम जी ने कई एक सभासदों के कहने से अन्धेर नगरी नाम्नी नाटिका को पढ़ा इस की समाप्ति होने पर पण्डित् रामाधार जी आसन पर बैठ कर कहा कि मेरा स्थान ऐसी ऐसी पुस्तकों को पढ़ने के लिये नहीं है जिस को ऐसी पुस्तकें पढ़ना हो वह इस स्थान पर न पढ़े यह बात भी उन की सर्व साधारणों के मध्य में कहना अच्छी न लगी परन्तु किसी ने कुछ नहीं कहा वरन सब के हृदय में यह हुआ कि अब समाज के निमित्त अन्य स्थान का प्रबन्ध अवश्य करना चाहिये—

इसके पश्चात् जो अन्तरङ्ग सभा हुई उस में दो सभासदों ने

१. अर्थात् जून १८८२ में।

पण्ड़ित् रामसेवक जी से पारितोषिक न्यून एकत्र होने का कारण जिज्ञासा किया—क्योंकि उक्त महाशय इसी निमित्त समाज से एक रु० मासिक और नित्य प्रति भोजन पाते थे—उस समय तो उक्त महाशय ने कुछ नहीं कहा परन्तु पीछे से एक पत्र मेरे नाम भेजा जिस में उन्होंने लिखा था कि उन दोनों सभासदों ने मेरा अपमान किया—इस कारण उन को कुछ दण्ड देना चाहिये—इस पर अन्तरङ्ग सभा में विचार हुआ तो वह दोनो निरपराध ठहरे—इस समय इन के पक्ष पर पण्डित् रामाधार के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं था—

(१४) अब द्वितीय अन्तरङ्ग सभा में प्रथम समाज के निमित्त स्थान का निश्चय हो जाने ही का विचार हुआ— तो उस में यह निश्चय हुआ कि भाड़े पर स्थान अवश्य लै लेना चाहिये—जब इस विषय में पण्डित् रामाधार जी की सम्मति ली गई तो उक्त महाशय ने कहा कि जो स्थान समाज धन से क्रय किया गया होगा तौ तो में समाज में जाऊंगा नहीं तो नहीं—इस में बाबू गङ्गाप्रसाद जी व्यवस्थापक और प्रतिनिधि ने कहा कि जब समाज में इतना धन नहीं है तो स्थान कैसे क्रय हो शक्ता है? इसके उत्तर में पण्डित् रामाधार जी वाजपेई ने कहा कि प्रथम एक सभा में एक एक मास की आय देना स्वीकृत हो चुका है वही एकत्र कर के स्थान क्रय करना चाहिये—इस के उत्तर में बाबू गङ्गाप्रसाद जी ने कहा कि ऐसा निश्चय आज तक नहीं हुआ न मुझको इसकी खबर है और न मैं एक मास की आय दे शक्ता हूं और इस के लिये आप इतना आग्रह क्यों करते हैं कि क्रय किये ही स्थान में जाऊंगा अन्य में नहीं? इस के उतर में पण्डित रामाधार जी वाजपेई ने कहा कि मैं तो तभी जाऊंगा क्योंकि मैं इस समाज का स्थापक हूं मेरी इच्छा भाड़े के स्थान पर जाने की नहीं किन्तु ऐसा होगा तौ मैं अपने ही स्थान पर वेदव्याख्यान सुना करूंगा इस बचन ने सुनते ही सब सभासदों के हृदय में एक प्रकार शङ्का पड़ गई और बाबू गङ्गाप्रसाद जी ने कहा कि जो आप को यह अभिमान है कि इस समाज का स्थापक मैं ही हूं जब ऐसा है कि यह समाज एक पुरुष की सम्मति से है और दूसरे की सम्मति को आप तुच्छ समझते हैं तौ मैं ऐसी समाज में रहना उचित नहीं जानता और न मैं अब से जो आप के स्थान में समाज

होगी उस में आऊंगा—इसके उत्तर में भी उपप्रधान जी ने वही शब्द उच्चारण किये जो प्रथम दो सभाओं में कह चुके थे कि जिस की इच्छा हो आवे और जिसकी इच्छा न हो वह न आवे तब तो पण्डित केशवराम जी ने कहा कि आप सभापति होकर ऐसा कहते हैं ऐसा कहना आपको उचित नहीं सभा में जो कार्य्य होता है वह बहुपक्षानुसार होता है—इस समय अन्य स्थान लेन की सब की सम्मति है—और जो आप की इच्छा यही है कि समाज हमारे ही स्थान पर उस समय तक होता रहे जब तक कि समाज स्थान मोल लिया जावे तो अतिउत्तम परन्तु जिस समय सभा होगी आप का स्थान पञ्चायती समझा जावेगा और अब से आपको ऐसा कभी न कहना होगा कि जिस की इच्छा हो वह इस समाज मे आवे जिसकी इच्छा न हो वह न आवे—इस के उत्तर में पण्डित् रामाधार जी ने कहा कि मेरा यह अभिप्राय थोड़ा ही है कि मैं आने का ही नहीं परन्तु सन्ध्या वन्दन के कारण मैं न पहुंच सका इस कारण प्रथम से मैंने निवेदन कर दिया—और जो सब की सम्मति अन्य स्थान लेने के लिये है तो अत्युत्तम—तत्पस्चात् उक्त महाशय के स्थान पर दो वा तीन सभायें हुईं और जब अन्य स्थान का प्रबन्ध हो गया तो तारीख २५ जून सन् १८८२ ई० से समाज उसमें होने लगा और पं० रामाधाराजी के स्थान पर भी पण्डित् रामसेवक जी ने व्याख्यान दिया—इस प्रथम दिवश ही जब पण्डित् इन्द्रनारायण जी मसलदां प्रधान इनके स्थान पर पधारे तब उस समय समाज विसर्जन हो चुकी थी और अन्य स्थान में समाज होने का वृतान्त उन्हें विदित न था परन्तु पण्डित् रामाधार जी ने संक्षेप से समाज दूसरे स्थान में होनें के समाचार कहे—और अपना हृदयगत भाव भी जनाया परन्तु प्रधान ने उस समय कुछ उत्तर न देकर अपने स्थान को चले गए—और समाज में न पहुंच सके—

(१६) द्वितीय समाज में जब प्रधान साहब पधारे तो इस ओर का भी सम्पूर्ण वृतान्त सुन पण्डित् रामाधार जी को बुलाने के निमित्त एक मनुष्य भेजा कि दोनों ओर की वार्ता सुन यथोचित प्रबन्ध किया जावे, परन्तु उस के उत्तर में उन्होंने कहला भेजा कि मेरे स्थान पर भी वेद व्याख्यान होता है उन की इच्छा हो तो वह यहां ही चले आवें—

आवें यह सुन प्रधान साहब चुप हो गये—

विदित हो कि इस दिवश अन्तरङ्ग सभा भी थी—जो कि उपनियमानुसार प्रत्येक मास के प्रथम सप्ताह के रविवार को हुआ करती है—और पं० रामसेवक जी ने भी अपना कार्य करने को अनङ्गीकृत न किया और कहा कि मैं विद्योपार्जन करूंगा इसलिये अपना कार्य्य छोड़ता हूं इस को सब ने स्वीकार किया—

(१७) इस से अगले सप्ताह में अन्तरङ्ग सभा की आवस्यकता हुई साधारण सभा के पीछे तौ व्यवस्थापकसदों से और अधिकारियों से सविनय निवेदन किया गया कि आप लोग ठहरिये और सभा का कार्य्य करिये, इस सभा में भी प्रधान साहब उपस्थित थे—

(१८) अब साधारण सभा के दिन मैं, पण्डित् अयोध्याप्रसादजी मिश्र कोषाध्यक्ष, बाबू बृजलालजी पुस्तकाध्यक्ष, और पण्डित् केशवराम जी व्यवस्थापक इन सब लोगों ने जाकर पण्डित् रामाधार जी वाजपेयि उपप्रधान से निवेदन किया कि आप कृपा कर सभा में पधारिये—इस के उत्तर में उन्होंने कहा कि साधारण में तौ नही परन्तु अन्तरङ्ग सभा में अवस्य आया करूंगा—अब जो अन्तरङ्ग सभा का समय आया तौ १ विज्ञापन पत्र भी उक्त महाशय की सेवा में भेजा और उस पर उन्हों ने हस्ताक्षर भी कर दिये थे परन्तु तब भी न पधारे, और न प्रधान साहब इस सभा में उपस्थित थे इस कारण सभा का कार्य बन्द रहा—अब एक प्रार्थना पत्र पण्डित् रामाधार जी की सेवा में समर्पित किया गया और उसका जो कुछ उत्तर उक्त महाशय ने दिया उन दोनों की प्रति आप की सेवा में समर्पित करता हूं—इन की पत्रिका से विदित होता है कि इन की प्रथक समाज है जिस में कि अधिकारी और व्यवस्थापक सब है, परन्तु ये समाज ही, सिवाय पण्डित् रामाधार जी वाजपेयि उपप्रधान और पण्डित् रामसेवक जी मंत्री जिस को पं० रामाधार बाजपेई जी ने अपने आप ही मंत्री बना लिया है के अतिरिक्त और कोई भी आर्य्य सभासद नहीं हां इतना तौ अवस्य है कि पौराणिक मतावलम्बी तो आते हैं, वह भी इस शर्त पर कि जब हम समाज में आप से पूंछे कि मूर्ति पूजनादि ठीक है तौ आप कहैं हां ठीक हैं और जब हमारे स्थान कथा हो तो आप भी उस में पधारें सो उक्त महाशय एकादशी महात्म्य और सत्यनारायण की कथा सुनने उन के स्थान पर जाते

हैं। और यही पौराणिक पुरुष प्राय: व्याख्यान भी उन के स्थान पर वोपदेव कृत भागवतादि पुराणों से देते हैं, और पौराणिक भी वह जो सर्वदा से समाज के विरोधी रहे हैं।

(१९) अब ऊपर लिखा हुआ सम्पूर्ण वृतान्त आप को विदित होवे, और इस विषय में जैसी आप की आज्ञा होवे, वैसा किया जाय, एक मुहल्ले में एक नाम की दो समाजें होना क्या अच्छा है? और फिर जिस समाज में पोपों कृत् व्याख्यान होवें वह आर्य्यसमाज ही कहलावे—

(२०) अब सब सेवक आप के चरणों को प्रणाम करते हैं और आशा रखते हैं कि आप इस का उत्तर शीघ्र भेजियेगा—

आप का चरण रज सेवक

हरनामप्रसाद

मंत्री आर्य समाज

लखनौ

तारीख १० सितम्बर
सन् १८८२ ई०[1]

श्री पण्डित् इन्द्रनारायण जी मसवदी

प्रधान आर्यसमाज, लखनौ

महाशय नमस्ते,

कृपा करके पूर्वोक्त पत्र को अवलोकन करिये, और जो आप उचित समझें तो इस को श्रीस्वामी जी के चरणों में समर्पित कीजिये—

आप का आज्ञाकारी

हरनामप्रसाद

मंत्री आ० स० लखनौ

—:o:—

[पूर्ण संख्या ३५४] **पत्र**

पण्डित् रामाधार वाजपेई[2]

श्री ५ स्वामिने नमस्ते।

विदित हो कि आप का कृपा पत्र आया[3] और अवलोकन कर

---

१. भाद्रपद कृष्णा १३, सं० १९३८ वि०।

१. यह नाम पत्र लिखने के कागज पर छपा हुआ होगा। यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्र व्यवहार' भाग १, पृष्ठ ३४०-३४३ पर छपा है। ३. ऋ० द० का यह पत्र हमें उपलब्ध नहीं हुआ।

अत्यानन्द प्राप्त हुआ। और जो आप ने थीआसफिष्टों के विषय में लिखा है सो आर्य्यसमाजक कोई पुरुष ने उन का मतावलंबन नहि कीया है और न करेंगे।

और आप ने जो यह लिखा है कि तुम समाज में नहीं आते हो[1] इस का क्या कारण है ? इस का निम्नलिखत अक्षरों में आपको नीचे पङ्क्त में विदित होगा।।

इस का कारण यह है कि आप की आज्ञा है कि समाज में व्याख्यान के बखत वेद शास्त्र के सवाय और कोई व्याख्या न हो और इन सभ्य गण पुरुषों ने अनेक नाटकादि पुस्त्यकों के व्याख्यान देने के प्रबन्ध रच रखे हैं।

और जो कोई भद्र पुरुष वेद की व्याख्या देता भी है तो उनको बन्द कर के नाटक की ही व्याख्या होती है हासी ठठ्ठा समाज में नाटक सुन कर करते हैं। और यह आपको विदित हो कि समाज में दो पुरुष बड़े रसक हैं। वोह लोग नाटकादि पुस्त्यकों को ही देखते हैं और उन्हीं की व्याख्या समाज में देते हैं। उन लोगों का नाम एक बलभद्र मिश्र दूसरे केशोराम पंडिया। और एक रोज का वर्तांत है कि मेरे मकान में रविवार को सभा हो रही थी तिस में एक देहली समाज का पुरुष आया तिस में मैं तो सायंकाल को सन्ध्या करने चला गया और पीछे इन उक्त लिखत पुरुषों ने व्याख्यान का आरम्भ कर दीआ इतने में मैं जब आया तो केशोराम पंडिया अंधेरी नगरी का हाल कहते थे तिस में यह व्याख्या थी कि लैलेवो टके सेर मछली

---

१. १० सितम्बर १८८२ के पूर्व पूर्ण संख्या ३५३ वाले हरनाम प्रसाद, मन्त्री आ० स०, लखनऊ के पत्र के सन्दर्भ (पैरा) संख्या १२-१६ के लेखानुसार जून १८८२ में आर्यसमाज लखनऊ में नाटक आदि के वाचन के कारण आपस में कुछ मतभेद हो गया था। इसका निर्देश पं० रामाधार वाजपेयी के इस पत्र में भी है। पं० रामाधार बाजपेयी के समाज में न आने के सम्बन्ध में सम्भवत: हरनाम प्रसाद मन्त्री आ० सा० लखनऊ के पूर्व पूर्ण संख्या ३५३ पर मुद्रित पत्र से ऋ० द० को ज्ञात हुआ होगा। अत: रामाधार बाजपेयी ने यह पत्र १५-२० सितम्बर (१८८२) के मध्य लिखा होगा। और रामाधार वाजपेयी के इसी पत्र के आधार पर ऋ० द० ने लखनऊ आर्य समाज को वह पत्र लिखा होगा जिसका निर्देश पं० इन्द्र नारायण ने २८ अक्टूबर के पूर्ण संख्या के पत्र में किया है।

और टके सेर वाले जोवन इत्यादि सुन कर व्याख्यान समाप्ति पर देहली समाज के पुरुष बोले कि आप के समाज से बहुत हल्का व्याख्यान होता है ।। सो मैं सुन कर निश्चय किआ कि इस पुरुष ने समाज की अप्रशंसा की है और सभा में व्याख्यान की जगा पर बैठ कर कहा कि यह हमारे समाज के नियमानुसार व्याख्या नही हुई जो केशोराम जी ने दीया है ।। हमा समाज में केवल वेद व्याख्या होता है यह पण्डित जी कहीं से कृपा करके नाटकादि सुना देते हैं सो अब आशा है कि यह व्याख्या समाज में इन्दे को न हो ।। सो यह सुनकर सभ चुप हो रहे औ दूसरे रोज कहने लगे कि समाज के वास्ते अन्य मकान लीया जाता है तुम चलोगे या नही तब मैंने कहा कि मुझ को उस स्थान ले जा कर क्या लाभ होगा सवाय नाटकादिको के तब केशोराम पंडिया बोले कि आप ही के मकान में समाज होगा परन्तु अंगीकार करें कि हम चाहे जैसी व्याख्या दें औ तुम टोको न तब मैंने कहा कि मैं कुछ मकान के अभिमान से नही कहता हूं हां जहाँ समाजक नेमों से विरुध व्याख्या होगी मैं वहां ही टाकूंगा तह कुछ काल पीछे इन लोगों ने अमीनाबाद में जा कर मकान लीया उस मे यथेछा नाटकादि का व्याख्यान हुआ करता है ।। और मेरे मकान में वेद व्याख्या हर रविवार को होती है । रामसेवक परमहंस उपनाम्ना पण्डित वेद और गोकल पण्डित व्याख्यान देते हैं और व्याख्यानान्तर सन्ध्या और अग्निहोत्र हो कर प्रसाद बांटा जा है इस को सभ लोग प्रशंसा करते हैं ।। और आये गये का सतकार भी होता है जैसे भगवत्यादि[1] जब समाज में आई थी तो किसी पुरुष ने समाज में उन का सतकार नहीं किआ तब मैंने सोचा कि स्वामि जी के पास से जो यह आई है[2] इस का सतकार न करना बड़े अपमान की बात है ।

---

१. यहां 'भगवती' से अभिप्राय 'हरयाना' जि० होशियारपुर, पंजाब की माई भगवती से है ।

२. माई भगवती ऋ० द० से मिलने बम्बई गई थी । श्री स्वा० सत्यानन्द जी ने दयानन्द प्रकाश में सन् १८७५ में पूना जाने से पूर्व माई भगवती का ऋ० द० के दर्शन करने का उल्लेख किया है । द्र०—अष्टम-संस्क० सन् १९२१ (बड़ा आकार) पृष्ठ २८३ । ऐसा ही निर्देश पं० देवेन्द्रनाथ संकलित जीवन चरित भाग १, पृष्ठ ३४७ पर मिलता है । पं० लेखराम कृत जीवन

दूसरे दिन मैं अपने मकान पर ले जा कर उन का सतकार खाने पीने का कीआ और तीन रो टिका कर व्याख्यान भी स्त्रोयों में दवाया वातीन रोज के मेरठ को गई।

और हाल यह कि दयाराम नाम शर्मा यन्त्रालयाधिकारी की भी मुछ को वडा गड वठ देख पडता है क्योंकि मैंने आपके पुराने हिसाब सें उन को चालीस रुपये भेजे और कहा कि तुम यह रुपये किसी अंक पर छाप देवो और मेरे नाम एक आने के कागज पर रसीद भेज देवो उस ने रसीद भेजी और मेरे नाम से किसी अंक पर छापा और जोकि वेदभाष्य के ग्राहक आट रुपये सालियाना देते हैं उन लोगों का नाम भी कहा कि सभ के नाम से प्रथक् प्रथक् छापा करो उस को नहीं छापा है सो यह बडा गोल माल देख पडता है। मैं अब जब आप कृपा कर के आवेगे तो आप के निवेदन बाकी के ५२) रुपये करूंगा और पीछे का अंक जो ऋग्वेद का आया है उस पर बाबू हरनाम प्रशाद का नाम छापा है सो यह ठीक नहीं है। क्योंकि वोह चार रुपये सालियाना देते हैं और के नाम प्रथक् छापना चाहीये।

और यंत्रालय का हाल में समर्थदान को भी लिखा है।

और यह प्रार्थना है कि जे कर आपको अवकाश हो तो और कुछ परिश्रम न हो तो आप न्वम्बर महीने की ता० २५ में लाट साहव

चरित में इसका निर्देश हमें नहीं मिला। हमारे विचार में प० रामाधार वाजपेयी के शब्दों से विदित होता है कि माई भगवती बम्बई में ऋ० द० के दर्शन करके ही लखनऊ पहुंची थी। ऐसी अवस्था में माई भगवती का बम्बई में ऋ० द० का दर्शन करना सन् १८८२ में युक्त बैठता है। इस बार ऋ० द० ३० दिसम्बर १८८१ से २४ जून १८८२ तक बम्बई रहे थे। दोनों ही जीवन चरितों में सत्यार्थ प्रकाश पढ़कर माई भगवती के विचारों में परिवर्तन का उल्लेख मिलता है। परन्तु उस समय तक पूरा सत्यार्थ प्रकाश प्रकाशित नहीं हुआ था। माई भगवती ने ४ नवम्बर १८८२ को जो पत्र लिखा था (आगे छपेगा) उस के अन्त की १०-१५ पङ्क्तियों से भी यही विदित होता है कि उसने सन् १८८२ में ही बम्बई में ऋ० द० के दर्शन किये थे। उसे लाहौर जाने को कहा था उस के विषय में, गोरक्षा के विषय में तथा सत्यार्थ प्रकाश अच्छी रीति से बने हुए छपने के विषय में माई भगवती ने इस पत्रांश में लिखा है।

आवेंगे दूसरी दिसंबर तक रहेंगे उस से रहावाडा लोक बहुत आवेगे आप, कृपा करें तो बहुत उत्तम होगा और प्रार्थना है कि चिठी का जुवाव शीघ्र दीजियेगा क्योंकि जे कर आने का आप का नियत हो तो मकान का प्रबन्ध कीया जावे और जो जो समान आप के भार प्रबन्ध का हो उस का निरणय आप सभ लिखीयेगा[1]

आप का सेवक
रामाधार बाजपेई

—:o:—

[पूर्ण संख्या ३५५] पत्र-सूचना

[मुंशी समर्थदान का पत्र][2]
१३ सितम्बर १८८२।

—:o:—

[पूर्ण संख्या ३५६] पत्र

॥ ओ३म् ॥[3]

सिद्ध श्री उदयपुर शुभ स्थाने सर्वोपमा स्वामी महाराज श्री दयानन्द सरस्वती जी योग्य मसूदा से महाराज श्री बहादुरसिंह जी लीखतां पगे वंलागणो चावसी अठी का समाचार श्री जी का प्रताप सूं भला है आप का सदा भला चाहिये आप मांहरे घणी बात छो

१. इस पत्र में वैदिक यन्त्रालय के मैनेजर पं० दयाराम का उल्लेख है। वैदिक यन्त्रालय की पुरानी रिपोर्ट के अनुसार पं० दयाराम ने लगभग अप्रेल १८८१ से जून १८८२ तक कार्य किया था। इसी पत्र में समर्थदान का उल्लेख भी है जो पं० दयाराम के पश्चात् वैदिक यन्त्रालय के प्रबन्धक रहे। अन्तिम सन्दर्भ में २५ नवम्बर को लाटसाहब के आने का निर्देश किया है। इस से भी हमारे पूर्व लेख १० सितम्बर १८८२ के पश्चात् पत्र लिखने की पुष्टि होती है।

२. इस पत्र की तथा तारीख की सूचना ऋ० द० के पूर्ण संख्या ७१२ (भाग २, पृष्ठ ७४३) के पत्र से मिलती है।

३. यह पत्र पं० चमूपति सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग २, पृष्ठ ७७-७८-७९ पर छपा है।

आप सिवाय दूजी बात नही सदा कृपा महरबांनगो रखावो छो जीसू विशेष रखावसी अपरंच चीट्ठी आप की दुतीक श्रावण शुद्धि १२ को लिखी आई[१] बड़ा आनन्द हुआ और बहुत दिनों से आप के पास पत्र यहां से नहीं पहुंचा सो कारण यह है कि आप का चीत्तौड़ में बिराजने का हाल मालुम नहीं था और अगहन में लाट साहिब बहादुर की तशरीफ फरमाने की अजमेर में हुई इस लिये हमारा जाना वास्ते मुलाकात के अजमेर हुवा वहां आप की मालुम हुई कि आप चीत्तौड़ में बिराजमान है परन्तु वहां फुरसत कम रही इस लिये पत्र नहीं दिया गया फिर अजमेर से लौट कर आना हुवा तो दवे छगनलाल जी अजमेर ही थे इस लिये चिट्ठी नहीं दी गई कि आ जावे तो गो रक्षा के प्रबन्ध की बाबत कि जो विचार आर्य समाज अजमेर में किया गया था लिखा जावे फिर च्यार पांच दिन बाद बहुत सख्त बीमार पड़ गये सो पोंणे दो महीनों बाद परमेश्वर की कृपा से खुशी हुई फिर कई काम हो गये और दवे छगनलाल जी भी बसबब काम के फुरसत कम रही और बैशाख में फिर भी बीमारी हो गई सो निहायत सख्त बीमारी पाई दो महीने तक फिर परमेश्वर ने कृपा की सो खुशी हुई इस अरसे मैं आप की चिट्ठियें बम्बई वगेरह से आई परंतु ऐसैं ऐसैं कारणो से और काम की विशेषता से जवाब नहीं भेजा गया सो कृपा करके क्षमा करेंगे और गो रक्षा के वाबत पत्र भेजे सो पोहोंचे और पहिले आपने बंगाली बाबू के वास्ते लिखा था सो आप यहां पधारेंगे जब विचार कर लिया जावेगा और वहां गोरक्षा के विषय क्या प्रबन्ध हुआ सो कृपा करके लिखिये और सोलह बत्तीस जितने जितने ठिकाने राज मेवाड मैं हैं मारफत राज के सब ठिकाने और ठिकानो की रय्यत वा खालसाही गांवों के हाकिम उगे रह से खालसाही रय्यत के इस विषय में दस्तखत हो जाना ठीक है खयाल किया जाता है कि मेवाड़ में कई लाख दस्तखत हो जावेंगे और परमेश्वर की कृपा से आप बहुत खुश होंगे व परमेश्वर सदा आप को

---

१. यह पत्र हमें नहीं मिला। ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन' के भाग २, पृष्ठ ७३७, पूर्ण संख्या ७०३ पर इसी पत्र के आधार पर पत्र-सूचना छापी है।

प्रसन्न रक्खें सो संसार का बहुत सा उपकार हुवा और होवे और बाला किसके तिकला है सो लिखिये नीम के पत्ते उबाल कर फिर थोड़ा सा गरम रहे जब उस पानी से बाले के मूंह को धोणा चाहिये और खाने में हींग ज्यादा खानी चाहिये और यहां परमेश्वर की कृपा से सब तरह से खेरियत है गोरक्षा के विषय प्रबंध जल्दी किया जावेगा और वहां कितने दिन ठहरना होगा और यहां कब पधारना होगा सो कृपा करके लिखिये और बाला के वास्ते जो आगे कागज छगनलाल जी के में दवाई लिखाई थी[1] उस पुलटिस में हींग भी डालना चाहिये और व्याख्यान भी वहां होते होंगे और महलों में भी कभी व्याख्यान हुवा या नहीं और आपने जो छगनलाल जी की चिट्ठी मे लिखा कि महाराज गजसिंह जी और उन के भाई भी व्याख्यान में आये सो बड़ी खुशी की बात है और यहां का जो कोई कार्य हो सो लिखे सम्बत १९३९ के मिति भाद्रपद शुदि ६ सोमवार ता० १८ सितंबर सन् १८८० ई०[2]

BDS.

मारो पगे लागणो मालम होसी आपकी कृपा है जसी बणी रहै अब सीघ्र द्रसण दीजिये।

B.D,S.

ended

—:०:—

[पूर्ण संख्या ३५७] पत्र-सूचना

[मुंशी समर्थदान, प्रयाग][3]

२१ सितम्बर १८८२

—:०:—

१. द्र० पं० छगनलाल का पूर्व पूर्ण संख्या ३४८ पृष्ठ ४२३-४२४ का पत्र।

२. सं० १९३९ के भाद्रपद शुदि ६ सोमवार को १८ सितम्बर सन् १८-८२ था। यहां १८८० भूल से लिखा गया है।

३. इस पत्र की तथा तारीख की सूचना ऋ० द० के पूर्ण संख्या ७१६ (भाग २, पृष्ठ ७४६) के पत्र में मिलती है।

[पूर्ण संख्या ३५८] पत्र

ओ३म्[1]

श्रीयुत मान्यवर विद्वज्जन भूषन जक्त गुरू महाराज

पण्डित श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी

अभिवादन दो विज्ञापन पत्र गौरक्षया विष्य में हस्ताक्षर करिकें आपु पास भेजता हूं ऐतौ कटिला की **ठकुरानी साहिवा ने ९३०३ नौ हजार तीन सौ आठ मनुष्यों की सही** करिकें उसको पीठ पर लिखा कर भेजा है उसके उपर मेने सही लिखी है ओरु उसी कितावें भी मेरे पास ठकुरानी साहिवा ने भेजदी है कि जिनमे हस्ताक्षर उक्त मनुष्यों के लिखे है मोजूद है ओरु दस हजार (१००००) मनुष्यो के हस्ताक्षर यहा से करा कर उसकी सही मैने ओरु मेरे भतीजे गुलाव-सिह ने की है भेजता हूं डाक सरकारी में रजष्टरी कराकर ओरु मुझे ऐक छोटा सेवक अपना समझ कर कार्य मेरे योग्य सिवकाई का लिया करै जादा सुभ भाद्रपद सुदी ११ सम्वत १९३९[2]

आपु का आज्ञाकारी—
जालिमसिह रूपधनी
डाकखाना धुमरी
जिलै ऐटा

—:०:—

[पूर्ण संख्या ३५९] पत्र

॥ श्री ॥[3]

स्वस्ति श्रीमदमंदानंदसंदोहगर्भितोपयोगशालिपरमैश्वर्य वर्य-सौन्दर्यलीला वितान घन कानन घनाघन विपुल सकल सिद्धि बुद्धि ऋद्धि वृद्धि संसिद्धि साधन स्वशक्ति व्यक्ति कृतानंतसत्वसत्वादि गुण-

---

१. यह पत्र म० मुंशीराम द्वारा सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १, पृष्ठ ९६ पर छपा है।

२. २३ सितम्बर सन १८८२।

३. यह पत्र पं० चमूपति सम्पादित 'ऋ० द० का पत्र व्यवहार' भाग २, पृष्ठ ३०-३१ पर छपा है।

श्रेणिरमणीय कापर्णारमण लय जन्यतेजः पुंजदूरदूरीकृत किल्विषांधतमसानामैहिकपारत्रिक विषय भोगा नासक्तानां केवलपरानुग्रह विद्योपयोग सम्पन्नानामविद्यासमुद्भूताहंकार ममकारादीछादिदोषरहितानां सच्चिदानंदा मंदमानसरः परिसीलनराज हंसानां योग्य क्षेत्रोप्त धर्मबीजफलित सर्ववर्गाणां प्रसर्पदर्प्पकंदर्प सर्प विहितोन्माद-भंगभर्गाणामौदार्यं धैर्यं गांभीर्यं चातुर्यादिवर्यांणां विद्वज्जनसमाज भ्राजमानानन्यसामान्यरत्नावली निष्पन्नहीरावलीनाम नेकवादिवाद-रणसंरम्भ विजय कार्य करण बीराधि बीराणां श्रीमद्विबुध धुरन्धराणां सज्जनमनः सहकार चारुकीराणां दुर्जयस्मरबीर निर्जय करण जन्हुतनया धराणां सप्त समुद्र मुद्रिवेलावलय वर्ति विद्वज्जन जेगीय-मानकीति ग्रामाणां सदोपस्थित श्रीतत्स्मार्तादि विधि शिक्षा समर्पण दीक्षा गुरूणां राज राज राजहंसोत्तमांडकांत स्वर किरीटिमाणिक्य छबि भास्वरांघ्रि कोकनदानां श्रीमत्परिब्राजवर्याणां श्री श्री दयानन्द स्वामिनां चरणतामरसेषु रक्षा पत्तनतः श्रीमद्राजाधिराज श्री नाहरसिंहदेव बर्मणा कृता दंडवत्प्राणतिततयः समुल्लसन्तुतराम्। शमस्त्वत्र दयासिंधो श्रीमदीय मिहेष्यते सदैव येन मे चेतः सुषमाप्नोत्यहर्निश १ उदंतस्तु श्रीमतामुदयपत्तनत कुत्र गन्तुमिछा अत्रागमनेछा चेत् झटिति उल्लेषनीय मितः बाहनादिकं प्रेरयिष्ये यद्दिने श्रीमद्दर्शनं भविष्यति तत्सुदिनं भविष्यति किमधिकम् सर्वेषां सुतरूणां हि पुष्पादेव फलोद्गमः अस्य प्रेमतरोश्चित्रं पत्रादेव फलोद्गमः १

मिती कार्तिक कृष्ण ९ भृगौ[२]
हस्ताक्षर राजाधिराज नाहरसिंहस्य
पौण्डरीक शिवशर्मात्मजछत्रदत्तस्य सहस्रशः दंडवत
समुल्लसंतुतराम्

—:०:—

२. संवत् का उल्लेख नहीं है। पत्र में उदयपुर से शाहपुरा पधारने की तिथि पूछी है। अतः यह पत्र निश्चय ही स० १९३९ का है। कार्तिक कृष्णा ९मी को शनिवार है, भगु=शुक्र नहीं। अत. सम्भव है तिथि या दिन लिखने में भूल हुई होगी। कार्त्तिक वदि ९ स० १९३९ को शनिवार ४ अक्टूबर १८८२ था।

[पूर्ण संख्या ३६०] पत्र

Pandit Dayanand Saraswati Swami.[1]

Respected Sir,

You are making a great effort for the revival of ancient Aryan culture, Science and Religion. You have succeeded in your attempt to some extent. But the greater work that is required of you to be done, is of a nature that will make the Aryans on a par with the other civilized nations of the world. I am now entering in the subject, which led me open a correspondence with you.

There are I think no less than 3,00,000. Arya Samajists. If you are but to take Rs. 10 from each (which all will willingly give) a sum of Rs. 30 00,-000. This sum if given on an interest of proper rate will amount to a large sum.

Of this sum a great Aryan Vedic College must be founded.

Some graduates of the University knowing English and Sanskrit must be sent to Europe and America, to learn arts and manufactureres.

The further projects that I have been so long meditating will be communicated to you after some time.

I think you will kindly take the matter earlier in your hands, because if it is to be exceeded it is through your aid. I expect an early reply of this.

१. यह पत्र वैदिक मैगजीन (गुरुकुल कांगड़ी) पौष १९६५ वि० में छपा था।

Yours obediently,
Durga Sahai Arya.
c/o Babu Jwala Sahai Arya,
Meer Moonshi of the Jeypore Council.

Jeopore, 24th October 1882.

भाषार्थ

पण्डित दयानन्द सरस्वती स्वामी।

आदरणीय महोदय,

आप प्राचीन आर्य साहित्य, विज्ञान तथा धर्म को पुनरुज्जीवित करने के लिये चरम पुरुषार्थ कर रहे हैं। आप अपने प्रयत्न में एक सीमा तक सफल भी हुए हैं। किन्तु इससे भी बड़ा काम जो आपको करना है, उससे आर्य लोग संसार के अन्य सभ्य राष्ट्रों की बराबरी में आ जायेंगे। अब मैं उस विषय पर आता हूं जिसके कारण मुझे आपसे पत्राचार करना पड़ा है।

मेरे विचार से इस समय समस्त आर्यसमाजियों की संख्या ३ लाख से कम नहीं है। यदि आप इन में प्रत्येक से १० रुपये भी लें [जो सभी लोग स्वेच्छा से देंगे] तो तीस लाख की राशि एकत्र हो जायगी। यदि इस धन को ब्याज पर चढ़ाया जाय तो इससे एक बड़ी राशि मिल जायगी। इस धन से एक बड़ी आर्यन वैदिक कालेज की स्थापना की जानी चाहिये। विश्वविद्यालय के कुछ स्नातकों को जो अंग्रेजी तथा संस्कृत जानते हों, कला-कौशल तथा उद्योग धन्धे सीखने के लिये यूरोप तथा अमेरिका भेजा जाना चाहिये। कुछ अन्य योजनाएं जिन पर मैं लम्बे अर्से से विचार करता रहा हूं, कुछ समय बाद आपको भेजूंगा। मैं सोचता हूं कि आप इस मामले को शीघ्र ही अपने हाथ में लेंगे क्योंकि यदि इसमें प्रगति होती है तो वह आप की मदद से ही होगी। मैं इसके शीघ्र उत्तर की आशा करता हूं।

आपका आज्ञाकारी,
दुर्गासहाय आर्य,
द्वारा—बाबू ज्वालासहाय आर्य,
जयपुर कौंसिल के मीर मुन्शी।

जयपुर २४ अक्टूबर १८८२,

—:o:—

[पूर्ण संख्या ३६१] पत्र

(ओ३म्)

आर्यसमाज
लखनौ—

(अङ्क ३०)

ता० २८ आक्टूबर १८८२[1]

श्रीस्वामी दयानन्द सरस्वती महाशय
समीपेषु

स्वामिन्नमस्ते;

आज आप की सेवा में पत्र समर्पित करने से एक प्रकार का हर्ष और विषाद उत्पन्त होता है हर्ष का कारण यह है कि प्रथम ही यह मेरा पत्र आप की दृष्टिगोचर होगा—और विषाद का कारण यह है कि आप इस को पढ़ और सत्यासत्य को जान एक कल्पित माननीय पुरुष की ओर से आप को घृणा होगी—

आपका पत्र समाज में आया[2] जिसमें कि लड़कों की समाज और नाटकादि प्रहशन करना जो कि आर्य्यों का धर्म नहीं करना लिखा है हां यह कहां तक सत्य है, यह आपका पत्र पढ विचार लेंग, परन्तु शोक मुझको इतना ही है कि आप को किस बुद्धिमान पुरुष ने ऐसा मिथ्यत्व लिख भेजा है—

इस समाज में पण्डित् रामाधार जी वाजपेई और रामशेवक जी के अतिरिक्त और वही सभासद वने हैं जो प्रथम में थे, तो क्या प्रथम में ये सब वूढ़े थे और अव लड़के हो गये हैं ? तो क्या एक ही पुरुष के प्रथक होने से यह लड़कों की समाज हो गई—लेखक को ऐसा अनुचित लिखना कदापि उचित नही था—

लेखक के लिखने से ज्ञात होता है कि नाटक विषय में आप ऐसा समझते हैं कि सामाजिक पुरुष नाटकाकार लीला करते हैं अथवा

---

१. कार्तिक कृ० २ सं १९३९ वि०। यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १, पृष्ठ ३४४—३४८ तक छपा है।

२. यह पत्र हमें उपलब्ध नहीं हुआ। इसकी सूचना 'ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन' के पूर्ण संख्या ७२४ (भाग २, पृष्ठ ७५२) पर छापी है।

स्वरूप भर भर के खेल खेलते हैं यह भी उन की लिखावट निर्मूल ही है—यहां उपनियमानुकूल जब वेद कथन हो चुकता है तब धर्म और देशोन्नति विषयो में सभासद लोग व्याख्यान तथा किसी धर्म अथवा देशोन्नति सम्बन्धी पुस्तकों से चुन चुन कर उत्तमोत्तम विषय पढ़ कर सुनाये जाते हैं—केवल एक दिन जब वेदादि विषय हो चुके थे तब पण्डित् केशवराम जी ने सभा की अनुमति लेकर एक देशोन्नति विषयक नवीन नाटिका पढी, और जब उक्त महाशय पढ़ चुके तब पण्डित् रामाधार जी ने नाटिका पढ़ने से निषेध किया उस समय को छोड़कर अद्य पर्य्यंत नाटकाकार पुस्तक से कोई विषय नहीं पढ़ा गया, परन्तु यह कहा कि नाटकाकार विषय न पढे जावे यह तब हो सकता है कि **जब भारत सुदशा प्रवंतकादि पत्रो में नाटकाकार विषय मुद्रित न हो**[1] अधिकतर शोक मुझ और मेरे सब सभासदों को इस बात का है कि पण्डित् रामाधार जी वाजपेई उप प्रधान और रामसेवक जो इस समाज के माननीय पुरुष थे उन्होने एक वारगी अपना चोला ऐसा पलट दिया है कि जिस का सब वृत्तान्त मंत्री समाज के पत्र से (जो इस के साथ भेजा जाता है) विदित होंगे जिस से कि लड़कों का खेल तथा नाटिकादि का होना सम्पूर्ण रूप से आप को ज्ञात हो जायगा. यह पत्र मास १।। का समय व्यतीत हुआ आप की सेवा में भेजने के लिये लिखा गया था परन्तु यह समझ कर कि ऐसे माननीय पुरुष के समाचार ऐसे शीघ्र आप तक पहुंचाना उचित न जान कर अब तक रोक लिया था—अर्थात् प्रथम उक्त महाशय के लघु भ्राता पण्डित् रामदुलारे जी वाजपेयि जो प्रथम इस समाज के मंत्री रह चुके हैं और आज कल आगरे मे हैं इस विषय में लिखा, परन्तु वह उस समय में कुछ प्रयत्न न कर शके तब सब सभासदों की सम्मति से यह पत्र आप को लिखा गया परन्तु यह पत्र आप की सेवा में भेजा नहीं गया था कि इस समय में पण्डित् रामदुलारे जी छुट्टी लेकर यहां आन पहुंचे, तो इस पत्र की फिरि आपकी सेवा में भेजना उचित न समझा क्योंकि उक्त महाशय से इस कार्य्य के सुफल होने की सम्भावना थी जब उन से भी इस विषय में वार्तालाप हुई तो उन्होंने कहा कि ऐसे पुरुष को इस कार्य्य से प्रथक कर देना उचित

---

१. इसका उल्लेख ऋ० द० ने पूर्ण संख्या ७३१ (भाग २, पृष्ठ ७६६, पं० २४-२५) के पत्र में किया है।

है. परन्तु हमारे किसी सभासद का यह अन्तरीय अभिप्राय न था कि रामाधार जी अपनी पदवी से प्रथक कर दिये जांय, इस कारण राम दुलारे जी ने कहा कि जो सब की सम्मति ऐसी ही है तो इस विषय को कुछ काल तक यथावत रहने दो, जो तो थोड़े दिनों में सुधर जांय तौ अति उत्तम है नहीं तौ फिरि विचार कर जैसा उचित समझा जावे वैसा करना, इसी से यह पत्र आप की सेवा में नहीं भेजा गया था, परन्तु क्या करूं जब आप के पास अण्ड बण्ड लेख जाने लगे तब यह उचित समझा कि सम्पूर्ण समाचार आप को प्रकाश करूं और जैसी आप की आज्ञा हो वैसा उस का प्रतिपाल करूं, वर्तमान में पण्डित् रामाधार जी की पदवी पर सभा ने पण्डित् अयोध्याप्रसाद जी मिश्र को स्थापित किया हैं, ताकि किसी सामाजिक कार्य्य में विघ्न न पड़े—

यदि पण्डित् रामाधार जी अब भी अर्थात् आप के लिखने पर भी अपनी पदवी पर स्थापित हों तो अत्युत्तम है, नहीं तो सभा कार्य्य जैसा चलता है वैसा ही चलता रहैगा—

आप इस पत्र का उत्तर मंत्री हरनाम प्रसाद जी के पते से समाज में भेजें क्योंकि मेरा रहना यहां पर बहुत न्यून होता है—आप जैसी आज्ञा देंगे वैसा किया जायगा—

आप अपने व्याख्यानादिकों का भी समाचार देवें और सब आर्य्य गणों का नमस्ते आप के चरणों में पहुंचें—

आपका आज्ञाकारी सेवक
इन्द्रनारायण पंडित
प्रधान
आर्य्य समाज, लखनौ।

—:०:—

[पूर्ण संख्या ३९२]　　　पत्र

ओंनमः[१]

सिद्ध श्री सर्वोत्तम सर्व स्वामिन् सकल दुःख विनाशक सर्वानन्द-

---

१. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्र व्यवहार' भाग १, पृष्ठ ४५०-४५१-४५२ पर छपा है।

प्रददीनन पर परमद्याल धर्ममूर्ति पितृस्वरूप श्री श्री श्री श्री श्री श्री स्वामीजी महाराजजी नमस्ते कृपासिंध १६ अकतूबर का पत्र आप का मेरे को पहुंचा[1] परम आनन्द हुया यह जो आप मेरे वैआश्री पर कृपा करते हों इस से आपका विद्या प्रताप परमेश्वर महान् बढ़ावें महाराज जी यह जो आपने लिखा कि तू लाहौर जा सके तो हम लाहौर आर्य्यसमाज को तेरे वास्ते लिखें सो जी आपने परम कृपा और स्यानप करी जो पूछ लिया परन्तु मेरी ओर से यह उत्तर है कि मेरे को तो केवल इस ही प्रयोजन सिद्धी की इच्छा है कि भले पुरुषों के आश्रे से इस पाप के फल शरीर की रक्षा और अपनी बुद्धि अनुसार जो बात पूछूं उसका यथावत उत्तर सो हे दीनानाथजी आपकी सहायता से जिस जगा मेरा यह प्रयोजन आपको सिद्ध होता दीखे उस जगा मेरे को चाहे कहीं भेज देवो होर जो शोचनीय बात है सो आप शोच लीजिये परन्तु आपसे मेरी एक यह प्रार्थना है कि जिस जगा आप मेरे को भेजो उस जगा मेरे सत्कार की इच्छा से मेरे को बड़ी बना के न भेजो काहे ते कि मैंने अपने प्रयोजन के लिये जाणा है तांते आप उन्हों को ग्रैसे लिखें कि एक स्त्री शरीर हमारे आगे यह प्रार्थना करती है हमारे घूमने के हेतु इसे पढाना कठन है तांते जेकर तुम ग्रैसे करो तो तुमको योग्य है कहो तो भेज देवें जो बात वो पूंछे सो कृपादृष्टि से अपनी कन्या की न्याई बता देनी जौनसी बात उस को पूछनी न आवे सो कल्याणकारक होवे सो भी दया से बता देनी और एक रहने के लिये अनुकूल स्थान दे देना एक महीना पर्यन्त अन्न देना महाराज इस रीति से मुझको उन्हों के पास भेजो मेरा वहुत बोझ न उनके ऊपर डालो जिससे वोह एक दूसरे की तरफ देखते देखते कई महीने दलीलां ही में न लगा देवें महाराज मैं अपना गुजारा इस रीति से कर लेवूंगी कि जब मैं एक महीने में गली कूचे और अपने सजाती शरीरों की वाकफ हो जाऊंगी तब दो तीन घरों से एक एक रोटी ले लिया करूंगी औ वस्त्र का खरच मेरी माई दे दिया करेगी [illegible] के देने की भी सामथ है परन्तु इस का स्वभाव जरा संकोची है इस से मेरा इस के साथ ऐसा व्यवहार है कि जो यह

---

[1] यह पत्र हमें उपलब्ध नहीं हुआ। इसी पत्र के आधार पर 'ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन' में पूर्ण संख्या ७२५, (भाग २, पृष्ठ ७५२) पर पत्र-सूचना छापी है।

अपनी परसन्नता से दे देवे सो ले लेना और अपनी इच्छा से कुछ नहीं कहना इस जगा बैठी को तो दोनों अन्न और वस्त्र अच्छे सत्कार से दे देती क्योंकि समुदाय में से निकलता विदत नहीं होता औ अन्य देश में जाऊं तो इस को अपनी गांठ से देना पड़ेगा तांते वस्त्र का तो मेरे को सम्भव दीखता है अन्न का नहीं और स्थान समाजस्थों से लेना ही है और जी जो आप की आज्ञा है कि स्त्री जनों को अपनी बुद्धि अनुसार उपदेश करना सो जी यह भी होती रहेगी क्योंकि जौनसी मेरे समीप होंगी और आवेंगीयां उनको तो होता ही रहेगा और जो समाजस्थों पुरुषों की इच्छा देखूंगी सो करूंगी आगे महाराज जी आप परम बुद्धिमान हों तो आप की आज्ञा होगी सो करूंगी दीनानाथ जी मैंने तो उसी काल ही लाहौर को चली जाना था जालंधर से लाहौर का टिकट ले लेना था परन्तु एक तो मेरे को चौथाईया ज्वर दूसरा मेरठ देखके चित्त में यह आई कि जेकर उस जगा भी असे होगा तो साथ वालियां हंसी करेंगियां तांते अपने स्थान पर चल कर महाराजों से पूछ जैसे कहेंगे वैसे करूंगी हे करुणाकर आप जो संसार के उपकार गौयों को रक्षा के लिये यत्न कर रहे थे वोह कैसे हुया और जो कहते थे कि सत्यार्थ प्रकाश और अच्छी रीति से बना हुआ छपेगा[1] सो छपा है या नही होर महाराज जी वोह जो मेरी प्रार्थना है भूगोल खगोल के मगाने की सो जी उन की भी कोई कृपा कर के युक्ति बता देनी जिस रीति से मैं मंगा लेवूं ॥ हरियांना ॥ ४ नवंबर ॥ सन् १८८२ ई० ॥[2]

हस्ताक्षर—

भगवती,

—:०:—

१. अर्थात् संशोधित द्वितीय संस्करण।

२. कार्त्तिक कृष्णा ८ शनिवार सं० १९३९।

विशेष—श्री माई भगवती ने बम्बई में ऋ० द० के दर्शन किये थे। इस विषय में पूर्व पृष्ठ ४३८ की टि० २ देखें।

[पूर्ण संख्या ३६३] पत्र-सूचना

[बाबू रूपसिंह जी का पत्र][1]
कुछ प्रश्न

—:०:—

[पूर्ण संख्या ३६४] पत्र-सूचना

[बा० कृपाराम जी, देहरादून का पत्र][2]
गोरक्षा के लिये सही।

—:०:—

[पूर्ण संख्या ३६५] पत्र

।। श्री ।।[3]

श्रीमत् परमहंस परिव्राजकाचार्यवर्य श्री ५श्री दयानन्द सरस्वति यति वर्येष उदन्तु समयानुसार सिक्षा ज्यो आपने लिखी[4] सो हमारे उपकारिणी हुई प्रथम से ही इस प्रकार ध्यान था अब भी वेसा ही रहेगा किन्तु अधिक

हस्ताक्षर सज्जनसिंह[5]

—:०:—

१. इस पत्र की सूचना 'ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन' के पूर्ण संख्या ७२६ (भाग २, पृष्ठ ७५३, पं० ५) के पत्र में मिलती है।

२. इस पत्र की सूचना ऋ० द० के पूर्ण संख्या ७३० (भाग २, पृष्ठ ७६५) के पत्र में मिलती है।

३. यह पत्र पं० चमूपति द्वारा सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग २, पृष्ठ १३१ पर छपा है।

४. यहां जिस शिक्षा का उल्लेख है, वह दिनचर्या सम्बन्धी पत्र है। यह 'ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन' पूर्ण संख्या ५२६, भाग २, पृष्ठ ७५५-७६४ तक छपा है।

५ इस पत्र पर कोई तिथि तारीख नहीं है और नाही ऋ० द० के पूर्ण संख्या ७२६ के पत्र पर है (जिस की ओर यहां संकेत है)। परन्तु ऋ० द० सं० १९३९ मार्गशीर्ष वदि ५ (ता० २९ नवम्बर १८८२) को लिखे एक पत्र

[पूर्ण संख्या ३६६] पत्र-सूचना

[लाला काली चरण फर्रुखाबाद का पत्र][1]

—:o:—

[पूर्ण संख्या ३६७] पत्र-सारांश

[आर्य समाज मुरादाबाद का रजिस्ट्री पत्र]

जो देश हितषी में प्रश्नोत्तरी के विषय में छपा है वह किस की ओर से है। आपकी सम्मति है वा नहीं ?[2]

—:o:—

[पूर्ण संख्या ३६८] पत्र-सूचना

[मुंशी समर्थदान प्रयाग का पत्र][3]

—:o:—

[पूर्ण संख्या ३६९] पत्र-सूचना

[मुंशी समर्थदान, प्रयाग का पत्र][4]

—:o:—

में 'महाराणा जी ने हमारे उपदेशानुसार अपनी दिनचर्या और धर्मकृत्य करना आरम्भ कर दिया है' लिखा है। द्र०—'ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन' पूर्ण संख्या ७३०, पृष्ठ ७६५ पं० ९-१०। इसके अनुसार यह पत्र सं० १९३९ मार्गशीर्ष बदि(ता० २९ नवम्बर १८८२)के कुछ दिन पूर्व लिखा गया होगा।

१. इस पत्र की सूचना ऋ० द० के पूर्ण संख्या ७३१ के पत्र में मिलती है। (द्र०—भाग २, पृष्ठ ७६६, पं० ११-१२)।

२. यह पत्र सारांश ऋ० द० के पूर्ण संख्या ७३३(भाग २, पृष्ठ ७६७) के पत्र में निर्दिष्ट है।

३. इस पत्र की सूचना ऋ० द० के पूर्ण संख्या ७३६ (भाग २, पृष्ठ ७६९) के पत्र में है।

४. इस पत्र की सूचना ऋ० द० के पूर्ण संख्या ७३७ (भाग २, पृष्ठ ७७०) के पत्र में मिलती है।

[पूर्ण संख्या ३७०] पारसल-सूचना

[मुंशी समर्थदान, प्रयाग द्वारा भेजे गये कागजात][1]

—:०:—

[पूर्ण संख्या ३७१] पत्र-सूचना

श्यामसुन्दरदास, मुरादाबाद का पत्र][2]

—:०:—

[पूर्ण संख्या ३७२] पत्र

॥ ओं ॥[3]

॥४॥ स्वस्ति श्री उदयनगर शकल शुभओपमां विराजमान लाइक शकल गुणनिधान जगतोपकारक वेदाध्यक्ष श्रीयुत स्वामी जी महाराज श्री श्री १०८ श्री दयानन्द सरस्वती जी एतन मसूदा सू परमसेवग कोठारी चांदमल की पावांधोक नमस्ते मालम होवे यहां आप की दया से परम आनंद है परमात्मा आप को सदा आनंद में रखे अपरंच इतने दिन पत्र नही देने का मेरा यह कारण है कि जब आप बंबई नग्र मध्ये विराजमान थे तब तो मैं ठीक स्थान का पता नहीं जानता था और जब से आप को उदयनगर मध्ये प्रवेश हुए सुना है तब से यह दास बीमार है सो आप की अनुग्रह से अब चंग होकर पत्र आप के चरणार्विदो में भेज निवेदन करता हूं कि आप कसूर क्षमा कीजिये और आप ने जो उदयनगर देशाधिपति से गोरक्षा का प्रारम्भ शुरू किया हे इस बात को सुन कर इस दास को वड़ा ही आनंद हुआ। यह दास हजारहा प्रार्थना उस परमात्मा व उन माता पिता को करता है कि जिनहानों इस नाशवान संसार में आप

---

१. इस पत्र की सूचना ऋ० द० के पूर्ण संख्या ७३७ (भाग २, पृष्ठ ७७०) के पत्र में मिलती है।

२. इस पत्र की सूचना ऋ० द० के पूर्ण संख्या ७३९ (भाग २, पृष्ठ ७७१) के पत्र में है।

३. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १, पृष्ठ २३२-२३३ पर छपा है।

जैसे महात्मा पुरुषों को प्रकट किया, नहीं तो क्या जाने इस आर्य्यावर्त के लोगों की क्या दशा होती और अब भी जो लोग आप के उपदेश से विमुख है वे फिर अच्छी गति को जन्मोजन्म कभी प्राप्त न कर सकेंगे. श्री परमात्मा आपको सदा आरोग्य रखें: और अभी में शाहपुरे गया था वहां आपके पधारने की चर्चा हो रही है और एक मंथजी जो रामद्वारे के राम सनेही जो अभी बूंदी चत्रमासा करने को चले गये हैं वह भी वुलवाये गए हैं और एक पंडित जो वहां पंडरीक जी के नाम से प्रसिद्ध है उसको राजधिराज ने फरमाया है कि स्वामी जी यहां पधारेंगे और तुम को उन से शास्त्रार्थ करना होगा सो बह पंडित भी मूर्ति पुजन मंडल विसय से स्वाल जवाव तैयार कर रहा है और मंथजी हाल आए नहीं. मुझको यह बड़ा आश्चर्य्य है कि काशी नगर के पंडित भी शास्त्रार्थ न कर सके तो भला इस वेचारे का क्या मकदूर है. भला सांच के आगे झूठ कब तक ठहरेगा. में आप की दया से प्रसन्न हूं जव आपका पधारना शाहेपुरे होवेगा तब दास भी चरणारविंदों में हाजिर होवेगा. आपने मेरे वास्ते यहां उपकार तो बहुत ही किया. लेकिन मेरी प्रालब्ध ने मदद नहीं दी इसलिये नहीं हुआ. अब भी मेरे पर उपकार आप उधर किया चाहुवेंगे तो जरुर हो सकेगा. और यह दास सदा प्रातःकाल स्नान संध्या व गाइत्र्यादि मंत्र व आप जैसे महात्मा पुरुषों का स्मरण करता रहता है. इस दास पर दया वणी रहै—

समत १९३९ की मती पोष बुद १ ता० २४ दिसंबर[1]

सन १८८२ ई

—:०:—

[पूर्ण संख्या ३७३] पत्र

श्री आदमाता जी ।। श्रीरण छोड़ राऐ जी[2]

[3]।। सेवग का दंदोत पगा लागणो मालुम हो सी कृपा कर वेगा पदारसी।

---

१ पौष बदि १(१९३९)को २५ दिसम्बर था। २४ दिसम्बर को मार्गशीर्ष की पूर्णिमा थी। यहां तिथि या तारीख में १ दिन की भूल है।

२. यह पत्र पं० चमूपति सम्पादित 'ऋ० द० का पत्र व्यवहार' भाग २, पृष्ठ १२८ पर छपा है।

३. यह पंक्ति मूल पत्र में ठाकुर फतहसिंह ने अपनी कलम से पत्र लिखने

सीघश्री ऊदेपुर सुभ सुथांनेसरब ओपमालायके स्वांमीजी महाराज श्री५श्री दयानन्द सरस्वतीजी एतांन देलवाड़ाथी सवेग रांणा फतहसिह लिषावतां डंडवत मालुम होने अठाका समाचार श्रीकरा धा भला है आपका सदा भला चाहीजे आप म्हारे घणी वात है आप वड़ा है पुज्य है अप्रंच नरपराजकुमारी का लग्न माघ कृष्ण ४ ता० २७ जनवरी १८८३ का है सो कृपा कर पदारे आपका पदारवा सु अधीक सोभा होसी १९३९ रा पोसवदी[1]

फतहसिहजी
ठाकुर

—:०:—

[पूर्ण संख्या ३७४] पत्र

ओ३म्[2]

....................१९३९[3]

श्री ५ मन्महन्माननीय दयानन्द स्वामिनाञ्चरणसरोजेषु भृङ्गायमानस्यममानेकनतिततयः सन्तु ।

महाशय

विनय यह है कि सामवेदीय ताण्ड्य महाब्राह्मण सभाष्य...... ब्राह्मण षड्विंश ब्राह्मण और आरण्य संहिता सभाष्य

के बाद ऊपर के स्थान में आड़ी लिखी है। यह टिप्पणी श्री राजबहादुर सिंह जी (कोटा) ने मूल पत्र से मिलाकर लिखी है।

१. यहां तिथि छूटी हुई है। पं० चमूपति ने स्वसम्पादित पत्र व्यवहार के पृष्ठ १२४ में इस पत्र की तिथि पौष बदी १ सं० १९३९ दी है। वह उन्होंने कहां से दी है, यह अज्ञात है। पौष बदी १, सं० १९३९ को २५ दिसम्बर १८८२ था।

२. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १, पृष्ठ २३७, २३८ पर छपा है।

३. यहां केवल संवत् का उल्लेख है, तिथि का निर्देश नहीं है। म० मुंशीराम ने स्वसम्पादित 'ऋ० द० का पत्र व्यवहार' भाग १ की भूमिका के पृष्ठ २५ पर चैत्र १९३९ का लिखा माना है। महीने का यथार्थ ज्ञान न होने से हमने इसे यहां छापा है।

आ.........................कृत हो या अन्य शास्त्र कृत हो और पञ्च महायज्ञ विधि[1] तथा सत्यार्थप्रकाश मे जो मिश्री, दूध, गुड़, मांस, और सोमलतादि वस्तु होम के लिये लिखी हैं इन सब वस्तुओं को किस किस प्रकार हवन करना चाहिये अर्थात् जब पुष्टिकारक होम करना हो तो दूध घी तथा मांस से किस प्रकार यानी खाली एक एक से या सबको एक में मिलाकर करना चाहिये और सोमलता के रस से या उसके खण्ड खण्ड करके होम करना होता है उसमें घृत मिलावे या नहीं सत्यार्थप्रकाश[2] में लिखा है कि इन पदार्थों का यथावत शोधन, परस्पर संयोग, और संस्कार करके होम करना चाहिये जैसी विधि हो कृपा पूर्वक स्पष्ट वैसे शीघ्र लिखियेगा मैं आपका अत्यन्त कृतज्ञ हूंगा किमधिकं विज्ञेषु

आपका आग्याकारी—
माया राजेन्द्र बहादुरसिंह
स्थान भिगना जिला बहरायच सूबे अवध

—:०:—

१. पञ्चमहायज्ञविधि सं० १९३२ (बम्बई में छपी) तथा सं० १९३४ में अग्निहोत्र के प्रकरण के अन्त में केवल **'सुगन्धिपुष्टिमिष्टबुद्धिवृद्धिशौर्यधैर्यबलरोगनाशकैर्गुणैर्युक्तानाम्'** इतना ही पाठ है।

२. सत्यार्थप्रकाश प्र० सं० सन् १८७५ के पृष्ठ में 'मांस' का निर्देश मिलता है। वह प्रक्षिप्त है। छपते समय बढ़ा दिया है। इसमें प्रमाण है कि सत्यार्थप्रकाश में सुगन्ध गुण, मिष्टगुण के विवरण मे क्रमशः 'कस्तूरी केशरादिक' तथा 'मिश्रीशर्करादिक' दो दो नाम ही दिये हैं। और दो दो नामों के बीच में 'और' शब्द भी नहीं है। पुष्टिकारक गुण के 'दूध घी और मांसादि' तीन नाम हैं। इस विषय में पूर्वमुद्रित पूर्णसंख्या १६० (भाग ३, पृष्ठ १२९) पर डा० मुकुन्दसिंह का पत्र, तथा उसका ऋ० द० द्वारा प्रदत्त उत्तर पूर्ण संख्या ३९४ भाग १, पृष्ठ ४२७ का पत्र सारांश भी देखें।

[पूर्ण संख्या ३७५] पत्र

ओंनमः[1]

सिद्ध श्रीमत्सर्वोत्तम सकल गौवे गुण निधान धर्ममूर्ति दीनद्याल पितृस्वरूप श्री श्री श्री श्री श्री श्री महाराज स्वामी जी भगवती सहित सब समाज का प्रार्थना सहित प्रणाम बांचना और महाराज पत्र आपका आया परम आनन्द हुआ धन्य हों आप जो ऐसे दीनों पर दया करते हों परन्तु आपका २७ दसम्बर का लिखा हुआ[2] २३ को इस डाकखाने में पहुंच कर १ जनवरी को मेरे को मिला इस में यह हेतु है कि इस डाकखाने में यह अक्षर न तो मुंशी पढ़ा हुआ है न चिठ्ठी-रसां इस से यह मेरा पत्र इतने दिन रहा तांते लफाफे पर फारसी हरफ जरूर डलवाना और महाराज जी मेरठ से मेरे को १ एक ही पत्र आया था सो जी मैं आप के पास भेज दया था औ उस पत्र के साथ जो मैंने पत्र आप कों लिखा था[3] उस में अपने मेरठ जाने का सब समाचार लिखा और यह पूछा कि महाराज मैंने दो पत्र मेरठ को लिखे थे उन का जुवाब यह आया है इस का उत्तर मैं लिखूं वा जेकर लिखूं तो क्या लिखूं सो जी आपने उस पत्र का जुवाब यह लिखा जो आप के पास भेजा जाता है इस में आप ने उत्तर देने वास्ते लिखा नही इस से मैंने उन्हों को इस पत्र का उत्तर तो जरूर नहीं लिखा और जी इस से पीछे मेरे को उधर से कोई पत्र नहीं आया जेकर आता तो मैं उत्तर क्यों न लिखती काहे ते कि मेरे तो यह बात परम ही इष्ट थी यही बात तो मैं आप से प्रार्थना कर के मांगती ही हूं कि बुद्धिमानों के संग से कोई कोई बात पूछती रहूं और फिर जब आप उन स्थानों में आवों तो फिर आप से प्रार्थना कर के कोई बात पूछूं और आगे औरों को भी बताती रहूं और जी जो मैंने प्रश्न पूछा था सो जी सत्यार्थप्रकाश भूमिका में तो जरूर लिखा है परन्तु मैंने

१. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १, पृष्ठ ४५३-४५७ तक पर छपा है।

२. ऋ० द० का यह पत्र हमें नहीं मिला। माई भगवती के इसी पत्र के आधार पर पूर्णसंख्या ७३४, भाग १, पृष्ठ ७६८ पर पत्राशय बनाकर छापा है।

३. यह पूर्व मुद्रित पूर्ण संख्या ३६२, पृष्ठ ४४९ के पत्र से भिन्न प्रतीत होता है।

उन सथानों में अैसे समझ लीया कि जब मनुष्य अधिक पाप पुण्य थोड़ा करता है तब पशु आदि का शरीर पाता है जब पाप पुण्य तुल्य करता है तब फिर मनुष्य शरीर को पाता है जब पुण्य अधिक करता है तब देव हे कृपानिधि मैं हट के आने की बात नहीं समझी थी अब आप की कृपा से अच्छी रीति से समझ ली है और हे भगवन् जो आप यह लिखते हो कि हमारा उत्तर लिखने का अवकाश नहीं सो जी यह बात सत्य भी है परन्तु मेरे को यह प्रतीत होता है कि आप की मेरे पर कुछ कृपा की न्यूनता है काहे ते कि जैसी कृपा करनी ईश्वर जी को उचित थी सो उन्हों ने भी करदी है क्योंकि जिस देश में आप जैसे विद्वान् उस देश में ग्रहस्थ के जंजालों से रहा जन्म फिर आप का दर्शन और इस मार्ग के समझने और चलने की मन में रुची और बताई बात समझने की समर्थ दे दी है और जी जो मुझ को अपने करने का कर्तव्य अपने आधीन दीखता है सो उस को मैं भी अपने दिल से उत्साह पूर्वक अति शीघ्रता से करती हूं होर जो मेरे करने योग्य होवे सो आप कृपा कर के बता दीजिये आपको यह अति उचित है और जी आप की कृपा की न्यूनता मेरे को इस से प्रतीत होती है कि न तो दृढ़ होके कहीं और जगा पूछने का मेरा प्रबन्ध करते हो काहे ते कि मैं तो सब तरह से मानती हूं, और आप कभी थोड़ी सी बात जैसे कि विना रुची से कोई किसी के कहे कहाये भोजन करता है वैसे ही कभी मेरठ की थोड़ी सी बात लिख छोड़ी कभी लाहौर की कि तू लाहौर जा सके तो हम तेरे वास्ते लाहौर को लिखें सो जी पहिले तो यह कि इस बात में मेरे को क्या पूछना यहां आप को भेजने की योग्यता दीखे वहां भेज देवें और जी जेकर पूछ भी लिया तो भी मैं इस के उत्तर में दो पत्र लिखे विदित तो होता है कि आप ने लाहौर को पत्र ही नहीं लिखा होगा जेकर लिखा भी होगा तो मेरे को उस का उत्तर कुछ भी न दीया मेरठ की बात लिख छोड़ी वहां की बात को आप भले चंगे जानते भी होंगे कि इस बात में वोह ढीले हैं यामैं प्रयोजन मेरे को अधिक है वा उन्हों को परन्तु आप ने कहीं और समाज में लिखा नहीं होगा इस से और कोई बात लिखने को मिली नहीं मेरठ से किसी आप के पिछले पत्र का उत्तर अब आया होगा वोही लिख छोडी है प्रजानाथ आप तो मेरा सत्कार भी चाहते हो और जी मैं तो इस विषय में अपना सत्कार भी नहीं चाहती एक थोड़ी द्यालता ही चाहती हूं, महाराज जी मूल बात यह

कि न तो कहीं और जगा मेरे पूछने के प्रबन्ध का फिकर और जी न आप लिष सकों इस से आप ही कृपा की न्यूनता पाई जाती है या नहीं भला महाराज जी जेकर पूर्ण कृपा होवे तो रात्रि से उरे उरे प्रबन्ध भी कर सकों और एक महिने में थोड़ी सी बात लिखनी भी आप कों कुछ कठिन नही काहे ते जिस को थोड़ी विद्या होती है उस को तो सोच कर उत्तर देना कठन भी होता है सो जी आप पूर्ण विद्वान् हों जौनसी बात अपने मन में बनी बनाई होती है उस के लिखने मे कुछ दीर्घकाल भी नहीं लगता सो जी आप जानो आप का काम मैं तो महीने पीछे थोड़ी सी प्रार्थना लिखा ही करूंगी जितना चिर प्रबंध नहीं करते चाहे किसी और से उत्तर लिखवावों चाहे आप लिखो मैंने तो बहुत काल तक आप की ओर देखा है हे दयालमूर्ति इन मेरी बातों से आप बुरा नहीं मानना अति क्षुधावत भिक्षू दाता से इसी तरह से झगड़ा करता है दाता कों को य न चाहीये भिक्षा दे कर क्षुधा की निवृत्ति चाहिये हे दीनानाथ जी मनुष्य शरीर में जीवों के आने की बात तो मैं समझली परन्तु अब दुःख होने में शङ्का है सो जी पाप पुण्यों की तुल्यता किस प्रकार से लेनी मेरे को तो यह शङ्का है कि जैसे किसी के घर में आधा गेहूं आधे चने मिले हुये १ मन किसी के घर ५ किसी के १०० इस से आदि और भी लेना वैसे सब के पाप पुण्य अधिक न्यून हैं परन्तु हैं आधे आधे सो जी मेरा इस में यह पूछना है कि जैसे गेहूं और चने कों अलग अलग करीये तो जिस के घर में १०० यह था उस के ५० इतना गेहूं ५० इतने चने जिस के घर ५ उस के ढाई ढाई मन जिस के १ उस के बीस बीस सेर वैसे ही जिन्हों को पुण्य का फल सुख अधिक होवे उन्हों कों पाप का फल दुःख भी अधिक हुया चाहिये जिन कों सुख कम उन को दुःख भी कम, सो जी दीखता इस से विपरीत है और जी सत्यार्थप्रकाश में जिस जगह सत, रज, तम गुण की अधिक न्यूनता से मिल कर पाप पुण्य करने से सुख दु:ख अधिक न्यून होते हैं यह लिखा है उस जगा भी और और जगा भी और ग्रन्थों में भी मेरे को तो यह बात विदित हुई नहीं जेकर कहीं लिखी हुई होवे तो आप ने उत्तर नहीं लिखना वह प्रकरण लिख देना जेकर उस में न मिलेगी तो फिर पूछ लेवांगी हे धर्ममूर्ति ऐसे नहीं करना जो उत्तर ही न लिखों महाराज मेरा तो जीना ही इस प्रतीब से है नहीं तो मेरे को एक दिन ही अति दीर्घ हो

जाता है।

हरियाणा　　　　　　　　　　　　　　हस्ताक्षर—

६ जनवरी[1]　　　　　　　　　　　　　　**भगवती**

—:०:—

[पूर्ण संख्या ३७६]

[2]मुंबई १८८३

ता० ६ जान्युआरी[3]

पत आपका कृपा पत्र[4] पढ़ते ही अत्यागन्द हुआ मे थोड़े दिनों से दक्षिण में आकोला शहेर जो बिराडके मुल[क] में है गया था सो आ गया हु।

घडी बेचती लेली है[5] दो दिन तपास के आपकी आज्ञानुसार भेज-दीजायगी। गौ की सही समाज के वृत्तांत क सब समाचार मंगल के दिन आपकी सेवा मे भेजदुंगा। याह के सब विशेष समाचार कृपा कर लिखवा भेजना इति.

मैंहुं आपका आज्ञांकित् सेवक

सेवकलाल कृष्णदास

—:०:—

१. यहां सन् नहीं लिखा है, परन्तु माई भगवती का एक पत्र ४ नवम्बर १८८२ का पूर्व पूर्ण संख्या ३६२, पृष्ठ ४४९-४५१ पर छप चुका है। उसके उत्तर में १७ दिसम्बर के स्वामी जी महाराज के पत्र का निर्देश इस पत्र में है। अत: यह पत्र ६ जनवरी सन् १८८३ तदनुसार सं० १९३९ पौष कृष्णा १२ शनिवार का है।

२. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्र व्यवहार' भाग १, पृष्ठ २६७-२६८ पर छपा है।

३. पौष कृ० १२ सं० १९३९ वि०।

४. यह पत्र हमें नहीं मिला।

५. इस घड़ी का वर्णन ऋ० द० के कई पत्रों में आया है। द्र०—पूर्ण संख्या ८२८ (पृष्ठ ८५६), ८५७ (पृष्ठ ८७६), ८५९ (पृष्ठ ८७९, पं० १०), ८६७ (पृष्ठ ८८४), ८६८ (पृष्ठ ८८४) भाग २।

[पूर्ण संख्या ३७७] पत्र-सूचना

[उदयपुर में महाराजा होल्कर के कुछ पत्र इन्दौर बुलाने के आये][1]

—:o:—

[पूर्ण संख्या ३७८] पत्र

[2]मुम्बई, ता० १९ जानेवरी १८८३[3]

श्रीमत्पंडित स्वामी दयानन्द सरस्वती जी प्रति—

नमस्ते, आपका कृपापत्र ता० १७मी जानेवारी का पत्र[4] भेजा हुआ हमको आज मिला उसको पढ़ के आनन्दित हुआ बड़ी और गऊ के सही का कागज कल भेजदूंगा. मैं आकोला की ओर नाशिकादि शहरों को फिरने को गया था सो आगया हूं और समाजस्थान का भी सब हिसाब कल पत्र के साथ भेजदूंगा कि जिस से आपको सब हाल विहित होजायगा. विट्ठल कल हम को मिला था उस को लेने देने के लिये आप के लिखे मुजब कर दंगे अलमितिवि० इति०

मैंहूं आपका आज्ञांकित
सेवकलाल कृष्णदास

—:o:—

---

१. इन पत्रों की सूचना पं० लेखराम कृत जीवनचरित हिन्दी सं० पृष्ठ ९१२ में निर्दिष्ट है। वहां उदयपुर में पत्र पहुंचने का निर्देश है। इस पत्र की निश्चित तारीख का ज्ञान न होने से इसे संकलनमात्र की दृष्टि से इस स्थान पर जोड़ दिया है।

२. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्र व्यवहार' भाग १, पृष्ठ २६८-२६९ पर छपा है।

३. पौष शु० ११ सं० १९३९ वि०।

४. यह पत्र उपलब्ध नहीं हुआ। इसी पत्र के आधार पर पत्राशय पूर्ण संख्या ७४४, भाग २, पृष्ठ ७८० पर छपा है।

[पूर्ण संख्या ३७९]　　　　पत्र

[1]मुंबई० ता० २० जानेवारी १८८३ ई०[2]

श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य्य अनेक गुण संपन्न वेदविहिताचार धर्म्मनिरूपक दयानन्द सरस्वती स्वामी जी प्रति नमस्ते

आप का कृपापत्र दूसरा कल मिलते ही आप को प्रत्युत्तर में पोस्टकार्ड कल भेजा सो पहुचा होगा। गोरक्षा के पत्रक जिसपर १५३२० सहि हुई हैं सो आज रजिस्टर कर के भेज दीई जायगी जो मिलते ही कृपा कर के पहोंच लिखना। घड़ी के लिये आप ने जो पचीस रुपीये का मनीआर्डर भेजा सो पहुंचा है, घड़ी लेके तपासने के लिये रखा है सो आज वा कल प्रोहित उद्धवलाल जी को भेज दीई जायगी, विलंब का कारण एही हैं बिना तपासे कभी भेजी जावे वा पीछे से बराबर न चले तो फिर लोटा देनी पड़े और प्रोहित का दिल नाखुष होवे। अथर्ववेद की टीका और ऋषि छंद के लिये आप के लिखने के पूर्व ही कई महिनों से प्रयत्न कर रहे हैं परंतु अब तक कुच्छ प्राप्त हुए नहीं, रावबहादुर शंकर पांडुरंग पंडित ने कुच्छ टूटा फूटा भाष्य भावनगर से प्राप्त कर लिया है, जो किसी को देता नहीं हम ने चाणोत्कन्याली में अथर्ववेदी ब्राम्हणों के गृह में ऋषि छंद और भाष्य हैं बेसा एक सामवेदी ब्राम्हण से सुना है, और पत्र लिख के प्रयत्न भी कर रहे हैं, मिलते ही आप को भेज दिया जायगा। आर्य्य समाज के मंदिर का काम जमीन के ऊपर ४ फुट तक ऊंचा सब काले पथर का काम हुवा है, जो सेंकड़ो वर्षों तक मजबूत टिक सकेगा. जिस के ऊपर सब खर्चा अबतक रु० ३०००)हो चुके हैं और आप के गये बाद सब रु० आज दीन तक ७१३५) जमा हो चुके हैं जिस में आप जब मुंबई में पधारते थे तब रु० ६५६७) जमे हुए थे और आप के गये बाद रु० ५७८) जमा हुए हैं, और पट्टी में रुपये ८६४९) भरे गये थे तदनंतर रु० ७२६) कल रात तक भरे गये हैं, जिस में से ५२६) रु० तो जमा हो गये बहोत करके उघरानी पहिले ही की बाकी हैं, जिसमें ठाकसी नारण जी ने रु० १०००) सेठ द्वार्का-

---

१. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १, पृष्ठ २६९-२७४ पर छपा है।

२. पौष शु० १२ सं० १९३९ वि०।

दास लल्लु भाई ने २०१) रु० आत्माराम बापुदलवी के रु० ३३) मंच्छा शंकर जयशंकर के रु० २५) वामन आबाजी मोडक के रु० १०) वह सब ग्रहस्थों के चंदे में से कुच्छ जमा हुवा नहीं है दामोदर रुपजी ने रु० १२५) है से रु० ५०) दिए हैं पुर्षोत्तम भगवानदास रेशमी कापड़ वाले ने १००) रु० में से रु० ५०) दिये हैं और श्याम जी विश्राम के रु० १००० में से रु० ५००)आये वह आप जानते हों. अर्थात् सब मिल के ६३७५) रु० पट्टी में भरे गये हैं इस में ७१४६) रु० जमा हुए और २२४०)[1] रुपीयों की उघारनी हैं। जिसमें ५००) रुपये तो श्यामजी विश्राम के तो आने के हो नहीं और ठाकरसी भी १०००) रुपीये में से कुछ देवें वेसा लगता नहीं क्योंकि इस का हात बड़ा तंगी में है और द्वार्कादास अभी थोड़े थोड़े करके देने को कहते हैं, अर्थात् ५०० सो ७०० रुपीये तक उघरानी बड़े परिश्रमसे जमा होगी। जिस में अभी रु० ५००) तक हमारे पास से खर्चे गये हैं, क्योंकि जो काम बंद कर देवें तो फिर प्रारंभ होना बड़ा कठीन है जिस से थोड़े कारगीरि रख के धीरे धीरे काम चलाता हूं सो आप को *विदितार्थ लिखा है।*

रावबहादूर गोपालराव हरी देशमुख परसो रात्री को मुंबई में पधारे हैं जिसको लेके हम, सुंदरदास और लीलाधर आदी कल रात्री को दो तीन ठीकाने चंदा भरवाने को गये थे जिस में से जीवनदास इवजी शीवजी ने रु० २००) भर दिये हैं और जहां तक रावबहादूर यहां है वहां तक एकांतरे को चंदा भराने के लिये जाने का अनुबंध किया है। शेठ लक्ष्मी दास खाम जा के पास रावबहादूर आदि कई बखत गये उन्हों ने काम देखने के लिये आने का कहा है परन्तु अब तक आये नहीं और इन्हों के थोड़े दिनों में रुपीये २००००) लेके एक बेपारी ने दिवाला निकाल दिया है जिस से हमने भी थोड़े दिन इन्हों के पास जाने का मोकव रखा है, सेठ छबिलदास लल्लु भाई ने अब तक कुच्छ चंदा भरा नहीं मात्र आप के आज्ञानुसार प्रतिमास मुलजी ठाकरसी के पिता को रु० ७) खाने को देते हैं। सूयवंशमणी उदयपुर के महाराणा जी राजधर्म पढ़ते हैं यह पढ़ते ही अति आनंद हुआ, जहां तक हमारे राजे महाराजे धर्म्माधर्म्मको याथातथ्य न

---

१. नोट— ६३७५ में से ७१४६ निकालने पर शेष २२२६ बचता है। परन्तु यहां २२४० शेष लिखा है। मुंशीराम।

समजेंगे वहां तक हमारे देश की राज्य और धर्म्म व्यवस्था अतिउत्तम कभी न चली और चल सकेगी। षड्दर्शनों का याथातथ्य भाषांतर होगा तब ही शास्त्रों के नाम से जो पोलपाल चल रही है सो निर्मूल होगी। सेठ मथुरा दास लवजी कर रात को सेठ जिवराज बालू के दूकान पर मिलेथे इसी को आप के आसिर्बचन कहे हैं और इन्हों ने पास निरुक्त के दो अंक[1] दूसरे आ गये हैं सो आप को भेजने के लिये आज देने वाले हैं वह मिलते ही आप को पोष्ट द्वारा भेज दिये जायंगे। विठ्ठल रावोबा अभी हमारे पास आगया है उन्हों ने कहा कि लालजी महाराज पर स्वामी जी का पत्र[2] आ गया है जिसमें हम को तुम्हारा पगार देने के लिये लिखा है जिस लिये हम सोमवार के दिन वालकेश्वर जाके पत्र पढ़ के उनको दे देंगे क्योंकि लालजी महाराज के शरीर को अच्छा नहीं वह शहर में आ नहीं सकते। रावबहादुर गोपालरावहरी देशमूख जी का उदयपुरादि शहरो देखने आने की इच्छा है सो मास दीढ़ मास से यहां से निकलने को चाहते हैं और चाहे तो हम भी उन के साथ देखने चले आवें और आप के दर्शन का अमूल्य लाभ लेवें। इस पत्र के साथ आर्य्यसमाज के टीपखाते की जमा उधार की यादी आपको विज्ञापनार्थ भेजदीई है जिस से आप को जमा उधार सब विदित हो जायगा यह यादि हमने प्रथम नाशिक गये के पूर्व तय्यार कराई थी परन्तु अब आज दिन तक का सब इस में दाखल करके आप को भेज दीई है। गोकरुणानिधी का जो अंग्रेजी भाषांतर हुवा है[3] सो हमारा छपवा देने का निश्चय है परन्तु लाहौर में जो आर्य्य नामक जो अंग्रेजी मासीकपत्र प्रकाशित होता है उसी में छपवा के फिर इसी का पुस्तक बनवा के छपवा देना कि जिस से यह पुस्तक के ऊपर कोई विरुद्ध वा पुष्टी में लिखे वे भी उसी के साथ ही विवेचन होके छप सके इस विषय में आप का क्या अभिप्राय है सो कृपा करके लिख भेजना। गिरानंद का एक पत्र हम को किसनगढ़ का लिखा मिला है इस में उन्हों ने पतंजल महाभाष्य मंगवाया है और पुस्तक मिले बाद दाम भेजने का भी

---

१. ये निरुक्त के २ अंक किस के लिखे हैं, हमें ज्ञात नहीं।

२. यह पत्र हमें नहीं मिला।

३. यह अनुवाद छपा नहीं।

पत्र में लिखा है परन्तु इसि के पिता आदि मनुष्य कैसे है वह हम नहीं जानता इस लिये भेजा नहीं है और किसी दुकानदार के पास मिलता भी नहीं इस से आप जो आज्ञा करो तो हम भेजदेंगे। रामानन्द जी को हमारे नमस्ते कहना। अलमिति वि० इति ॥

मैं हूं आपका आज्ञांकित सेवक
सेवकलाल कृष्णदास
मंत्री आर्य्य स० मुम्बई.

—:०:—

[पूर्ण संख्या ३८०] **पत्र-सूचना**

[डी० ए० राजा पाकसा, लङ्का का पत्र][1]

—:०:—

[पूर्ण संख्या ३८१] **पत्र**

OM TAT SAT

ARYA SAMAJ MEERUT

(Established in 1878, A.D. by the Ven'ble Pandit DAYANAND Saraswati Swami, Vedic Reformer of India, in the Parlour of Lala Ram Saran Das, Landholder and Resident of Meerut.)[2]

KANUNGOYAN LANE CITY.[3]

---

१. इस पत्र की सूचना डी० ए० राजा पाकसा के आगे पूर्ण संख्या ५४६ भाग ४ में छप रहे २६ अगस्त १८८३ के पत्र में है। इस पत्र का उत्तर ऋ० द० ने २७ फरवरी १८८३ को दिया था, यह भी वहीं निर्दिष्ट है। अतः यह पत्र जनवरी के अन्त में अथवा फरवरी १८८३ के आरम्भ में लिखा गया होगा।

२. यह अंग्रेजी में छपा अंश अगले रामनारायणदास के २१ जनवरी १८८३ के पत्र के साथ ही म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १, पृष्ठ ३१९— ३२० तक छपा हुआ है।

३. यहां से रामशरणदास का पत्र आरम्भ होता है। यह म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्र व्यवहार' पृष्ठ ३२०–३२१ पर मुद्रित हुआ है।

No. 440 २१ जनवरी सन ८३[1]

To

....

....

....

Dear Sir,

श्रीयुत महामान्यवर स्वामी दयानन्द सरस्वतीजी महाराज नमस्ते।

आप का पत्र[2] मुन्शी इन्द्रमणि के विज्ञापन[3] समेत जो इन्द्रवज्र के समान था आया मुन्शीजी ने तो अपना विज्ञापन यहां नहीं भेजा परन्तु अजमेर और आगरे के समाजों से आप के भेजने के पहिले आ गया था—जहां जहां से मेरठ आर्य्यसमाज में मुन्शीजी के मुकद्दमें के लिये रुपया आया था वहां वहां को आय और व्यय का लेखा भेजकर शेष के लिये पूछा है कि क्या किया जावे एक प्रति उसकी की आप के समीप भी भेजी जाती है—अभी केवल फर्रुखाबाद से उत्तर यह आया है कि रुपये को ब्याजू देदो फिर किसी और ऐसे ही काम में लगा दिया जायगा जब सब स्थानों से उत्तर आ जायंगे तब मुन्शीजी के विज्ञापन और मित्र-विलास आदि समाचारों के कि जिन्होंने उक्त विषय में धूम मचाई है यथोचित उत्तर नागरी, उर्दू और अंगरेजी में दिये जायंगे—गोरक्षा संबंधी पत्र जो आप के समीप पहुंचे हैं वह मेरठ के समाज ने भेजे हैं उस के पश्चात् और कहीं से नहीं आये जो और भेजे जाते पण्डित बिहारीलाल ने जो इस समाज के सभासद थे और थियोसफिकल सुसाइटी में भी हो गये थे अब थियोसफिकल सुसाइटी से इस्तेफा दे दिया यहां के समाज का पंडित निहस्सन्देह पोच है दूसरे पंडित की तलाश है जिस समय मिल जायेगा रख लिया जायगा—सब सभासदों का नमस्ते पहुंचे—अब आप उदयपुर से

---

१. पौष शु० १३ संवत् १९३९ वि०।

२. यह पत्र हमें उपलब्ध नहीं हुआ।

३. यह विज्ञापन हमने 'ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन' के भाग २, पृष्ठ १०३२-१०३४ पर छापा है, वहां देखें।

किधर को पधारेगें-- लाला रामशरणदास का विचार उदयपुर आने का नहीं है। अलमिति

आप का दास,
समाज का उपमंत्री
रामशरणदास,

—:०:—

[पूर्ण संख्या ३८२] पत्र-सूचना

[महाराणा सज्जनसिंह का पुत्रोत्पत्ति-सूचना विषयक पत्र][1]

[सम्भवत: सं० १९३९ माघ शुक्ला २[2] = ९ फरवरी १८८३]

—:०:—

[पूर्ण संख्या ३८३] पत्र

॥ श्री ॥[3]

श्री मत्परम हंस परिव्राजकाचार्य वर्य श्री ५ श्रीदयानन्द स्वामि वर्येषु इत: महाराणा सज्जनसिंहस्यनति ततय समुल्ल सन्तु उदन्तु

---

१. यह पत्र हमें नहीं मिला। इस पत्र के सम्बन्ध में पं० लेखराम जी ने ऋ० द० के जीवनचरित (हिन्दी स०; पृष्ठ ६०१ पर लिखा है—

'एक दिन स्वामी जी ने राणा साहब को कहा था कि हम को लड़का होने की आशा है। उन्होंने कहा कि फिर आप तब तक रहें, देखिये क्या होता है? स्वामी जी ने कहा कि 'हम सिद्ध नहीं, यह सब ईश्वराधीन है'। ९ फरवरी सन् १८८३ को परमेश्वर की शक्ति से लड़का ही हुआ। सब से प्रथम राणा साहब ने स्वामी जी को पुत्र उत्पन्न होने की चिट्ठी लिखी और एक अशर्फी लिफाफे में लपेट कर भेजी कि आप के आशीर्वाद से हुआ है। स्वामी जी ने यह अशर्फी दरिद्रों में बांट दी।"

२. इस पत्र के उत्तर में ऋषि दयानन्द ने जो शुभाशी: का पत्र लिखा था उसकी सूचना महाराणा सज्जनसिंह के अगले पत्र पूर्ण संख्या ३८३ में मिलती है।

३. यह पत्र प० चमूपति सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भा० २, पृष्ठ १३२ पर छपा है।

आपने जो शुभाशिष[1] लिखा जिसके प्रतिनिधि धन्यवाद अर्पण करता हूं

इति सं० १९३९ माघ शुक्ला २ भृगुवासरे[2] ह: म: रा:

सज्जन सिंहस्य:

—:०:—

[पूर्ण संख्या ३८४] विज्ञापन[3]

विदित हो कि स्वामी दयानन्द सरस्वती का प्रसिद्ध जगन्नाथदास की प्रश्नोत्तरी के खंडन में एक लेख 'देश हितैषी" नामक मासिक पत्रिका अजमेर में प्रकाशित हुआ है और उसमें बहुत से स्थानों पर मेरा नाम भी घृण की दृष्टि के साथ लिखा हुआ है। इसका उत्तर शीघ्रतर मासिक पत्रिका के द्वारा जो निकट भविष्य में धार्मिक खोज के सम्बन्ध में हमारे यहां से चालू होने वाली है—छपकर प्रकाशित होगा परन्तु उक्त लेख के अन्त में जो यह लिखा है कि इन्द्रमणि और

---

१. ऋ० द० का यह 'शुभाशी: पत्र' उपलब्ध नहीं हुआ।

२. ९ फरवरी १८८३।

३. यह विज्ञापन मुंशी इन्द्रमणि ने ऋ० द० के द्वारा 'एक उचित वक्ता' के नाम से इन्द्रमणि के साथ जगन्नाथ कृत 'प्रश्नोत्तरी' के उत्तर में देशहितैषी में छापे गये 'समीक्षा पत्र' (द्र०—'ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन' पूर्ण संख्या ६९३, भाग २, पृष्ठ ७१९-७२७) से रुष्ट होकर छपवाया था। यह विज्ञापन के आरम्भ के भाग से ही स्पष्ट है। इस विज्ञापन का संक्षिप्त उत्तर ऋ० द० ने 'उचित वक्ता' के नाम से देशहितैषी में छपवाया था (द्र०—'ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन' पूर्ण संख्या ७४२, भाग २, पृष्ठ ७७३-७७९)। तत्पश्चात् पूरा विवरण तथा एक-एक पैसे का हिसाब—लेखन—पूर्वक लेख देशहितैषी में अपने नाम से छपवाया (द्र—०'ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन' पूर्ण संख्या ७८९, भाग २, पृष्ठ ८१५-८२०)। हमने मुंशी इन्द्रमणि का यही ऊपर मुद्रित विज्ञापन पहले 'ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन' के भाग २, पृष्ठ ७६८९-९२ पर 'दयानन्द-दिग्विजयार्क' से लेकर छापा था। अब यहाँ हम पं० लेखराम कृत जीवनचरित हिन्दी सं० पृष्ट ८४३-८४५ से लेकर छाप रहे हैं। दोनों के पाठ में साधारण भेद है। यह विज्ञापन सम्भवत: फरवरी सन् १८८३ में छपा था।

जगन्नाथ के प्रतिज्ञाभंग करने आदि को जो कोई जानना चाहे वह मेरठ के सभासद् ला० रामसरनदास आदि से पूछ लें कि मुसलमानों का उपद्रव शान्त करने के लिये उन्होंने क्या अधर्म किया है ? 'मैंने इस बात को स्वामीजी की अपकीर्ति के कारण प्रकाशित न किया परन्तु चूँकि इससे "उलटा चोर कोतवाल को डांटे" वाली कहावत के अनुसार मुझ पर दोष लगाने लगे तब मैंने आर्य भाइयों को वास्तविक परिस्थिति से सूचित करना आवश्यक समझा कि जब मुसलमानों के झगड़े में मुझपर पांच सौ रुपया जुर्माना हुआ, उस समय स्वामीजी ने समाजों को चिट्ठियां लिखीं कि मुन्शी इन्द्रमणि की सहायता के लिये चन्दा एकत्रित करके हमारे और लाला रामसरनदास सभासद् आर्यसमाज के पास भेज दो, यहां से मुन्शी जी की सेवा में भेजा जायेगा ताकि उस रुपये से जुर्माना क्षमा कराने के लिये अपील करे। स्वामीजी के लेखानुसार लाहौर, अमृतसर, रुड़की, फर्रुखाबाद, फिरोजपुर, शाहजहांपुर, औरंगाबाद, दारजीलिंग, गुरदासपुर, जेहलम, मुल्तान, बटाला आदि से धर्मात्मा लोगों ने प्रचुर धन एकत्रित करके स्वामीजी और लाला रामसरनदास के पास भेजना आरम्भ किया। जबकि उक्त मुकदमे का अपील जजी मुरादाबाद में चल रहा था, मुझको ६ सौ रुपया बैरिस्टर हल साहब के पास भेजने की आवश्यकता हुई इसलिये मैंने स्वयं मेरठ जाकर ला० रामसरनदास से कहा कि छः सौ रुपया बैरिस्टर साहब की सेवा में भेजना है, चार सौ मेरे पास हैं, दो सौ रुपया चन्दे के रुपये में से जो आपके पास एकत्रित हैं—प्रदान कीजिये। उक्त लाला साहब ने उत्तर दिया कि यहां से तो अभी तुमको कुछ न मिलेगा, वहीं से उपाय करके भेज दो। फिर मैंने पूछा कि अबतक आपके पास कितना रुपया इकट्ठा हुआ है ? उत्तर दिया कि बतलाने के लिये समाज की आज्ञा नहीं है। क्या विचित्र बात है कि जिसकी सहायता के लिये सज्जन पुरुषों ने रुपया भेजा उसको देना तो एक ओर, संख्या भी न बतलायी जावे कि अब तक इतना रुपया एकत्रित हुआ है। अन्ततः मैं रिक्तहस्त अपने घर को चला आया और एक भले मनुष्य की सहायता से बैरिस्टर साहब के पास छः सौ रुपया भेजा गया। फिर जबकि जजी मुरादाबाद से पांच सौ रुपये जुर्माने में से चार सौ छूटकर एक सौ शेष रहा: इस बीच में लाला रामसरन

दास भी मुरादाबाद आगये। उस समय मैंने उक्त लाला साहब से कहा कि अब हाईकोर्ट में अपील करना है, रुपया भेजिये। उस समय भी उन्होंने वही उत्तर दिया कि हमारे से तो अभी रुपया न मिलेगा, मुरादाबाद ही से कुछ उपाय करके हाईकोर्ट का अपील कर दीजिये। फिर लाला रामसरनदास मेरठ को चले गये। तत्पश्चात् मैंने रुपये के लिये स्वामीजी और लाला रामसरनदास को कई बार लिखा परन्तु दोनों सज्जनों ने कुछ उत्तर न दिया। तब मैंने समाचारपत्र "भारतमित्र" कलकत्ता में यह बात प्रकाशित करायी कि जिन लोगों को मेरी सहायता करनी स्वीकार हो वह सज्जन सीधा मेरे ही पास रुपया भेजें क्योंकि दूसरे स्थान पर भेजा हुआ रुपया मुझे प्राप्त नहीं होता। फिर मैंने स्वमीजी को लिखा कि यदि आपको चन्दे के रुपये में से इस मुकदमे में कुछ व्यय करना अभीष्ट नहीं है तो स्पष्ट लिखिये ताकि हम हाईकोटे में अपील करने का विचार छोड़ दें। इस प्रकार बार-बार लिखने के पश्चात् स्वामीजी ने चन्दे के रुपये में से छः सौ रुपये लाला रामसरदास के द्वारा भिजवाये। सारांश यह कि जो कुछ लाहौर और अमृतसर आदि से मेरे मुकदमे के लिये स्वामीजी और लाला रामसरनदास के पास रुपया एकत्रित हुआ था उसमें से यही छः सौ रु० मुझको प्राप्त हुए। शेष सारा रु० इन दोनों महापुरुषों के अधिकार में रहा परन्तु जिन सज्जनों ने सीधा मेरे पास रुपया भेजा वह सारा मुझको मिला और उक्त मुकदमे के व्यय में काम आया। यहां यह अभिप्राय संक्षेप में निवेदन किया, भविष्य में विस्तारपूर्वक प्रकट किया जायेगा। अब बुद्धमान् लोग न्याय करें कि जो रुपया मेरी सहायता के लिए लोगों ने स्वामीजी और लाला रामसरनदास के पास एकत्रित किया और उन्होंने मुझको पूर्णरूपेण न दिया स्वयं उसके स्वामी बन बैठे तो मुसलमानों का उपद्रव शान्त करने के सम्बध में स्वामीजी और उक्त लाला साहब ने धर्म विरुद्ध कार्य किया था या निर्धन इन्द्रमणिने ?

प्रकाशक— इन्दमणि मुरादाबाद

—:•:—

[पूर्ण संख्या ३८५] पत्र

ओ३म्[1]

श्रीमन्महाशय मान्यवर श्री ६ स्वामि पादपद्मनिकटे बाबू दुर्गाप्रसादस्य नमस्ततयो भवन्तु श्रीमन् कृपापत्र आपका आया[2] समाचार ज्ञात हुये आपने २ [दो] मनुष्यों को वैदिक यन्त्रालय के कार्यार्थ लिखा एक पुस्तक शोधनार्थ और दूसरा पुस्तक और खजाने के सम्हाल के लिये सो पुस्तक शोधनार्थ पण्डित प्रयागदत्त को पूछा तो उसने उत्तर दिया कि २ । ४ दिन में निश्चय कर के कहूंगा सो २ । ४ दिन में उसका निश्चय पत्र भेज कर आ[ा]प को करा दिया जावेगा या तो प्रयाग वैदिक यंत्रालय को जावेंगे या ना करेंगे और कोशादि कार्य के लिये योग्य मुरादावाद निवासी रामजीमल हैं जो प्रथम कायमगंज जिला फर्रुखाबाद में नौकर थे परन्तु वर्त्तमान काल में वे किसी रईस के यहां नौकर हो चुके हैं उन को लिखा जावेगा यदि वे उक्त कार्य को स्वीकार करें तो शीघ्र ही तो नौकरी वैदिक यत्रालय से अलग तो न किये जावेंगे यह लिखियेगा और जो अति शीघ्रता हो यदि आप भी पसन्द करें तो तब तक रामनाथ को भेजदूं वह आपके पास रह चुका है

कोशादि का काम शायद कर लेसकेगा शोधक के विषय में निश्चय पूर्वक अनुमान २ । ४ दिवस के भीतर आप के पास पत्र भेजा जावेगा और द्वितीय मनुष्य के लिये अन्यसमाजों को भी लिखये मैं भी य तलाश में रहूंगा और आज............[3] मंत्री आर्य समाज लाहौर का मेरे पास पत्र आया है उसमें उन्होंने लिखा था कि चिरकाल से श्रीस्वामीजी महाराज का कोई पत्र लाहौर समाज को नहीं आया और सब लोगों को उदयपुर सम्बन्धी समाचारों के जानने की अत्यन्त अभिलाषा हो रही है इसलिये निवेदन आप से किया जाता है कि आप कृपा कर के एक पत्र समाज लाहौर को अवश्य लिखवा

---

१. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १, पृष्ठ ३२६-३२८ पर छपा है।

२. ऋ० द० का यह पत्र हमें उपलब्ध नहीं हुआ।

३. जहां लीडर अर्थात् बिन्दियां हैं वह भाग असल पत्र का फट गया है।

भेजियेगा और उदयपुर में भगवत्पादपद्मों की स्थिति अब कब तक रहेगी इस बात से और कोई नवीन बात हो तो सूचित कीजिये नित-रांकृपास्तु भृत्यानामुपरि किमधिकं महत्सु मिति माघ शुदि १४ भौमे [सं० १६३६] ता० २० फ० स० ८३ ई० मंत्री आदि सभासदों को नमस्ते लीजिये[1]

ह० आपका कृपाभिलाषी
बाबू दुर्गाप्रसाद

आपके पादपद्म परागसेविनो [2]लक्ष्मीदत्तस्यापि प्रणतिततिः स्वीकार्या।

—:o:—

[पूर्ण संख्या ३८६] **पत्राशय**

आप अवश्य यहां पधारें और धर्म का प्रचार करें।[3]

राव तेजसिंह
महाराजा प्रतापसिंह

—:o:—

[पूर्ण संख्या ३८७] पत्र

[मान-पत्र]

॥ श्रीमदेकलिङ्गेश्वरो जयति ॥[4]

॥ स्वस्ति श्री सर्वोपकारार्थ कारुणिक परमहंस परिब्राजकाचार्य

---

१. इस पत्र के उत्तर में तथा रामनाथ के विषय में ऋ० द० के पूर्ण संख्या ७५६ (भाग २, पृष्ठ ७८७) देखें।

२. पं० लक्ष्मीदत्त ने एक पत्र ऋ० द० को भी लिखा था। इसकी सूचना ऋ० द० के पत्र विज्ञापन' पूर्ण संख्या ७६५, भाग २, पृष्ठ ७६७, पं० ७ से मिलती है। पं० लक्ष्मीदत्त का वह पत्र भी उपलब्ध नहीं हुआ। आगे पूर्ण संख्या ३८६ देखें।

३. इस पत्राशय का निर्देश पं० लेखराम कृत जीवनचरित हिन्दी सं० पृष्ठ ६०५ पर मिलता है। पत्र उदयपुर भेजा गया था। पं० लेखराम के जीवनचरित के 'स्वामीजी उदयपुर से शाहपुरा आये, उधर जोधपुर में तैयारी आरम्भ हुई' लेखानुसार उदयपुर से चलने से कुछ दिन पूर्व पत्र भेजा गया होगा।

४. यह [मान] पत्र पं० चमूपति सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग २, पृष्ठ १३३ पर छपा है।

वर्य श्री ५ श्रीमद्दयानन्द सरस्वति यति वर्येषु इतः महाराणा सज्जन सिंहस्य नतिततयस्समुल्लसन्तु उदन्तु आपका अठै सात मास का निवास सूं चित्त अत्यन्त आनन्द मैं रह्यो क्यों कि आपकी शिक्षा को प्रकार श्रेष्ठ और उन्नति दायक है और आपका संयोग सूं के ही न्याय धर्मादि शारीरक कार्यों मैं निस्संदेह लाभ प्राप्त हों वा की म्हाँ का सभ्य जना सहित दृढ़ाशा हुई—कारण कि शिक्षा और उपदेश वाँ श्रेष्ट पुरुषाँ का दृढ़ होवै है ज्यो स्वकीय आचरण भी प्रतिकूल नही राखै सो यो आप मैं यथार्थ मिल्यो अब म्हे आपका वियोग को संयोग तो नही चावाँ हाँ परन्तु आपको शरीर अनेक मनुष्याँ कै उपकारक है जी सूं अवरोध करणो अनुचित है तथापि पुनरागमन सूं आप भी म्हाँ का चित्त नैं शीघ्र अनुमोदित करैगा इत्यलम् सम्वत १९३९ फाल्गुन कृष्ण ५ भोमे[1]

हस्ताक्षर महाराणा
सज्जन सिंहस्य

लिफाफा[2]

।। श्री मत्परिव्राजकाचार्य वर्य्य श्री ५ श्रीदयानंद
सरस्वति मति वर्य्येषु ।

—:o:—

[पूर्ण संख्या ३८८] पत्र

।। श्री ।।[3]

स्वस्ति श्रीसदमंदानंदसंदोहगर्मितोपयोगशालि परमैश्वर्य वर्य सौंदर्य लीला वितान घनकानन घनाघन विपुल सकल सिद्धि वुद्धिऋद्धिवृद्धि संसिद्धि साधन स्वशक्ति व्यक्तीकृतानंत सत्वसत्वादिगुणश्रेणिरमणीय-कापर्णा रमणलय जन्य तेजः पुंज दूरदूरीकृत किल्विषांधतमसाना

---

१. २७ फरवरी सन् १८८३।

२. उपरोक्त लेख पूर्व पत्र के लिफाफे पर लिखा हुआ ठिकाना (पता) है। द्र० पं० चमूपति सम्पादित 'ऋ० द० का पत्र व्यवहार' भाग २, पृष्ठ १३४।

३. यह पत्र पं० चमूपति सम्पादित 'ऋ० द० का पत्र व्यवहार' भाग २, पृष्ठ २७-२८ पर छपा है।

मैहिक पारत्रिक विषय भोगानासक्तानां केवल परानुग्रह विद्योपयोग-संपन्नाना मविद्या समुदभूताहंकारममकारादीछादिदोषरहितानां सच्चिदानंदा मंदमानससर: परिशीलन राज हंसानां योग्य क्षेत्रोप्त धर्मबीज फलित सर्ववर्गाणां प्रसर्पदर्प्पकंदर्पसर्पविहितोन्माद भंगभर्गाणा मौदार्य धैर्यगांभीर्य्य चातुर्यादिवर्य्याणां विद्वज्जन समाज भ्राजमानानन्यसामान्य रत्नाबली निष्पन्न हीरावलीनामनेकवादि वादरण संरंभ विजयकार्य करणा वीराधिवीराणां श्रीमद्विबुध धुरंधराणां सज्जनमन: सहकार चारु कीराणा दुर्जयस्मरवीर निर्जयकरणजन्हुतनया धराणां सप्तसमुद्र मुद्रिते लावलयवर्ती विद्वजन जिगीयमान-कीर्तिग्रामाणां सदोपस्थित श्रौतस्मार्तादि विधि शिक्षा समर्पण दीक्षा गुरुणां राज राज राज हंसोत्त मांग कार्तस्वर किरीटमाणिक्य छबि भास्वरां घ्रिकोकनदानां श्रीमत्परिव्राट् चार्याणां राजाधिराज श्री-नाहरसिंहदेव वर्म्मणा कृता दंडवत्प्रणिति-ततय: समुल्ल संतुतराम् विशेषस्तु भाषया उदयपुर से सिद्ध करी के **चीतोड़ पधारने की खबर आपकी मिली** सो सुनते ही द्वारहट्ट नाहरसिंघ जी कु आपके पास भेजे हैं सो साहिपुरे पधार सी मिती फाल्गुण वुद २ सं० १९३९[१]

नाहरसिंह

हस्ताक्षर छत्रदत्तस्येदम्

—:o:—

[पूर्ण संख्या ३८९] पत्राशय

लाला काली चरण बरेली गये हैं।[२]

लक्ष्मीदत्त

—:•:—

---

१. यहां 'फाल्गुन बदि २' अशुद्ध है। पत्र में ।ऋ० द० के चित्तौड़ पधारने की खबर मिलने' का उल्लेख है। ऋ० द० फाल्गुन बदि ७ गुरुवार (=१ मार्च १८८३) के दिन रात ९ बजे चित्तौड़ पहुंचे थे। द्र० ऋ० द० का पूर्ण संख्या ७६३ (भाग २, पृष्ठ ७९४) का पत्र। अत: यहां फाल्गुन बदि १२ (=६ मार्च १८८३) होना चाहिये।

२. यह पत्राशय ऋ०द० के फा० बदी १० सं० १९३९(४ मार्च १८८३) के पूर्ण संख्या ७६५ (भाग २, पृष्ठ ७९७ पं० ८) में उद्धृत है।

[पूर्ण संख्या ३९०] पत्र

स्थान जैपुवतीख[1]
६ मार्च सन १८८३ ई[2]

श्री गुरू स्वामी दयानन्द सरस्वतीजी को नमस्कार

दर्बाव आपनी चिट्ठी व तारीख ४ माह हाल की प्रार्थना करता हूं और काशीनाथ राउ का कथन ईश्वर है तू आपके को विदित करता हूं जान कर कि आप महाज्ञानी तप्पस्वी हो जल्द परीक्षा कर लेवोगे और इस सेवक को पत्र उत्तर शीघ्र भेजोगे इस शुभ विचार से आप को यह क्लेश्य दिया समझ कर कि उपकार वस्त शरीर है आप की कृपा अनुग्रह करुणा द्रष्टी होगी सत्य विद्या पर कथ काशी-नाथ

अंगरेजो View the Almighty being in light Physical
उर्दू वही हुस्न, तनो वदनसे सूरतो, शिकल
संस्कृत परमजोति, अत्मरूप धार्ण विकल्प,
दक्षणी मंणुणत्याला, अपितो प्रासातो सकल
अंगरेजी Moral intellectical Scientifical
संस्कृत देहजान, भास्य झूंठ दिखावे नकल
अंगरेजी Pure and Spritual Her is our Light

सेवक **विश्वनाथ**
पता आर्य्य धर्म्म सभा
पंडित सदानंद वैद्य
जैपुर

—:o:—

[पूर्ण संख्या ३९१] आक्षेप-पत्र

वेद ईश्वर की वाणी हैं इस लिये अभ्रान्त हैं, आर्यधर्म और स्वामी दयानन्द जी का यही मूलमन्त्र है। परन्तु फिर प्रश्न उठता है कि इतना अनुमानातीत वेद ऐसा अनुमान क्यों है? ईश्वर का वचन

---

१. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्र व्यवहार' भाग १. पृष्ठ २२२-२२३ पर छपा है।

२. फाल्गुन कृ० १२ सं० १९३९ वि०।

इतना रहस्यमय क्यों है ? यदि इस मूलमन्त्र को कि वेद अभ्रान्त है सत्य मान लें तो इस का अर्थ होगा कि वेद के उपदेशक अभ्रान्त हैं, क्यों कि वेद में भ्रान्ति का अस्तित्व और अनादित्व भाष्यकारों के हाथ में हैं। स्वामी दयानन्द का वेदभाष्य भी तब अभ्रान्त हो सकता है जब दयानन्द जी स्वयं ईश्वर के तुल्य हों और उन में ईश्वर का पूर्ण प्रेरणा हो। इस लिये मैं ललकार कर कहता हूं कि स्वामी जी अपने मूलमन्त्र को प्रमाणित करें या अपनी प्रेरणा का प्रमाण दें।

मार्च १८८३ ए० ओ० ह्यूम[1]

—:०:—

[पूर्ण संख्या ३९२] पत्र-सूचना

[श्री महाराजाधिराज सज्जनसिंह जी, उदयपुर का पत्र][2]

—:०:—

[पूर्ण संख्या ३९३] पत्र-सूचना

[बारट श्रीकृशन जी, उदयपुर का पत्र][3]

—:०:—

१. यह आक्षेप मिस्टर ह्यूम, जिन्होंने भारतीय कांग्रेस की सन् १८८४ में स्थापना की थी, ने मार्च १८८३ के थियोसोफिस्ट में छपवाया था। द्र०—प० लेखराम कृत जीवनचरित, हिन्दी सं० पृष्ठ ८३७। इसे भारतमित्र (कलकत्ता) के सम्पादक ने सं० १९४० आषाढ़ सुदि ८ गुरुवार (=१२ जुलाई १८८३, खण्ड ६, संख्या २७) के भारतमित्र में छापकर सम्पादक ने लिखा था—'हम लोग को आशा है कि स्वामी दयानन्द जी इसका खण्डन कर गौरव बढ़ायेंगे।' उपर्युक्त आक्षेप का उत्तर ऋ० द० ने २३ जुलाई सन् १८८३ को सम्पादक भारतमित्र कलकत्ता को भेजा था। द्र०—'ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन' पूर्ण संख्या ८६३, भाग २ पृष्ठ ८८०-८८३। यह २ अगस्त सन् १८८२ के भारतमित्र में पृष्ठ ६ पर छपा था।

२. इस पत्र की सूचना ऋ० द० के चैत्र कृष्णा १० सं० १९३९ (२ अप्रैल १८८३) पूर्ण संख्या ७८१ (द्र०—भाग २, पृष्ठ ८१० पं० १८) के पत्र में है। यह पत्र मोहनलाल विष्णुलाल पण्डचा के २२ मार्च १८८३ से पूर्व का प्रतीत होता है। ठीक तिथि का ज्ञान नहीं हो सका। अत: यह पत्र-सूचना यहां जोड़ी है।

३. इस पत्र की सूचना भी ऋ० द० के पूर्व संकेतित पूर्ण संख्या ७८१

[पूर्ण संख्या ३६४] पत्राशय

१—वेदभाष्य का शुद्धिपत्र बनवाकर ग्राहकों के पास भेजना।[1]

२—वेदभाष्य के अंकों की जिल्द बनाने के सम्बन्ध में।

३—वैदिक यन्त्रालय का मासिक हिसाब भेजा।

समर्थदान।

—:०:—

[पूर्ण संख्या ३६५] पत्र

ओ३म्[2]

नमः प्रकृष्ट ज्ञानब्रह्म स्वरूपिणे

स्वस्ति श्री जगत्पुज्य गुरु गुरो जगद्गुरो परिव्राट् श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीमत्स्वामी दयानन्दसरस्वती चरणकमलेषु नरेन्द्र-मुकुटमणिद्विितिरंजितेषु शिष्य**सहजानन्दस्य** प्रणतिराजयः

सम्मुलशंत्वत्र शम्पूर्वकमार्यजनैः सहसम्मेलनंजातं श्री मत्कृपयैव किमुश्रीमज्जगदुद्धारकर्त्तुस्ते चीत्रमिति सर्व स्वप्रकाशितस्य जगते न्यायाधीशस्याज्ञतमेमपि श्रीमतांकृपात्तयैव धन्योऽहम् किंजानाम्यहम-ज्ञोऽस्मि

सम्वत् १९३९ फाल्गुन शुक्ल षष्ठचां बुधे साय काले लिखितमि-दम्पत्रमितिदिक्।

मार्च ता० १४ [१८८३] अजमेर

—:०:—

(द्र०—भाग २, पृष्ठ ८१०, पं० १८)के पत्र में विद्यमान है। यह पत्र श्री महाराणा उदयपुर के पत्र के साथ भेजा गया था। शेष टिप्पणी पूर्ववत्।

१. इस पत्राशय की सूचना भी ऋ० द० पूर्णसंख्या ७७२ (भाग २, पृष्ठ ८०२) के पत्र से मिलती है।

२. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १, पृष्ठ २९ पर छपा है।

[पूर्ण संख्या ३९६] पत्र

ओम्[1]

No ....

ARYA SAMAJ OFFICE, LAHORE,
Dated......16th......March......1883.[2]

To,

श्रीमन्महाराज श्री १०८ स्वामि
पण्डित दयानन्द सरस्वति जी
(चितौड़ गड़)

Sir,

महाशय !

नमस्ते ! !

आपके अनुग्रह पत्र[3] को आये ८ दिन हो गये ॥

प्रत्युत्र में जो देर लगी इस का कारण है ॥ जो मुख्य करके रुपये देने वालों से कुछ बात चीत करनी थी ॥ सो यह है। कि यहां से ५ पुरुषों ने ३३०) रुपये दीये थे इस क्रम से:—लाला सांईदास १००); लाला जीवनदास १००); लाला रामसहाय ५०); लाला मङ्गूमल ५०); लाला दिलबागराय ३०); कुल ३३०); ॥ इनमें से लाला सांईदास जी और लाला जीवनदास जी ने अपनी उदारता से अपना अपना रुपया वेद भाष्य के सहाय में दे देना स्वीकार कीया है॥ दोनों महाशय पर उपकार में सदा युक्त रहते है॥ परशंसनीय है॥ बाकी रहे १३०) रुपये; सो इस प्रकार सोचा गया है कि यंत्रालय में लहोर समाज के नाम १३०) जमा कर लीये जांवे और यहां जो पुस्तक यंत्रालय से आये हूये हैं उस हिसाब में से १३०) क्रम पूर्व्वक लाला रामसहाई मङ्गुमल; और दिलबागराय को दिये जांवे॥ आगे जिस प्रकार आपकी आज्ञा हो वैसी कीजायगी॥ दोनों पत्र येक

---

१. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १, पृष्ठ १२६-१२९ पर छपा है।

२. फाल्गुन शु० ८ सं० १९३९ वि०।

३. ऋ० द० का यह पत्र हमें नहीं मिला। इसी पत्र के आधार पर पूर्ण संख्या ७६१, भाग २, पृष्ठ ७९३) पर पत्र-सारांश बना कर छापा है।

आर्य्यसभासद के हैं जिसका नाम लाला सालगराम है ।। आर्य्य यंत्रालयाध्यक्ष वही है ।। बहुत उतसाही हैं । इसने अपनी सारी जायदाद का चौथा हिस्सा, तथा आयुष प्रयंत $\frac{1}{4}$ आमदनी दे देना स्वीकार कर लिया है; अर सारी जायदाद १$\frac{1}{2}$ लाख रुपये की बताई है; प्रंतू येह लिखत नहीं हूई ।। लाला सालगराम कलकत्ते सें जब आवेंगे तब लिखत हो जायगी ।। जायादाद पर समाज का कबजा सवाकार पत्र द्वारा होगा अर्थात उसकी म्रत्यू पश्चात ।।

श्रीमान् उदयपुराधीश का उतसाह पढ़ कर परम हरष प्रकाशित हुआ। ईश्वर भारतकरष गन सगल राजा गण को इसी प्रकार सद मारग प्रयुक्त करे ।।

येक परम हरष की बात है कि हमारी समाज से येक Aryan Scine Intitution(शिलपादि विध्यालय)खुलने वाला है येह हमारे देश में पहली बात होगी । इससे सब प्रकार की विध्या हसत क्रया से करके दिखाई जायेंगी बिजली तार रेल आदि कारीगरी सब सिखाई जायेंगी सब असबाब विलायत से मंगवाया जायगा ।। ४००) चंदा होगया थेढ़ी जगह से ।। और कोशश कीजायगी ।। परंतू समाजो मे नही किउ कि वैदिक मिशन फंड के वासते १ लक्ष रुपये की आवशकता है ।। उधर बी धियान है ।।

पुना येह बात आप पर विदित होगी कि यहां पर लड़कीओं का सकूल है १ बरस व्यतीत हो गया अब ३० लड़की पढ़ती है ।। स्कूल समाज के मन्दर के अंदर है ।। हिन्दी की पढ़ाई होती है ।। अर दसताने जुराब अर गलूबंद बुनती हैं ।। अर कसीदा काड़ती हैं ।। प्रीक्षा पूर्व्वक इनाम बी दिये जाते हैं । अब उनन्ती बी है ।।

लाला साईदास जी कहते हैं कि आपका जैसा कोई पत्र नहीं आया जिसमैं रुपयों की बावत आपने कुछ पूछा हो ।।

मन्त्री आर्य्यसमाज के पत्र से विदित हुआ कि महाराजा फरीदकोट ने १०००) अनाथालय के सहाय में देना स्वीकार कीआ है

आपके दरशनों की अभिलाषा पंजाब मे लग रही है आप कब तक दर्शन देंगे ? ।।

बंगाल हाता समाजो से शुन्य पड़ा है । कलकत्ते की ओर जाना भी आवशक प्रतीत होता है ।। अब आपके ईरादे किस तरफ है ।।

हमको तो इस तरफ आने से दर्शन का लाभ है उस तरफ जाने से अपने बंगाली भ्रात्री बाबा की उनन्ती का लाभ है ॥

मुझे हिन्दी लिखनी नही आती यदि लिखता हूं तो बहुत अशुध लिखी जाती है जैसे इसी पत्र से विदित होगा इस कारण उर्दू वा अंग्रेजी में पत्र लिखता रहा हूं और अब बी अंग्रेजी में लिखने लगा था। प्रन्तू जैसे आई वैसे लिखदी इस कारण कि शायद तकलीफ न होवे ॥

और सब ईश्वर की किरपा से कुशल है ॥

आपका दास—

जुवाहरसिंह

—:o:—

[पूर्ण संख्या ३९७] पत्र-सूचना

[छगनलाल द्विवेदी, मसूदा का पत्र][1]

फाल्गुन शुदी १२ [सं० १९४०][2]

—:o:—

[पूर्ण संख्या ३९८] पत्र

ओ३म्[3]

परम पूजनीय श्रीमद्दयानन्द सरस्वती स्वामी जी
महाराज चरण कमलेषु

आपका पत्र फा० शु० १० का[4] पहुंचा उत्तर इस भांति ज्ञात हों—

---

१. इस पत्र की सूचना आगे छापे जा रहे छगनलाल द्विवेदी के पूर्णसंख्या ४२१, वैशाख बदी ७ सं० १९३९(=२९ अप्रैल १८८३)के पत्र से मिलती है।

२. २० मार्च १८८३।

३. यह पत्र पं० चमूपति सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग २, पृष्ठ ९-१० पर छपा है।

४. १८ मार्च १९२३ का यह पत्र उपलब्ध नहीं हुआ।

१. मेरे पास राज से रु ७००) सात सौ कलदार आये जिसमें रु ५००) तो अनाथाश्रम के और रु: २००) लड़कियों के और आपके ध्यान से २००) के स्थान में केवल रु: १००) एक सो का ही विचार रह गया इस से गलती मालूम हुई है श्री दरबार ने कुल इस भांति आपको भेंट करी थी—

१२००) आपक
५००) अनाथाश्रम
२००) तथा लड़कियों
१००) रामानन्द जी

२०००)

जिस में से रु: १२००) वैदिक निधि के खाते जमा करा दिये गये और रु: १००) रामानन्द के खाते जमा करा दिये गये हैं रसीद उस की सभा से आपके नाम भेजी गई है सो पहुचेगी। अब रहे रु: ७००) सो ६९२) का तो मनी ओरडर फीरोजपुर भेजे हैं

७) मनी ओरडर का महसूल
≡)॥ रजिस्टरी चिट्ठी का महसूल

६९९≡॥)
।॥)॥ बाकी हमारे पास हैं सो फीरोजपुर भेज देंगे।

७००)

और श्रीमन्महाराजाधिराज[1] जी ने मनुस्मृति का आरंभ किया सो बहुत ठीक हुवा—सूचना श्रीमानों की सेवा में कर दियी है—

विशेष दूसरे पत्र में लिखूंगा—

मोहनलाल
ता० २२ मारच सन् १८८३ ई०[2]

—:०:—

१. अर्थात् शाहपुराधीश नाहरसिंह।
२. फाल्गुन शु० १४ सं० १९३९ वि०।

[पूर्ण संख्या ३९९] पत्र-सारांश

१. संस्कृतवाक्यप्रबोध में एकत्रंकाङ्गुष्ठ एकत्र पञ्चाङ्गुलयो भवन्ति कैसे लिखा गया।[1]

२. श्री महाराजाधिराज उदयपुर की दिनचर्या का वृत्त।

बारहट किशनसिंह

—:०:—

[पूर्ण संख्या ४००] पत्र

राजस्थान उदयपुर[2]
ता० २७ मार्च सन् १८८३ ई०[3]

परम पूजनीय परिव्राजकाचार्य श्री १०८
चरण कमलेषु निवेदनमिदम्

आपका पत्र[4] फीरोजपुर आर्यसमाज के पत्र सहित पहुंचा और दोनोंपत्र मेनें मेरे सामने ही कविराजा जी से श्रीमानों की सेवा में ज्ञात करा दिये—

रु० १००) के फरक की बाबत लिखा सो अगले पत्र[5] में सविस्तर निवेदन कर चुका हूं सो यह फरक तो यों निकल गया—फीरोजपुर से आज मनीओर्डरों की रसीदें तो आगई हैं पत्र आने पर श्रीमानों की सेवा में मालूम करूंगा।

मेरी सम्मति यह है कि आप सब आर्य समाजों को यह लिखदें

१. इस पत्राशय का संकेत ऋ० द० के सं० १९३९ के चैत्र कृष्णा १० (२ अप्रैल १८८३) पूर्ण संख्या ७८१ (भाग २, पृष्ठ ८१०) के पत्र में मिलता है। ठीक तिथि का ज्ञान नहीं हो सका। ऋ० द० के इसी पत्र में मोहनलाल विष्णुलाल पण्ड्या के २२ मार्च के पत्र (पूर्ण संख्या ३९८) का संकेत होने से बारट श्रीकृशन जी का पत्र २२ मार्च के पश्चात् और पण्ड्या जी के २७ मार्च के (अग्रिम पूर्ण संख्या ४००) पत्र के मध्य लिखा गया प्रतीत होता है।

२. यह पत्र उपलब्ध नहीं हुआ।

३. यह पत्र पं० चमूपति सम्पादित ऋ० द० का पत्र व्यवहार' भाग २, पृष्ठ ११-१२ पर छपा है।

४. चैत्र कृ० ३ सं० १९३९।

५. २२ मार्च का पूर्ण संख्या ३९८ का पत्र (पृष्ठ ४८१)।

कि जिन जिन समाजों के समाचार पत्र छपते हैं उनकी एक प्रति बिना मूल्य के मेरे नाम पर भेज दिया करें कि मैं उनका आशय सदैव श्रीमानों की सेवा में मालूम कर दिया करूं और जो लोग राज के मेरे पुस्तकालय में आय कर पुस्तकावलोकन करते हैं उन के भी पढ़ने में आय कर बृतियें बदलें इत्यादि कई एक लाभ हैं ।।

समस्त आर्य समाजों की ओर से जो धन्यवाद पत्र[1] श्रीमानों को अर्पण होगा वह छपने को भेज दिया सो ठीक हुआ इस विषय की अरज भी श्रीमानों की सेवा में मैंनें कर दियी है ? और आशय भी निवेदन कर दिया उत्तर प्रदान किया कि अत्युत्तम हैं। अब यह पत्र मात्र आर्य समाज छोटी वा वडीयो से सही हो करण मेरे पास आय जावें कि मैं खानगी में तो ज्यों ज्यों आते जायगे मालूम करता जाऊंगा और फिर सब के आ जाने पर एक सभा कर के प्रत्यक्ष में श्रीमानों की सेवा में निवेदन कर अर्पण करुंगा।

ब्रह्मानन्द जी पहुचे लिखे सो ठीक है उन की परीक्षा करके और संस्कार करके उनको शिष्य करेंगे क्योंकि बिना संस्कार करावे इन लोगों के हृदय में गुरुत्व का मान जैसा चाहिये वैसा नहीं रहता मेंनें तो उनको जहां तक बना बहुत कुछ रस्ते सिर किया है ।।

[मोहनलाल विष्णुलाल पण्डया][2]

—:०:—

[पूर्ण संख्या ४०१] पत्र

ओ३म् ।[3]

आर्य्यसमाज अजमेर ।

२८–३–८३ ।[4]

श्री स्वामीजी महाराज नमस्ते ।

आगे निवेदन यह है कि आपकी आज्ञानुसार सहजानन्द सरस्वती

---

१. यह पत्र ऋ०द० के पत्र और विज्ञापन' भाग २ पृष्ठ १०३५ पर छपा है, इसी पत्र के उत्तर में उदयपुराधीश का पत्र वहीं पृष्ठ १०४१ पर देखें।

२. पत्र पर हस्ताक्षर नहीं है।

३. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १, पृष्ठ १६३-१६४ पर छपा है। ४. चैत्र कृ० ४ सं० १९३९ वि०।

जी को जयपुर समाज में उन की इच्छानुसार भेज दीये अवकाश न होने से पत्र लिखने में बिलंब हूआ क्षमा करिये—यहां पर सब प्रकार से आनन्द है आप अपनी सर्व व्यवस्था से दास को सूचित करते रहिये—आपने मुन्शी इन्द्रमणि का हिसाव अभी तक नहीं भेजा इस्का क्या कारण है—हमारा उत्सव वड़ी धूमधाम से हुआ और आनंद रहा पंडित् लक्ष्मीदत्त जी फरुखाबाद से और कानपुर से श्रीनारायण खन्ना मेरठ से भोलानाथ पंडित् और जयपुर से वहां के पंडित् आदि आये थे जिस्की व्यवस्था आप को देशहितैषी द्वारा भलीभांति से विदित होगी इस पत्र का उत्तर शीघ्र प्रदान कीजिये एक दुष्ट सम्पादक ने आपके प्रति बहुत कुछ लिखा है जिस्के विषय में हम उस्के उपर नालिश करने वाले है आप उत्तर शीघ्र दें तब सर्व हाल लिखुंगा[1]

आपका दास

मुन्नालाल

—:०:—

[पूर्ण संख्या ४०२] पत्र

श्रीचरणेषु[2]—

अपरंच आपका स्वीकार पत्र[3] छप कर उसकी ५० पचास प्रती आज की डांक में आपके नाम भेजी है=और जितने महाशयों के नाम उक्त लिखंत में लिखे हैं उन के पास भी यहां से परचादि भेज दिये गये हैं—तथा पाली से जो हुलास आपके सूंघने को मंगाई फतहकरण जी के द्वारा सो उस्की पारसल भी आपके नाम भेजी है पहुंच लिखावें।

---

१. इस कार्ड के पृष्ठ पर लिखा है "श्रीस्वामी दयानन्द सरस्वती जी योग्य, शाहपुरा राजपुताना"।

२. यह पत्र पं० चमूपति सम्पादित 'ऋ० द० का पत्र व्यवहार' भाग २, पृष्ठ १४ पर छपा है।

३. यह स्वीकार पत्र 'ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन' के पूर्ण संख्या ७६०, भाग २, पृष्ठ ७८७-७९३ पर छपा है।

अगले पत्रों में से जिस्का उत्तर बाकी होय सो लिखावे—

श्री चरणसेवक

ह० मोहनलाल

[1]शाहपुरे में कितने दिन निवास होगा ? सब को यथा योग्य—

—:०:—

[पूर्ण संख्या ४०३] पारसल-सूचना

[सूंघने की हुलास का पारसल][2]

—:०:—

[पूर्ण संख्या ४०४] पत्र

नमस्ते[3]

नमस्ते

मैने प्रात: काल कुछ ध्यान करने वास्ते आपसे कल जिकर किया था सो आपने फरमाया के योगविधी पूर्वक हम तुम को सीषलावेंगे इस कारिये के वास्ते एकान्त में सीषना हो तो अच्छा है इस्से मेरी यह प्रार्थना है के आप जंगल में घूंमने को जाते हैं उस वक्त मै भी साथ हो जाऊं तो मेरे वास्ते अच्छा होगा या और वषत्[4] आप तजवीज कर दें उस वक्त में मै आकर सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर के ध्यान करने की विधी सीषू—किमधीकं वीगेशु[5]—

हस्ताक्षर नाहरसिहस्य

—:०:—

---

१. इस पत्र में तिथि वा तारीख का निर्देश नहीं है, परन्तु शाहपुरा का निर्देश होने से प्रतीत होता है कि यह पत्र ऋ० द० के शाहपुरा निवासकाल फाल्गुन कृ० ३० सं० १९३९ (=९ मार्च ८३) से ज्येष्ठ कृ० ४ सं० १९४० (=२६ मई १८८३) के मध्य में, सम्भवत: अप्रेल में लिखा गया होगा।

२. इस पारसल की सूचना पूर्व मुद्रित पूर्ण संख्या ४०२ के पत्र में है। इस का काल भी उक्त पत्र का काल ही जानना चाहिये। १-२ दिन आगे पीछे हो सकता है।

३. यह पत्र पं० चमूपति सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग २, पृष्ठ २२ पर छापा है।

४. अर्थात् वखत=वक्त।

५. यह पत्र शाहपुरा-निवासकाल (३ मार्च से २६ मई १८८३) में ही स्वामी जी महाराज को लिखा गया था।

[पूर्ण संख्या ४०५]　　　　पत्र

॥ श्री ॥[1]

नमस्ते

लाहौर आरीये समाज का पत्र जो आपनै मुजको दीया था सो वुसका जुवाब भेजा हैं सो आप मरवानी करके लीष भेजें मेरे पढ़ने के ओर समज के बारे में जो दरयाफत कीया है सो जसा आप समजते हैं वसा लीष भेजें[2]।

ह: नाहरसिंहस्य

—:०:—

[पूर्ण संख्या ४०६]　　　　पत्र

१ ॥ श्री राम जी[3]

सीध श्री सरब ओपमा योग जगत वीषात श्री सामी दयानद सुरसती जी जोग लीषा वतु: गांव नेठव सु **मंगलदांन चारण**[4] केन: नमसते बंचाणि: अठ का समाचार आप की क्रीपा कर की भला छ: आप का सदा भला चाहीज जी: उपरं च समंचार १ बंचण: आप समरथदांन न प्रीयाग जी छापषान आप कपर भेज दीनु: जकी तनषा: मास १ रुपीया २५) करा सो ठीक छ: आपन मास ६ तथा ७ की नोकरी करायणी हुव जद तो: आप राजी हुवकी तनषा देवो सो ही ठीक छ: तथा नही देव तो ही आप की नोकरी कर देवा: पण आप आगन अधक नोकरी करावो तो: तनषा वधाया सरलो: कारण: आप समरथदांन न प्रीयाग जी भेजो छो जद कहो छो: तमारी तनषा मास छ: पछ वधाई जायगी: सो हाल ताइ तो: आप तनषा बधाई नही: सो आपन बीचारो चाहीज: कारण: ईस तनषा

---

१. यह पत्र पं० चमूपति सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग २ पृष्ठ २९ पर छपा है।

२. यह पत्र श्री स्वामीजी महाराज के शाहपुरा-निवास काल के मध्य ३ मार्च से २६ मई १८८३) लिखा गया था।

३. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १, पृष्ठ २३४-२३६ पर छपा है। इस पत्र में सर्वत्र 'ष' को 'ख' पढ़ें।

४. मंगलदास चारण मुंशी समर्थदान के पिता थे।

सु तो: हमारो गुजर चाल नहीं: आप रुपीया २५) देय छो: जी स मा सु रुपीया १५)मास १ म लागजाव छ: रोटी कपड़ो तथा: हाथ षरच का लाग जाव छ: बाकी रुपीय १०)मास १ बंच छ: जकाम दे छी समरथदान लीषछ: सु थांन घाल देसु: ईसी मान लीष छ: जसु, आपन लीषण म आव छ: सो आपन बीचारी चाहीज: समरथदांन को रोटी षरच कपड़ा तथा हाथ षरच का लाग जका: उपरांत: रुपीय ३०) मां रपुगांसु: नीरभाव हु य: सो आपन बीचारी चाहीज: हमार तो कुमाउ येक समरथदांन ही छ: सो आपन मालम रह: ओर आपन: मीनष को गुण ओगण देबो चाही ज: ओर आज दीन बीकानेर क देसं का: सीरदरा सरब बे राजी हुय कीनी सदा छ: राना सुज का आभुजीक बड़ा साहब कन जांय छ: जका सीरदार: हमार गाव आया छ: दान ३ रहा: जकां सीरदारां मन बुलाय की कहो क: समरथदांनन बुलाव दो: समरथदांनन बकीलात करणन: साग ले जासां तनषा रुपीया १००) मास १ रा करदे सां: आभुजी भेजसां: आभुजी गयां सु मारी सला हुव गई जद तो ठीक छ: नही मांरी सला हुसी तो: सामल जावण पढ़सी: साग १ अगरेजन बकील करकी राषसां: जक साग जावण पड़सी ईसी समाचार सीरदारां सगलामन: कहो जद मै सीरदारां न कहो: मार तो नोकरी लाग रहो छ: सांमी जी राजी हुव की सीष देसी जद आवो जासी: सांमी जी की रजा बीना नोकर छो मा नहीं: हमार तो माता पीता सांमी जी: माहाराज ही हु: मे तो सांमी जी की रजा बीना कोई काम करां नहीं: जदब सीरदार तो: आभुजी न: चड़ गया आज दिन २ हुआ छ और समरथदांन तो आप नौकरी करा सो जतर दुसद का कर नहीं उस आपन लीषा छ सो आपन बीचारा चाईज

मिती चत बदी ७ समत् १९३९[1]

—:o:—

[पूर्ण संख्या ४०७] **पत्र**

॥ ओ३म् खंब्रह्म ॥[2]

श्रीमद्याऽऽनन्द स्वामी की सेवा में प्राऽर्थना श्रीमद्भारतीय प्रजा

---

१. ३१ मार्च १८८३।

२. यह पत्र पं० गोपालराव हरि के उत्तर पत्र के साथ म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १, पृष्ठ ३३६-३३८ तक छपा है।

के अतीव हितकारी हैं अतएव श्रीमान्को परमेश्वर चिरायु करे श्रीमान् ९९९[1] मतनकों खंडित करते हैं सो परस्पर पक्षपातीय होनें तैं खंडनीय हैं उक्त मतानुसार श्री मत्स्थापित मत का भी खंडन होनें तैं श्रीमान्ने यह निर्णय किया है कि मिथ्याऽभिमान स्वाऽर्थ साधन मैं तत्पर अन्याय का करणां पाप मैं प्रवृत्ति चोरी जारी अनृत भाषण पक्षपात किसी का नुकसान इत्यादि निषिद्ध कर्मों को छोड़नां और इन से विपरीत सद्धर्माऽनुष्ठान करणां इस प्रकार श्रीमत्के मुखाऽरविन्द से समऽक्ष श्रवण किया है परन्तु शोक की वार्ता यह है कि दयाऽऽनन्द दिग्विजयाऽर्क द्वितीय खंड सामाजिक प्रकरण प्रमाणाऽष्टक के साथवें अष्टक में पृष्ठि १६८ पंक्ति २ वा ७ विषें जलसा चीतोड़ (महाराणाँ श्री उदयपुराऽधीश श्रीमान्दयाऽऽनन्द स्वामी की सेवा मैं दिन मे २ बार उपस्थित होते थे यद्यऽपि लाटसाहब के आनें सें महाराणां साहब कों अवकाश कम मिलता था) इतनां ही लिखनें सें महाराणां साहब का २ वक्त पधारणां सिद्ध हो जाता परन्तु आप नृग राजा के गोदान विषय मैं श्लोक फर्माते हैं कि **यावत्यः सिकता भूमेर्यावत्यो दिवितारकाः ।। यावत्यो वर्ष धाराश्च तावतीरऽददं गाः** १ इति तात्पर्य छै झूठ बोलनें वाले को तृप्ति नहि होती यह आप का फर्मानां यथाऽर्थ है (तथाऽपि उक्त नियम विषें कसर नहि पड़ने दो, महाराणां साहब नें इति शेषः यह क्या आर्य पुरुषों का समाज है नहि झूठ दम्भाऽऽदिक दोषन तें रहित का नाम आर्य है या कों तो लोभी झूठ दांभिकों का समाज कहनां चहिये इस प्रकार १ जगह झूठ के लिखनें सें स्थाली पुलाक न्यायतें सर्वत्र झूठ की संभावना होवे है, अब विचारणां चाहिये कि श्रीमान्के प्रतिष्ठित आर्य गोपाल शर्म्म शास्त्री नें अनृत क्यों लिखा है क्या श्रीमान् उनकों अधम छुडवाणें का सदुपदेश नहि देते वा स्वयमेव आपके अर्यलोक ग्रंथकर्त्ता तो अधर्माऽऽचरण करैं और अन्यों के ताईं धर्म रोचिक वाक्य कहि करि निजमत में लेनां और श्रीमान् न्यायशील धर्माऽधर्म के निर्णय में कथन

१. यहाँ संख्या सन्दिग्ध है । यहां 'श्रीमान् १००० में से ९९९ मतनकों' पाठ होना चाहिये । द्र०— सत्यार्थप्रकाश समु० ११, पृष्ठ ६०५, पं० ८-१२ (आसश सं० २)।

भी करते हैं पक्षपातरहित न्यायाऽऽचरणं धर्मः और पक्षपात सहित अन्यायाऽऽचरणमऽधर्मः अतएव हम को आशा है कि द० दि० द्वि० ख० सा० प्र० ८८० के सातवें अष्टक पृष्ठि १६६ पंक्ति २ वा ६ विषें[1] पक्षपात रहित सत्याऽसत्य विचार करेंगे इति चैत्र वदि १३ गुरुः सं० १९३९[2]

आपका कृपाऽभिलाषी

साधु अमृतराम नवीन वेदाऽन्ती

इदानींतननिवासी शहरबुंदी ठिकाना शुक्लेश्वर महादेव

कृपा पत्र वगसे चैत्र शुक्ला १२ तक

—:०:—

साधुराम अमृतराम के उपर्युक्त पत्र के सम्बन्ध में पं० गोपालराव हरि (फर्रुखाबाद) का पत्र—

॥ श्रीयुत साधु मण्डली भूषण अमृतराम
नवीन वेदान्ती जी के चरणों में सविनय निवेदनम् ।

बाबा जी महाराज श्रीमान् जगद्गुरु स्वामी जी महाराज ने अपने एक पत्र के साथ आपका चैत्र वद्य १२ लिखित पत्र मेरे पास भेज कर आज्ञा लिखी कि 'यद्यपि तुम शुद्ध भाव भावित हो तथापि जब तुम को मेरा यथावत् इतिहास विदित नहीं तो ऐसा इतिहास आगे कदापि मत लिखो क्योंकि थोड़ा भी असत्य सम्पूर्ण सत्य को बाधित करता है और लेख साधू जी का ठीक ठीक है'[3] इत्यादि—इस का उत्तर उन को तथास्तु के व्यतिरिक्त और कुछ भी देय वा दातव्य नहीं परन्तु आप से बहुत कुछ प्रार्थना करनी परमावश्य है, महाराज जी आपने जो कुछ मेरी अशुद्धि दिग्विजयार्क द्वितीय खण्ड में देख लिख सूचित की इस का मैं जितना गुण मानूं वह थोड़ा ही होगा

---

१. यह पृष्ठ पंक्ति संख्या दयानन्ददिग्विजयार्क के प्रथम संस्करण (सं० १९३८=सन् १८८१) की है। द्वितीय संस्करण (सं० १९४४=सन् १८८७) में पृष्ठ १६७, पं० १६-२३ पर देखें। 'आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट' देहली से प्रकाशित नवीन सं० में पृष्ठ १०३, पं० १०-१६।

२. ५ अप्रैल १८८३।

३. ऋ० द० का यह पत्र 'ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन' पूर्ण संख्या ६८०, भाग २, पृष्ठ ८३४ पर देखें।

मैंने अपना ग्रन्थ उदयपुर के कितने ही सत्पुरुष और वहां के तथा नाथद्वार के यंत्रालय और मलुदा नगर के मंत्री आदि के पास भेज कर प्रार्थना की थी कि जो कुछ मेरा दोष देखा जाय उस से अवश्य मुझे सूचित करें परन्तु किसी ने उपकृत न किया धन्य है आप सदृशों का जन्म, जिस से हम लोग घर बैठे बिना परिश्रम पवित्र होते हैं वास्तव्य में आप श्रीयुत ने बहुत ही कुछ मुझे उपकृत किया दयालु ऐसों ही को कहना चाहिये—यदि आप एतद्विषयक लेख में हमारे श्रीमान् पर दोषारोपण न कर के जो कुछ लिखना था वह केवल मुझ दोषी को ही लिख सन्तोष मानते तो निःसंशय विशेष धन्यवादार्ह होते इस का हेतु कदाचित् नवीनत्व ही हो क्योंकि प्राचीन अर्थात् शमादि सम्पत्ति सम्पन्नों से तो कभी अन्यथा व्यवहार हो ही नहीं सकता, तथैव कभी कोई तादृग् बुद्धि पुरुष श्रीमान् सर्वत्र समदृग् जगद्गुरु के उपदेशों में भी द्विविधा नहीं कर सकता न उनके सिद्धान्तों को कोई विचारशील नवीन मत ठहरा सकता है कदाचित् यह कहा जाय कि जो जैसा होता है उस को क्या वे अर्थात् स्वामी जी वैसे ही भासित न होना चाहिये अन्यथा "मल्लानामशनिर्नृणान् नरवरो" इत्यादि वचन असंगत हो जावेंगे एवमेव जो सब आर्यसमाजी झूठे छली लोभी और दांभिक कहे जाय तो "विनष्टदृष्टेर्भ्रमतीव दृश्यते" इत्यादि वचनों का चरितार्थ भी न कर सकोगे ।। तो इस के उत्तर में सत्य वचन महाराज ऐसा ही अवश्य हाथ जोड़ कर हम लोगों को कह देना पड़ेगा—इसी भांति जिन्होंने कभी दर्शनों का दर्शन ही नहीं किया उनके स्थाली पुलाक न्याय की भी संभावना जहां वे कर बैठेंगे माननीय और कदाचित् कोई दर्शनी ऐसा ही न्याय करे तो हम लोग दर्वी रस न्याय से उस का भी आदर करेंगे परन्तु नवीन वेदान्ती जी महाराज आर्यों का वास्तविक सिद्धान्त कुछ और ही होगा अर्थात् वे लोग सत्य को सत्य और असत्य को ही असत्य कहेंगे उन से यह बात कदापि नहीं हो सकती कि सच्चे हजार रक्खे हुए रुपयों में किसी प्रकार से कोई खोटा रुपया पड़]गया तो वे स्थाली पुलाक न्याय से उन सब रुपयों को खोटा ही बता दें और न यह हो सकता है कि खोटे को सच्चा ही कहें वा तुरन्त उस को निकाल फेंकने का यत्न न करें, अस्तु अत्र तुष्यत्विति न्याये नैव समाधानम् अर्थात् आप श्रीयुत चाहो जिस रीति सन्तुष्ट हों और भले ही श्री स्वामी जी महाराज का आत्मवत् नवीन वा पृथक् मत बतावें आर्यों को भी भरपेट बुरा कहें हम लोगों की कुछ तादृश हानि नहीं उपसंहार में मेरी प्रार्थना यही है कि क्षमा कीजिये और सर्वंव इसी प्रकार कृपा दृष्टि रख मेरे श्रुत विषयों को निर्दोष

करने में प्रति समय सावधान रहें जिस से यह सत्य सेवक कृत-कृत्य हो— सत्य जानिये मुझे किञ्चिन्मात्र मिथ्या का पक्ष नहीं है और न ऐसे आग्रही को कभी अच्छा समझता हूं आपने जिन पंक्तियों पर आक्षेप किया निःसन्देह वे क्षेपक ही हैं छपने से नाक उस तमाम प्रमाण को निकाल देने का यत्न था परन्तु शोक कि मुद्रक नहीं समझा अतएव आप देखिये प्रमाणाष्टक में ८ की जगह ६ प्रमाण हो गये हैं यहां अब यह शंका हो सकती है कि न जाने उस समय ग्रन्थकार अपने किस प्रमाण को निकाल देना चाहता था, इस का समाधान प्रत्येक प्रमाण पर थोड़ी थोड़ी दृष्टि करने से यथावत् हो सकता है अर्थात् अच्छे प्रकार निश्चय हो सकता है कि सिवाय ७ सातवें प्रमाण के और कोई ऐसा लचर और पोच अन्य प्रमाण नहीं जिस पर किसी एक दृढ़ पुरुष की साक्षी न हो अतः जिस को कहता हूं वही एक लेख क्षेपक अर्थात् सुना हुआ एक वृत्तान्त है न नृगराज कथावत् गढ़ा हुआ, सो यह दोष अब तो तभी दूर होगा जब ग्रन्थ फिर कर मुद्रित होगा और वह समय सत्वर ही ईश्वर ने चाहा तो आवेगा तावत् जो आप मेरे दोनों खण्डों को पुनर्वार अपनी निर्मल दृष्टि से अवलोकन कर प्राप्त दोषों से मुझ को अपना जान अवश्य सूचित करेंगे तो बहुमानी हूंगा इस व्यतिरिक्त और भी जब जो सेवा मदुचित जानी पड़े उस की भी आज्ञा सदैव होती रहैं विशेषु किं बहुनेतिशम्—

आपका कृपाकांक्षी

२७-४-८३ ई०

गोपाल:[1]

—:०:—

[पूर्ण संख्या ४०८] विज्ञापन[2]

ओ३म् तत्सत्[3]

महाशय !

नमस्ते

चैत्र शुक्ला दितिया सोमवार संवत् १९४० मुताबिक तारीख ९

---

१. पं० गोपालराव हरि ने साधु अमृतराम का पत्र तथा अपना पत्र दयानन्द दिग्विजयार्क भाग ३ पृष्ठ २७-३३ तक छापा था। देहली के नये संस्करण में १२५-१२८ तक छपा है।

२. यह विज्ञापन म० मुंशीराम सम्पा० 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १, पृष्ठ ८७ पर छपा है।

३. यद्यपि इस विज्ञापन का ऋ० द० के साथ सम्बन्ध नहीं है, पुनरपि

अपरैल सन १८८३ ईसवी[1] को वैदिकधर्म्मसभा सवाई जयपुर का वार्षिक उत्सव है जिस में प्रातःकाल के ७ बजे से १० बजे तक वेदानुकूल अग्निहोत्र और संध्या के ५ बजे से आठ बजे तक वेदोक्त व्याख्यान होगा।

इस कारण सभा की प्रार्थना है कि आप उक्त समय पर उपस्थित हो कर सभा को सुशोभित और कृतकृत्य करें। अत्यन्त कृपा होगी॥

एक एव सुहृद्धर्मो निधनेऽप्यनुयाति यः।
शरीरेण समं नाशं सर्वमन्यद्धि गच्छति॥ मनुः ८

आप का शुभचिन्तक
विहारीलाल
मंत्री "वैदिकधर्म्मसभा" सवाई जयपुर
दरवाजे सागानेर रास्ते कोठियारान
नहोरा चंदरावत जी

—:०:—

[पूर्ण संख्या ४०९]　　पत्र

ओम् तत्सत्[2]

श्रीमन् महाराज शोभित समाज जगदुद्धारक श्री स्वामीजी महाराज—नमस्ते वृत्तांत यह है कि इस सभा को स्थापित हुवे एक वर्ष हो गया था इस कारण सभा ने संमति की कि वार्षिक उत्सव होना उचित है सो अंतरंग सभा में यह बात विचारी गई सभा का मनोरथ तो यह था कि सर्वत्र विज्ञापन[3] देकर सभासदों को अन्य नगरों से

ऋ० द० को लिखे गये अगले पूर्ण संख्या ४०९ के पत्र में इस विज्ञापन का उल्लेख होने से हमने इसे यहां छापा है।

१. यह विज्ञापन ९ अप्रेल १८८३ को होने वाले वार्षिकोत्सव से कुछ दिन पूर्व छपा होगा।

२. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १, पृष्ठ ८३-८६ तक छपा है। इस पत्र का उत्तर ऋषि दयानन्द ने चैत्र शु० ६, सं० १९४०(=१५ अप्रेल १८८३) को दिया था। देखो 'ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन' पूर्णसंख्या ७८७ भाग २, पृष्ठ ८१४।

३. यह विज्ञापन पूर्व पूर्ण संख्या ४०८, पृष्ठ ४९२-९३ पर छपा है।

बुलाया जावे परन्तु कुछ मनुष्यों ने यह संमति दी कि यह प्रथम उत्सव है और द्वितीय यहां पर महाराज के गुरु ब्रह्मचारी जी मथुरा के रहने वाले हैं विद्यमान हैं इस कारण अन्य नगरों से सज्जन पुरुषों का बुलाना तो उचित नहीं परन्तु इस नगर में प्रधान प्रधान पुरुषों को विज्ञापन देकर बड़ी धूम धाम के साथ उत्सव होना चाहिये । सो वैदिक यंत्रालय में २०० विज्ञापन पत्र छपवा कर चैत्र शुक्ला २ सोमवार संवत १९४०[1] का उत्सव विदित किया उन विज्ञापन पत्रों में से एक पत्र आप की सेवा में भेजा जाता है । सो उक्त तिथि पर प्रातःकाल के ७ बजे से १० बजे तक बड़े उत्साह के साथ अग्निहोत्र हुवा जिसमें ५ आर्यों [का] संस्कार भी कराया गया जिस समय अग्निहोत्र हुवा तो समीप ६० या ७० मनुष्यों के विद्यमान थे और उस समय प्रत्येक मनुष्य के अन्तःकरण में आपही ध्यान हो रहा था और विशेष कहां तक वर्णन करूं संध्या के पांच बजे से १० बजे तक उपदेश हुवा जिस में सभी ७०० मनुष्यों के विद्यमान थे यह उपदेश का समय ऐसा आनंदायक था जिस को हम वर्णन नहीं करते ।

संपूर्ण शहर में सभा के उत्सव का ऐसा धन्यवाद हुवा कि यथार्थ में वेदानुकूल कर्म यही है ॥

इस परमानन्द के नगर में प्रचरित होते ही पोप लोगों का श्मशान चैतन्य हुवा और हाय तोबा करते हुवे ब्रह्मचारी के पास जाकर पुकारे वहां पर अविद्या तथांधकार पूर्ण विराजमान था उन्होंने प्रथम गौरीशंकर तथा प्रधानादिकों के नाम अनुक्रम से लिखकर समीप २५ मनुष्यों के छांटे और उन के साथ एक पत्री महाराज को लिखी तू गोपालजी का भक्त है और यह दयानंद सरस्वती की सभा के मनुष्य प्रतिमा का खंडन करते हैं इस कारण इन मनुष्यों का भद्र[2] करा कर राज के बाहर निकाल दो और एक विज्ञापन भी इसके साथ भेजा कि इस प्रकार का विज्ञापन देकर लोगों को नास्तिक करते हैं ॥

यह संपूर्ण समाचार महाराज के पास पहोंचा और उन्होंने देख कर ठाकुर गोविंदसिंह तथा रघुनाथसिंह जी को बुलाया और कहा कि यह क्या बात है उस समय ठाकुर रघुनाथसिंह की क्षात्रवृत्ति ने

१. ९ अप्रेल सन् १८८३ ।

२. भद्र = भद्रा = सिर का मुण्डन ।

प्रकाश किया और निश्शंक होकर कहा कि महाराज बेशक इन लोगों का भद्र करा कर निकालने चाहियें परन्तु मेरा नाम इस पत्र में अवश्य प्रथम होना चाहियें और जो कुछ इन के वास्ते हुकम हो सोई मेरे लिये होना चाहिये क्योंकि मैं इस शहर में स्वामी दयानन्द सरस्वती का प्रथम शिष्य हूं खैर कुछ चिंता नहीं अब तक आपकी आज्ञा वा कृपा से राज किया अब आप की आज्ञा से इस स्वरूप को धारण करेंगे ।। महाराज ने यह [समा[चा]र सुन कर कहा कि तुम भी दयानन्द सरस्वती के शिष्य हो ठाकुर रघुनाथ सिंह जी ने कहा कि मैं इस शहर में उन का प्रथम शिष्य हूं और मूर्त्ती पूजन को मैं भी नहीं मानता हूं क्योंकि यह वेदोक्त नहीं है अब जो कुछ आप इस पर आज्ञा देवें सो तामील की जावे ।। महाराज ने कहा कि स्वामी जी को मैंने भी सुना है यह कोई बात र[ा]ज्य को हानिकारक नहीं है ब्रह्मचारी जी को किसी ने बहका दिया है रखो इस पत्र को फिर देखा जावेगा इतने में ठाकुर रघुनाथ सिंह अपनी कचहरी के कमरे में चले आये और ठाकुर गोंदिसिंह[1] भी आगये तो ठाकुर रघुनाथसिंह ने कहा कि जब तक इसाई तथा मुसल[मान] इस राज से नहीं निकाले जावेंगे तब तक इस सभा को कभी नुकसान न होना चाहिये ठाकुर गोविंद ने कहा कि इस में क्या संदेह है नाना प्रकार के मनुष्य मूर्त्ति का खण्डन करते हैं यहां तक यह समाचार हुआ है सो हमने आपकी सेवा में निवेदन कर दिया है अब प्रार्थना यह है कि इस विषय में एक धन्यवाद पत्र ठाकुर रघुनाथसिंहजी के पास भेज देव[2] ताकि वोह और सहायक हो जावें आगे आपकी संमति है और हम लोगों को भी आज्ञा दी जावे कि हम इस विषय में क्या यत्न करैं सभा तो हम प्रति शुक्रवार को निश्शंक करेंगे और किसी प्रकार से भी पुरुषार्थ में हानि नहीं है परन्तु तदपि आपसे आज्ञा लेना उचित है और विशेष क्या लिखें ।

और हम यहां प[र] ४० मनुष्य ऐसे दृढ हो रहे हैं कि हमारे

१. गोविन्द सिंह ।

२. इस सुझाव के अनुसार ऋ० द० ने ठाकुर रघुनाथसिंह को पत्र लिखा था, परन्तु वह पत्र हमें प्राप्त नहीं हुआ । द्र०—ऋ० द० के द्वारा बिहारी लाल को लिखा गया पत्र 'ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन' पूर्ण संख्या ७८७ भाग २, पृष्ठ ८१४ पं० १८ ।

वास्ते चाहे कुछ हो विपत आ जावे परन्तु हम भयभीत होने वाले नहीं हैं[1]

आपका सेवक
विहारीलाल मंत्री
Nandkisor Singh

—:o:—

[पूर्ण संख्या ४१०] **पत्र**

ओ३म्[2]

Ajmere College; 17th april 1883[3]
अजमेर कालिज १७ एप्रिल १८८३ ई०

श्रीमत् परम दयाकर आर्य्यकुल धर्म्म प्रचारक अविद्यान्धकार निवारक सत्यज्ञान प्रकाशक श्री स्वामी जी महाराज के पद पंकजों में अनुचर शुकदेवप्रसादकृत नमस्ते, प्रणाम, अभ्युत्थानादि शिष्टाचार के पश्चात् विदित हो—आपके आज्ञानुसार पंडित दामोदर से "जो मूलचन्द सोनी के मन्दिर में पढ़ाता है" पूछा गया और आपके कृपापत्र[4] का आशय सुनाया गया तो उसने उत्तर दिया कि स्वामी जी के साथ परि भ्रमण में रहने योग्य तो मेरी शक्ति नहीं है परन्तु प्रयाग में रह कर वैदिक यंत्रालय का कार्य्य तो मैं यथेष्ठ कर सक्ता हूं वेतन के लिये उन्होंने यह प्रकाश किया कि बारह रुपये मासिक तो सेठ मूलचन्द जी के यहां से और आठ रुपये मासिक अन्य दो तीन विद्यार्थी देते हैं यों मुझे बीस रु० मासिक पड़ जाता है सो यदि यही मासिक वहां पर एकत्र मिल जावे तो मैं प्रसन्नता पूर्वक जा सक्ता हूं सो इस विषय में जैसी आज्ञा फिर होगी उस्के अनुसार किया जायगा

---

१. इस पत्र पर तिथि नहीं है, परन्तु इस पत्र में पूर्ण संख्या ४०८ वाले पूर्व विज्ञापन तथा ९ अप्रेल के समाज के उत्सव का समाचार लिखा होने से यह पत्र सम्भवतः १२ अप्रेल के आस-पास लिखा गया होगा।

२. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्र व्यवहार' भाग २. पृष्ठ २००-२०३ पर छपा है।

३. चैत्र शु० १० संवत् १९४० वि०।

४. पं० शुकदेवप्रसाद के नाम लिखा गया यह पत्र हमें नहीं मिला।

—अथवा आपकी इच्छा किसी अन्य कार्य्य योग्य पुरुष के नियत करने की हो और यह भी प्रकाश हो जावै कि इतने तक मासिक दिया जा सक्ता है तो हम लोग यहां पर ऐसे पुरुष की तलाश में रहैं जैसी इच्छा हो उससे सूचना दी जावै—यहां पर प्रति रविवार को संध्या के पांच बजे से ७ बजे तक आर्य्यजन एकत्र होकर समाज में वेदभाष्य तथा अन्य स्वामिकृत सत्य ग्रंथों का पठनपाठन और कितने एक सर्वोपकारी व्याख्यान भी दिये जाते हैं मैं भी जाकर किसी न किसी विषय पर वक्तृता करता हूं पिछले रविवार को मैंने ब्रह्मचर्य्य के लाभ शारीरकबल पराक्रम बढ़ाने और साथ ही विद्या बुद्धि की वृद्धि करने के गुण अनेक सुयोग्य उदाहरणों के सहित वर्णन किये थे तथा पीछे से बाबू मथुराप्रसाद ने बाल विवाह के निषेध पर कुछ कहा आठ बजे समाज विसर्जन हुई थी— आज चैत्र सुदी ११ मंगलवार[1] को आठ बजे प्रातःकाल के स्वामी ईश्वरानन्द जी आपके वहां से आये यद्यपि उन्होंने टिकट रूपाहेली से १ =) देकर सीधा जयपुर का लिया था परन्तु लोकल ट्रेन होने के कारण उनको यहां १ बजे तक ठहरना पड़ा—सम्पूर्ण कालेज का स्थान और यहां के पठनपाठन की विधि तथा पुस्तकालय भी दिखलाया और पंडित सालिग्राम जी से उनकी भेट वार्तालाप संस्कृत में हुई फिर इस अनुचर के ही स्थान पर कुछ भोजन करके स्टेशन को गये थे मैं आप जाकर उनको गाड़ी में बैठा कर आया था वे दो एक दिन जयपुर ठहरेंगे उनको भी नमस्ते स्वीकृत हो–यह बात आपको शाहपुरे में भले प्रकार सिद्ध हो जायगी कि मैंने वहां पर पौने पांच वर्ष पर्यन्त कैसे परिश्रम से मन लगा कर पाठशाला में तथा राजाधिराज की शिक्षा में काम किया था यदि वैसी कारगुजारी अंगरेजी सर्कार में सिद्ध होती तो निश्चय मेरी वृद्धि होती परन्तु गुण-ग्राहकता न हुई और एक कश्मीरी दीवान से विरोध हो गया उसने मुझे वहां से उठा देने के लिये एजंट से रिपोर्ट द्वारा परामर्श किया उसने तो केवल यही कहा था कि अब राजा साहब को इख्तियार सरकार से मिल गया है वे जैसा उचित समझें करें

१. चैत्र सुदी ११ बुधवार (१८ अप्रेल १८८३) था। सम्भव है मंगलवार (१७ अप्रेल) के एकादशी का योग रहा हो।

जिस्को चाहैं रक्खें जिस्को चाहैं दूर करदें जिस प्रकार से राज्य शासन सुधरे अपना उचित प्रबंध करें हमको इसमें कुछ दखल नहीं—सो मैं जानता हूं कि एजंट साहब मेरे वहां पर रह कर विद्या वा शिक्षा संबंधी काम करने से कदापि नाराज न होंगें हां यह बात द्वितीय है कि (**यथा किराती करिकुंभजातां मुक्तां परित्यज्यबिर्भतिगुंजाम्**) किसी गृह वा देश के स्वामी को अधिकार है कि वृद्धवय वाले दीर्घ सोची विद्वानों के बदले छोटी वय के अपरीक्षक अविद्वान् शारीरिक विलासों के ही ध्यान स्मरण रखने वाले लड़कों को अपने राजप्रबंध में रख सक्ता है परन्तु परिणाम की भी अवधि होती है हर एक प्रकार के काम के परिणाम से पीछे आपही लाभ वा अलाभ प्राप्त हो रहता है मैंने वहां पर शिक्षा विभाग में जैसा काम दिया था श्रीयुत् शाहेपुराधीश नाहर नरेन्द्र को भली भांति विदित है किमधिकम्— शुभम् चैत्र सुदी ११ सं० १९४०[1]

ह० पं० शुकदेव प्र०

राव साहब मसूदा किसी कार्य्य हेतु १५ दिवस से यहां ठहरे हैं—सब लोगों की ओर से प्रणाम वा नमस्ते स्वीकृत……और दो एक प्रति उस स्वीकृत[2] की जो उदयपुर से आया है यहां भी दीजिये इति।

—:०:—

[पूर्ण संख्या ४११] **पत्र**

ओम्[3]

No…६१७

ARYA SAMAJ OFFICE, LAHORE.
Dated 17th February 1883[4]

---

१. १७ अप्रेल १८८३।

२. अर्थात् स्वीकार पत्र। यह स्वीकार पत्र 'ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन' के पूर्ण संख्या ७६०, (भाग २, पृष्ठ ७८७-७९३) पर छपा है।

३. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १, पृष्ठ ११६-१२६ तक छपा है।

४. पत्र के अन्त में '१८ अप्रेल १८८३' तारीख दी है। यह सम्भव नहीं कि १७ फरवरी को पत्र लिखना आरम्भ किया हो और १८ अप्रेल को

To

श्रीमत्परिव्राजकाचार्य
श्री १०८ मद्दयानन्द सरस्वती जी
महाराज योग्य " नमस्ते " !

आप के दोनों क्रिपा पत्र आये[1] पढ़कर बहुत ही आनन्द प्राप्त हुआ; अब आप के प्रश्नों का क्रम से उत्र दिया जाता है ।।

कारीगरी का स्कूल हम नहीं खोलना चाहते किन्तू तत्व अर्थात् पदार्थ विद्या का स्कूल खोलना चाहते हैं। द्वितीय श्रेष्ठ है ।।

लाला शालगराम सम्पादक आर्य यंत्राल्य नें समाज के प्रति देने को कहा है उस की लिखाई इसी स्थान में होगी अन्यत्र नहीं ।। मैंने पूरब पत्र में यह लिखा था कि पूर्वोक्त सम्पादक समाज को दान देकर कलकत्ते मे स्वकार्यार्थ चले गये हैं[2]। जब आवेंगे तो लिखा पढ़ी हो जायगी ।। सो वह महाशय अब आ गये हैं ।। दुष्ट लोग उसको भ्रमा रहे हैं ।। ऐक पत्र धन्यवाद का यदि आप उनके नाम भेजें तो लाभ-दायक हो ।।

आप का येह कथन कि हम मद्रास्यों को भूल रहे हैं सत्य है निस्सन्देह आप का उस दिशा में उपदेशार्थ रटन करना बंगाल हाथे से उत्तम होगा ।।

आपके द्वितीय पत्र से सिद्ध होता है कि आप दो स्त्रीयों से वास्ते मुझे इससे पूर्व भी लिख चुके हैं परन्तु इस विषय में मेरे पास कोई अन्य पत्र नहीं आया ।। दो स्त्री जो पतीवाली शुद्ध आचरण वाली कसीदा अर पढ़ाना जाणने वाली हो तथा दो पुर्ष ऐक अन्तरंग मंत्री जो स्वदेश हितैशी धार्मिक राजनीती में निपुण इंगलिश भाषा का

समाप्त करके भेजा गया हो। इस काल के मध्य जवाहरसिंह ने एक पत्र १६ मार्च १८८३ को भेजा था (द्र०—पूर्व पूर्ण संख्या ३९६) उसमें आगे लिखी बात का उल्लेख है। द्र०—इसी पृष्ठ की टि० २। तथा इस पत्र में शाहपुरा में ओवरसियर के काम के विषय में लिखा है। ऋ० द० शाहपुरा ८ मार्च १८८३ को पहुंचे थे। इन सबसे ज्ञात होता है कि यहां १७ अप्रेल के स्थान मे १७ फरवरी भूल से लिखा गया है।

१. ये पत्र हमें नहीं मिले।

२. द्र०—पूर्ण संख्या ३९६ का पूर्व पत्र, पृष्ठ ४८०, पं० ५।

पण्डित अर कोई विषम हो उसके लिखने में भी निपुण तथा परिश्रमी अर घर के समान काम करने वाला स्वामी भक्त कृतग्य आदि हो ॥ अर द्वितीय "ओवर सीयर" जो अपने कार्य में निपुण आदि हो मागते हैं ॥ ॥ इसमें दास के बहुत बिचार हैं तथाहि:—

१ देश की दुर्भाग्यता से प्रथम तो अैसी स्त्रीयों का मिलना बहुत ही कठन है ॥ जो ढूढे से मिले भी तो पतीवाली का होना भी कठन हुआ ॥ शुद्ध आचरण मे संदेह रहा तो भी ठीक न हूआ ॥ यदि पतिवाली भी अैसी कोई स्त्री हुई तो वह इतनी दूर जाकर नौकरी न करेंगी यावत काल उसका पती भी राजस्थान में सङ्ग न जावे । अर अैसा पती भी कोई न होगा जिस की स्त्री अैसी होने पर वह आप निकम्मा होगा अर स्वपतनी को द्रव्य के लिये परदेश भेचने पर राजी होगा इससे पती अर पतनी दोनों को राजस्थान में नोकरी चाहिये ॥ तब काम चले ॥

२ स्त्रीयों का मासिक आपने नहीं लिखा ? ओर न येह लिखा कि वह उदयपुराधीश तथा शाहपुराधीश के किसी देशी पाठशाला में पढ़ायेंगी या उनके राजग्रह में ? अैसी स्त्रीयें हम ढूढ रहे हैं शीघ्र ही इसका ब्योरा लिख भेजेंगे ॥

पूर्वोक्त गुण युक्त अंत्रंग मंत्री ढूढ़े से मिल तो सकता है परन्तु ५०) मासिक पर मिलना कठन है ॥ येह बात आप पर प्रगट होगी कि रेल के मिस्त्री वा त्रखान ३०) वा ४०) मासिक पाते हैं अर सामान्य इंगलिश के ज्ञाता ५०) वा ६०) मासिक पाते हैं । तो अैसा पुरुष जैसा आप चाहते हैं ५०) मासिक पर भला कब आ सक्ता है ? हां येह भी सत्य है कि ५०) पर सेकड़ों आने को तयार हो जावेंगे परन्तू जैसे आप चाहते हैं कि वह पुरुष हास्य का कारण न होवे अैसा ५०) को नहीं मिलेगा इस दास के विचार में तो यह आता है कि पूरण गुण युक्त १५०) मासिक मिलने से भी ससता है ॥ तथापि हम सब अैसे गुणवान पुरुष की परताल रखेंगे ॥

निम्न लिखत बातें प्रष्ठव्य हैं इससे सहज से कोई मनुष्य मिल जावेगा कृपा द्रिष्ठ से उत्र लिख भेजें । तथाहि:—

१ अन्तरंग मंत्री उदयपुराधीश वा शाहपुराधीश को चाहये ?

२ पश्चिमोक्त राज्य की विभूती कितने लक्ष की है ?

३ मासिक में बड़ती कब कब अर कहां तक होगी ?

४ मासिक से भिन्य रसद कितनी मिलेगी ?

५ निवास स्थान गत असबाब राज्य से होगा वा नहीं ?

स्वारी के सारे खरच नोकर आदि के किसके जिम्मे होंगे ?

७ मासिक हर महींने मिलेगा या नहीं ?

८ राजा की आयू अर स्वभाव अर विद्या ?

इस विषय में प्रधानादिकों से जहां तक विचार हो चुका है वह यद्यपि मैं अपनी लेखनी से नहीं लिख सक्ता तथापी सारांश येह कह देता हूं कि प्रधानादिकों का विचार है कि यदि मासिक अधिक हो जावे अर स्वामी जी भी संमती इस बात पर दे दें कि येह बात उत्तम है तो मैं इस नौकरी को कबूल करलूं ।। परन्तू मैं अभी तक कुच्छ नही कह सकता किउ कि ५०) मासिक मुझे अपने घर में मिल जाते हैं जो बाहर के १००) के बराबर हैं ।। अर यहां कानून का पड़ना समाजों में व्याख्यान देनें सब रह जावेंगे अन्य प्रकार सें भी संकोच है कि देशी राज की नौकरी कबी नहीं करी अर न देशी राज प्रबंध की उपमा किसी पत्र में देखी जेकर देखी तो बहुत कम देखी ।। असे समें में अपनी योग्यता की प्रशंसा करनी भी महां अयुक्त होगी अर न वास्तव सें किसी योग्य हूं मैं ।। हां कुच्छ पुलीटकल विद्या का स्वभाव से प्रेम है यांने समाज के सज्जन पुरुष यही कहते हैं कि तुम इस काम को अच्छा निबाहोगे ।। परन्तू मैंनें हां या नां नही कही अबी विचार हो रहा है देखये परिणाम । क्या होता है ।।

हां आप के कृपा पत्र में इक बात असी है जो आकरषण कर लेती हैं अर्थात् "देश के हित का काम" व "जिनके भाग्य होंगे वह आयेंगे" ।। इस सें मन में आती है कि कुच्छ काम करना चाहये ।। अच्छा देखा चाहये क्या होता है ।। बहुत जलद आप के प्रत्युत्र आने पर उत्र लिखा जावेगा ।। अर हम सब असे पुरुष की तलाश मे हैं ।

"ओवरसीयर" भी ३०) मासिक पर नहीं मिलेगा । हां "सब-ओवरसीयर" मिल जायेगा । इस विषय में भी प्रयत्न होगा

इस पत्र में जो प्रश्न हैं उन के उत्र लिखने में आप को जो परिश्रम होगा उस के लिये क्षिमा मांगता हूं ।। येक दो प्रश्न तो सामान्य हैं परन्तू उन के जाणने की भी आवशक्त हुई है ।। इति:——ज: स:

आज से १५ दिन हुये कि राय बिश्नुलाल ऐमः ऐः वकील हाई-कोर्ट इलाहाबाद ने लाहौर में ऐक व्याख्यान दीया था जिसका विषय येह था कि "आर्यसमाज अर थीओसोफीकल सुसायटी के मिलाप की आवश्यक्ता" उस के साथ कुतहूमोलालसिंह का ऐक अवतार भी भी था जिसने येह कहा कि योग बल सें व लालसिंह की सहयता से वह सभ काम कर सकता है जो काम ईसा मुहम्मद नानक राम कृश्न न कर सके ।। वह आज कर देनें को प्रस्तुत हैं अर येह भी कहा कि समाज व सोसाइटी के प्रधानों को जो परस्पर झगड़ते हैं दूर कर के सभासद मिलाप करलें इस सें आर्यवरत की उन्नती होगी ।। इत्या-दिक कहकर कहा कि योग की महमां दिखलाने के वासते हम आज असे अचम्भे की बात दिखलाते हैं कि कोई आंगुली हमारी काट लेवे यदि किसी में सामर्थ हो ।। ओर यदि कट भी गई तो उसी समे हम अंगुली अच्छी कर लेवेंगे ।। फिर इकरारनामा लिखा गया ।। उङ्गली काटी गई ।। वह टुकड़ा मांस का अर इकरारनामा समाज में रखा है[1]। इकरारनामे पर येह लिखा था कि "अगर आंगुली काटी गई तो निश्चै से थीउसोफीकल सोसायटी में कोई योगी नहीं" शरम खाकर वह दोनों काशमीर चले गये अर फिर योगी बन गये। वहां राजा ने बड़ा सतकार कीया है। शोक है कि लाला शालग्राम के इंगलिश परचे के बिना किसी दूसरे पत्र में येक पांज नहीं प्रग्ट हुआ ।।

आप के पास (रीजिनेटर ओफ आर्य्यवरत) इंगलिश पत्र आता है उस में विस्तारपूर्वक निर्णय कीया है उन को आवश्य देखना। यहां इतने बड़े भारी जलसे में कई पत्रों के इडीटर विद्यमान थे परन्तु बड़े ही आश्चर्य की बात है कि इस पाखण्ड को किसी अखवार वाले ने नही छापा उलटा कलकत्ते के पत्रों में छप गया है कि जब "किसी से उंगली न काटी गई तब योगी ने कहा कि अच्छा अब काटो तब कट गई" ।। यहां येह हाल गुजरा है ।। क्या झूठ की महमा हो रही है ।।

मुद्रित स्वीकार पत्र की ऐक प्रति जो आपने यहां भेजी है यदि आज्ञा दें तो इस को लोकों में प्रग्ट कर दिया जावे ?

---

१. इस घटना का उल्लेख पं० गोपालराव हरि (फर्रुखाबाद) कृत दयानन्द दिग्विजयार्क, (सं० १९४४) भाग ३, पृष्ठ ९०-९१ (नयी देहली संस्क० पृष्ठ १४८) पर भी मिलता है।

अैसा विचार में आता है कि "मैडिमब्लैवटस्की" ने सर्व साधार्ण पत्र वालों पर अपना असर डाल रखवा हे ।। नहीं तो इतने बड़े झूठ को किसी दूसरे ने छापा किउना मैं बड़ा आश्चर्यमान होग्या हूं ।।

लाला रत्नचद बेरी सम्पादक "आर्य्य" का समाज संबंधी विवहार बहुत अनुचित है (इन्द्रमणी दूसरा मानो कभी होगा) वेह सभासदों को परस्पर चुग्ली झूठ से लड़ाते हैं ।। लाला शालगराम को जा जा कर भ्रमाते हैं। अन्तरंग सभासदों की निन्दा करते हैं अर आप पक्के आर्य बनते हैं ।। युक्ति येह देते हैं कि "आर्य में कोई बात आर्य्य धर्म्म के विरुद्ध आज तक नहीं छपी ।। परन्तू हमारा तो येह विचार है कि जिस समें उस के पत्र के ग्राहक आर्यसमाजीयों के बिना इतने हो गये जो उस का पत्र चल निकले तो वह उसी समें विरुद्ध हो जावेगा ब्लैवटस्की की चिठ्ठीआं उस के पास आती हैं अर जाती हैं अर हम को पीछे उस ने कहा था कि "मैंनें सोसाइटी को इसतीफा लिख भेजा है" पर जगह जगह आपने नाम के पीछे "F. T. S." लिखता है जिस का अर्थ यह है कि वह सोसायटी का सभासद है ।। जब आर्य समाज व थी: सोसायटी का संबंध टूटा था उस समें रत्नचंद को कहा था कि "तुम कुच्छ अपनी ओर से छापो" इस का तात्पर्य येह था कि रत्नचंद के पास अैसी चिठ्ठआं हैं जो वह छप जातीं तो उस सोसायटी की आर्यवरत से जड़ उखड़ जाती परन्तू रत्नचंद ने यही कहा कि "वह चिठ्ठीयां यदि छाप दूं तो "मैडिम मुझ पर नालिश कर देंगी" बस येह उत्र देकर टालदीआ ! अच्छा देखये कहां तक कारवाई होती है !!

चिठ्ठी के उत्र लिखने में देर इस कारण सें हुई कि मैं अमरतसर चला गया था ।। वहां पहला वारषिक उत्सव हुआ था वहां के मंत्री जी ने येह कहकर कि "उत्सव हमनें पहले कभी कीया नहीं कोई दिन के वासते यदि भाई जवाहरसिंह पहले आ जावें तो अच्छा हो" मुझे बुलवाया था ।। उत्सव अच्छा हो गया ।। वहां मेरठ के पं० विहारीलाल ने "थीयोसोफीकल सोसाइटी" की खूब गत बनाई थी ।।

आज रात अंत्रंग सभा हुई आप के दोनों पत्र सुना दीये स्त्रीयें मिल जाने की संभावना हूई परन्तू विधवा होंगी ।। निर्णय येह अंतय में हुआ [कि स्त्रियों के स्कूल मासटर से पूच्छा जावे कि वह अैसी दो स्त्रीयं दे सक्ता है जैसी जाहिये] "ओवरसियर" व "अंत्रंग मंत्री"

के विषय में भी येही फैसला हुआ कि [तलाश की जावे अर यदि मंत्री की नोकरी भाई ज्वाहरसिंह स्वीकार कर लें तो बहुत अच्छा हो] ये दोनें फैसले जबानी हुये लिखे नहीं गये किउंकि असल में ठीक फैसला कोई नहीं हुआ अर न हो सक्ता था इस पत्र के उत्र आने पर फैसला होगा।

"Aryan Science Institution" जो हम खोलना चाहते हैं उस को आर्य भाषा में [आर्य प्रकृति विद्या अनुष्ठान] कह सक्ते हैं।।

अंत्य में पुना इस बात को लिखना "कि आर्य भाषा के लिखने में बहुत अशुद्धिये हो जाती है क्षिमा कीजिये" गौरव है जब कि आप का अमृतवत मधुर वचन कि [जो तुमने इतनी बड़ी चिठ्ठी आर्य भाषा में लिखी यही हमने तुम्हारी शुद्धी जानी] मेरे पास विद्यमान है।।

नमस्ते।। लिखी बुद्धिवार १८ अप्रेल सं: १८८३ ई

आपका दास
ज्वाहर सिंह
मंत्री आर्य समाज। लाहौर

P. S.

[यदि अनुचित न हो तो] आप से संमती मांगता हूं अर वह थोड़े अक्षरों में है कि "यदि मैं इस नौकरी को स्वीकार कर लूं [जैसे कि प्रधानादिकों का विचार है] तो कैसा हो"? यह बात मैं पीच्छे पूच्छनी चाहता था परन्तू रह न सका।।

आपका दास
ज्वा: सि:
लाहौर

वह योगी का स्वांग जिसनें उंगली कटाई थी मद्रासी मालूम होता है अर कई कहते हैं कि येह वही नौकर है जो मैडम के साथ लाहौर में आया था मुझे भी अैसा ही प्रतीत होता है।।

ज: सि:

—:०:—

[पूर्ण संख्या ४१२] पत्र

आर्य समाज फरुखाबाद[1]
१६-४-८३[2]

मान्यवर

श्री मत्सच्चिदानंदस्वरूपाय परमगुरवे नमः

इस पत्र के साथ भगवतपुर के पं० महादेव का पत्र[3] पहुंचता है। इसके आर्यधर्म की ओर सुरुचि की प्रशंसा पं० तुलसीराम मंत्री समाज इटरी ने (जो यहां वार्षिकोत्सव में आये थे) की थी—एतदर्थ यह उत्साही जान पड़ता है।

आप की कृपा से १५ अप्रैल को समाजोत्सव खूब आनंद पूर्वक हुआ, मेरठ–कानपुर अकबरपुर–शिवली आदि से आर्य लोग आए थे बडा ही आनंद रहा, शाहपुरा के सुसमाचारों से विदित कीजिए और मान्यपत्र[4] की नकल भेज दीजिए देखने की बहुत इच्छा है[5]

सेवक
कालीचरण

—:o:—

[पूर्ण संख्या ४१३] पत्र

॥ श्री[6] ॥

श्री मत्सकल सद्गुण गणान्वित ज्ञानस्वरूप विद्यार्काज्ञान तमहर श्रीस्वामी दयानन्द जी को प्रभुदयाल को प्रणाम अग्रे शुभमस्तु–छा

---

१. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १, पृष्ठ ३२३-३२४ पर छपा है।

२. चैत्र शु० १२ सं० १६४०। ३. यह पत्र उपलब्ध नहीं हुआ।

४. द्र०—पूर्व पूर्ण संख्या ३८७, पृष्ठ ४७३।

५. इस पत्र का उत्तर ऋ०द० ने वैशाख बदी ३, सं. १६४० को दिया था। द्र०–'ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन' पूर्ण संख्या ७६१, भाग २, पृष्ठ ८२१।

६. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १, पृष्ठ ४०२-४०३ पर छपा है।

सात वर्ष हुए लखनऊ मे आप के दर्शन हुए थे तब से फिर आप के दर्शन नहीं प्राप्ति हुए—जद्यपि आप के दर्शन को अत्यभिलाषा है परन्तु वे शुभकाल व पुण्योदय के महात्मा के दर्शन व सत्संग प्राप्ति नही होता अब यह खबर पाय कर की आप श्रीमन्महाराजाधिराज राना साहेव उदेपूर के यहाँ विराजमान है इस पत्र द्वारा अपना अभीष्ट प्रकाश करते हैं एक तो यह है की और शास्त्र के सूत्र सभाष्य मिल गये हैं वंशेषिक दर्शन सूत्र वहुत तलाश किया परन्तु नहीं मिला आधुनिक गृंथ तर्कसंग्रह मुक्तावली जो ईप्सित नही हैं मिलते है इस्से आप से प्रार्थना है की जो आपकी अनुग्रह द्वारा कहीं से मिल सकै तो मूल्य कृपा कर के लिखिए आप विद्यावृद्धि कारण स्वरूप हैं इस्से निश्चय है की आप के अनुग्रह द्वारा हमारा मनोर्थ पूर्ण होगा और एक संदेह आप से निवृत्ति करने की प्रार्थना यह है की मीमांसा दर्शन मे वलिप्रदान का जज्ञ मे विधान किया है और वह वेद वाक्यानुसार है आपके कथानुसार सब ऋचौं मे जो ईश्वर नामोचारण पूर्वक हवन से आरोज्ञता वायु शुद्धचादिक प्रयोजन है तो जीवहिंसा से क्या प्रयोजन हैं न्यून जीवौं को वलातिकार से क्लेश देना वध करना प्रणाम युक्ति विरुद्ध है जो प्रमाण युक्ति हेतु विरुद्ध है तौ हमारे मत से मानवे योज्ञ नही है औ जो वाक्यार्थ का भ्रम होय तौ कृपा कर कै लिखिए मि: चै: सु: १३ स: १९४०[१] पता उत्तर भेजने का—

चिठ्ठी पहूचे पास **प्रभुदयाल** के जिला—
वाँदा मुकाम तेरही प्र० पैलानी मे—

उत्तर[२]भेजने के निमित्त)।। का टिकट भी पत्र के भीतर रख दिया है

---

१. २० अप्रैल १८८३।

२. इस पत्र का जो उत्तर ऋ० द० ने दिया था- वह मूलरूप से प्राप्त नहीं हुआ। परन्तु श्री पं० भगवद्दत्त जी के द्वारा २-९-१९१७ को पं० प्रभुदयाल को लिखे गये पत्र के उत्तर में श्री प्रभूतानन्द जी (प्रभुदयाल जी का संन्यास का नाम) ने ऋ० द० के पत्र का जो आशय लिख कर भेजा था, उसे हमने 'ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन' के पूर्ण संख्या ८०६, (भाग २, पृष्ठ ८३९ पर छापा है, उसे वहीं देखें।

श्री पं० प्रभुदयाल जी ने न्याय वैशेषिक आदि कई दर्शनों की हिन्दी व्याख्याए लिखी थीं। वैशेषिक दर्शन बम्बई के वेङ्कटेश्वर प्रेस में छपा था।

[पूर्ण संख्या ४१४] पत्र

॥ श्री ॥[1]

॥ श्री श्री १०८ श्री श्री परमहंस परिव्राजकाचार्य
स्वामी जी श्री दयानंद सरस्वती जी के चरन कमलों में

॥ पत्र आप का कविराज जी के नांम आया[2] वो श्री अधीसों[3] की सेवा मैं अर्पण किया गया कविराज जी के नेत्रों मैं पीड़ा है इस कारन सं पत्र उनसे नहीं लिषा[4] गया सो वुनके कहन प्रमांणं मैं लिषता हूं—श्री अधीसों के श्रीर[5] मैं षेद होनें की षबर मिलनें से कविराज जी यहां सीघ्र चले आये जयपुर नहीं जा सके—गोकरुणा निधी के बिसय मैं जोधपुर से तो सही हो ही गई और बूंदी किसन गढ़ से सही होकर फिर आ गई—अब रतलांम बीकानेर जैसलमेर लिषा गया है आसा है के सही होकर शीघ्र ही आजावेगा—ओर जयपुर से सही करवानां कुछ दुर्घट नहीं हैं जब यहां से सावकास होगा तभी जाकर लिषवा लेवेंगे सूचनार्थ लिषा है—ओर आपनें उदयपुर का बृत्तांत बैद्यक यंत्रालय मैं मुद्रित करानें के हेतु लिषा सो यथोचित मुद्रित करा दीजिये—ओर डाकदर भवांनी सिंह आदि के विसय मैं लिषा सो इसका विचार हो रहा है अभी निर्बलता विसेस हो जानें से ईलाज प्रारंभ नहीं हुवा प्रारंभ होने पर आप कों निवेदन किया जावेगा—ओर बृत्तांत फिर लिषूंगा इस समय मुझ कों सावकास नहीं है

१९४० चैत्र शुक्ला १४ सनिश्चर[6]
॥ आपका सेवक द्वारहट कृष्ण सिंह
बाहारठ किसन जी
उदयपुर

---

१. यह पत्र पं० चमूपति सम्पादित 'ऋ० द० का पत्र व्यवहार' भाग २, पृष्ठ ११०-१११ पर छपा है।

२. यह पत्र हमें नहीं मिला। बारहट किशनसिंहजी के इसी पत्र के आधार पर 'ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन' में पूर्ण संख्या ७८४, भाग २, पृष्ठ ८१३ पर पत्र-सारांश बनाकर छापा है।

३. अर्थात् महाराणा सज्जनसिंह।

४. इस पत्र में सर्वत्र 'ष' को 'ख' पढ़ें।

५. अर्थात् शरीर।

६. २१ अप्रेल सन् १८८३।

[पूर्ण संख्या ४१५] पत्र

अनुपम मुकुटमणी पूजनीक[1]
श्रीमद्दयानंद सरस्वती स्वामी प्रति

आपको कृपापत्र चैत्र विद २० मी को लीखो सहापुरा सें आयो[2] सो पंहुच्यो माथे चढ़ाय लीओ समाचार बांचकें अवर्णनीय आनन्द भयो. सेवकलाल का पत्र आपकु ठीक-ठीक नहि मिलते सो सेवकलाल कु जंजाल बहुत रहता है और बीच में दो तीन वख्त बाहार फिरनें कु काम प्रसंग से जाना पड़ा था. मेरे से पत्रव्यवहार रखने की आपनें ईछा जनाई सो मे सेवकलाल सें दश पट आलसुओं का सिरदार हूं. आपनें समाचार मंगवाय सो लिखता हुं।

१ घडी के लीये सेवकलाल सें पुछने पर बिदित हुआ की आपनें जील मेकर की घड़ी मंगवाई सो इहां तैयार न थी आजकल विलायत सें आने वाली थी आगई होगी तो भेजदी जायगी ऐसा ऊतर मिला.

२ समरथ दान नें रु १५० भेज कर टईप मंगवाय सो पूछने से जाना गया की उस्का काम चलता हें तैयार होने से भेज दीया जायगा दस बारा दिन में तैयार हो जायगा।

३ आर्यस्थान का काम थोडा थोडा चलता हैं तीन चार हजार का काम बाकी है सो सब कामदार आलसु होने सें पुरा नहि होता हमारे मित्रों से हम महिने में एक दो रकम लेते हैं परन्तु उस्से कुछ पुरा न होवे राओ साहेब‡ आदी सब एक चित्त सें लग जावे तो दीख पडता हें की रु ५००० तक हो जावे.

महाराजा ने जो दीये सो आपनें लीखा सो जान कर बहुत आनंद हुआ:—

ईहां को चैत्र का उत्सव बडा आनंद से हुआ और जो आए सो

१. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १, पृष्ठ २९७-२९८ पर छपा है।

२. यह पत्र हमें नहीं मिला। लीलाधर हरिदास के इस पत्र के आधार पर हमने 'ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन' पूर्ण संख्या ७८०, भाग २, पृष्ठ ८०९ पर पत्र-सारांश बनाकर छापा है।

‡अर्थात् रा०ब० गोपालराव हरि देशमुख।

सब प्रशन्न हुऐ. बाकी का हम ठीक ठीक चला जाता हैं सो जानोगे

मुंबई संवत् १९३९ के चैत्र सुक्ल १५ शनीश्चर[1]

ला० आपके सेवक **लीलाधर हरिदास** का साष्टांग डंडवत् प्रणाम[2]

—:०:—

[पूर्ण संख्या ४१६] पत्र-सूचना

[जयपुर समाज के पत्र][3]

पण्डित के लिये विज्ञापन का निर्देश ।

—:०:—

[पूर्ण संख्या ४१७] पत्र-सारांश

[मुंशी समर्थदान, प्रयाग][4]

१. ईश्वरानन्द मेरे पास प्रयाग पहुंच गया है ।
२. रामानन्द को लौटा दिया है ।
३. ·········सूचीपत्र बनाया है ।

ता० २३-३-१८८३ ।

—:०:—

१. संवत् का निर्देश गुर्जर पंचांग के अनुसार है । उत्तर भारतीय पञ्चाङ्ग के अनुसार सं० १९४० चैत्र शुक्ला १४ शनिवार तदनुसार २१ अप्रेल सन् १८८३ । शनीवार का पूर्णिमा का संयोग रहा प्रतीत होता है ।

२. अन्त में अन्य भाषा के अक्षरों में आठ पंक्तियां लिखी हुई है जो कि पढ़ी न गईं । म० मुंशीराम ।

३. ऋ० द० के बाबू नन्दकिशोर को लिखे पूर्ण संख्या ७९९ (भाग २, पृष्ठ ८२९, पं० १) के पत्र में जयपुर समाज के दो पत्र आने का उल्लेख है ।

४. इस पत्र का सारांश और पत्र लिखने की तारीख का निर्देश 'ऋ० द० के पूर्ण संख्या ७९४ के पत्र (भाग २, पृष्ठ ८२४, पं० ३) में हैं । ऋ० द० ने पत्र की तारीख २३-३-[१८८३] लिखी है । यह, २३-४ [१८८३]होनी चाहिये । यह भूल मुंशी समर्थदान की थी, अथवा पूर्ण संख्या ७९४ के पत्र-लेखक की थी, यह हम नहीं कह सकते ।

[पूर्ण संख्या ४१८] पत्र-सूचना

[राव राजा तेजसिंह जोधपुर का पत्र।[1]
सं० १९४० वैशाख बदी ३, रविवार।

—:०:—

[पूर्ण संख्या ४१९] पत्र-सूचना

मुंशी दामोदरदास, जोधपुर का पत्र][2]

—:०:—

[पूर्ण संख्या ४२०] पत्र

ओ३म्[3]

आर्य समाज फर्रुखाबाद
२–५–८३ ई०[4]

श्रीमत्सच्चिदानन्द स्वरूपाय परमगुरवे नमः

मान्यवर

कृपा पत्र आया[5] इति वृत ज्ञात किया, मान्यपत्र की प्रति पहुंची, हिसाब देख लिया ३००) रु० की हुन्डी इस पत्र के साथ रखदी है। पाठशाला की यथावत् व्यवस्था दूसरे पत्र में इस के साथ नत्थी है।

वैदिक-प्रेस में पं० रामनाथ को भेजा था इस अंतर में दूसरा मनुष्य वहां नियुक्त हो जाने से रामनाथ लौट आए[6]—यंत्रालय का

---

१. इस पत्र की सूचना और तिथि का निर्देश ऋ० द० के पूर्ण संख्या ८०१ (भाग २, पृष्ठ ८३०) के पत्र में है।

२. इस पत्र की सूचना ऋ० द० के पूर्ण संख्या ८०१ (भाग २, पृष्ठ ८३०, पं० ११) में रावराजा तेजसिंह को लिखे गये पत्र में है।

३. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्र व्यवहार' भाग १, पृष्ठ ३२५-३२६ पर छपा है।

४. वैशाख कृ० १० संवत् १९४० वि०।

५. यह पत्र 'ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन' के पूर्ण संख्या ७९१, भाग २, पृष्ठ ८२१ पर छपा है।

६. द्र० पूर्व पूर्ण संख्या ४१७ का पत्र सारांश (पृष्ठ ५०९)।

हिसाव किताव वही खाता दुरुस्त नहीं है। हमारी समझ में जब तक कोई सराफी पढा अच्छा प्रामाणिक मुनीव नहीं रहेगा तावत्काल हिसाव ठीक ठीक नहीं चल सकेगा, यह रुपये का विषय है इस में ठीक ठीक प्रवंध होना चाहिये आगे जैसी आप की सम्मति हो, उचित जान निवेदन किया, शेष सर्व प्रकार आनंद है। शाहपुरा के सुसमाचारों से वाधित कीजिए,[1]

कालीचरण

पूज्यतम नमस्ते, (इतः सेवाराम की ओर से)

हुन्डी ३००)रु० की वंवई की अपनी कोठी से, वालमकुंद परसराम पर भेजते हैं सो लेना, अभी मैं यहीं हूं, चिट्ठी देश की आया करती हैं। ला० निर्भय रामजी के आने में अभी देर है जब तक वे नहीं आवेगे, मैं यहीं रहूंगा **द: सेवाराम**

—:०:—

[पूर्ण संख्या ४२१] पत्र

ओम्[2]

सिद्ध श्री शाहपुर शुभस्थाने सर्व शुभ ओपमा सकल गुण निधान सर्व शास्त्र संपन्न श्रीमत् परमहंस परिव्राजकाचार्य्य वर्य्य त्वाद्यनेक गुण सम्पद्विराजमान श्रीमद्वेदविहिताचारधर्म्म निरूपक श्रीमत् स्वामी जी महाराज श्री श्री १०८ श्री श्री दयानन्द सरस्वती जी महाराज योग्य **अजमेर से द्विवेदी छगनलाल** का अनेकधा नमस्ते मालुम होवे अत्र कुशलमस्ति तत्रास्त्वेव अपरंच कृपा पत्र श्रीमत् का आया[3] जिस्से

---

१. कालीचरण रामचरण के इस पत्र का जो उत्तर ऋ० द० ने दिया, वह 'ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन' पूर्ण संख्या ८०९ भाग २, पृष्ठ ८३९ पर छपा है।

२. यह पत्र पं० चमूपति सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग २, पृष्ठ ५३-५४ पर छपा है।

३. यह पत्र हमें नहीं मिला। इसी पत्र के आधार पर हमने 'ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन' पूर्ण संख्या ७९८, भाग २, पृष्ठ ८२८ पर पत्र-सारांश छापा है।

निहायत् खुशी हासल हुई और श्रीमन् ने लिखा कि अब जब कभि हम मसूदे में आवें तब श्री दरबार कुं और तुमकों छ शास्त्र के मुख्य मुख्य विषय और मनुस्मृति के तीन अध्याय पढ़ाना चाहते हैं उससमय वहीं रहनां हो और निरन्तर पढना हो तो एक आध महीने में सब हो जावेंगे इस्का उत्तर लिखनां और यहां के श्री महाराजाधिराज ने मनुस्मृति का सप्तमाध्याय पढ़ लिया है दो दिन योग शास्त्र अभ्यास करने के लिये पढ़ कर कल अष्ठमाध्याय का आरंभ करेंगे आदि सो अरज है कि श्रीमत् की कृपा होगी तो पढनां श्री दरबार का और मेरा हो जावेगा श्री दरबार ने बहुत बहुत करके मुझ कों फरमाया है कि श्रीमन् को लखो कि अब दर्शन हुये को बहुत अरसा हो गया है कृपा करके शीघ्र पधारें सो कब पधारनां होगा लिखावें और ऐ श्रीमहाराजाधिराज के अब अष्टमाध्याय हो गया होगा ऐसे श्री महाराजाओं के पढने से आशा है कि संसार का बहुत् उपकार होगा परमेश्वर महाराज ऐसे गुणग्राहि श्रीमहाराजाधिराज को सदैव आनन्द में रखें और पहले पत्र श्रीमत् को फालगुन शुदि १२ को दिया था[1] जिस्में लिखा था कि शाहपुरा के बगतावरसिंह जी राज श्री बाई जी साहबां के संबंध के वास्ते आये बात चीत की अब बगतावरसिंह जी वहां आये हैं सो अरज करें होंगे दोनु सायबो में से एक कीसी का संबंध कर देने का विचार है सो आप इस बात का ख्याल रखें और जो हाल हो सो कृपा कर के लिखावें परन्तु इस्का जवाब श्रीमन् ने अब तक नहि भेजा इसलिये अरज है कि इस बाबत कृपा करके जलदि लिखावें और परमेश्वर की कृपा से यहां सब तरह से आनंद है यहां का कोई कार्य्य हो सो लिखावें।

संवत् १९३९ का वैशाष वदि ७[2]

[द्विवेदी छगनलाल]

—:o:—

१. यह पत्र हमें प्राप्त नहीं हुआ।

२. यहां संवत् १९३९ अशुद्ध लिखा है। सं० १९४० होना चाहिये। तदनुसार २९ अप्रैल १८८३। सम्भव है छगनलाल गुजराती होने से उसने गुजराती संवत् १९३९ का प्रयोग किया हो। अथवा लिखने में भूल हुई हो। आगे भी कुछ पत्रों में यही भूल उपलब्ध होती है।

[पूर्ण संख्या ४२२] पत्र

ओ३म्[1]

सिद्ध श्री शाहपुरा शुभ स्थाने सर्व शुभ ओपमा सकल गुण निधान सर्व शास्त्र संपन्न श्रीमत् परमहंस परिव्राजकाचार्य्य वय्यत्वाद्यनेक गुण सम्पद्विराजमान श्रीमद्वेद विहिता चारधर्म्म निरूपक श्रीमत् स्वामी जी महाराज श्री श्री दयानन्द सरस्वती जी महाराज योग्य अजमेर से द्विवेदी छगनलाल का अनेकधा नमस्ते मालुम होवे अत्र कुशलमस्ति तत्रास्त्वेवं अपरंच पहिले यहां मथुरा के राजा जी उदित-नारायण जी के भाई बाबू बलदेवप्रशाद जी आये थे और यहां हवेली पर ही ठहरे थे उन्होंने कहा था कि श्री स्वामी जी महाराज को हमारा नमस्ते लिख देना स्वामी जी महाराज मथुरा में आते हैं तब हमारे यहां ही ठहरते हैं और बहुत सी प्रशंसा की अब थोड़े दिन पेशतर चिट्ठी उनकी आई जिसमें लिखा कि श्री स्वामी जी महाराज को आपने चिट्ठी दी होगी[2] जवाब आया[2] होगा जवाब के मुतलअ करिये सो उनकी तरफ से आप को नमस्ते मालुम होवे और इनकूं आप अच्छी तरह से जानते होगे और इनके इलाका कितनाक है कैसे है सो लिखावें और कल यहां से पत्र रवाने किया जिसमें लिखा ही था और यहां का कोई कार्य हो सो कृपा करके लिखावें और जलदि पधारे

संवत् १६३६ का वैशाष वदि ६[3]

[छगनलाल द्विवेदी]

—:o:—

१. यह पत्र प० चमूपति सम्पा० 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग २, पृष्ठ ५५-५६ पर छपा है।

२. ऋषि दयानन्द ने पत्र दिया या नहीं ज्ञात नहीं हो सका। हमें पत्र नहीं मिला।

३. यहाँ भी स० १६४० चाहिये। तदनुसार १ मई १८८३। द्र०—पूर्व पूर्ण संख्या ४२१ का पत्र पृष्ठ ५१२ टि० २।

[पूर्ण संख्या ४२३] पत्र

श्रीमन्महाराज स्वामिन्नभिवादये[1]

भगवन्—आप का एक कार्ड आया समाचार लिखा सो ठीक है मैं अपना काम सचेत किया करता हूं। आप को भी मैंने एक कार्ड भेजा है उस में स्पष्ट अभिप्राय लिख दिया है अनुमान है कि अवश्य पहुंचा होगा। ऋ० के पत्रे छपने को और भाषा बनाने को पत्रों के लिये लिखा था सो अभी तक नहीं आये जो कदाचित् भाषा बनाने को पत्रे न भेजें तो व्याकरण छपने के लिये यथावकाश शीघ्रतया करूं परन्तु ऋ० के पत्रे छपने के लिये शीघ्र अवश्य भेजने चाहिये। जितने पत्रे आपने यगु० अ० १४ भेजे थे वे सब..........बना लिये भेजता हूं ४१६-से ४४७ तक। विशेष आज्ञा हो सो लिखिये

(ह० भी० श०)

[2]दयाराम—मासिक हिसाब और पुस्तको के बिक्री का और मा० वेदभाष्य का अंक और गोकरुणानिधि जो नई छपी है वह: और मुम्बई समाज मे से किसी ने करनेल आलकटसाहब कि खत किताबत छपवाने के लिये ये कागज भेजा है अङ्गरेजी का कि इस को तुम अपने यंत्रालय मे छपवाकर सब जघे भेजो और ।।)आन फी० पुस्तक वेचो सो यह कागज आप के पास मुलाजे के वास्ते भेजता हू के इसलिये आप का पत्र मेरे पा कोई नही आया है ना इसमेआप के हस्ताक्षर है मै विना आपकी आज्ञा कैसे छपवा सकता हूं जो आपकी आज्ञा छपने की होय तो आप इस कागज अङ्गरेजी पर हस्ताक्षर अपना करके यंत्रालय को लौटार दीजिये छापने को जव मै छपवा सकता हूं जो आप की इच्छा ना होय छपवाने की तो आप इस कागज को मुम्बई समाज को देदिजियेगा और आपने वल्लभदास की चिट्ठी देखलीनी होय तो आप कृपा करके लौटार दीजिये

ता० ४। मई-सन १८८२ ई०[3]

---

१. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १, पृष्ठ ४६-४७ पर छपा है।

२. पं० भीमसेन के उक्त पत्र पर ही अन्य अक्षरों में इस पैरे का लेख है। पैरे के आरम्भ में ही दयाराम का नाम है। इससे ज्ञात होता है कि यह लेख वैदिक यन्त्रालय के प्रबन्धकर्त्ता दयाराम का है। म० मुंशीराम

३. वैशाख कृ० १२ सं० १९४० वि०।

[पूर्ण संख्या ४२४] पत्र-सारांश

[मुंशी समर्थदान, प्रयाग का पत्र][1]

१. ईश्वरानन्द यहां से अन्यत्र चला गया है।

२. कम्पोजिटर को निकाल दिया।

३. जैनियों की पुस्तक का बण्डल भेजा है।

४. महाराणा उदयपुर के मान्य पत्र पर जो मैंने धन्यवाद लिखा है उसे भेज रहा हूं।

५. वैदिक निधि की सूचना पर नाम (?) छापना ठीक होगा।

—:•:—

[पूर्ण संख्या ४२५] पारसल-सूचना

[मुंशी समर्थदान, प्रयाग द्वारा भेजा गया][2]

जैनियों के पुस्तक का बण्डल।

—:०:—

[पूर्ण संख्या ४२६] पत्र

॥ ओ३म् ॥[3]

श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य्य दयानन्द सरस्वती स्वामिनां महाविदुषां चरणसरोजरजोऽहम्वन्दे

कृतशास्त्र विचक्षण वेदवरं वहुतेज प्रकाशक भाष्यदृढम्
क्षितिसूर्य्यवराजति धामशतं भवश्चितज्ञानगवुद्धिप्रदम् १
भुविभुसुरवन्दितदिव्यमते भजतस्तवकिन्नहि मुक्तिपदम्
दयानन्दसरस्वति पादयुगं प्रणमामिनिरन्तर भावमयम् २
शुभदायक भद्रसरोजरजः परिपूरणवांछित कामवनम्

---

१. इस पत्र की सूचना और विषयों का निर्देश हमने ऋ० द० के पूर्ण संख्या ८०५ (भाग २, पृष्ठ ८३५) के पत्र के अनुसार किया है।

२. इस की सूचना भी ऋ० द० के पूर्ण संख्या ८०५ (भाग २, पृष्ठ ८३६ पं० ५) के पत्र में है।

३. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १, पृष्ठ ३१ तक छपा है।

प्रणमामिनिरन्तरभावमयं दयानन्दसरस्वति पादयुगम् ३

कविभिरिडितं नृपतेः सुखदं मुकुटाञ्चितवंद्युतभाप्रभवम्
मणिचित्रितभासितसत्सुखदं प्रणमामिनिरन्तरभावमयम् ४

कुशलं यदितोटकवृत्तमिदं शरणेतवगच्छतुपत्रमलम्
परिव्राजगुरोजगतः परिधेसहजेरितमत्रलवापुरतः ५

वाण भांति श्लोक को श्रीमत्पठनविहेत
मत्युनमानदिवेक युत वदगतदीननकेत ॥

लोधियाना संज्ञकपुरतः पत्रं नदत्तं यतोहिदिनैकं निवासः

कृतोऽमृतसरोत्सवं द्रष्टुं तत्रतोऽगमम् अमृतसरमिदानीं लवपुरतः
पत्रंप्रेषितम् निघण्टुपुस्तकं मुद्रितञ्चेद्यदिप्रेषयतुमाचिरम्

मई ता० ६ सन् १८८३[1] सम्वत् १९४०

[सहजानन्द सरस्वती][2]

—:•:—

[पूर्ण संख्या ४२७] पत्र

श्रीमान् जगद्विहारी बिचरताम्[3]

दिन	समय	स्थल
श्रीनृसिंह जयंती	भाध्यान्ह	श्रीनाथद्वारा

"जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी"
जयंतु श्रीश चरणाः सर्वे मर्वैः समं सदा.

ईशेयथा चैकवंचः प्रयुज्यते तथैव चास्तां त्वयि माननोये ।
प्रयुक्तमेतद्बहुलार्थदं मे स्वामिन् दयानंद नमो नमस्ते
यद्यप्ययं नास्तिभक्तचकृतीनां पात्रोऽथवा नेत्रपथं प्रयातः ॥
तथापियुष्मद्गुणदर्शनैर्वा आकर्णनैर्यः परिपूज्य बुद्धिः

१. वैशाख कृष्णा अमावास्या, सं० १९४० वि० ।

२. पत्र पर सहजानन्द सरस्वती के हस्ताक्षर नहीं है। परन्तु सहजानन्द सरस्वती के अन्य पत्रों के अनुमार यह पत्र सहजानन्द का ही है।

३. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १, पृष्ठ १०९-१११ तक छपा है।

काश्यां दृष्टतनूः पूर्वं मोहमय्यां च दर्शने ।।
संप्रत्युत्कोपि भावत्कपतवन्मूर्त्यदर्शनः ।।३।।
स्वतोपिध्याय योगेन पुरुषार्थार्थदर्शनः ।।
भवन्मूर्ति ध्यायमानः सदा भाष्यादि लोकते ।।
[1]मोहनलालवचोभिः संस्मृतिमेवं प्रयाति नित्यंयः ।।
स्वस्मृतिपात्री भवने प्रार्थयते स्वांत (भवता मितिशेषः) कोणतः स्थाने ।।४।।
भवेत्कदातत्सुदिनं सुखाय यस्मिन्कृपास्यात् भवतां तु दर्शने ।।
हरेस्तयावः, प्रणयानुबद्ध विद्यावतां विद्वद्वर सूरिणां भोः ।।५।।
सदा कृपापत्रद्त्तैः दीनदामोदरस्य मे प्रष्टव्यं कुशलं चायं बोधनोयस्तथात्मनः ।।६।।[2]

श्रीमदीयः
दामोदर शास्त्री

अनुवाद

[१]

जिस प्रकार ईश्वर में एक वचन का प्रयोग किया जाता है, उसी प्रकार मेरे कल्याण करने वाला एक वचन आप में प्रयुक्त हो, हे स्वामि दयानन्द, तुझे नमस्कार है।

[२]

यद्यपि आपने इस को (मुझे) कभी सुना नहीं है, और नाहीं कभी देखा है, तथापि आपके गुणों के देखने या सुनने से ही में (मुझ में) आप के लिये पूज्य बुद्धि उत्पन्न हो गई है।

[३]

काशी में इसने आप के शरीर को देखा है और यद्यपि मुम्बई में भी यह [मैं] आप की मूर्ति को देखना चाहता है तथापि देख नहीं सका जैसे आप के मन में मूर्ति का दर्शन नहीं होता।

---

१. उदयपुरस्थ मोहनलाल विष्णुलाल पण्ड्या।

२. यद्यपि पत्र में तिथि का निर्देश नहीं है तथापि पं० शुकदेव के वैशाख शुक्ला १ सं० १९४० (७ मई १८८३) के पत्र के "दामोदर शास्त्री २०) रु० मासिक पर आपके पास आने को प्रसन्न हैं" लेख से विदित होता है कि दामोदर शास्त्री ने यह पत्र ७ मई के आस पास ही लिखा होगा।

[४]

[तथापि] अपने ध्यान से ही मैंने, पुरुषार्थ के साध्य रूपी आप के दर्शन को ही पा लिया है, आप की मूर्ति का ध्यान करता हुवा सदा वेदभाष्यादि पढ़ा करता है [मैं पढ़ता हूं]

[५]

आप मोहनलाल की बातों से नित्य याद आते रहते हैं, मैं आप के हृदय में थोड़ा स्थान चाहता हूं जिससे मैं भी याद आता रहूं।

[६]

वह सुख देने वाला कौन सा शुभ दिन होगा जिस दिन, आपके दर्शन के लिये, इस स्नेह से आप में लगे हुवे जन में महाविद्वान् आप की और परमात्मा की कृपा होगी।

[७]

सदा कृपा कीजिये, पत्ररूपी दूत से इस दीन दामोदर का कुशल पूछते रहिये, और इस अपने [जन] को समझाते रहिये।

भवदीयः
दामोदर शास्त्री

—:•:—

[पूर्ण संख्या ४२८] पत्र

ओ३म्[1]

वैशाख शुक्ला १[2]

श्रीमत् स्वामीजी महाराज नमस्ते ? दामोदर शास्त्री २०) रु० मासिक पर आपके पास आने को प्रसन्न हैं आप आज्ञापत्र भेज दीजिये हाजिर हो जायंगे—

सालिग्राम जी शा० ने कहा कि काशी में तैलंगी बिश्वनाथ दंडिभट्ट आपकी इच्छानुकूल हैं आज्ञा हो तो बुला लिये जावें—मैथिलों में भी दो चार होंगे—कहार मातवर, दृढ़ नसीराबाद से भेजा है यदि अब तक वहां न पहुंचा हो तो लिखें कि मैं जाकर फिर रवाने करूं—

---

१. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १, पृष्ठ २०३-२०४ पर छपा है।

२. सं० १९४० तदनुसार ७ मई १८८३।

गोपकार[1] विषय में अब तक क्या हुआ—तथा आर्य्य विश्वविद्यालय[2] के प्रचार में—शेष पीछे

आपका अनुचर
शुकदेव

—:o:—

[पूर्ण संख्या ४२९] पत्र

॥ श्री ॥[3]

श्रीमत् परम हंस परिव्राजकाचार्य
स्वामी जी महाराज श्री १०८ श्री श्री
दयानन्द सरस्वती जी के चरन सरोरुह मैं—

१९४०

॥ मनहर छंद रुपकालङ्कार

॥ बिकट बिसाल कूल मिलते फिलाफीरु
जामैं भौंर जोर अति जयनीं जनावते ॥
मकर तिमंगलादि होय कैं इंजीलवारे
कुरांनी पुरांनी दुष[4] दुस्सह दिषावते ॥
दयानंद रसनां रसाल सत्य लालन की
जोन कलिकाल बीच क्षेपनी लगावते ॥
आयगा अपार मत कौलन प्रवाह बीच
वेद धर्म नौका बूढि कैसें पार पावते ॥ १ ॥

॥ आपका शुभाकांक्षी सेवक द्वारहट कृष्णसिंह

॥ दोहा ॥ व्योम वेद निधि इंदु सक विक्रम उत्तर भांन ॥
तिथि तृतिया माधव विशद कियो कृष्ण निर्मांन ॥ २ ॥
(सं० १९४० वैशाख शुक्ला ३)[5]

---

१. अर्थात् गोरक्षा के विषय में।

२. इस से विदित होता है कि श्री स्वामी जी महाराज "आर्य विश्व-विद्यालय" भी खोलना चाहते थे।

३. यह पत्र पं० चमूपति सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग २, पृष्ठ ११२ पर छपा है।

४. यहां सर्वत्र 'ष' को 'ख' पढ़ें।

५. ९ मई सन् १८८३।

[पूर्ण संख्या ४३०] तार

[जवाहरसिंह, लाहौर का तार][1]

—:o:—

[पूर्ण संख्या ४३१] पत्र

ओम्[2]

No.........११०

ARYA SAMAJ OFFICE, LAHORE.
Dated ११ मई सं: १९४० वि० 1883.[3]

To,

श्री १०८ मत परमहंस प्रविराजकाचार्य
श्री १०८ पं० दयानन्द सरस्वती स्वामीजी ।।
शाहपुरा, देश मेवाड़ राजस्थान

Sir,

इससे प्रथिम तार[4] के द्वारा लिख चुका हूं अब पत्र द्वारा अपने आशय को प्रगट करता हूं ।।

जब से मैं आर्य्य भाषा में पत्र विवहार करने लगा हूं तब से कोई न कोई असी भूल रह जाती है जिसको पीछे देख कर शोक होता है ।। मेरा तातपर्य येह नही कि लिखने में अशुद्धयें ही रह जाती हैं किंवा लिखने में तो रहेंहींगी प्रन्तू भावार्थ में भी रह जाती देख कर शोक होता है ।। यद्यपि येह मन में आता है कि यावत आर्य भाषा में पंडित न हो जावें तावत पत्र विवहार इंगलिश वा उरदू आदि में रख लिया जावे ।। तथापि येह बात अयुक्त जाण कर इसी भाषा में लिखना उचित प्रतीत होता है ।। मुझे असा स्मरण होता है कि मैंने प्रथिम

---

१ इस तार की सूचना जवाहरसिंह के अगले पूर्ण संख्या ४३१ के पत्र के आरम्भ में (इसी पृष्ठ पर पं० १४) मिलती है ।

२. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १ पृष्ट १३०-१३५ तक छपा है ।

३. वैशाख शुक्ला ५, सं० १९४० वि० ।

४. यह तार हमें उपलब्ध नहीं हुआ ।

पत्र में लाला शालग्राम का कलकत्ते में जाना स्वकार्य निमित्त से लिखा था[1] परन्तु उस लेख में कुछ भ्रम रह गया ॥ पुनः ॥ चैत्र शुक्ल ३ मंगल का लिखा पत्र जो आपका[2] मेरे पास आया उससे विदित होता था कि स्त्रियों के विषय में आप उससे पहले भी लिख चुके हैं, उस पर मैंने अपने पत्र में लिख दीया था कि ऐसा पत्र आपका कोई मेरे पास नहीं आया परन्तु फिर आपके अन्त्यम् पत्र से अनुमान होता है कि कोई टुकड़ा कागज का उससे पूर्व्व पत्र में आपके लफाफा बंद करने के समय रह गया होगा ॥ नहीं तो आपका यह लेख कि (तुमारे पत्रस्थ दो बातों का उत्तर तुमने नहीं दीया, एक तो लाला मूलराज के भाई आदि आदि) ऐसा न होता जिसका अर्थ यह है कि आपने तो मुझे लिखा था परन्तु मैंने उसका उत्तर न दीया ॥ अब वास्तव में मुझे श्रीराम के विषय में इससे प्रथम कोई आपकी आज्ञा नहीं आई ॥ नहीं तो मैं अवश्य लिखता येह सारी खराबी मेरी अशुद्धियों के कारण से होगी ॥ पत्रस्य तात्पर्य प्रगट करने योग्य सरवक्त नहीं होते इससे किसी से शुद्ध भी नहीं कराते ॥ अर्थात जैसा आता है वैसा लिख देता हूं ॥

मेरे पूर्व्व पत्र में येक अशुद्धि यह रह गई कि लाला रतनचन्द बेरी स्थान स्थान में अपने नाम के पीछे F. T. S. अर्थात थीयोसोफीकल सोसाइटी का सभासद कहलाता है ॥ ऐसा नहीं बाकी सब हाल ठीक है ॥ यह बात ल: जीवनदास जी से विदित हुई ॥

दोनों पत्र जो आपके पास आते हैं वह शालग्राम के हैं मैं ऐसा लिख चुका था ॥ परन्तु जब दास की लिखा पढ़ी हो जायगी तो वह समाज के ही समझे जायेंगे ॥ "देशोपकारक व रीजिनरेटर"

लाला रतनचन्द बेरी ने लाहौर आर्यसमाज के साथ जो अनुचित विवहार कीया है वह आप पर विदित था इस पर भी न

१. द्र०—पूर्व पूर्ण संख्या ३९६, पृष्ठ ४५०, पं० ५ तथा पूर्ण संख्या ४११, पृष्ठ ४९८, पं० ११।

२. यह पत्र हमें उपलब्ध नहीं हुआ। जवाहरसिंह के इसी पत्र के आधार पर 'ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन' में पूर्णसंख्या ७८३, भाग २, पृष्ठ ८१३ यह 'पत्र-सारांश' बनाकर छापा है।

जाणें कि यूं वेदभाष्य के ऊपर उलती छाप दी गई ॥ यहां सरव्व साधार्ण को उसका शोक है ॥ लाला समर्थदान से इसका ज्वाब मांगा गया है ॥

आपके पत्र के उत्तर लिखने में बहुत विलंब हो गया जो लाला रामशरणदास प्रधान आर्यसमाज मेरठ अैसे बीमार हैं कि प्रान का रहना भी दुर्घट सा प्रतीत होता है ॥ तार पर तार चली आती है अर चली जाती है इससे बहुत शोंक हो रहा है ॥ अैसा "भद्र पुरुष" "आर्य" "सरब गुण युक्त" बहुत ही कठनता से मिलेगा "ईश्वर उन को बचावे" आनन्दलाल जी मेठ्ठ से यहां डाकट्रों को बुलाने आये थे पीछे से तार ओर आ गई कि डाकट्रों को न लाओ वापस चले आओ ॥ इससें ओर भी दुखी हो रहे हैं ॥

मुन्शी इन्द्रमणि भी बैठे बैठे निन्दत विवहार करने लग पड़ा है ॥ लाला रामशरणदास और आप येह दास तीनों ने उसके मुकदमे में बहुत मदद दी थी जिसका बदला उसने अब दीया है आर्य्य देश की दुरदश अैसे पुरुषों ने ही कर रक्खी है। क्या करें पं० उमराउसिंह रुड़की सें मुझ को लिखते हैं कि उस पर तुम नालिश करदो ॥ परन्तू मेरी सलाह नही ॥ आपकी इसमें स्मती क्या है ॥?॥

स्वामी सहजानन्द सरस्वती जी यहाँ आये हूये हैं जो कुछ यहां हो रहा है मैं जवानी आकर कहूंगा ॥ अब संक्षेप से मुख्य वातों का उत्तर लिखता हूं ॥

मूलराज के भाई श्रीराम एम. ए. M. A. नहीं हैं ॥ अर न बी. ए. B. A. किन्तू बी. ए. B. A. की प्रीक्षा आगामी बरष को देवेंगे ॥ यह समाज उनको उस पद के योग्य नही समझती है ॥ एम. ए. M. A. हैं तो बहुत पर हमारे मतलब के अर्थात आर्य्य थोड़े हैं वह अपनी अपनी जगह युक्त हैं आने वाले नहीं ॥ इसकी तलाश है ॥ मूलराज, द्वारकादासादिकों को भी लिख भेजा है कि वह भी तलाश करें ॥ क्या बी. ये. को आप स्वीकार कर लेवंगे ॥?॥

सब ओवरसीयर के वासते पं० उमराउसिंह को लिखा है आप का पत्र भी उनके पास पहुंचा है ॥ यह काम उनके जिम्मे दीया गया है ॥ हमको भी तलाश है पठित स्त्रीयें मिल तो गई हैं उनके आचर्ण की प्रीक्षा बाकी है उसका मासिक २५) वा ३०) रोक का होना चाहये ॥ वह हमारी अपनी तजवीज है ॥

रहा अन्तरंग मन्त्री सो पं: उमरावसिंह को भी लिखा वह भी न आ सके अन्य कई पुरुषों को भी कहा सब मासिक थोड़ा जाण कर नही आते मैनें भी अपने संबंधीओं से कहा कि मुझ को जाने दो परंतू माता पिता का यह कथन है "कि ईश्वर ने घर में सब कुछ दीया है ५०) मासिक भी मिल जाते हैं ॥ फिर इतनी दूर क्यूं जाते हो" ॥ उपकार अपकार को वह समझते नहीं आर्य्य धर्म्म को सराहते नहीं ॥ पर सारी लाहौर समाज अर अन्य समाजस्थ मन्त्री मुझको लिखते हैं कि तुम जरूर चले जाओ आर्य्य धर्म्म राजस्थान मे खूब फैलेगा ॥ पिछली सभा में मैंने ऊंचे स्वर से कहा कि कोई निकले वा मेरे जाने में किसी को शंका हो तो प्रधानादिकों से कहे सभ ने मेरे लिये स्मती दी ॥ पं० उमरावसिंह जी ने मुझे लिखा हे कि तुम चले जाओ आनन्दमल जी की भी यही स्मती है ॥

इसकी इत्तला मैंने तार[1] में आपको दी थी कि यहां मेरा जाना सभ स्वीकार करते हैं आप अपनी अंत्यम् समंती लिख भेजिये सो अभ मैं आपके अम्रतवत वचनों सें पूरत पत्र को आदर सहत स्वीकार करता हूं अर शाहपुराधीश की सहयोग्यता वड़ी प्रसन्ता पुरब्बक ग्रहण करणे की इच्छा प्रगट करता हूं ॥ तार द्वारा मुझ को विदित करदें कि कब तक आजाऊं ॥ हां १५ दिवस आने सें प्रथिम विज्ञापन आना चाहये ताके तयारी की जाये ॥ अर मेरी इच्छा है कि जाती बेर मारग में व्याख्यान देता जाऊं ॥ आगे आपकी जैसे आज्ञा हो वैसे करूं ॥ गोरक्षा के लिये जो बहुत से हस्ताक्षर इधर उधर हैं उनको इकत्र करना उचित है या किया, सभ नमस्ते कहते है ॥ अलं ॥

आपका दास—
ज्वाहरसिंह ॥ मत्री ॥

—:o:—

[पूर्ण संख्या ४३२] पत्र-सूचना

[लालजी बैजनाथ का पत्र शाहपुरा भेजा गया][2]

—:o:—

१. पत्र के आरम्भ में निर्दिष्ट तार से ही अभिप्राय ज्ञात होता है।

२. लालजी बैजनाथ के दो पत्रों का शाहपुरा भेजने का उल्लेख अग्रिम

[पूर्ण संख्या ४३३] पत्र

उं=श्री[1]

बंबै से संवत् १९४० वैषाख सुद ९ मंगलवार[2] आश्रम सायेपुरा-माहा शुभस्थाने

श्री मद गुरु-सत्यवेद धरम प्रकास कर्तार=प्रसीध श्रीमहान् स्वामी जी दयानन्द-सरस्वती जी की पवीत्र सेवा

गौ आदि प्राणी-रक्षण के प्रयोग, बीचे[3] में मैं आप के पास-उदेपुर-आता था वहां-सें-कानपुर अदालत में मुकदमा लडने कुं जाना हुवा जब आपकु मे सुवीपत्र लीखा था उसी की पौंच आप कानपुर आर्य-समाज पे भेजी[4] तो मंत्री ने मेरेकुं बंचाई और आप के हस्ताक्षरकुं बोहोत प्रेम सें मैं डंडवत कीया और उदेपुर सीघ्र आने का बीचार था परंतु कचेरी में चार मंने लग गहे पीछे फेसला हुवा जब कानपुर सें नीकल के चैत्र सुदी १२ के दीन मैं अजमीर पौंच कं मंत्री मुंना-लाल के घरकुं दो बषत सायेपुरे की रस्ते की सलाः पुछीवेकुं गया. तोभी मंत्री मीला नही और बहोत गरमी पडने से. सरीर प्रकृती फीर गही. जब अजमीर सें अेकदम. चैत्र सुदी १५ के दीन मैं बंबै आय पौंचा. अब सरीर में आरांम है=और गोरक्षण बाबत सीघ्र काम करनकुं मेरे प्राण. तलप रहे है. मगर थोडी वर्षा पडनें पीछे. श्रावण महीनें में, आपकु मीलवे की मैं ईछा रखता हों—

अब अपना अस्थांन. सायेपुरे में है. सो वर्षारतु में भी. ही हां ही होयगा. की. ओर ठीकांने. नीवास होयगा. सो सबका. ठोकाना. पता. आपकी तरफ सें. लीख आना चाहियें=

बंबैकी. आर्यसमाज की. बीवस्था. बाहोत कमजोर. देख कें. बोहोत. पश्चातप हो रया हे. सो समाजकुं. अछी स्थीती में लानी

पूर्ण संख्या ४५६ में मिलता है। इनमें से एक अग्रिम पूर्ण सख्या ४३९ (भाग ३, पृष्ठ ५२८)पर छपा पत्र है। दूसरा इससे पूर्व भेजा गया प्रतीत होता है।

१. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १, पृष्ठ २९५-२९६ पर छपा है।

२. १५ मई सन् १८८३।

३. इस पत्र में सर्वत्र 'ष' को 'ख' पढ़ें।

४. यह पत्र हमें उपलब्ध नहीं हुआ।

चाहीयें. ग्रेसे काम वास्ते ग्रापकुं ग्रवश्य लीखने चाता हौं—ग्रोर ग्रापकुं. फुरसद नहीं होवेगी तोभी. ईस पत्र की पौंच. ग्राप सीधी. डांक में मेरे नामकी लीख भेजना. ठीकाना. बंदरघर. मंडी बजार में. ठकर. ईबजी. उमरसी. की, दुकांन में पौचे. ईसमुजब. ठीकाना लीखने से पत्र सीघ्र पौच सकेगा. ग्रोर कभी मंत्री सेवकलाल के पत्र में. मेरे पत्र का हाल. ग्रोर पौंच लीखोगे तो. मेरेकुं बोहोत, तकलीफ होयगी. सो केसेंकी सेवकलाल के. घरकुं. दीनघली जावे. ग्रेसे पांच. ग्राठ दीन तक. चाकरी का कांम छोड कें जावे. ग्रब कोई वषत मीले तोभी. दो चार मीलटसें ईनकुं. ग्रधीक फुरसत मीले. सो मेरे देखोवे में नहीं ग्राती ग्रैसी ग्रपुरणता सें. कोई कार्य सीध नही हो सकता. ईसी बसते ग्राप कृपा करकें. मेरे नाम. पर पौच डाक में भेजोगे तो जलदी सें. सब बात मेरे जानवे में ग्रावेगी. तो उन की पौंच भी. सीघ्र लीखवे में ग्रावेगी ग्रोर ग्रापके प्रताप सें. सब कार्य सीघ्र. सीध हो सकेगा—येही मेरी प्रार्थना का ग्राप स्वीकार करोगे—ग्रोर पत्र की. पौंच लीखोगे—

लिखितम्—जोरीलाल जी कल्याण जी के डंडवत बांचने

—:o:—

[पूर्ण संख्या ४३४] पत्र-सूचना

[मुंशी दामोदरदास का पत्र।][1]

—:o:—

[पूर्ण संख्या ४३५] पत्र-सूचना

[बलदेव का शाहपुरा सें दिया गया पत्र।][2]

—:o:—

१. इस पत्र की सूचना ऋ० द० के वैशाख सुदि १३ सोमवार सं० १९४० (=१९ मई १८८३) के पूर्ण संख्या ८१६ (भाग २, पृष्ठ, ८४७, पं० ४) में मिलती है। वहां ता० २७ लिखी है, १७ होनी चाहिये, क्योंकि ऋ० द० का पत्र १९ मई १८८३ का है।

२. इस पत्र का संकेत अग्रिम पूर्ण संख्या ४७९ (भाग ३) में मिलता है।

[पूर्ण संख्या ४३६] पत्र

ओ३म्[1]

स्वस्ति श्री सर्वोपकारणार्थ कारुणिक परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री २१ मद्-दयानन्द सरस्वती जी महाराज के चरणार विन्दों में महाराज राजाधिराज साहिपुरेश की बारम्वार नमस्तेस्तु—वैदिक धर्म उपदेशक मंडली में मेरी ओर से एक उपदेष्टा रहै—जिस के व्यय के वास्ते एक १) मुद्रा नित्य-प्रति मासिक ३०)रौप्य यहां से निरन्तर आज की तिथि से प्राप्त होते रहैंगे—सो वैदिक धर्म स्थापन पुनः पाषंडादि खंडन करते रहैं—

सं० १९४० वि० जेष्ठ कृष्ण ४[2]—

हस्ताक्षर नाहरसिंहस्य

—:o:—

[पूर्ण संख्या ४३७] पत्राशय

[मान-पत्र][3]

॥ ओ३म् ॥[4]

स्वस्ति श्री सर्वोपकारणार्थ कारुणिक परम हंस परिव्राजकाचार्य श्री २१ मद्दयानन्द सरस्वती जी महाराज के चरणारविन्दों में महाराजधिराज साहिपुरेश की बारम्बार नमस्तेस्तु—अप्रंच यहां आपका विराजना सार्ध द्वय मास पर्यंत हुआ तथापि आप के सत्यधर्मोपदेश के श्रवण से मेरी आत्मा तृप्त न हुई—आशा थी कि आप ग्रीष्मान्त अत्र स्थित होते—परन्तु योधपुराधिशों की ओर से दर्शनों की और वेदोक्त धर्म उपदेश ग्रहण की पुनः सत्या चरण-असत्य का त्याग और

१. यह पत्र पं० चमूपति सम्पादित 'ऋ० द० का पत्र व्यवहार' भाग २, पृष्ठ ३२ पर छपा है।

२. २६ मई सन् १८८३।

३. अधो मुद्रित मान-पत्र शाहपुराधीश नाहरसिंह ने शाहपुरा से जोधपुर जाने के समय ऋ० द० को अर्पित किया था।

४. यह पत्र पं० चमूपति सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग २, पृष्ठ ३३ पर छपा है।

आपके मुखार बिन्द से श्रवण करने की अभिलाषा देख के आपने वहां पधारना स्वीकार किया और भवच्छरीर भी क्रोड़ों मनुष्यों के उपकारार्थ प्रगट हुआ है यह समझ के मेरी भी सम्मति यही हुई कि आप का पधारना ही उत्तम है—यही समझ के यहां विराजने की प्रार्थना नहीं की आशा है कि कृत्य कृत्य करने के निमित्त पुनरागमन करेंगे—सं० १९४० वि० जे० कृ० ४[1]

ह: नाहरसिंहस्य

—:o:—

[पूर्ण संख्या ४३८] पत्र

॥श्री गोपाल जी ॥ श्री राम जी[2]

सीध श्री जोधपुरे गढ माहर दुरंग सरब ओपमा बीराजमान लायक स्वांमी जी माराज श्री ४ श्री दयानन्द सरस्वती जी जोग्ये मसुदासु सेवगण बहादरसिंघ ली पगे लागणो बंचावसी अठाका स्मंचार श्री जी का प्रताप सु भला छै आपका स्दा भला चाहीज आप मांरे गणी बात छो आप स्वायं दुजी बात न्ही स्दा कृपा म्हैर वांनगी रषावो[3] छो जीसु वसेष रषावसी अप्रंच कागद आपका आयो[4] समंचार बांचा आप लीपी के रुपायेली का असटेसन से षीरली[5] का ही टिकट लिया था ईसलिये के मसुदा कुं अवसिही जांणा होगा परंतु वांहां सवारी मोजुद न्ही पाई तब अजमेर कुं आंणा होगया अब फेरे ईदर आंणा होगा जब मसुदे आंणा हो गा सो अठासु तो स्वारी का बदोवस्त तथा अठै सबतरहै की तैईयारी करादीवी ही परंतु आदमां

---

१. २६ मई सन् १८८३।

२. यह पत्र पं० चमूपति सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १, पृष्ठ ७५-७६ पर छपा है। ३. इस पत्र में सर्वत्र 'ष' को 'ख' पढ़ें।

४. यह पत्र हमें नहीं मिला। राव बहादुरसिंह के इसी पत्र के आधार पर हमने 'ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन' पूर्ण संख्या ८२२, भाग २, पृष्ठ ८५१ पर पत्रांश छापा है।

५. 'षीरली' का दूसरा नाम 'बरल' भी था। द्र०—'ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन' पूर्ण संख्या ८२१, भाग २, पृष्ठ ८५१, पं० १। इसका साम्प्रतिक नाम 'विजय नगर' है। यह अजमेर,—चित्तौड़ गढ़ रेलवे पर है। यहीं से मसूदा जाने का मार्ग है।

की बोहोत गलती रही के वो असटेसन पर हाजर वषत रेल के आंने पर नै रहे बडे अपसोच की बात है के आप सैं मीलना न्ही हुवा अब परमेश्वर वो दीन जलदी करै सो आपसैं मीलना होवैगा ओर आप आछां रहे सी डीलां कु सादन रषायसी ओर अठै सारी त्रहै कुसी छै अठा की तरफ सु कुसी रषावसी ओर अठा सारु काम काज हवै सु लीषावसी अठै आपकी हुकम छै सम १९३९ का ज्येष्ठ वद ८[1]

मारी पगे लागणो मालम होसी आप बडा प्रसन्न रहसी डीलां को सारान रषासी बडा अपसोच है की आपके द्रसण नही हुये अब दो तीन महीने पर द्रसण नही हुय अब दो तीन महीने पर द्रसण होंगे दो बरस हुये द्रसणां की पुरी अवलैषा लाग रही थी ईस्वर आधीन फीर दो मीहीना की देर हुई इन दीनां मेरे सरदी से जुर की बड़ी आसलेसा रही नहो तो व्यावर मा मीलता अबां इस्वं की कृपा से सरीर अच्छा है आप कसी तरां की चीनता नही कीजिये में षेयल करता हु आप बडे प्रस्न होगे ईस्वं आको प्रस्न रष जोधपुर पहुच कर कृपा पत्र दीजिये।

[बहादुरसिंह][2]

—:०:—

[पूर्ण संख्या ४३९] पत्र

॥ श्री ॥[3]

श्रीमद्‌जगतगुरु परमहंसपरिव्राजकाचार्य श्रीमद्‌दयानन्दसरस्वति जी के चरणारविंद मे सष्टांग नमस्ते पौचे गांव राज्यधानी शायपुरा जील्ला मेवाड आपकु मालम होवे: के विठल: ब्राह्मण: कि चाकरि कि पगार (का: रुपिया च्यालिस ४०) शेवकलाल के पास से दिराणेका आप कि आग्यापत्र हम कु मिल्या था[4] सो सेवकलाल कु हम ने कहा के रुपये विठल कु देहो: जद बोल्या अच्छा परंतु आज तक दिया नहि: ओर हम तो मादगी से बहोत बिमार रहे अब आप कि क्रिपा से अछे हे सो विठल रोज हमारे पास आत्ता हे वास्ते आप कृपा कर

१. यह- संवत् १९४० होना चाहिये। तदनुसार २९ मई सन् १८८३।

२. अन्त में हस्ताक्षर नहीं हैं

३. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १, पृष्ठ २८०-२८१ पर छपा है।

४. यह पत्र हमें नहीं मिला।

के रुपे का मनिग्राडर[1] करके हमारे नाम पर भेजो ग्रोर जलदि से भेजो: सेवकलाल छापखाना प्राग[2] के उपर रुपये एक हजार से जास्ती बाकि जडि हुई केत्ता हे ग्रोर रुपये दो हजार समाज के उपर बाकि केत्ता हे इस्कारण से रुपये देत्ता नइ हे ग्रोर समाज का मंदिर ग्रटक रहा हे उपर से बरसाद ग्राइ हे: सो खरच वगर काम ग्रटक्या हे सो हमारा बिचार एसा है कि महाराज राणाजी महाराज सायपुरा इन से मदत्त कुछ मिल सके तो कोइ ग्रछे ग्रादमी कु ग्राप के पास भेजे इस्का खुलासा लिखना संवत् १९४० ज्येष्ठ बदि ८[3] नौमे लालजी वैजनाथ इन की तरप से ये पत्र पौचे

। लालजी वैजनाथ ………

—:०:—

[पूर्ण संख्या ४४०] पत्र

लाहौर ग्रार्य्यससाज[4]
३० मई सं० १८८३[5]

श्री १०८ स्वामी जी महाराज ।। नमस्ते

गत रात्री को ग्रन्त्रंगसभा का जलसा हुग्रा ।। पहले लाला सांई दास जी ने मेरी ३ वा ४ बरस की समाज सेवा की बहुत प्रशंसा की ग्रर लाला मदनसिह्ह जी ने उस की प्रोंढता की ।। पश्चात इस पर ऐक प्रशंसा पत्र लिखकर समाज पुस्तक मे लिखवा दिया गया तथा लाला मदनसिह जी को ग्राज्ञा हुई कि वह इस प्रशंसा पत्र की ऐक प्रति श्री १०८ स्वामी जी महाराज के पास भेज देवों। यह भी समाज में निश्चय हूया कि लाला साईदास जी (जो ग्राज ग्रम्रतसर में किसी संबन्धी के विवाह पर जाते हैं) ग्रपने हस्ताक्षर का ग्रधिकार लाला

१. ४० रु० मनीग्रार्डर के लिये 'ऋ० द० के पत्र ग्रौर विज्ञापन' पूर्ण संख्या ८३५ (भाग २, पृष्ठ ८६०) देखें।

२. ग्रर्थात् वैदिक यन्त्रालय प्रयाग। ३. २६ मई सन् १८८३।

४. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्र व्यवहार' भाग १, पृष्ठ १२५-१२६ पर छपा है।

५. ज्येष्ठ कृ० ९ सं० १९४० वि०।

जीवनदास को देवें जैसे अन्य समाजक विवहारों में होता है आप के पत्र न पहुंचने के कारण यही मान्य पत्र समझा गया, मैं परसो चल दूंगा ॥ अवकाश न होने से कारड लिख भेजा है ॥

आप का दास
ज: सि:

—:o:—

[पूर्ण संख्या ४४१] कार्ड-सारांश

[दुर्गा चरण आदि (मुरादाबाद) का पत्र]

प्रधान और पुस्तकाध्यक्ष को जो आर्यसमाज के उद्देश्यों में विघ्न करने वाले थे, आर्यसमाज से पृथक कर दिया है।[1]

—:o:—

[पूर्ण संख्या ४४२] पत्र

ओं[2]

सिद्धश्री ७ सर्वोपमेययोग्य पूज्यपाद जगद्गुरु श्रीमत्परमहंस परिव्रजकाचार्य स्वामी दयानन्द सरस्वती चरणार्विलोष्वितं सहजानन्द सरस्वतीकृत प्रणतीतयं समुलसन्तु आप के चरण कृपा से आनन्दित हैं आप तो आनन्दित स्वरूप है छावनी[3] में तो पांच व्याख्यान दे चुके हैं और कल्ह से शहर फीरोजपुर में व्याख्यान देता हूं यदि आप के पास निरूक्त निघण्टु छपकर आ गया हो तो मेरे पास भेज दीजिये नहीं छपा होय तो आप कृपा कर शीघ्र ही छपाकर मेरे पास भेज दीजिये इस के विना मेरे को वडा हर्ज है और सत्यार्थप्रकाश छपा या नहीं सो लिखना इहां मुझ को बहुत मनुष्य पूछते हैं और चौधरी साहब की प्रार्थना है कि आप की स्थिति साहपुर में कब तक है और यहां से किस जगह जायँगे। तुलारामेण लिखितम्। यदि आप इनको

---

१. इस पत्र और सारांश का निर्देश 'ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन' पूर्ण सख्या ८३२ (भाग २. पृष्ठ ८५७)के पत्र में मिलता है।

२. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १, पृष्ठ ३२ पर छपा है।

३. अर्थात् फिरोजपुर छावनी।

अपने पास लिखने को रखें तो यह ब्राह्मण रह जायगा आप इस के वास्ते जीवन[1] लिख दीजिये सन् १८८३ मई ता० ३०[2]

आप का शिष्य सहजानन्द सरस्वती
विष्णुसहाय की नमस्ते।
चौधरी मंत्री आर्य्यसमाज। फीरोजपुर

—:०:—

[पूर्ण संख्या ४४३] पत्र-सूचना

[छगन लाल द्विवेदी, मसूदा का पत्र][3]
ज्येष्ठ बदी १४ [सं० १९४०]

—:०:—

[पूर्ण संख्या ४४४] पत्र

ओ३म्[4]

Long Live
The of
Prince Wales

॥ स्वस्ति श्रीसर्वोपकारणार्थ कारुणिक परमहंस परिब्राजकाचार्य श्रीमद्दयानन्द सरस्वती जी महाराज के चरणारविन्दों में माहराजाधिराज शाहपुरेश की वारम्वार नमस्तेस्तु अपरंच पत्र आपका अजमेर के मुकाम से आया[5] उसके पढ़ने से मे अति प्रसन्न हुआ बमुजिब तहरीर आपके नाई और स्वार जिसकी सिकायत तहरीर फरमाई श्री

---

१. अर्थात् जीविका=वेतन। २. ज्येष्ठ कृ० ९ सं० १९४० वि०।

३. इस पत्र की सूचना ज्येष्ठ सुदि ९ सं० १९४० के छगनलाल द्विवेदी के पत्र में मिलती है। वहीं तिथि का भी निर्देश है। द्र०—अग्रिम पूर्ण संख्या ४५८ का पत्र।

४. यह पत्र पं० चमूपति सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग २, पृष्ठ १९-२० पर छपा है।

५. यह पत्र 'ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन' के पूर्ण संख्या ८२१ (भाग २, पृष्ठ ८५०-८५१ पर छपा है।

उनको सजा जुरमाना दे दी गई है और गाड़ी का सामान समाल लिया गया है—ईस के बाद जोधपुर से आनन्द पुरबक पहूंचने का पत्र आप का आया[1] उसके देषने से भी मन अति आनन्दित हुआ— यहाँ से मैंने एक कागज अपना भुवाजी अजबजी के नाम लिष कर भेजा है सो किसी के मारफत जोधपुर माहराज के अन्तहपुर में उनके पाश पहूंचा देवें[2] और मसूदा वालों को जो आपकी मोजुद ही में आये थे उनको आदर पूरबक आज रूषस्त दी गई है—और महाराना जी साहब के षुसी होने के बारे में मेने उनके नाम अरजी लिष कर भेजी है उसकी नकल आपके पास मुलहायजे के लिए भेजता हूं और में उम्मेद करता हुं कि ईस बार में आपने भी दरबार में कुछ सत्य उपदेश का पत्र भेजा होगा कदापि न भेजा गया हो तो जरूर कृपा कर के भजें और जिस आदमी के विसय[3] में आपने फरमाया था वो अभी तक नहीं आया आय पर उसके विषय का हाल लिषुंगा कृपा दृष्टि बनी रहे—और प्रसन्नता का पत्र भिजवाते रह मिती जष्टे कृश्ण [३०][4] "सम्वत १९३९[4] का तारीष ५ जून सन १८८३ ईस्वी[5]

हस्तक्षर: नाहरसिहस्य

—:०:—

[पूर्ण संख्या ४४५] पत्र-सूचना

[लालजी बेजनाथ का रजिस्ट्री से जोधपुर भेजा गया पत्र ।][6]

—:०:—

---

१. यह पत्र 'ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन' पूर्ण सख्या ८३५ (भाग २, पृष्ठ ८५४) पर छपा है।

२. इस पत्र को पहुंचाने की सूचना ऋ० द० ने ज्येष्ठ शुक्ल ५ सं० १९४० के पूर्ण संख्या ८३४ (पृष्ठ ८५९) के पत्र में दी है।

३. अर्थात जवाहर सिंह, मन्त्री आ० सा० लाहौर।

४. यहां तिथि का निर्देश छूट गया है। सं० १९४० होना चाहिये।

५. इस पत्र के ऋ० द० के द्वारा दिये गये उत्तर के लिए ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन' पूर्ण संख्या ८३४ (भाग २, पृष्ठ ८५९) देखें।

६. इसको जोधपुर भेजने की सूचना आगम पूर्ण संख्या ४५६ के पत्र में मिलती है।

[पूर्ण संख्या ४४६] पत्र-सारांश

जब आप की यात्रा करने में दस पन्द्रह दिन शेष रहें तब हम को विदित करना[1]

नन्दकिशोरसिंह

—:०:—

[पूर्ण संख्या ४४७] पत्र

ओम् तत्सत्[2]

जगदुद्धारक परमार्थ श्रीस्वामी जी महाराज नमस्ते

जिस पंडित का विज्ञापन देशहितैषी में दिया गया था उस का समाचार यह है कि आचकल वोह कुछ दिनों के लिये पाठशाला मिशन देहली में एवजी हो रहे हैं पश्चात् पुर्ण होने इस एवजी के जो आप को आवश्यकता हुई तो उन से पूछ कर फिर उत्तर दिया जावेगा यद्वा मैं स्वयं उन से पूछ कर आप से निवेदन करुंगा ॥

यहां का समाचार यह है कि आजकल चतुर्भुज[3] भी उपदेश कर रहा है और इधर वैदिक धर्म्म सभा ने भी एक विज्ञापन जयपुर गजट में छपवा दिया है कि प्रति शुक्रवार को वंदिकधर्म्म सभा में चतुर्भुज के कथन का खंडन होगा इस कारण सव सज्जन पुरुषों को उचित है कि उभयत्र श्रवण करके सत्य की धारण और असत्य का परित्याग करें। सो इस प्रकार पाक्षिक उपदेश को श्रवण करने से लोगों को

---

१. इस आशय के ठा० नन्दकिशोरसिंह के ३-४ पत्र मिलने का संकेत ऋ० द० के आषाढ बदी १० स० १९४०(=३० जून १८८३) के पूर्ण संख्या ८५१ (भाग २, पृष्ठ ८७३, पं० २) में मिलता है। इससे पूर्व का ठा० नन्दकिशोर सिंह का एक ही पत्र ज्येष्ठ कृष्णा ३०(=५ जून १८८३) का अग्रिम पूर्ण संख्या ४४७ का उपलब्ध हुआ है।

२. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १, पृष्ठ ९६-९८ पर छपा है।

३. 'चतुर्भुज' का उल्लेख 'आर्य-सन्मार्ग-दर्शिनी सभा और स्वामी दयानन्द' लेख में भी आया है(द्र०—ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन' भाग २, पृष्ठ ९९९, पं० २)।

चतुर्भुज का जाल प्रकाशित होता जाता है और लोगों के संस्कार बदलते जाते हैं ॥

हम को विदित हुवा है कि आप महाराजा जोधपुर ने निवेदन पूर्वक बुलाये हैं ॥ और आप वहां पर पधारे हैं इस कारण प्रार्थना है कि आप वहां के मंगल समाचार अवश्य लिखें जिनसे हम को और विशेष हर्ष होगा ॥

रामानंद ब्रह्मचारी जी महाराज यहां पर आये थे उन से संपूर्ण वृत्तांत यहां का कहा गया था सो आप को भी मालूम हुआ होगा ॥ और विशेष क्या निवेदन करें ॥ पुनर्नमस्ते ॥

रामानंद ब्रह्मचारी को मेरी तरफ से नमस्ते पहोंचे

श्रीस्वामी जी महाराज को गौरीशंकर[1] का अत्यंत प्रेमपूर्वक नमस्ते पहोंचे ॥

आप का सेवक
नन्दकिशोर सिंह
उपप्रधान सभा जयपुर ॥
ज्येष्ठ कृश्ना ३० भौमवार। संवत् १९४०[2]

—:०:—

[पूर्ण संख्या ४४८] पत्र

आर्य्यसमाज अजमेर[3]

नं० ४०३ ता० ७-६-८३[4]

श्रीस्वामी जी महाराज, नमस्ते,

कुछ दिन हुये पोष्ट कार्ड आप का आया था[5] और जिस विषय

---

१. पं० गौरी शङ्कर का उल्लेख ऋ० द० के पत्रों में भी आया है(द्र०- 'ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन' भाग २, पृष्ठ ६१७, पं० ७; ६१८,२; ६४०,२६)।

२. ५ जून सन् १८८३।

३. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १, पृष्ठ १६४-१६५ तक छपा है।

४. ज्येष्ठ शु० २ सं० १९४० वि०।

५. यह पत्र हमें नहीं मिला। 'ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन' के पूर्ण संख्या ८२७ (भाग २, पृष्ठ ८५५)पर पत्राशय बनाकर छापा है।

के वास्ते आप ने मुझ को मितीवार लिखने को लिखा है मैं उस की फिक्र में प्रथम ही दिन से लगा हुआ हूं परन्तु कालेज की छुट्टी होने से अभी तक उस का ठीक ठीक पता नहीं लगा क्योंकि जिन मनुष्यों से पूछा जाता वह यहां है हीं नहीं यद्यपि मैंने अन्यत्र स्थानों से बहुत कुछ दरयाफ्त किया जिस से आशा होती है कि वह दिन जिस दिन उक्त साहिव[1] का असबाब नीलाम हुआ था तारीख वार एक दो दिन में निश्चय हो जायेगा उस से अनुमान १०, १२ दिन घटा कर उन के जाने की मिती निकल आवेगी सो इस को मैं आप की सेवा में शीघ्र ही भेजूंगा।

यहां पर ६ तारीख को पं० चतुर्भुज[2] आये हैं और अपनी निकृष्ट बुद्धि के अनुसार आर्य्यों का यश और कीर्तन कर रहे हैं और बड़े लम्बे-लम्बे डीग मारते हैं और कहते हैं कि अब हम स्वामी जी से शास्त्रार्थ करने को जोधपुर जांयगे और यहां अजमेर नगर में बड़े-बड़े विज्ञापन लगा दिये हैं।

आपने जोधपुर का हाल नहीं लिखा महाराजा साहिव से मुलाकात हुई वा नहीं।

स्वामी केशवानन्द जिन्होंने आप से बाग में वार्तालाप की थी जोधपुर आने को तैयार हैं और कहते हैं कि जब तक हम स्वामी जी के पास ६, ७ महीने न रहलें तब तक हम अपने मन की दृढ़ता नहीं कर सक्ते अब इन के विषय में जैसी कुछ आप आज्ञा दें वैसा किया जावे।

प्रिय बन्धु अमरदान जी को बहुत-बहुत नमस्ते पहुंचे और ज्ञात हो कि आपने भी अभी तक वहां के कुछ समाचार नहीं भेजे जैसा कि मुझ से प्रतिज्ञा की थी इस कारण आप से निवेदन है कि उक्त प्रतिज्ञानुसार सप्ताहिक चिट्ठी पत्री भेजते रहें और मुन्शी कन्हैयालाल को मेरा बहुत बहुत नमस्ते कहना—और सब सभासदों की ओर से स्वामी जी की सेवा में नमस्ते पहुंचै

आप का दास
कमलनयन शर्म्मा
मंत्री आर्य्यसमाज अजमेर

---

१. इनका नाम लेफ्टिनेंट लोंग साहब है। इनके सम्बन्ध में ऋ० द० का पूर्ण संख्या ९३२ (भाग २, पृष्ठ ९४३) का पत्र भी देखें।

२. द्र०—पूर्व पूर्ण संख्या ४४७, (पृष्ठ ५३३) का पत्र और टि० ३।

[पूर्ण संख्या ४४६] पत्र

ओ३म्[१]

श्रीयुत पूज्यतम पादारविन्देषु

कृपापात्रस्य दुर्गाप्रसादस्य नमश्श्रेणयो विलसन्तु भगवन् पत्र आया[२] वृत्त विदित हुआ कि आप योधपुराधीश की राजधानी में सुशोभित हुये और वहां के भद्रपुरुषों ने आपके चरणकमलों की दर्शनाभिलाष की आन कर मिले आमों के लिये हमने बनारस को लिख दिया है वहां से आम आप के पास पहुंचेंगे[३] और यहां जब मिलेंगे तब यहां से भी भेजेंगे और पठन पाठन का प्रबंध आप के लिखे अनुसार किया जावेगा और जोधपुर के जो आगामि काल में वर्त्तमान हो कृपा कर के शीघ्र-शीघ्र सूचित करण द्वारा [अनुगृही[त] करते रहना।

ह० **बाबू दुर्गाप्रसाद**

ता० ७ जू ८३ मि० ज्ये शु० २ गुरौ[४]

—:o:—

[पूर्ण संख्या ४५०-४५२] पत्र-सूचना (क, ख, ग)

[लाल जी बैजनाथ, बम्बई के ३ पत्र][५]

—:o:—

१. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्र व्यवहार' भाग १. पृष्ठ ३२८-३२९ पर छपा है।

२. यह पत्र हमें नहीं मिला। 'ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन' में पूर्ण संख्या ८३०, भाग २, पृष्ठ ८५७ पर 'पत्र-सारांश' बनाकर छापा है।

३. बाबू दुर्गाप्रसाद जी द्वारा बम्बई से भिजवाए आमों की प्राप्ति की सूचना ऋ० द० ने आ० ब० १० सं० १९४० के पत्र द्वारा दी थी। (द्र०—ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन' पूर्ण संख्या ८६९, भाग २, पृष्ठ ८८५।

४. ज्येष्ठ शु० २, सं० १९४० वि०।

५. इन पत्रों की सूचना ज्येष्ठ सुदि ७ सं० १९४० के लाल जी बैजनाथ के आगे पूर्ण संख्या ४५५ के पत्र से मिलती है।

[पूर्ण संख्या ४५३] पत्र

"ओ३म्"[1]

श्रीयुत परमहंस परिव्राजकाचार्य्य श्री १०८ मद्दयानन्द सरस्वती जी, नमस्ते

मैं इह पत्र श्री हजूर[2] की आज्ञानुसार लिखता हूं। मैं अपनी प्रतिज्ञानुकूल रूपाहेली के स्टेशन पर ५ जून को पहुंच गया था। दोनों ज्येष्ठ भ्राता मेरे संग थे, परन्तु अपनी अभाग्यता से वहां पर स्वारी का कोई बन्दोबसत न था। कारण यह था कि श्री हजूर को मेरे आने की ८ वीं तारीख की सम्भावना रही; और दोनों पत्र, वा तार, आप के पास चले गये, इस से सवारी के वासते वड़ा क्लेश प्रापत हूआ। दोनो भाई वापस हो गये, अर मैं थोड़ा सा पैदल अर बाकी टूटी फूटी स्वारी पर आ पहुंचा॥ येह मेरे मंद भाग की अवधि थी कि आप अचेत ही मुझे दर्शन दिये बिना इहां से पधार गये। जो कुच्छ आप के चले जाने से मेरे चित्त में आया होगा उस का अनुमान आप कर लेवें॥ चिरकाल के बिछड़े सज्जनों को जिस प्रकार मिलाप करणे की आशा होती अर फिर टूटती है वह दशा मेरे साथ भई, इस का वर्णन करना मेरे वासते असम्भव हैं मैं सर्व शक्तीमान जगदीश्वर से प्रार्थना करता हूं कि वह शीघ्र आप के दर्शन से मुझे त्रिप्ती प्रदान करें॥

॥ आपकी आज्ञानुसार लवपुरीय आर्य्यसमाज से ऐक मान्यपत्र[3] ले आया हूं जो आप के अवलोकनार्थ इस पत्र के साथ भेजता हूं॥ इस पत्र को श्रीमान शाहपुरेश अवलोकन कर चुके हैं॥

॥ श्रीमान को उत्तम स्वभाव इस योग्य है, कि उस की प्रशंसा करणी कठिन है। आप जैसे विद्वान, गुणिक, धार्म्मिक, अर दयाशील, सुने गये थे, वैसे देखे गये। उन के साथ बात चीत करणे से चित में

१. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १, पृष्ठ १३६-१३९ पर छपा है।

२. अर्थात् शाहपुराधीश महाराजा नाहरसिंह।

३. यह मान्य-पत्र हमें नहीं मिला।

अनुमोदता, व प्रसिन्नता, बहुत हुई ।। यद्यपि मेरे यहां रहने में अनेक प्रतिबंध हैं जैसे माता पिता, अर भ्राता, का वियोग से संताप मानणा; अर पहली सरकारी नौकरी से जहां से ४ मास की रुखसत लेके आया हूं अर जिस के वास्ते १ जुलाई से ७५) मासिक देने की हाकम ने प्रतिज्ञा की थी उन का उस से वियोग न करणे देना आदि आदि रूप प्रतिबंध हैं, तथापि श्रीमान शाहपुराधीश का मृदु स्वभाव, अर सहयोग वरतना, इन सभ प्रतिबंधकों के नाश करने वाली प्रतीत होती है ईश्वर असा करे कि मुझ से अपने "स्वामी" वा देश वासियों का कुच्छ उपकार हो। अर ईश्वर से, व समाज से, व आप से, व "श्रीमान" से, व अपने देश वासियों से, खाली[1] रहे; अर असा न हो कि सब का देनदार रह जाऊं, यही प्रकट हो कि मैंने यहां आकर अच्छा काम कीया ॥

॥ आप श्रीमान शाहपुराधीश को लिखते हैं,[2] कि मैं आप के चले आने से उदासीन न हो जाऊं; सो कृपानिधे ! जिस प्रकार आप इस दास पर अनुग्रह करते चले आये हैं अर करते हैं उसी प्रकार श्रीमान भी अपने आतमा से मुझ पर दया रखते हैं अर अधिक से अधिक भविष्यत काल में रखने की आशा है। यह बात मेरे बड़े उत्साह की कारण है। तथापि आप के दर्शन के न होने से उदासीनता जो ऐक बार उत्पन्न हुई वह अभी तक दूर नही हुई ! ॥

॥ वेद भाष्य की बात छीत्र दत्त जी को कह दी गई[3] ॥

नमस्ते !

	ह: आप का दर्शनाभिलाषी
६ जून सं: १८८३[4]	जवाहर सिंह
शनिवार	अं: मं: श्री: श: पु: मे:

---

१. यहां पाठ कुछ भ्रष्ट हुआ है।

२. यह पत्र हमें नहीं मिला। इसकी सूचना बनाकर दूसरे भाग में देनी रह गई।

३. इस के लिये ऋ० द० का आषाढ़ वदी ११, सं० १९४० का पूर्ण संख्या ८५३ (भाग २, पृष्ठ ८७५ पं० ३)।

४. ज्येष्ठ शु० ४ सं० १९४० वि०।

श्रीमान इस पत्र को अवलोकन कर चुके है ॥

कोई ऐसा कारण हो जिससे आप के दर्शन हो जांय ॥ ५ वा ७ रोज को यहां से २ वा ३ पुरुष राज की उोर से आप के पास समाचार लेने आप से यदि हो सका तो मैं आज्ञा मागूंगा।

—:०:—

[पूर्ण संख्या ४५४] पत्र-सूचना

पं० कालूराम, रामगढ़ का पत्र।][1]

—:०:—

[पूर्ण संख्या ४५५] पत्र

॥ ओ३म् ॥[2]

श्रीयुत प्रतिष्टित्ता चार्य्य परम गुरू अतीदयाल पूजनीय० महाशय ! स्वामी जी श्री दयानन्द सरस्वति जी महाराज नमस्ते नू प्रकट हो कि आप के जोधपुर पधारने की खबर पक्की मिली ह:॥ सो सर्व शक्तिमान०। कि कृपया ते हमको बिश्वास है कि ए कार्य्य शिघ्र ही शिद्ध होवेगा जी० ॥ ओर मेरी अल्प बुद्धि मे ऐसा आता है कि कधी ! परतापसिहजी के ईसाई मत की आग्रे होवे तो; आ······म ताके साथ ऐसिरित्ती से खण्डन किजिये इस मत का अ:·········फेर कवीनै जम: ॥ ओर हमने ऐसा सुना है कि ये सच्चे सूर··········· दातार पूरे देश हितैषिक है ॥ सो इनों को ऐसा उपदेश हो·········

१. इस पत्र की सूचना अग्रिम पूर्ण संख्या ४५५ (पृष्ठ ५४०, प० १०-११) से मिलती है।

२. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १, पृष्ठ १६०-१६१ पर छपा है।

फेर। कोई भेद नें हो अग्नि तरफ ।। इसी रिति से ।। और ईसाई म० खण्डन हो ज्याय; और हजुर. कै. परतापसिंह जी का सनातन मत दृढ दिश्चय होते ही ए मंगल समाचार मय कृपा पत्र आप लि० देवदत्त ब्राह्मण जे. कृ. ९ मी को साहपुर को रवन्ने हुआ १ कोथली[1] साङ्गरीन्की आप के वास्ते भेजी सो मिलने स देवेगा जी ।। और पुस्त ·········दत्त० थाक द्वारा घर भेजने दे गया पास बनाके सो मुन्शी २।।)········· लेके तो रसीद दे देगा नहिं तो ।। १।) सवा में पहुंच शक्ति है······ ···र रसीद लिये सो इस विसय म जो देवदत्त की मर्जि हो सो २············।। रसाद २।।) खरच मिलगी और रसीद विगर लिये १।)·········सो सर्वाभिशय अवश्य जरूर ४ लिखवावे आप ही ·········के मिलन से बूजकर ।। और १ विनय पत्र साहपुर········· कल्ल दिई सो जाने आप क पास पहुंच: बान ।। परश्च ।। सर्वाभिशय संयुक्त कृपा पत्र आप अवश्यहि लिखवावें जी ।। जपुका[2] तलटी ईलाका शीकर आर्य्यसमाज सेठों का रामगढ़ स० प० प० कालूराम. नमस्ते केदार्कि. जे. शु. ४ सं. १९४० ।।[3]

—:०:—

[पूर्ण संख्या ४५६] पत्र

।। श्रीगुण......।।[4]

स्वस्ति श्री जोधपुर नगरे गड महा दुरगे श्री भद जगत् गुरु महाराज श्री मद्दयानंद सरस्वति जी महाराज के चरर्णारबिं के साष्टां नमस्ते आप कु मालम होवे: बिठल भाणा: ब्राह्मण: इस्का चाकरि का रुपीया: खर्च श्रुद्धां: आज परियंत: सेवकलाल: भणशालि: देता नहि: मास सात हुआ: फिरते फिरते थक गये: जब: आप कु: पत्र २ सायपुरे: भेजे पत्र १ रजिष्टर: जोधपुर:[5] आप कु भेज्या: परंतु: जबाब नई, सो: पत्र आप के पास: पौच्या नहि: एषा दिस्ता हे: सो अब ये

---

१. खेजड़े (छोंकरे) के वृक्ष की फलियां सांगरी कहाती हैं। मारवाड़ में इस का शाक का रायता बड़े चाव से खाया जाता है।

२. जयपुर का।

३. ९ जून सन् १८८३।

४. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १, पृष्ठ २८१-२८२ पर छपा है।

५. लाला जी बैजनाथ के ये तीनों पत्र हमें उपलब्ध नहीं हुए।

पत्र: पौचते रुपिया: मनि आर्डर करके भेजो सेवक्लाल के भरोसे रेणा नइ: देकते पत्र रस्ता खर्च: अयगार का पइसा मिल् कर: जल्दि भेजो: और आप आनंद मे रेणा: और वां कि हकिगत् आनंद की लिखना: समाज का कोम: बहोत्: अधुरा पडा हे: सो: आप कृपा कर के मंदिर: समाच का: बने एशि मदत् जरूर करणा: सेवक्लाल् बाकि प्राग श्रुद्धां रुपये तीन हजार: बोल्ता हे: और समाज का निचे का: पाया हूआ हे: बाकी सर्व काम्: पडा हे रुपये: मिलते नइ हे वास्ते मदत् चइये: ये विनंती संवत १९४० ज्येष्ठशुदि ७ भौमवासरे[1]

[लाल जी बैजनाथ][2]

—:०:—

[पूर्ण संख्या ४५७] पत्र

आर्यसमाज फर्रुखाबाद[3]
ता० १४–६—८३ ई०[4]
नं०

श्रीमत्सच्चिदानंद स्वरूपाय परमगुरवेनम:

मान्यवर

एक प्रति धन्यवादपत्र की वास्ते भेजने महाराणा उदयपुर के[5]

---

१. १२ जून सन् १८८३।

२. इस पत्र पर हस्ताक्षर नहीं है परन्तु लाल जी बैजनाथ के पूर्व पत्र पृष्ठ ५२८) जैसा ही हस्तलेख है। अत: यह पत्र लाल जी बैजनाथ का ही है। मुंशीराम।

३. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १, पृष्ठ ३२४-३२५ पर छपा है।

४. ज्येष्ठ शु० ९ सं० १९४० वि०।

५ महाराणा उदयपुर ने ऋषि दयानन्द के उदयपुर से प्रस्थान के समय जो मान-पत्र (देखो पूर्व पूर्ण संख्या ३८७, पृष्ठ ४७३) दिया तथा सत्कार किया। उस के प्रति महाराणा को आर्यसमाजों की ओर सें जो धन्यवाद पत्र भेजा गया, उस का यहां निर्देश है। आर्यसमाजों की ओर से भेजा गया धन्य-वाद-पत्र 'ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन' भाग २, पृ. १०३५-१०३६ पर छपा है। इस धन्यवाद-पत्र के उत्तर में महाराणा की ओर से प्रत्युत्तर दिया गया वह वहीं भाग २, पृष्ठ १०४१-१०४३ पर छपा है।

मुन्शी समर्थदान जी ने भेजी है उस के अंत में सभापति उपस० मंत्री आदि के हस्ताक्षर होजाने लिखे हैं। अब प्रश्न यह है इस भेजने के विषय में आप की भी सम्मति है वा मुन्शी जी ने ही स्वतंत्रता पूर्वक लिखा है और सभापति ला० निर्भयराम जी यहां नहीं हैं उन के फिर कैसे हस्ताक्षर होवें, और शेष सब मंत्री, पुस्तकाध्यक्ष आदि सब के हां तत्मुद्रितानुसार हस्ताक्षर होने चाहिए वा दो एक ही प्रधान आदि के, उत्तर से शीघ्र ही बाधित कीजिए वैसा किया जाय तथा जोधपुर और शाहपुरा के सुसमाचार लिखिए

कालीचरण

अनुचर गणेश प्रसाद लेखा, की बहुत बहुत नमस्ते

—:०:—

[पूर्ण संख्या ४५८] पत्र

ओ३म्[1]

।। सिद्ध श्री जोधपुर शुभ स्थाने सर्व शुभ ओपमा सकल गुण निधान सर्व शास्त्र संपन्न श्रीमत् परमहंस परिब्राजका चार्य्यवर्य्य त्वाद्यनेक गुण सम्पद्विराजमान श्रीमद्वेदविहिता चार धर्म्म निरुपक श्रीमत् स्वामी जी महाराज श्री श्री १०८ श्री श्री दयानंद सरस्वती जी म्हाराज योग्य अजमेर से द्विवेदी छगनलाल का अनेकधा नमस्ते मालुम होवे अत्र कुशलममस्तिं तत्रास्त्वेवं अपरंच मैने पत्र ज्येष्ठ वदि १४ को भेजा[2] था सो पहुंचा होगा श्रीमत् का कृपा पत्र नहिं आया इस लिये चित्त चिंतित रहता है कृपा कर दिलावें और श्रीमत् के दर्शनों की पूरि अभिलाषा लग रही हैं

अजमेर या नया नगर जरूर हाजर होता परन्तु कारण से कर हाजर नहिं हो सका कृपा कर जलदी दर्शन दिलावें और अरज है कि पहले ज्यो अरज मालूम की थी उस पहले बहुत अरसे तक विचार कर के पीछे मालुम की थी और जब तक भी विचारने से वो ही विचार दुरस्त है और यह भी विचार योग्य है कि इस कार्य्य के होने से ज्यो ज्यो कि सत्यवादि हैं उनका बहुत उपकार होगा इसलिये

१. यह पत्र पं० चमूपति सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग २, पृष्ठ ५७, ५८ पर छपा है। २. यह पत्र हमें नहीं मिला।

जरूर जहां तक बन सके इस काम के वासते ख्याल फरमाना चाहिये और यहां का कोइ कार्य्य हो सो कृपा कर लिखावें संवत् १९३९ ज्येष्ठ शुदि ९[1]

—:०:—

[पूर्ण संख्या ४५९] पत्र

श्री[2]

पुणे तारीख १४ जून १८८३[3]

श्रीमत् स्वामि दयानन्द सरस्वती जी

से लक्ष्मण गोपाल देशमूख[4] के अति नम्रता पूर्वक नमस्कार विदित हो—जोधपुर मे निश्चय हुआ था[5] कि पाली में पहुंचे बाद कुशल समाचार लिख भेजना सो तो हम कर सके नही कस्मात् कि जो सवार और गाडीवान् हमारे सह आये थे वे पाली की कचेरी मे गये और हम उसी रात कु उंट पर सवार होके खारची कु गये—इस लिये मुलाकात न होने से समाचार लिखा गया नहीं, तारीख ७ के रोज हम अमदाबाद कु पहुंचे और उसी दिन वहाँ से निकल के बडोदे कु आये फिर तारीख ४ कु निकले नासरी में आये और तारीख १२ कु वहां से चले सो मुम्बई कु आये और तारीख १३ सायंकाल पुना में पहुंचे मुम्बई मे हमने पुरोहित उदयलाल जी के घडी[6] के वास्ते हमारे बंधु से विनति की और ३० रुपये दिये २८ रुपये तक घडी, आप की मीनावाली घड़ी है वैसी भेजने का कहा है

१. यहां सं० १९४० होना चाहिये। पत्र के आरम्भ में ऋ० द० के जोधपुर निवास का उल्लेख है। तदनुसार १४ जून सन् १८८३।

२. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्र व्यवहार' भाग १, पृष्ठ २४१-२४२ पर छपा है। ३. ज्येष्ठ शु० ९, सं० १९४० वि०।

४. ये रा०ब० पं० गोपालराव हरि देशमुख के पुत्र हैं।

५. ये महाशय २६ मई १८८३ को अजमेर पहुंचे थे। योगविद्या सीखने के लिए ऋ० द० के साथ जोधपुर गये। प० लेखराम कृत जीवनचरित हिन्दी सं० पृष्ठ ९०६।

६. इस घड़ी का वर्णन 'ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन' भाग २ में ऋ० द० के पूर्ण संख्या ७३८, ८२८, ८५७, ८५९, ८६७, ८६८ में तथा सेवकलाल कृष्णदास (बम्बई) के पूर्ण संख्या ३७८, ३७९, ४७२ (भाग ३) में मिलता है।

सो घडी तारीख १३ कु पुरोहित जी के पास रवाना हुई होगी—आप उन महाशय से खबर मंगवाके हम कु लिखंगे तो बडी मेहेरबानी होगी. रा० सेवकलाल से रुपये २८ लेने का हमारे भाई कु विदित किया है।

हमारे पिता जी से सब हकीकत और आपके आशीर्वचन कहे. बहुत आनन्द पाये आपके परिश्रम कु बहुत धन्यवाद देते हैं, उस मुलुक मे सेहेल करने के वास्ते आने के विषय में आप बोले थे सो विदित किया—वह भी चाहते हैं कि जोधपूर के तरफ का देश देख लेना. इत्यलम्।

सब मित्रवर्ग से हमारे विनय पूर्वक नमस्कार हैं.

लक्ष्मण गोपाल देशमुख.
असिस्टेंट कलेक्टर
खानदेश

—:०:—

[पूर्ण संख्या ४६०] **पत्र**

[ओ३म][1]

Ajmere 14th June 1883.

ज्येष्ठ शुक्ल १० शुक्र ता० १५ जून १८८३ ई० वेदादि सत्य शास्त्र प्रकाशक आर्य्य धर्म्म दिवाकर श्रीमत् पण्डित स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज के पद पंकजों में सविनय नमस्ते अनेक शिष्टाचार सहित स्वीकृत हों—मैंने एक पोस्टकार्ड पहले दिया था[2] उन्हीं दिनों कालेज की छुट्टी हो जाने के कारण एक आवश्यक काम के लिये मेरे घर चला गया था इसी कारण आप के अजमेर शुभागमन के समय दर्शन लाभ प्राप्त न कर सका—आज पं० कमलनयन के पत्र[3]

---

१ यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १, पृष्ठ २०४-२०५ पर छपा है।

२. द्र० पूर्व पूर्ण संख्या ४२८ पृष्ठ ५१८।

३. यह पत्र उपलब्ध नहीं हुआ। देश हितैषी (अजमेर) के रजिस्टर से 'ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन' में पूर्ण संख्या ८३९ (भाग २, पृष्ठ ८६४)

में आपने मुझे तथा अन्य दो एक सज्जनों को स्मरण फरमाया इस लिये निवेदन है कि मैं अब अजमेर में आ गया हूं और पंडित सालिग्राम जी अपने घर फर्रुखाबाद में हैं २४ तारीख इसी मास को आवेंगे उन्होंने पहले विश्वनाथ उण्डिभट्ट तैलंगी पंडित को काशी में आप की इच्छा के योग्य बताया था जिस्का हाल मैंने पूर्व पत्र में लिखा था[1]-- दामोदर पं० मूलचन्द सोनी के है वह २०) रु० सूखे[2] पर आना चाहता था पर अभी आप का आज्ञा पत्र नहीं आया मैं उस समय होता तो अजमेर में आप के पास हाजिर कर देता पर अब जैसी आज्ञा यहां का जल पवन मेरी आरोग्यता में हानि करता है पहले भी आपको प्रार्थना की थी अन्यत्र का उपाय हो तो ठीक है किमधिकम्

शुकदेव प्र०

—:०:—

[पूर्ण संख्या ४६१]   पत्र

आर्य्यसमाज अजमेर[3]

नं०   ता: १७-६-८३[4]

श्रीस्वामीजी महाराज नमस्ते—

कृपा पत्र[5] आया जोधपुर के समाचार ज्ञात होने से अत्यानन्द

पर पत्र-सारांश छापा है। इसमें पत्र की ता० १५ जून ८३ लिखी है। वह देश हितैषी के कार्यालय में पत्र पहुंचने की है, क्योंकि पं० शुकदेव ने उसी पत्र को उद्देश्य करके १५ जून को यह पत्र लिखा है। अत: ऋ० द० ने १२-१३ जून ८३ को पत्र लिखा होगा। अथवा कमलनयन की पूर्ण संख्या ८३९ भाग २, पृष्ठ ८६४ पर छपे पत्र से भिन्न कोई पत्र लिखा होगा।

१. द्र०—पूर्व पूर्ण संख्या ४२८, पृष्ठ ५१८ का पत्र।

२. अर्थात् भोजनादि के विना केवल २० रु० मासिक पर। पं० दामोदर के विषय में पं० शुकदेव ने अपने पूर्व पत्रों में भी लिखा था। द्र०—पूर्णसंख्या ४१०, पृष्ठ ४९६ पं० १३-२२ तथा पूर्ण संख्या ४२८, पृष्ठ ५१८।

३. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्र व्यवहार' भाग १, पृष्ठ १९६-१९९ पर छपा है।

४. ज्येष्ठ शु० १२ सं० १९४० वि०।

५. द्र०—पूर्व पूर्ण संख्या ४६०, पृष्ठ ५४४ की टि० ३।

हुआ. ईश्वर इन राज पुरुषों को प्रतिदिन देश उन्नति कारक करे.

पं० सुखदेव और पं० दामोदर जी अजमेर में हैं परन्तु पं० शालिकराम जी छुट्टी पर गये हैं छुट्टी से आने पर आप को खबर दी जायगी. आप का यह कृपा पत्र पं० छगनलाल वा बृतीचन्द अन्य श्रेष्ट सभासदों के सामने पढ़ा गया था इस में जो आपने तीन पंडितों के वास्ते लिखा है उसका पूरा वृत्तान्त नही मिला कि इन पं० के वास्ते क्यों लिखा है क्योंकि इन लोगों का प्रगट और आत्मिक अभिप्राय में सदैव ही भेद रहता है जिस को समाज के सभासद आप की अपेक्षा अधिक जानते हैं क्योंकि आप के तेज के सामने तो विरोधी मनुष्य भी हां में हां मिलाने लगता है इस कारण आप उन का आत्मिक अभिप्राय नहीं जान सक्ते यह विचार एकत्रित सभासदों की यह राय हुई कि स्वामी जी महाराज को ऐसा लिखो कि जिस किसी पुरुष को बुलाना चाहैं तो प्रथम वहां के समाज से उस के चाल चलन और आत्मिक अभिप्राय के विषय में पूछ लिया करें ऐसा करने से समाज का भी मान्य होगा और जानेंगे कि ये भी किसी खेत की मूली है और एकाएकी समाज में विघ्न भी न डालेंगे यदि सदैव ही से आप ऐसा करते और मुन्शी बख्तावरसिंह और इन्द्रमणि के विषय में वहां की समाजों से राय लेते तो आज के दिन यह धोखा न खाते पं० सुखदेव ने जैसा कुछ इस समाज में विध्न डाला और ठौर ठौर हजरत ईशा को आप की अपेक्षा उत्तम ठहरा निन्दा करता फिरा क्या यह वृत्तान्त आप को सांगोपांग से विदित नहीं है हां यदि कोई ऐसा कार्य्य हो कि ऐसे मनुष्यों के सिवाय काम नहीं चले तो कुछ डर नहीं परन्तु जब आप इन के साथ कुछ सहायता करना चाहें तो प्रथम उस आर्य्यावर्त में जितने सामाजिक सभासद जो तन मन धन से समाज उन्नति में तत्पर हैं जिन के ऊपर वर्तमान पोप मतावलम्बियों और कुटुम्बियों के घोर प्रहारों को सह चुके हैं उन का हक है आगे आप सर्वोपरि बुद्धिमान हैं जंसा उचित जानें वेसा करें मुरादाबाद समाज से एक पत्र आया है जिस्में लिखा है कि मु० इन्द्रमणि प्रधान, और जगन्नाथदास पुस्तकाध्यक्ष अपने भ्रष्ट आचारों से इस समाज से दूर किये गये जो आगामी देशहितैषी में छपेगा—स्वामी केशवानन्द जी कहते है कि जब तक हम चार पाँच मास स्वामी जी के पास रह कर मन की दृढ़ता न करलें तब तक प्रतिज्ञा नहीं कर

सक्ते आप जैसा लिखें वैसा किया जावे पं० चतुर्भुज[1] यहां पर १ दिन व्याख्यान दे दुर्दशा सहित चल दिये इनकी निष्फल बकवाद यहां के पोपों को भी अच्छी नहीं लगी इनके पश्चात् पं० रामलाल जी ने जिन्होंने आप से मुकाम बम्बई में शास्त्रार्थ किया था चार पांच व्याख्यान दिये. परन्तु व्याख्यान शक्ति इनको अच्छी नहीं थी. जिस बस्तु का खन्डन करते थे इन्हीं के मुंह से उस का मंडन हो जाता था. ये भी यहाँ से बिना कौड़ी पैसे के गये, और समाज में सब आनन्द है. सब सभासदों की ओर से आप को बहुत बहुत नमस्ते पहुंचै.

मऊ[2] कालिज से लेंगसाहिब का असबाव उन के जाने से तीन मास पीछे ३० जुलाई सन् १८८० ई० को नीलाम हुआ था इस्से आप उनके जाने का दिन निकाल सक्ते हैं और जोधपुर के वृत्तांत से सूचित करते रहें।

आप का दास
कमलनयन शर्म्मा
मंत्री आर्य्यसमाज अजमेर

—:०:—

[पूर्ण संख्या ४६२] पत्र

॥ श्री ॥[3]

स्वस्ति श्री जोधपुर नग्रे: श्री मद्दयानंद सरस्वतिजी: स्वामिजी के: चर्णारबिंद मे नमस्ते: रुपये ४०) अक्षरी च्यालिस: हमारी चाकरी के: आपने लालजी वैजनाथ: व्यास: इनकी मार्फत से हम कु मिल्या हे: सो आप कु मालम होवे: संवत् १९४० ज्येष्ट शुद्ध[4] १३ चंद्रे:

विठलभाणा ब्राह्मण
मोडचातुरवेदि: कि सइ: मुकाम मुंबइ

—:०:—

१. द्र० —पूर्व पूर्ण संख्या ४४७, पृष्ठ ५३३ की टि० ३।

२. अर्थात् 'मेयो कालेज' अजमेर।

३. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १, पृष्ठ २८३-२८४ पर छपा है।

४. १८ जून सन् १८८३।

[पूर्ण संख्या ४६३] पत्र

॥ श्री ॥[1]

स्वस्ति श्री जोधपुर नग्रे श्रीमत् जगतगुरु महाराज श्रीपरमहंस परीव्राजकाचार्य श्रीस्वामि जी महाराज दयानंद सरस्वति जी के चर्णारविंद मे साष्टांग नमस्ते पोंचे: पत्र: एक १ आप कि तर्फ से: ज्येष्ट शुद्ध ७ सप्तमिका आज हमकु मिल्या:[2] रुपये: ४०) अंके च्यालि का: मनिआडर: भेज्या: सो मिला: रुपये: आप कि आग्यानुसार बिठल भाणा ब्राह्मण: कु देकर: रशीद: यो चीठि मे भेज्या है: सो लेना: और उस्का: पोंच का जबाब लिखना

औरः समाज का काम: निचुका: पाया: तैयार हुआ नइ है: काम बंद पडा हे: कारण: कितियेक: समाजस्त: वहौत: अडचन मे हे: वास्ते: काम नइ चल सक्ता: हे: बहौत: तंगी हे: सो बायर से उदेपुर: बगेरे: कोइ बिराजा कि तरफ से; मदत्: होवेगी: तो अछि से: आप कु विदित होवे ॥[3]

लालजी बैजनाथ व्यास:
मुकाम मुंबई

—:o:—

१. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्र व्यवहार' भाग १, पृष्ठ २८२-२८३ पर छपा है।

२. यह पत्र हमें उपलब्ध नहीं हुआ। लालजी बैजनाथ के इसी लेख के आधार पर भाग २, पृष्ठ ८६० पर पत्रांश(पूर्ण संख्या ८३५) तथा मनीआर्डर की सूचना बना कर छापी है।

३. इस पत्र पर तिथि तारीख नहीं है। इस पत्र मे ४०) रु० की विट्ठल-भाणा ब्राह्मण की रसीद भेजने का उल्लेख है। उस रसीद पर 'सं० १९४० ज्येष्ठ शुद्ध १३ चन्द्र (सोम)' (१८ जून १८८३) तिथि लिखी है। देखो पूर्व पूर्ण संख्या ४६२ पृष्ठ ५४७। पत्र के लेख से प्रतीत होता है कि जिस दिन मनि-आर्डर तथा पत्र मिला, उसी दिन रुपयों की रसीद लेकर इस पत्र के साथ भेजी है। अत: पत्र स० १९४० ज्ये० शु० १३ सोम = १८ जून १८८३ का है।

[पूर्ण संख्या ४६४] पत्र

ओ३म्[1]

नमस्ते जगदात्मने

श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य्य दयानन्द सरस्वती स्वामिना महा विदुषां जगद्गुरुणाश्चरणारविन्दम्भृशंवन्दे महत्पूज्य जगत्सुखप्रद मत्रशंश्रीमत्कृपयैवययास्वर्प्रकाशितास्सर्वेमलमुलसन्तसहमपितयैवसेव मयि सदास्तु। महाराज आप के अनुग्रह से इन दिनों में महाराज विक्रम सिंह फरीदकोटाधीश के व्याख्यान श्रवण कराता हूं उक्त बर राजवंसाधीश ने मुझको फीरोजपुर से बुलवाया है आपका समाचार प्रीतिपूर्व पूछ हम से अतिशय सन्तुष्ट लाभ हुये और कहने लगे कि में श्री स्वामीजी महाराज के संदर्शन के अभिलाषी हूं और बड़े श्रद्धालु हैं तथा शूर वीरतादिक गुण संयुक्त है आगे जयसा इहां समाचार होगा बयसा आप को लिखेंगे अन्तर्य्यामिष्वधिक किम्

आप का दास—

सहजानन्द सरस्वती

श्री स्वामी जी महाराज एक पत्र का भी तो दास के उत्तर प्रदान कोजिए

सन् १८८३ सम्वत् १९४० जेष्ठ शुक्ल १३[2]—

—:०:—

[पूर्ण संख्या ४६५] पत्र

सं: १६

शाहपुरा ता: २० जून[3]
सं० १८८३ ॥

॥ ओ३म ॥

श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री १०८ स्वामी दयानन्द सरस्वती जी योग्य दास जवाहर सिंहस्य

नमस्ते ॥

---

१. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १, पृष्ठ ३० पर छपा है। २. १८ जून १८८३।

३. ज्येष्ठ पूर्णिमा सं० १९४० वि०। यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्र व्यवहार' भाग १, पृष्ठ १४४-१५० तक छपा है।

आपका पत्र परम् उत्साह के देने वाला कल मुझको मिला[1], जिस के अवलोकन से महोपकृति हूआ ॥ आप की दया का मैं कहां तक धन्यवाद करूं ॥ आप के उपकारों अर दयामय कारयों को केवल मेरी आतमा ही अनुभव करती है, अक्षरों से प्रगट नहीं कीया जाता ॥ ईश्वर सर्वशक्तिमान आप को इसी योग्य रखवे ॥

॥२॥ आर्य्यावर्त्त गत देशी राजाओं का प्रथम सुदार करना रूप भाव आर्य्य जनों से आद्द्रणीय हैं ओर इस आदर अर धन्यवाद के आप पात्र हैं ॥ निश्चय से हम लोग आप के इस कर्तव्य को वड़े आदर वा सन्मान्न से देख देख कर अनुमोदित होते हैं. मेरा इस स्थान पर नियुक्त करणा भी आप के नैतिक कारयों का एक भाग हैं ।

॥३॥ आप के सत्योपदेश से तो आतमा तृप्ति हूई थी, पर संसारक द्रष्टी से भी शरीर पोशन के साधन आपने उपस्थित कर दिये. हम अभाग्य होंगे यदि उस से उपयोग न लेवगे ॥ ॥ अव मैं जी खोल कर अपना हाल लिखता हूं ॥ क्षिमा करें ॥

॥४॥ संक्षेप से केवल इतना लिख देना ठीक होगा, कि मेरा मासिक बहुत थोड़ा है: वाकी सब शिकायतें इसी की शाख उप शाख होंगी: जिसके पद पर मैं आया हूं, वह १५०) मासिक पाता था: सेम साहिब जिसका बहुत थेड़ा काम है, १५०) मासिक पाती हैं: यह आक्षेप अधिक करके अपने संबंद्धीयों की द्रिष्ठि से है: अपनी से नहीं ॥

मैं आप को निश्चय दिलाता हूं कि जब मासिक वासिक का नाम मुझ को लिखना पढ़ता है तो शरम् से पानी पानी हो जाता हूं ॥। जानता हूं, कि जिस को यह बात सुनाता हूं, उसने परोपकारार्थ क्या क्या काम किये हैं. ओर मासिक का बार बार लिखना उसकी द्रिष्ठि में मुझको कितना हलका बनाऐगी. तथापि लिखने से न रह सका. कारण केवल यही है, कि ग्रहस्थ कर चुके हैं, रुपये बिना काम नहीं चलता है, यदि अैसा न होता तो अैसी बात करना वा लिखना "अनार्यपन" समझता: अत: ऐव, मैं अैसा लिखते हूऐ शरम खाता हूं ॥ पर रुकना नहीं ॥

॥५॥ राजाधिराज ने रामलाल की मारफेत मुझ को कहा है तुम

---

१. यह पत्र हमें उपलब्ध नहीं हुआ ।

को २५) राज्य से व २५) निज से मिला करेंगे. और अबी अपनी नौकरी प्रसिद्ध नही करनी होगी, क्यूं कि पुलिटिकल ऐजिंट के पास लोग शिकायत न करें: इसमें सन्देह यह रहता है, कि क्या मेरा पद अैसा है, जो छिपा रह सके, वा पुलिटिकल ऐजिंट को खबर न हो ।। वरन आप कर देनी चाहीये अर किया जाने पर भी दी हो.

।।६।। इन ५०) से भिन्न रोटी ऊपर से आती है, परन्तू बीच के लोग अैसे हैं कि २ वा ३ दिन तो अच्छा भोजन मिला अब ठीक नही मिलता है ।। मैं देखता हूं कि राज्य में बहुत लूट मची है: और इन्तिजाम बहुत थोड़ा है. इन दोषों को दूर करणा अवश्य है ।। श्रीमान को तो लाभ बहुत करा दूंगा, अन्य इन्तिजाम में हाथ डालना अच्छा नहीं मालूम होता. मैं सुनता और समझता हूं कि "पुलिटिकल ऐजिन्ट्" रयासत् को सुद्धरने वा उठने नहीं देते. जो पुरुष योग्य होता हे वह ठहर नहीं सकता. यह भी ऐक डर है परन्तू कहां तक सत्य है. यह नही कह सकता हूं ।।

।।७।। १५ मई सं १८८३ से राज्य के पत्रानुकूल मैं नोकर समझा गया था, और १ जून को लवपुर से चल के ६ को शाहपुर पहुंचा; अपना और ऐक नौकर का मारग खरच २५) आये; अब देखये किस तारीख से नोकरी मिलेगी, अर मारग खरच कहां तक मिलेगा: येह बात परसंग से लिख दी गई है ।। नहीं तो कुछ काम नथा.

।।८।। समाज का स्थापन करना वा व्याख्यानों को देना आदि इस रियासत् में कठन हैं क्यूं कि फिर यह बात पुलीटकल हो जायगी, यदि मैं इस में बहुत दखल दू तो ।। विशेष अनुमति होने से विशेष लिखा जायगा ।

।।९।। राजाधिराज ने रामलाल की मारफत येह भी पूछा था कि तुम को ५०) की नौकरी कबूल है वा नहीं. मैं इस और ऐसे प्रश्न से घबरा गया था, जबाब दे भेजा था कि सोच के थोड़े दिनों को बता दूंगा. इतने में आपका पत्र परम हरष और उत्साह के बढ़ाने वाला आ गया.[1] मैंने उसी समें महाराजाधिराज को कहला भेजा कि स्वीकार करता हूं ।। यहां के आधीश अब प्रसन्न बहुत हैं ।। मासिक के विष में मैं अब आप को कबी नहीं लिखूंगा (परन्तु आवश्यक्ता से)

१. यह पत्र हमें नहीं मिला ।

॥१०॥ मैं अपने शिर पर "ईश्वर" को अर फिर "आप" को समझता हूं; अब मैं निरशंस होकर यहां काम करूंगा अर वापस न जाऊंगा परन्तु ३ मास से पहले पहले यदि कोई असा कारण हो जावे जिससे चले जाना अच्छा समझूं तो झूठ न समझा जायगा हां अपनी ओर तं तो निशचय से ठहरना ही उत्तम जान लिया है ॥

॥११॥ आधीश की ओर मेरी कबी असी स्वर नहीं मिली जैसे मैं चाहता हूं कि मिल जावे. यह बात होगी तो सही, परन्तु धीरे धीरे ॥ यदि आप का यहां पर ओर ठहरना होता, तो सब काम अच्छे हो जाते. पर अब क्या कीया जावे ॥ इस लेख से यह सिद्ध न होवे कि वह मुझ से अभी शंका किसी प्रकार की रखते हैं बा दिल खोल कर हास्य पूर्वक बात चीत नहीं होती. हां मेरा तातपर्य्य ओर है वह येह, कि मुझ से अबी कई पुरुषों की अपेक्षा बहरंग समझते हैं.

॥१२॥ मेरी आशय है कि आधीश की "पुलीटिकल" विद्या पढ़ाऊ जिस से राज्य संबंधी आंखे खुल जावे ॥ अर गवरनमिंट की सीमा विदित हो जावे.

॥१३॥ मैं जब तक आप का दर्शन नहीं कर लूंगा तब तक आतमा में शान्ति कदापि नहीं आयगी. ओर यह बात अब अपने बस से बाहर चली गई है ॥ क्या करूं ॥

॥१४॥ आर्यसमाज मेरठ से ब्रह्म स्वरूप के मान्य पत्र आये हैं परन्तु कोई समाचार पत्र नहीं आया: उन मान्य पत्रों से विदित होता है, कि वह "सब ओवर सियर" के पद पर आकर अच्छा काम करेंगे. मैंने उन से आने को लिख दिया हैं. प्रत्युत्र आने पर आप को विदित कर दिया जायगा.

॥१५॥ अग्नि शाला में होम प्रतिदिन होता है: प्रारम्भ में तो पोप लीला खूब मची थी. गणेश हाथी की मूर्ती की पूजा आदि विवहार भी हुआ. जिस से मेरी आतमा में बहुत खेद हुआ ॥ श्रीमान प्रति दिन मूर्त्ति पूजा करते हैं परन्तु निश्चय से नही करते. येह पालुसी है: अरथात नीति है ॥

॥१६॥ जो मान्य पत्र मुझ को आर्य समाज लाहोर ने दिया था आप के पास पहुंचा होगा अर अवलोकन कीया होगा यदि अयोग्य न हो तो वह मुझ को हां दे छोड़ें, मेरे पास रहेगा ओर यदि उसको

अपने हस्ताक्षरों से भी प्ररिभूषत कर देंगे तो वह मेरे पास ऐक सनंद के परकार रहेगा, अर अपने काम मुझको याद रहेंगे अर न भूलेंगे ।।

।।१७।। मेरी ऐक प्रार्थना है, कि मैं राजपूताने की सैर कीया चाहता हूं उसके पूरा करने के उपाय भी आप के हाथ में हैं ।। मेरी इस प्रार्थना को याद रखे अर जब अवसर कोई निकले, तो आज्ञा कर देना, इससे मुझे आप कृत्य कृत्य कर देंगे ।।

।।१८।। इस पत्र लिखने में कई बातें उलट पुलट हो गई हैं अर्थात प्रसङ्ग से निकली रही हैं, आप क्षिमा करेंगे ।।

ब्रह्मचारी[1] जी को नमस्ते कह देना ।। मेरे नाम का पिछला पत्र आधीश के नाम से आया था,

आप का दासानुदास. दर्शनाभिलाषी
जवाहरसिंह

—:o:—

[पूर्ण संख्या ४६६] पत्र

।। ओ३म् ।।[2]

।। श्रीमत ।। पाषंड मतखंडन सत्सिद्धांत मार्त्तंड वादीद्रवारण पंचानन सकल विद्वज्जन कमल कुल प्रकाशमार्त्तंड मूर्त्ति स्वप्रताप कृत दिग्विजय श्री परमहंस परिव्रांजकाचार्य स्वामि महाराजाय परमगुरवे नमस्तेऽग्रेभाषयाऽवगंतव्यम् आर्य्यानुचरों की यह विज्ञप्ति विदित होवें कि महाराज यांहां साहेपुराधीशों को क्षात्रशाला की आज्ञा फरमाई थो सा तो आजतक गोलमाल पोलपाल हो रही हैं यां हां भैरव क्षेत्र-पाल डाकिनीत्यादिक का ज्यो भाव अणाता था उँनकु जो जूत्यों सें पीटवा कें कैद कर दीया है फिर अक्षर लिखा के बाद बोडदीया सो दो सो दश गामों में कोइ विभावन अणावेंगे उेर[3] आप के चरणपंकजों की इच्छा करणे वाले ज्यो में हां जिन परें शुभ दृष्टि रख्य करै उेर

१. अर्थात् रामानन्द ब्रह्मचारी जी को।

२. यह पत्र पं० चमूपति सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग २, पृष्ठ ५९, ६० पर छपा है। ३. अर्थात् और।

परमेश्वर हमारी आशा कों पूर्ण करै कि कब यांहां आर्यसमाज होवें उेर श्रीयुत ठाकुर साब जुवारसिंह जी सें आज्ञा फरमा दीजिये आप सो हमारे उपर सुदृष्टि रख्या करै उेर महाराज यांहां अग्निहोत्र के होने सें सर्व लोगों कों बडा आनंद आया अग्निहोत्रादि कार्य आप साहेपुराधीशों कों फरमाया था सो तो कितनेक कार्य हो गया है परंतु क्षात्रशाला होने का कार्य आज तक हूवा नहिं सो अब आप क्षात्रशाला जलदी से हो जाय असी आज्ञा राजाधिराज सें लिख देवै इति भावार्थ: अब हम आपका शुभ पत्र की अभिलाषा करते हें सो कृपा पात्रों पे कृपा कर पत्र भेजै पंडित रामनिवाश जी की हवेली पत्र लिख्या बिहारीलाल उेर हम्मीरशर्मानें संवत् १९४० मिति आषाढ़ बदि १ गुरौ[1] अथसाहाय पुराख्यनगरात् जैन मतानुसारिसाधु बृद्धिचंद्राख्यस्य प्रणपत्ति मवध र्य ममोपरिसदा कृपालुर्भवत्वत्सदृश विद्वज्जनानां कृपया मत्सदृशल्पबुद्धीनां जनानां परमहर्षो जायते अत: कारणात् मयि सदा कृपा रक्षणीया यत: सुराणांपतिस्को गणानांपति: क: स चंडीसुतस्य प्रवाहीसखेक: मुकुंदस्य पत्नी सदा लंकरी का तदाद्याक्षरेर्यश्चिरंपातुभोव: १ आप बडेमहात्मा पुरस हो सद्धर्मकेपरूपक हो पुरुषार्थ के स्वरूपक हो यद्धर्म के दीपक हो पाषंडमत के जीपक हो आप के दर्शण की हमारै लालसा बहौत है कृपा कर पत्र पाबा भेजिये।

—:o:—

[पूर्ण संख्या ४६७] पत्र-सूचना

[मुंशी समर्थदान का पत्र][2]

—:o:—

[पूर्ण संख्या ४६८] पत्र

१३ जुन [१८८३] फिलौर[3]

श्री स्वामीजी नमस्ते[4]

विदित हो कि दो(२)मास हुए मे शमल: पर्वत पर गया था वहां

---

१. २१ जून सन् १८८३।

२. इस पत्र की सूचना ऋ० द० के पूर्ण संख्या ८४६ (भाग २, पृष्ठ ८६८) के पत्र में मिलती है।

३. आषाढ कृ० ३ सं० १९४० वि०।

४. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १, पृष्ठ १ पर छपा है।

बहुत ज्वर और खांसी होगया एक मास तक अन्न नही खाया बहुत दु:खी होकर नीचे को चला आया अंबला[1] से लाहोर को जाता था फलोर के असटेशन पर बहुत दु:खी होगया तब असटेशन वालों ने हसपताल मे पहुंचाया यहां ज्वर वा खांसी जाती रही है रोग सब जाता रहा है सब आपकी कृपा अच्छा हुं शरीर मे अशक्ति है आप अपना विस्तारपुर्व समाचार लिखना लफाफे मे पत्र भेजना

ह: आत्मा नन्द

—:०:—

[पूर्ण संख्या ४६६] **पत्र**

॥ श्री ॥[2]

Long Live
The of
Prince Wales

॥ स्वस्ति श्रीसर्वोपकारणार्थं कारुणिक परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीमद्दयानन्द सरस्वती जी माहराज के चरणरविन्दों में माहराजाधिराज शाहपुरेश की बारम्वार नमस्तेस्तु अपरंच—जो के जब आप यहां से पधारे जब से आपके दरसनों की अभिलाषा लाग रही है और अब यहां से आप के दरसनों के लिये काकासबलसिंह जी को भेजा है यह आपके षुसी के हाल लिषेंगे जब दिल बहुत प्रसन्न होगा और हाल तो आपने चिट्ठी भेजी उस्से मालूम हुआ और औरसियर[3] भी आप की कृपा से अच्छा तलास हो गया है ।

मिती आसाढ़ कृष्ण ३ सम्वत १६३६[4] कातारीष २३ जून संन १८८३ ईसवी—

हस्ताक्षर राजाधिराज नाहरसिंहस्य

—:०:—

---

१. अर्थात् अम्बाला ।

२. यह पत्र पं० चमूपति सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग २, पृष्ठ २१ पर छपा है ।

३. अर्थात् जवाहरसिंह (लाहौर) ?

४. यहां सं० १६४० होना चाहिये ।

[पूर्ण संख्या ४७०] पत्र

॥ श्री ॥[1]

श्री दयानंन्द सरस्वती जी आपकी चीटी[2] अबी मैंरे पास पांची बौ मेंने देषी औ बौत षुस हुवा और जौ जौ वाते आपने मेरे कु लीषा उसका जाब मेने तेजसिघ जी के साथ दीया है आप कौ बाकीफ करेगें और परसु मे अकीन है के जरुर मिलुगा सं० १९३९[3] रामी० आ० व्द ३

प्रतापसिघ

—:•:—

[पूर्ण संख्या ४७१] पत्र

[ओ३म्][4]

अजमेर आषाढ़ कृश्ना४ रविवार
ता० २४ जून १८८३ ई०

श्रीमत् सत्यधर्म्म प्रचारक अविद्यान्धकार निवारक श्रीमत् पण्डित स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज के पद कमलों में आज्ञाकारी अनुचर शुकदेवप्रसाद कृत अष्टांग प्रणाम वा नमस्ते स्वीकृत हों—आप की आज्ञानुसार[5] पण्डित दामोदर जी शास्त्री[6]। आप के पास आते हैं निश्चय है कि ये निज सुयोग्यता से आप को काम से तथा आचरण से सब प्रकार प्रसन्न रक्खेंगे और आप को बहुत कुछ सहा-

१. यह पत्र पं० चमूपति सम्पादित 'ऋ० द० का पत्र व्यवहार' भाग २ पृष्ठ ९९ पर छपा है।

२. द्र०-ऋ० द० का पूर्ण संख्या ८४३ (भाग २, पृष्ठ ८६५-८६७) का पत्र।

३. यहां संवत् १९४० होना चाहिये। इस पत्र में जिस चिट्ठी का उल्लेख है, वह चिट्ठी आषाढ़ बदी ३ शनि सं० १९४० की है (द्र०—इसी पृष्ठ की टि० २)। तदनुसार २३ जून सन् १८८३ होता है।

४. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १, पृष्ठ २०६-२०७ पर छपा है।

५ पं० दामोदर शास्त्री को बुलाने वाला ऋ० द० का पत्र उपलब्ध नहीं हुआ।

६. पूर्व पूर्ण संख्या ४६०, पृष्ठ ५४५ की टि० २ भी देखें।

यता देवेंगे—इन की वही इच्छा है जो प्रथम आप को निवेदन की गई थी कि ये गृहस्थी हैं इस से सदैव भ्रमण नहीं कर सक्ते सो दो चार मास रख कर इनको एक ही स्थान पर रख देवें कि ये अपने घर के लोगों को अपने साथ रख सकें और सवारी खर्च रेल तथा गाड़ी का जो उचित हो कृपा पूर्वक इन को बख्शा जावे आप की भी आज्ञा है—सर्व सभासदों की ओर से प्रणाम वा नमस्ते अंगीकृत हों किमधिकम्—

२०) रु० सूखे मासिक पर ये प्रसन्न हैं

पं० शालिग्राम जी भी आ गये हैं जैसी आज्ञा हो सूचित करें—

आप का आज्ञाकारी अनुचर
पं० शुकदेवप्रसाद
नार्मल स्कूल अजमेर कालेज

—:०:—

[पूर्ण संख्या ४७२] पत्र

[1]मुंबई, ता० २५ जून सन १८८३ इ०[2]

श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य्य अनेक गुणसम्पन्न वेदविहिताचार धर्म्म निरूपक दयानन्द सरस्वती स्वामी जी प्रति—

नमस्ते,

यत आपके आज्ञानुसार एक उत्तम घड़ी[3] लेके प्रोहित उदयलाल जी को ता० २२ जून को उदयपुर को भेजदी है, जो तेईस रुपीये में लीइ थी जिस्की बिल्टी की रसीद मिलगई और हमने शेष रुपीये दोके लिये प्रोहितजी को पत्र लिखा है कि वे जो आज्ञा करे तो मनीआर्डर वा पोस्ट की टिकट लेके उन्हों को भेज दें. परन्तु अबतक प्रत्युत्तर मिला नहीं मिलतेहि भेज दिया जायगा और जो इन्होको वे घड़ी पसन्त न हो तो पीछे लौट देने से रुपीये सब भेज दूंगा वेदभाष्य का

---

१. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १, पृष्ठ २७४-२८० पर छपा है।

२. आषाढ कृ० ५ सं० १९४० वि०।

३. इस विषय में पूर्व पूर्ण संख्या ४५९, पृष्ठ ५४३ की टि० ६ देखें।

सब हिसाव ता० १६ जून तक का मुन्शी समर्थदानजी को प्रयागको भेज दिया है. जिस्की प्रत आपकी इच्छा हो और आप आज्ञा करो तो आपको भी भेज दूंगा. परन्तु इस हिसाब में हम को जो वैदिक यंत्रालय से पुस्तक भेजे गए हैं उसीका हिसाब जो कि हमने कंई महीनों से खत लिखके मंगवाया हे तो भी अबतक मिला नहीं. जिस्से हमने और पुस्तक मंगवाना बंद कर दिया है. क्योंकि हम सब हिसाब साफ रखने चाहते हैं।

कराची आर्य्य समाज वाले स्वामी आलारामजी डेढ़ मास हुआ मुंबई में पधारे हैं. और प्रति रविवार को व्याख्यान भी देते हैं आधुनिक वेदान्तके नाना प्रकार के वादों को बहुत अच्छी प्रकार खण्डन करते हैं. मात्र संस्कृत नहीं जानते जिनका अभ्यास करने का प्रारम्भ किया है और इसी के ऊपर रात्र दिन बहोत प्रयत्न करते हैं. और प्रसङ्गोपात वैदिक धर्म्म का उपदेश भी करते हैं. जिन्हों का रेहने के लिये आर्य्यसमाज स्थान में और भोजनादि के लिये भी मैं और सुन्दरदास, लीलाधर ने बंदोबस्त किया है, वे दो तीन मास मुंबई में ठहरने चाहते हैं. पश्चात् आपका दर्शन करके चाहे कई मास आपके पास ठहरके अध्ययन करेंगे वा आप आज्ञा करेंगे वहाँ जायेंगे. वैसा इन्होंका इरादा है।

शेठ छबिलदास लल्लुभाई के पुत्र रामदास बिलायत मे पढ़ने को गए हैं जिन्होंके पत्रों पर से यह विदित होता है कि कंई दिन तक आक्सफोर्डमें पं० श्यामजी के साथ रहकर क्याम्ब्रीज के पाठशाला में पढ़ने को गए हैं. सो आपको विज्ञापनार्थ लिखा है।

मुंबई आर्य्यसमाज का स्थान बांधने का काम सांप्रत थोडे ही कामदार लगा के लेना पड़ता है क्योंकि चार मास में दो सो रुपीयों से जियादा पट्टी में भरेगए नहीं. और केठ ठाकरशी नारणजी, द्वार्का-दास लल्लुभाई और दामोदर काका आदि ग्रहस्थोंने जो प्रथम पट्टी में आपके समक्ष रुपीये भर दिये थे इन्होंने अबतक कुच्छ दिया नहीं. पंधरह सो १५००) रुपीये प्रथमकी उघराणी के बाकी हैं. बहोत धक्के देके देते देते करते अब तक कुच्छ भी दिया नहीं. और नाभी नहीं कहते. शेठ छबिलदास लल्लुभाई नें अब तक कुच्छ भरा नहीं. शेख लखमीदास खीमजी स्थान देख के फिर भर देने को कहते हैं और स्थान देखने आने को अवकाश नहीं. अर्थात् यह भी टालाटाली करते

हैं और मास्तर प्राणजीवनदास आठ दिन में सभा में बराबर हाजर रहते हैं, और व्याख्यान की बराबर व्यवस्था करते हैं, और आर कार्य्य करने को इनको भी अवकाश नहीं. और सुन्दरदास, लीलाधर कभी कभी पट्टी भराने की तजवीज में प्रयत्न करते हैं. परन्तु इन्हों को भी अवकाश नहीं **अर्थात् सब कों अपने अपने धन्दा रोजगार की पूर्ण उन्नती करने की अभिलाषा है**-हमने यह थोड़े कामदारों से काम सुरु रक्खा तो भी १०००) रुपीयों से जियादा हमारी गीरा से खर्च कर चुके हैं तो भी समाजस्थों के नेत्र नहीं खुलते. यह **ऐसाहि चलेगा तो हमको भी आगे काम बंद कर देना पडेगा**-क्योंकि धन और तन से किसी की साह्यता नहीं. आप प्रथम यहां पधारे थे तब व्याख्यानादी में जो व्यय हुआ है सो करने के लिये आप को कब हुकम हुआ था वैसे वैसे क्षुद्र प्रश्न अन्तरङ्ग सभा में दामोदर काकादि प्रभृति निकालते हैं. कि जिस्से अव्यवस्था होने से दाम देना न पडे-यह तो ठीक है कि और समाजस्थ वैसे नादान नहीं हैं. क्योंकि वे समझते हैं कि दाम न देने के लिये यह सब प्रपंच है परन्तु यह पक्ष होने से प्रति १५ दिन में अन्तरङ्ग सभा दो मास हुए बराबर होती है. और कोई अन्तरंग सभा के आज्ञा बिना एक पाई भी खर्चने नहीं सकते. और जिस्सेहि हमने विठ्ठल को रुपीये ४०) कोशाध्यक्ष के पास से दिलाने के लिए अन्तरङ्ग सभा को पत्र लिखके विठ्ठल को भी उसी दिन बुलाया था. और अन्तरङ्ग सभा ने शेठ माधवदास रुघनाथदास के यहां से मंगा के देने के लिए २५ दीन हुआ हुकम किया था. परन्तु अब तक वे रुपीये दिए नहीं जिस्से हमने लीलाधर और सुन्दरदास जी को कहा कि यह ठीक होता नहीं विठ्ठल को तूर्त रुपीये देने चाहिए. जिस्से इन्होंने कहा कि यह अन्तरङ्ग सभा तक कभी जो कोशाध्यक्ष रुपीये नहीं देंगे तो हम देंगे विठ्ठल को अन्तरङ्ग सभा के दिन बुला लेना परन्तु कल विठ्ठल हमारे घर को आया था उनने कहा कि स्वामी जी ने मनीआर्डर करके रु० ४०)लाल जी महाराज को भेज दिये थे. जो इन्होंने हम को दे दीए हैं. अब हम स्वामी जी के पास जाने को चाहते हैं. इस लिये आप स्वामी जी को लिख के सम्मती मंगा के हमको कह दीजिए वैसा ही मैं तूर्त रवाना होजाऊंगा इस लिए आप का विठ्ठल को भेजने के लिए क्या अभिप्राय है ? सो कृपा करके लिख भेजीए.

हम विठ्ठल को ४०) रुपीये देने के लिए कभी विलंब न करते.

परन्तु आप मुंबई में पधारे इसी के पूर्व से फाल्गुन तक हमको समाज में से समाज के लिए जो जो खर्च किया है इनी में से एक कवडी भी फिर मिली नहीं. और जब जब अन्तरङ्ग सभा में यह विषय मैं निकालता हूं तब सब एक मत होके कहते हैं कि इसका विचार आगे होगा. परन्तु कभी लेने देने के लिए विचार करते नहीं. और समाज स्थान का काम चलता है इसके कामदारों और माल मसाले वालों को साम्प्रत हमकोहि देना पडता है. लगभग सब मिलके निदान ३०००) रुपीयों तक हमारे रोक रहे हैं. जिसी का ख्याल कोई करते नहीं. जिस्से हमने आपकी भी प्रथम विनती कीई थी। कि इन्हों को कभी आप लिखगे तो अवश्य यह मोहरूपी निद्रा लगी है इसमें जागृत होंगे. गत अन्तरङ्ग सभा में हमने प्रयत्न करके ठाकरशी आदि समाजस्थों को बांध काम का विचार करने के लिए बुलाए थे। तो इन्होंने प्रथम की न्याई बड़ी बड़ी लम्बी चौडी बातें करके रुपीये भेज देने का भी कबूल किया जिसको आज १२ दिन हुए, जिसके लिए रोज आदमी जाता है. दो बखत मैं भी गया था परन्तु अब तक कुच्छ नही. यह व्यवस्था है सो आपको विज्ञापनार्थ लिखा है.

हमारे शरीरको कंई दिन अच्छा नहीं था और सूरत नाशिकादिस्थानों में कार्यवशात् गया था और खांडेराव[1] काभी शरीर अच्छा न होने से वह भी मुलुख को गया था. जिस्से आपके पत्रों के प्रत्युत्तर नहीं लिखें. सो आप कृपा करके क्षमा करोंगे. और कुच्छ विशेष कार्य्य हो कृपा करके दासको लिखते रहें.

राव बहादूर गोपालराव हरी देशमूख कंई मास भये मुंबई में नहीं पुर्ण को हैं. जिस्से वे भी समाजकार्य में कुच्छ काम नहीं लगते. इन्हों के लड़के लक्ष्मणराव गोपाल देशमुख मुंबई में आये जब हमको बुलाके आप का पत्ता पुछा और योग के विषय में वे कुच्छ विशेष

---

१. क्या यह वही खाण्डेराव पाण्डुरंग है, जिसने ऋ० द० के बम्बई से लौटते समय खण्डवा में ऋ० द० के ठहरने की व्यवस्था की थी? खाण्डेराव के नाम ऋ० द० ने तीन पत्र भेजे थे। द्र०—पूर्ण संख्या ६७०, ६७२, ६७५ (भाग २)। खाण्डेराव के पत्र इस भाग में पूर्व पूर्ण संख्या ३२०, ३२८ देखें। खाण्डेराव के पत्रों से सूचित होता है कि उसने १-२ पत्र और भी लिखे थे। पूर्व पूर्ण संख्या ३२८ से ऐसा विदित होता है।

प्रश्न करने लगे और मुझको कहा कि हम स्वामीजी की मुलाकात करके इस विषय में कुछ निश्चय कर लेने को चाहते हैं. जिससे हमने अजमेर आर्य्यसमाज के ऊपर एक पत्र दिया था जो आपको अवश्य मिले होंगे[1] जिसके हाल भी अवकाश हो तो कृपा करके आप लिखें। रामानन्द जी को हमारे नमस्ते कहेना। अलामिति विस्तरेण० इति०।

मैं हूं आपका आज्ञांकित् सेवक.

सेवकलाल कृष्णदास

मंत्री आर्य्यसाज. मुंबई,

स्थान खाते का

ता० क० कलके वर्त्तमान पत्र से यह विदित होता है कि, सेठ लक्ष्मीदास खीमजी ने अपने लडकाओ को महराज को बुला के समर्पण दीलाया जिस में गगादास कीसोरदास के घरकी भी स्त्रीया सामेल थी.........

—:o:—

[पूर्ण संख्या ४७३] पत्र

"ओ३म्"[2]

स्वस्ति श्री १०८ श्री स्वामी जी म्हाराज श्री दयानंद सरस्वती जी के चरणार विंद मैं सेवक छत्र दत्त की साष्टांग प्रणाम दंडवत मालुम होसी—अप्रंच आपके पधारने के पिछें कोइ कृपा पत्र आय नहीं सो कृपा करके भेजावसी और सेवक पर सुद्रष्टि हैं जेसी बनी रहैं और वेद भाष्य की पुस्तका असाड़ बुदी १ को मेरे पास आ गइ है[3] सा मालुम हो सी अब दोयेक दिन मैं रुप्या प्रयाग भेजुंगा अधीश

१. द्र०—पूर्व पूर्ण संख्या ४५९, पृष्ठ ५४३ की टि० ५।

२. यह पत्र पं० चमूपति सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग २, पृष्ठ ३४, ३५ पर छपा है।

३. इसके लिये जवाहरसिंह का ९ जून सन् १८८३ का पूर्व पूर्ण संख्या ४५३ (पृष्ठ ५३८ पं० २०) का पत्र देखें। ऋ० द० के पूर्ण संख्या ८५३ (भाग २, पृष्ठ ८७४) के पत्र में भी इस का उल्लेख है। छत्रदत्त के अगले आषाढ सु० ७ सं० १९४० के पूर्ण संख्या ४९४ के पत्र में रुपये भेजने का उल्लेख है।

बहोत आनंद मैं हैं आपके हुक्म माफक अग्निहोत्र का सर्व कार्य यथार्थ करा दीया हैं आपके दर्शनो की अभिलाषा बहोत हैं सो परमेश्वर जलदी दर्शन देंगे सिब शर्मा जी हाल कोटे से आये न्ही बहां से नमस्ते मालुम कराया हैं अधीशु[1] का भी मालुम होवैं और मेरे लायक काम होव सो लिषावसी यहां आपका हुक्म हैं इत्ता दीन कार्य मैं लग रहा था जी से पत्र न्ही भेजा सो माफ करसी अधीश[2] नित्य पातंजल[3] विचारते हैं मोती आसाढ़ सुद ६ स० १९४०[4] दसकत आप का सेवग छत्रदत्त[5] का

पत्र जलदी में भेज्या हैं सो माफ करैं कोई चुक हो तो पीछें मैं सब समेचार यथावस्थित लिखुंगा अमर दान जी के आशीर्वाद ५० आदमी अछे आर्यमत में हो चुके हैं फेर भी होंगे।

—:०:—

[पूर्ण संख्या ४७४] पत्र

ओ३म्[6]

सिद्धी श्री श्री १०८ सर्व सुगुण सम्पन्न कारुणिक परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री मद दयानन्द सरस्वती जी की सेवा में

दास जवाहरसिंह की कोटवार नमस्ते पहुंचे पत्र आप का तीन चार रोज से आया है[7] अधिक काम होने से उत्तर नहीं लिखा गया था. शाहपुरेश भी उसी कारण से उत्तर नहीं लिख सके थे. कल को मैं राजाधिराज के साथ "काछोला को जाऊंगा वहां से हजूर ऐक पत्र भेजेगें उसमें सम्पूर्ण ब्रितान्त लिख दिया जायगा. स्वामीजी महाराज आप के पत्र अविलोकन से जो कुछ दिल पर गुजरा था उसके प्रकट करने मैं तो कुछ लाभ नही, परंतु यह सत्य है, कि उस से मैं अपना

---

१. अर्थात् कोटा के राजा का। २ अर्थात् शाहपुराधीश।

३. अर्थात् योगदर्शन। ४. २६ जून सन् १८८३।

५. यह संस्कृत नाम है लौकिक नाम छीतरदत्त था।

६. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १, पृष्ठ १४१-१४४ पर छपा है। यह पत्र अगले पूर्ण संख्या ४७५, ४७८ के अनुसार रजिस्ट्री से भेजा गया था।

७. यह पत्र हमें उपलब्ध नहीं हुआ।

"अब" उपकार समझता हूं. मासिक के विषय में मैंने निस्सन्देह बहुत दफे लिखा था, परन्तु "स्वामीजो" जो मैं आपको" न लिखता तो किसको लिखता ? यहां आपके विना मुझे हुल्लास देने वाला कौन था वा है, जिस हाल से निकल कर मैं लाहौर से आया हूं वह असे थे कि उनका अब लिखा व्यर्थ है केवल इतना हो कह देता हूं कि आपके सहारे होकर हो आया हूं नहीं तो मुझे समाज वाले तथा संबंधी कदापि न आने देते: आप भत्ते आदि के विषय में लिखते हैं सो हरी इच्छा, अब दांत हिलाने से मुझे कुच्छ नफा न होगा ५) मिलें, व ५०) मिलें उस से मेरा परदेश में गुजारा हो वा न हो, अब तो रहूंगा ही, और जो कुछ हो सके करूंगाही. रोटी अलग करने के विषय में आधीश से प्रार्थना पूर्वक कहा गया, तथा वह पत्र भी जो इस विषय में आपकी ओर से आया था श्रीमान को दिखलाया गया उन्हों ने कहा कि अब तो इसी प्रकार से चलने दो फिर देखा जायगा.

मैं यहां अकेला हूं कोई संबंधी नहीं लाया. जब लाऊंगा तो फिर वैसा प्रबंध कर लिया जायगा जैसा हजूर (आप) आज्ञा करते हैं: और जो यह भी स्वीकृत न हो तो आप मुझ को फिर ऐक वार आज्ञा पत्र भेजें मैं आप रोटी बना लिया करूंगा ।

मंनें अब यहां समाज बनाने की चेष्टा की है आशय है कि १५ दिवस तक समाज नियम कर दूंगा. लाहौर से नियमोपनियमादिक मंगाऐ हैं ताके दूसरे पुरुष समाज संबंधी उपनियमों से ज्ञानी हो जाये. ईश्वर ने चाहा तो मेरे व्याख्यानों से साधारण को बहुत लाभ होगा यह ऐक राज पुस्तकालय, बनाया जायगा जिस में अच्छे अच्छे पुस्तक रखे जायगे ओर साधारण के अवलोकनार्थ वह पुस्तकालय खुला रहा करेगा.

यहां यह बात देखी गई है कि हजूर जो कुछ करना चाहें चाहे वह योग्य हो चाहे अयोग्य दूसरे पुरुष उसकी बड़ी उपमा करने लग जाते हैं. मैं इस बात के विरुद्ध हूं: ऐक वार मैंने श्री जी को किसी खेल के खेलने सें मना किया था. लोगों ने बुरा मनाया होगा, यह मैं नहीं जानता: परंतु आधीश जी ने दो तीन वार के कहने सुनणे से उसका प्रतियाग कर दिया. यह बात उत्साह दायक है. अब तो समाज बनाने का ख्याल लग रहा है काछोला से आते ही प्रारंभ होगा.

मैं जब लाहोर से चला था तो ५ मोहर सोने की हज़ूर की नजर वासते अर २५) रु० श्री हज़ूर (आप) के वासते लाया था. हज़ूर ने नहीं ली थी. प्रार्थना पूर्वक आप से पूछता हूं कि वह २५)रु. जो इसी नमित्त से लाया था श्री जी स्वीकार कर लेवे ओर आज्ञा करें ते मनीआरडर करके भेज दियो जांवे.

आश्य है कि दास पर अपनी क्रपाद्रिष्टी सदीव रखेगे

मिती अ० वि०[1] ५ सं १९४० | दास जवाहरसिंह— शाहपुरा.

—:०:—

[पूर्ण संख्या ४७५] पत्र

ओ३म्[2]

श्री स्वामीजी महाराज। नमस्ते

कल ठाकुर सवलसिह समाचार लेने के नमित्त स आप के पास राज्य की ओर से आंवेगे, स्वारी आदि का प्रबंद्ध न करें यही यहां पर सोचा गया है॥

मै कल रिजिष्ठरी करा के ऐक पत्र भेज चुका हुं[3] इसलिये आज कुच्छ लिखने योग्य बात नहीं हैं॥

मेरठ वाले जिस "ब्रह्म स्वरूप" को सबओवरसीयर के वासते यहां भेजते हैं वह **आर्य्य** नही किन्तु आर्य का **भाई** हैं उस को हम स्वीकार करें वा नहीं? मेरठ समाज वाले **सामान्यता** से उसकी सफारश करते हैं साफ साफ नही करते

आप मेरे पत्र को सबलसिहजी को न दिखलावेंगे येह मुझे आश्य

---

१. अर्थात् आषाढ। पंजाबी में 'अषाढ' कहते हैं। तदनुसार २५ जून सन् १८८३। जवाहरसिंह पूर्व पत्र पूर्ण संख्या ४५३ (पृष्ठ ५३७) के अनुसार ५ या ६ जून सन् १८८३ को शाहपुरा पहुंचे थे।

२. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १, पृष्ठ १४०-१४१ पर छपा है।

३. यह पत्र पूर्व पूर्ण संख्या ४७४ (पृष्ठ ५६२) पर छपा है।

है ।। उन सें सुन लेना पर मेरी बाबत बताना नंही शेष जो योग्य हो वह करें ।।

गो रक्षा का एक पत्र भेजता हूं पटयाला में ऐक पुर्ष ने ६०,००० पुरुषों के हस्ताक्षर कराये हैं ।। इस विषय में सभाजों ने बहुत सुसती करी, नंही तो आज तक काम बहुत हो जाता बूंदी महाराज का हाल फिर नहीं सुना ।।

देवीदत्त बोरा आपको बहुत करके नमस्ते कहता है आप के दर्शन की अभिलाषा लग रही हें ।।

रामानन्दजी को नमस्ते—[1] आपका दास

जवाहरसिंह

—:o:—

[पूर्ण संख्या ४७६] पत्र

ओ३म्[2]

सिद्धश्री परमपूजनीय परमहंस परिव्राजकाचार्य्य असमद् गुरुचरण कमलेषु निवेदन मिदम्

निवेदन आप से यह कीया जाता है सो मालूम होय अब में सहर पानीपत मे व्याकरणाऽष्टाध्यायी पढता हूं ओर सहर हंसार[3] में उक्त पण्डित के पास पढने का आप से कही थी सो पंडित वहां पर नही है सो हे भगवन् जरूर जोधपुर के वास का समाचार सहर पानीपत मे बाजार बजाजा दुकान कन्हैयालाला चिरंजीलाल की पर जरूर हस्ते रामानंद जी से भिजवा देना जी

श्रीयुत मद्रामानन्द ब्रह्मचारी जी को वहूधा नमस्ते आ० व० ११[4]

ईश्वरानन्द

---

१. इस पत्र पर तिथि नहीं है । जवाहरसिंह के ३० जून १८८३ के अगले पूर्ण संख्या ४७८ के पत्र को मिलाकर पढ़ने से ज्ञात होता है कि यह पत्र ३० जून से कुछ दिन पूर्व लिखा गया था । इस पत्र में रजिस्ट्री पत्र का संकेत है, वह सम्भवत: जवाहरसिंह का आषाढ़ वदि ५ सं० १९४० अर्थात् २५ जून १८८३ का है । अत: यह पत्र २६ जून १८८३ आषाढ़ वदि ६ सं० १९४० को लिखा गया होगा । २. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १, पृष्ठ ५-६ पर छपा है । ३. अर्थात् हिसार में ।

४. यहां आ० से आषाढ और आश्विन दोनों समझा जा सकता है, परन्तु

[पूर्ण संख्या ४७७] पत्र

ओ३म्[1]

स्वस्तिश्रीमत्परमहंस परिब्राजकाचार्य्य श्रीयत शकल गुणगरीष्ठ ब्रह्मकर्म्म समर्थ श्री १०८।। स्वामीजी महाराजजी योग्य सेवक तारादत्त शर्म्मा: का सहश्रधा नमस्ते के अनन्तर विदित हो कि महाराज जो कि बेषाख मास मैं रामानन्द ब्रह्मचारी जी का यहां आना हुवा था उस शमय अहो भाग्य हम लोगों के जो की आप के स्नेहानुकूलात्यंत सहायता से शदुपदेषों से प्रफुल्लित कर महान्धाकार शे निकाल कर बाहर किया आशा है की पत्र द्वारा आप भी सेवक प्रती कुछ उपदेश करैंगे और मंत्री आर्य्यसमाज लाला रामचरण जी कहते थे की योधपुर का हल हम को अभी अच्छी तरह से मालुम नही हुआ मं पण्डित लक्ष्मीदत्त जी शे सन्धि विषय पढा करता हूं ।। इत्यलम्

।। हस्ताक्षर ।। तारादत्त शर्म्मा: ।।

सम्बत् ।। १९४० ।। फर्रुषाबाद ।।

आषाढ कृष्णेकादश्या ११ शनौ[2] ।। मुहल्ला नुनिहाई फक्त ।।

[इस पत्र के पृष्ठ पर श्रीरामानन्द ब्रह्मचारी के नाम यह लिखा है—]

ओ३म्[3]

स्वस्तिश्री मित्रवर श्रेष्ठोपमायोग्येषु श्री ३ रामानन्द ब्रह्मचारी जी इत: तारादत्त उप्लतिनो नेकधा प्रणतितय: अत्र कुशलं तत्रास्तु मुष्यात्मा दतञ्च हे परम-प्रज्ञ पत्र तुमारे आये समस्त व्यवहार जानै इस वीच वर्षा खूब हो रही है मुझ को आप के पत्र आनै पर परम आनन्द हुवा आप एसे ही सनेहपत्र

म० मुंशीराम जी ने टिप्पणी में लिखा है—'इस कार्ड पर डाक घर का मोहर १ जुलाई का है।' अत: यह पत्र आषाढ़ बदी ११ शनिवार सं० १९४० = ३० जून १८८३ का है।

१. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्र व्यवहार' भाग १, पृष्ठ ३३१-३३२ पर छपा है।

२. ३० जून सन् १८८३।

३. यह पत्र भी 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १ के पृष्ठ ३३२-३३३ के नीचे छोटे अक्षरों में छपा है।

और आप का लिषना यथार्थ है आप के स्वभाव का परिचय सदां आप के सुवचनो शे तथा पत्र द्वारा हुवा करता है इस में सन्देह नही कि आप का जो परम कोमल हृदय हमारे कल्याणार्थ अत्यंम स्नेह स्नेआह्नुत और आर्द्र है आगे मेरा सन्धीविषय कुछ रहा है और त्रिलोचन[1] भी पढ़ते है तथा चम्पा भी पढ़ती है धर्म्मदत्त सपत्नीक आय गये है रघुवंश पढ़ा करते हैं वृद्ध माता तथा आप की माता और बुआ जी उक्त यत्न करती है और आप का अहर निश चिन्तवन किया करती हैं और कहती हैं की १ वेर और दर्शन हो जाय और मेरी १ वेर इच्छा है की श्री स्वामी जी का दर्शन स्नेह पूर्वक करूं और रामचरण जी नें कहा है की हम को समस्त हाल तहां लिषो और भाई त्रिलोचन का विवाह शरद तथा शिसिर रितु मं अवश्य होगा इस मं कुछ सन्देह नही और अब मैं भी समाज मे जाया करता हूं और माता तथा वृद्ध माता बुआ का बहुधा अशोस त्रिलोचन तथा धर्म्मदत्त नित्यानंद का बहुधा नमस्ते अलमिती विस्तरेण किम् सं० १९४० आषाढ़ कृष्णैकदस्या शनौ

—:०:—

[पूर्ण संख्या ४७८] पत्र

[2]श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य्य श्री १०८

मद्दयानन्द सरस्वती स्वामी जी महाराज नमस्ते

बिन्य पूर्व्वक प्रार्थना है कि लाहैर आर्य्यसमाज मुझ से ल: मदन-सिंह जी के विष्य में पूछती है कि उदयपुर मैं वह हैडमासट्र के पद के लिये स्वीकार किये गये कि नंही

२ ऐक सब ओवरसियर मेरठ समाज वाले भेजते हैं परंन्तु वह आप आर्य्य नही है किंतु वह ऐक आर्य्य का भाई है. और पं: उमराउ सिंह जी रुढ़की से लिखते हैं कि सबओवरसियर ३०) मासिक पर कोई नंही आता अधिक माँगते हैं आज पण्डित जी से फिर पूछा है कि किया अधिक मांगते हैं ? इस में जो कुछ आप की आज्ञा हो, वह कीया जायगा

३ ऐक पत्र रिजिष्ठरी कीया हूआ महाराज की ओर भेज चुका

---

१. यह रामानन्द ब्रह्मचारी का बड़ा भाई है।

२. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १, पृष्ठ १५०-१५१ पर छपा है।

हूं[1] उसका उत्तर आपने नंही दिया. उस की चिन्ता है, कि वह पहुंच गया हो. क्या क: सवलसिंह जी के हाथ ही उत्तर आयेगा.

४ आधीश यहां के आनन्द में हैं.

५ विशेष समाचार मेरे पूर्व पत्र के उत्तर आने पर निरभर है उस से पूर्व नहीं लिख सकता.

६ ईश्वर मुझ को आप के दर्शनों से कब त्रिप्ति प्रदान करेंगे.

आप का दास व दर्शनाभिलाषी

ज्वाहरसिंह: उ. म, म. श. पु.

(३० जून सं १८८३)[2] देश मेवाड़

—:०:—

[पूर्ण संख्या ४७६] **पत्र**

ओ ३ म्[3]

श्री मत्परमहंस परिव्राजिका चार्यवर्य जगद्विख्यात सत्यमत प्रचारक जगद्गुरु श्री स्वामी जी महाराज के चरण कमलों में दास की नमस्ते

महाशय

विनयह है कि आप की खिदमत में एक पत्र शाहपुरे में दास ने पेश किया था[4] हाल मालूम हुआ होगा परंतु आप ने उस पत्र को अच्छी तरह से विचारा नहीं सिर्फ नाम तो आप ने लिखा[5]……… ……………………………………………………………………[6]

की उम्मेद नहीं है भला नौकरी बढ़ना और इनाम पाना तो दर किनार है परन्तु भलाई लेना ही अति कठिन है—मेरा यह अभिप्राय

१. यह संकेत पूर्व पूर्ण संख्या ४७४, पृष्ठ ५६२ के पत्र की ओर है।

२. आषाढ कृ० ११ सं० १९४० वि०।

३. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १, पृष्ठ २१४-२१६ पर छपा है।

४. बलदेव का यह पत्र हमें नहीं मिला।

५. ऋ० द० का यह पत्र हमें उपलब्ध नहीं हुआ।

६. यहां पाठ लेखक ने ही छोड़ा है ऐसा प्रतीत होता है। आगे भी इस पत्र में ऐसा ही समझें।

नहीं है कि तनखाह बढाने के लिये पत्र लिखा है ऐसा आप न समझें —नवमा-इज्जत की नोकरी चाहे १) रुपये महीने की हो बहुत अच्छी है और विना इज्जत की नोकरी १०००) रुपये रोज की भी व्यर्थ है—घर के कागज में जो समाचार आया है उस को देखने से तो यह पत्र आप को पेश नहीं कर सकता परन्तु अत्यन्त काहिल होकर पत्र देना अर्थात् पेश करना ही पड़ता है—किसी की खुशामद करना ……………मेरे से नहीं बन पड़ता क्योंकि मैं किसी का देनदार नहीं और न किसी दबेलू हू—मुझ को तो शाहपुरे के हाल ही से मालूम हो गया था कि तेरा जोधपुर जाना अच्छा नहीं और रुजगार भी तेरा किसी ने किसी दिन जाता रहे…………………………………… का राजी खुशी से सीख देवे कि देख परमेश्वर पीछे क्या हाल गुजरता है देखा चाहिये—(जियादह हद्द हद्दब) इत्यलम्—इन सब बातों का हाल कुछ ब्रह्मचारी जी जानते हैं

विनयपत्र आप का दास बलदेव मुकाम जोधपुर राज[1]

मारवाड़

[पूर्ण संख्या ४८०] पत्र

[ओ३म्][2]

Ajmere 3rd July 1883..[3]

अजमेर ता० ३ जुलाई १८८३ मंगल

श्रीमद्विद्वद्वर्य्य परमहंस परिव्राजकाचार्य सत्यता प्रकाशक, जगदी-

---

१. इस पत्र में तिथि नहीं है। बलदेव के २३ जुलाई १८८३ से कुछ दिन पूर्व स्वामी जी महाराज की नौकरी छोड़ दी थी, यह उसके आगे छपने वाले २३ जुलाई १८८३ के पत्र से व्यक्त है। अतः यह पत्र उससे कुछ दिन पूर्व अर्थात् १८८३ के पूर्वार्द्ध में कभी लिखा गया होगा। 'बलदेवसिंह शर्मा' के नाम ऋ० द० का एक पत्र 'ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन' भाग १ में पूर्ण संख्या ४२ (पृष्ठ ५९) पर तथा दूसरी पत्र-सूचना पूर्ण संख्या ४५५ (पृष्ठ ५०६) पर छपी है। यह बलदेव प्रस्तुत पत्र लेखक बलदेव से भिन्न है। बलदेवसिंह शर्मा (भारौल) जिला मैनपुरी का था और यह बांदनवाड़ा (राजस्थान) का है।

२. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १ पृष्ठ २०७-२०८ पर छपा है। ३. आषाढ कृ० १४ सं० १९४० वि०।

पकारक श्रीस्वामी जी महाराज नमस्ते ? अभ्युत्थान और अनेक शिष्टाचार पश्चात् निवेदन स्वीकृत हो निश्चय है कि पं० दामोदर जी आप की सेवा में पहुंचे होंगे[1] और आशा है कि कार्य्य आप की रुचि के अनुकूल करें—यहां पर कालेज २५ जून से जारी हो गया—पंडित शालिग्राम जी सह कुटुंब आगये हैं जो आज्ञा हो सो कहा जावे—वर्षा यहां केवल एक दिन रविवार १ जून हुई ह ठंढी पवन चलने लगी है—सुना है कि शाहपुरे में हवन होता है यहां का जल पवन अनुकूल नहीं आया किसी अवसर की प्रतीक्षा लग रही है—इच्छा है कि वहां पर आप के दर्शन करूं समय पाकर करूंगा और आप की आज्ञा भी चाहिये आप के कुशल मंगल तथा अन्य आवश्यक वृत्तान्त सुनना चाहता

किमधिकम्

आप का
शुकदेवप्रसाद

—:०:—

[पूर्ण संख्या ४८१] **पत्र**

आर्य्यसमाज अजमेर[2]

नं० ४२६ ता: ३-७-८३[3]

श्री स्वामी जी महाराज नमस्ते—

कुछ दिन हुये आपका कृपा पत्र आया[4] था कई कारणों से मैं उस का उत्तर नहीं दे सका. आपके जोधपुर जाते समय गाड़ी का न मिलना वास्तव में शोकदायक है और इस क्रम से कितने एक सभासदों का मन आपके लिखने से प्रथम ही उदास है परन्तु समाज में

---

१. द्र०— पूर्व पूर्ण संख्या ४७१ (पृष्ठ ५५६) का पत्र। पूर्ण संख्या ४८० के पत्र में दामोदरदास नाम लिखा है।

२. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १, पृष्ठ १६६-१७२ पर छपा है।

३. आषाढ कृ० १४ सं० १९४० वि०।

४. यह पत्र हमें प्राप्त नहीं हुआ। 'ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन' के पूर्ण संख्या ८४४ भाग २, पृ. ८६७ पर 'पत्र-सूचना' मात्र छापी है

जुदी जुदी प्रकृति के मनुष्य होते हैं इस कारण इस क्रम के भी कुछ भागी होंगे. इसमें विशेष लिखना नहीं चाहता. आप जो कुछ अनुचित हुआ क्षमा करें

पंडितों अथवा और किसी मनुष्यों का समाज की मार्फत बुलाने से ईस समाज का यह अभिप्राय था कि उक्त मनुष्यों का चाल चलन आपको भली भांति प्रतीत हो जावेगा जिससे आगे को कोई विघ्न न पड़े.

पंडित दामोदर दास[1] और स्वामी केशवानन्द[2] आप की सेवा में पहुंचे होंगे स्वामी केशवानन्द जी ने मार्ग का खर्च इस समाज से मांगा था परन्तु समाज ने यह विचार कर कि दो मनुष्य तो इनके साथ में हैं दूसरे आर्य्य समाजों के नियम के अनुसार वैदिक धर्म पर इनकी दृढ़ता भी नहीं है वृथा धन जाते देख नहीं दिया और कहा गया कि यदि स्वामी जी के पास जाने से वैदिक धर्म पर आपकी पूर्ण दृढ़ता हो जावेगी और स्वामी जी हमको लिखेंगे तो हम पूर्ण रीति से आपकी सेवा करेंगे. सो अब जैसा कुछ हाल इनका आपने देखाहो उस्से सूचित करें

पंडित सालिकराम छुट्टी से आगये हैं उनको पंडित के वास्ते पूछा कि काशी में क्या वंदोवस्त कर आये उन्होंने कहा कि मैं तो कांशी नहीं गया परन्तु पंडित रामचन्द्र जो हमारे कालेज के नायब पं० हैं वे गये थे उनसे जो पूछा तो उन्होंने कहा कि काशी में और तो कोई पंडित स्वामी दयानन्द सरस्वती के पास जाने को उद्यत नहीं हुआ परन्तु एक पंडित राम निरञ्जन नाथ त्रिपाठी ३०) मासिक पर आने को उद्यत हुआ सो यदि आपको स्वीकार हो तो लिखें आप के लेख आने पर उनको काशी से बुला लिया जावेगा. पं० शालिकराम जी ने यह भी कहा यदि स्वामी जी के उक्त पं० को स्वीकार करेंगे तो हम काशी के पंडितों से उक्त पं० जी की विद्या की और भी निश्चय करलेंगे इस में जैसा आप उचित समझें वैसा लिखे मेव कालेज डिवीजन के जो इन्जिनियर साहब थे वे शिमले को बदल गये

---

१. ये वे ही पं० दामोदर हैं जिन्हें पं० शुकदेव ने स्वामी जी महाराज के पास भेजा था। द्र०—पूर्व पूर्णसंख्या ४७१ (पृष्ठ ५५६) तथा ४८० (पृष्ठ ५६९)।

२. इनके विषय में कुछ ज्ञात नहीं है।

उनकी जगह पर सरदार भगतसिंह इञ्जिनियर हुये हैं उन्ही के दफ्तर में मैं भी काम करता हूं वे कहते थे कि **गुजरात में मूलराज ए० मे०**[1] **हम** से **मिले थे और आर्य्य समाजों को पक्षपाती** कहते थे इस कारण हमने और उन्होंने मिलकर एक संस्कृत पाठशाला जुदे होकर नियत की है परन्तु आपने जो उदयपुर में २३ मनुष्यों से सभा नियत की है उसमें इन्हीं महाशय मूलराज ए० मे० का दूसरा नम्बर है यह देखते हुये हमको आशा नहीं कि वे आर्य्य समाजों को पक्षपाती बताते हों. यह केवल सिरदार साहब का कथन मालूम होता है यहां एक सभा देश उन्नति के लिये नियत हुई है जिस में बहुधा प्रार्थना समाज के सभासद हैं उस सभा के सभापति सरदार भगतसिंह जी हुये हैं—शोक है कि ऐसे योग्य पुरुष इस आर्य्य समाज के कोई सहायकारी नहीं हैं. जोधपुर के समाचार लिखिये. सब सभासदों की ओर से नमस्ते.

रामानन्द ब्रह्मचारी और अमरदान जी को बहु प्रकार से नमस्ते

आप का दास
कमलनयन शर्म्मा
मंत्री आर्य्यसमाज अजमेर

—:o:—

[पूर्ण संख्या ४८२-४८४] पत्र-सूचना (क, ख, ग)

[पं० धन्नालाल के पत्र][2]

—:o:—

[पूर्ण संख्या ४८५] पत्र

॥ ओ३म्तत्सत् ॥[3]

॥ श्रीमद्विख्यात जगद्गुरुषु सकलगुणगणालंकृत वेदशास्त्र पारङ्ग-

---

१. लाला मूलराज एम. ए. आरम्भ काल से ही ऋ० द० के साथ धोखा करते रहे। इसका एक यह भी प्रमाण है।

२. अगले पूर्ण संख्या ४८५ के पत्र में तीन पत्र लिखने का निर्देश मिलता है। परन्तु तिथि तारीख का ज्ञान न होने से हमने यहीं पर तीनों पत्रों की सूचना छाप दी है। सम्भव है आगे कभी कोई पत्र मिल जाये।

३. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्र व्यवहार' भाग १, पृष्ठ २२४-२२५ पर छपा है।

तेषु श्री पंडितवर पंडित श्री १०८ श्री दयानन्द सरस्वती स्वामिषु अत्रत्य कृता आज्ञानुवर्ती शिष्य धन्नालालस्य कोटिशः साष्टाङ्ग प्रणामाः समुल्ल संतुतराम्। "अत्रशंतत्रास्तु" अपरञ्च तीन पत्र[1] पहिले आप के चरण कमलों में भेजे पर एक का भी प्रत्युत्तर नहीं आया मालुम नहीं क्या जाने ? मैं पहिले कृष्णगढ महाराज स्कूल में हैड पंडिताई पर मुकर्रर था पर दो कारणों से अर्थात् एक तो मत विरोधता, से दूसरे आगे के लिये उन्नति न देखकर लाचार यह नौकरी छोड़नी पड़ी—ईश्वर ने अच्छा किया कि अब आप के दर्शन व मिलना होगा, आप की अनुग्रह से व आप की आज्ञा से सब कुछ हो सकेगा और मसूदे व अजमेर के सब आर्य प्रसन्नता पूर्वक हैं यहां पहिले रामलाल पंडित और चतुर्भुज शास्त्री[2] ने कुछ पोपलीला फैलाई पर सिवाय बंगाली व अनाय्यों के किसके हृदय में जम सक्ती है ५ दिन के बाद यहां आप के चरण कमलों में हाजिर होउंगा तब कृष्णगढ़ व यहां का सब हाल वर्णन करूंगा अब अधिक क्या अर्ज करूं

शुभमिति असाढ कृश्ना ३०" भौम सम्वत् १९४०[3] का, मेरे आधार भूत आप ही हैं ?

आपका आज्ञानुवर्त्ती शिष्यानुशिष्य
धन्नालाल भांवतावासी[4]
जिलअ अजमेर

—:o:—

१. ये पत्र हमें नहीं मिले।

२. इन के विषय में पूर्व पूर्ण संख्या ४६१ (पृष्ठ ५४५) का पत्र भी देखें।

३. ४ जुलाई १८८३। आषाढ़ कृष्णा ३० को बुधवार था। सम्भव है मङ्गलवार को भी अमावास्या का योग रहा हो।

४. इन के घर जाकर मैंने सं० १९४४ में ऋषि दयानन्द के पत्र ढूंढने का प्रयास किया था। १ बोरी पत्रों के ढेर में स्वामी जी महाराज का एक भी पत्र उपलब्ध नहीं हुआ। इनके साथ मेरे पूज्य पिताजी का घनिष्ठ सम्बन्ध था। भांवतां हमारे ग्राम बिरकच्यावास (अजमेर) से लगभग ४ कोश पर है। पं० धन्नालाल जी अन्तिम दिनों में थियोसोफिस्ट बन गये थे।

[पूर्ण संख्या ४८६] पत्र

॥ ओम् ॥[१]

॥ सिद्ध श्री जोधपुर शुभ स्थाने सर्व शुभ ओपमां सकल गुण निधान सर्व शास्त्र सपन्न श्रीमत् परमहंस परिव्राजकाचार्य्य वर्य्य तत्राद्यनेक गुण सम्पद्विराजमान श्रीमद्वेद विहिता चार धर्म्म निरूपक श्रीमत् स्वामी जी महाराजा श्री श्री १०८ श्री श्री दयानन्द सरस्वती जी महाराज योग्य मसूदा से **द्विवेदी छगनलाल** का अनेकधा नमस्ते मालूम होवे अत्र कुशलमस्ति तत्रास्त्वेवं अपरंच पत्र मनकरण का आया जीसमें लिखा कि श्रीमन् ने यह फरमाया है वहां आके बंदोबस्त उत्तर का किया जावेगा सो अरज है कि श्रीमत् का यह खयाल एक तरफ के वासते बहुत ठीक चाहिये जैसा है परन्तु मेरे वासते बिलकुल ठीक नहीं कारण यहां पधार के मेरे वासते तजबीज फरमानां जैसी के चाहिये वैसी न होगी में यह चाहता हुं की कृपा कर मेरे वासते जीतनी जलदी हो सके तजवोज पका कर के साथ फरमावें और फेर मेरे कु लिखें और फेर श्री हजूर स्हाब[२] कों भी लीषें की कई कारणों से इस्का चित्त वहां कम लगता है इस लियें आप इस्कों आज्ञा दें तो यह दुसरी जगें की इस्की तजवीज की गई है गुजारा करे और हम दोनु के वास्ते अच्छा चाहते हैं आप के भी हरज न हो और यह भी आराम पावे इस वासते मुनासिब हो सो जवाब लीषें और में भी यह अरज करूं की मुझें यहां तकलीफ है जीसमें कितनाक ऐसी भी है सो श्री हजूर स्हाब से भी रफे नहीं हो सकती इसलिये मेरी तजवीज फलानि जगें पै फरमाइ गइ है और में उमैद रखता हुं कि बनिस्बत् यहां के वहां आराम पाउंगा और मेरे वासते आराम का होना श्री हजूर स्हाव कों भी मनजूर है इसलिये अरज है कि आज्ञा फरमा दिरावें तो मे वहां गुजारा करुं उमैद है कि फीर श्री हजूर साहाव राजी खुशी के साथ आज्ञा फरमा देवेंगे और ऐसा होने में उतर का ही मोमला ठीक रंवेगा और में कभी नहि चाहता की मेरे मालकों के कि जान की शुभ नजर से मेरी यह इज्जत हुइ और अच्छा

१. यह पत्र पं० चमूपति सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग २, पष्ठ ६१-६४ तक छपा है।

२. अर्थात् रांव बहादुरसिंह मसूदा (अजमेर) से।

खाता पीता पहनता हुं नुकसान हों और में आराम पाउं मेरी यह इच्छा है कि परमेश्वर मेरे कुं कुछ लायक करे तो मेरा जंसा कि बरताव अब मेरे मालकों के साथ है वैसा ही बना रख्खुं बल्कि जियादा श्रीमत् कों याद होगा कि कब से मेरा यह इरादा है जब श्रीमत् का विराजनां काशीपुरी में था यह तुच्छ तब दर्शनों के वासते प्रयागराज में हाजर हुवा था फिर इस बारे में सला ली थी और आपमां भी श्रीमन् ने श्रीमान् जयपुराधीश ज्योकि उस वक्त में विद्यमान थे उन के लिये लिखवाइ थी परंतु फीर मैं ने उस मांमले में निहायत् विचार ही विचार में ढील कर दी सो दीन रात उसी ढील का पछतावा करता हुं कारण वैसे गुणग्राही महाराज अब मालूम नहि होते बहुत सी बातें उन में बुद्धिमानी की थीं यहां तक कि तारीफ पूरि पूरि नहि लिख सकता जहां तक विचार पहुंचता था सत्य की तरफ तवज फरमाते थे और सत्यवादि मनुष्य के फीकर में रहा करते थे परंतु षास जेंपुर में मैंने कइ दफे बहुत से पुरुषों से सुना कि जैसा वे चाहते थे वैसा मनुष्य उनकुं बड़ी तलाश पर भी नहिं मीला श्रीमत् ने उपकारार्थ कसे कैसे परिश्रम पाये हजारहा बल्कि सुनने में आया लखहां रुपया पाठशाला आदि में खरच किया और बहुत बहुत परिश्रम पा के पास रख के बहुतों कुं पढ़ाया परंतु इतनां उपकार करने पर भी मनुष्य कैसे कैसे निकले सो अरज है कि श्रेष्ठ पुरुष मीलनां निहायत मुशकिल है और श्रेष्ठ ही यथार्थ काम बनाते और तकलीफ पाने पर भी यथार्थ बात पर रहते हैं दूसरे जब श्रीमत् का विराजनां परके यहां था तब बाग के बंगले में श्रीमान् योधपुराधीश परमोदाराचित्त अद्वितीय की प्रशंसा से इसी तुच्छ ने अरज की थी और सला ली की मेरा चित्त यहां कम लगता है इसलिये में एक अरजी वहां भेजनां चाहता हुं फेर इस विषय में बातों हो कर श्रीमत् ने फरमाया कि गुप्त भेज दो औरों कुं मालूम न हो सो अरज है कि कितने अरसे से मेरा चित्त व्याकुल और इसी फिकर में था कि कीसी ने कीसी तरह श्रीमत् का पधारनां जोधपुर हो जावे तो वहां का बंदोबस्त भी बंद जावे और इस तुच्छ के वासते भी कोइ तदबीर नीकले फेर श्रीमत् का पधारनां उदयपुर हो गया जब से तो पूरि सारी दिल में यही रही कि जीस तरह उदयपुर पधारनां हुआ है उसी तरह जोधपुर पधारनां हो सो अब परमेश्वर की कृपा से यह भी इच्छा पूरी हुइ कि

पधारनां हो गया अब मेरे वासते बात की है और में तुच्छ बुद्धि श्रीमत् का हुं ऐसा और कोई वसीला या आजीविका नहीं कि जिस्से उपाय करके गुजारा चलाउं इसलिये जैसी कि म्हरबानि श्रीमत् की पहले से है वैसी ही बनी रख कर कृपा कर जरूर तजवीज बन सके जहां तक कोशिश कर के यथा योग्य जलदी ही फरमानां चाहिये पत्र जलदि में लिखा है भूल चूक हो तो माफ फरमावें और यहां लायक कार्य्य हो सो कृपा कर लिखावें।

संवत् १९३९[1] असाढ़ शुदि १—

—:०:—

[पूर्ण संख्या ४८७] पत्र

ओ३म्[2]

श्रीमन्महोदय जगतपूज्यपाद श्रीयुतपरमहंसपरिव्राजकाचार्य जगद्गुरू दयानन्दसरस्वति स्वामिनां महाविदुषां चरणशरोजरजांसि शिरसादधामः श्रीमत्कृपयात्रभव्यामस्ति श्रीमन्तम्भव्यस्वरूपिणंध्यायामस्सदायतोऽस्माकं श्रेयएव फरीदकोटतोनोमुल्कतानेस्थिती मिदानीमेदर्थं प्रेषितंपत्रं श्रीमतां संनिकटे श्रीमान्विजानातु फरीदकोटाधीशोऽजमेराख्यम्पुरंप्राप्तवान्स्वपुत्रपाठयितुमुक्तं गवर्णमेण्टेणस्वकीयम्पुत्रमानीयोक्तपुराख्येरक्षतुयतोहितेनसह पुराविचारोयातः मांप्रत्युक्तं भवानतिष्ठतु चतुर्मासंमयोक्तं कस्मिश्चित्काले आगमनं भवेत्तदास्थास्यामि इदानींनो सर्वान्तर्यामिनेष्वधिकं किम्

आप का दास **सहजानन्द सरस्वती** मुलतान से

सम्वत् १९४० जोलाई ता० ५[3]

—:०:—

१. यहां संवत् १९४० होना चाहिये। पत्र में ऋ० द० के जोधपुर निवास का उल्लेख है।तदनुसार ५ जुलाई १८८३।

२. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्र व्यवहार' भाग १, पृष्ठ ३३ पर छपा है।

३. जुलाई ता० ५ सन् १८८३ तदनुसार आषाढ़ शु० १ सं० १९४०।

[पूर्ण संख्या ४८८] पत्र

ओ३म्[1]

तत्सत

परमहंस परमविराजकाचार्य श्रीमन स्वामी दयानंद सरस्वती जी महाराज नमस्ते कृपा पत्र आप का आया[2] और जोधपुर में आप के व्याखान होने का वृतात और अन्य शुभ समाचार जान अत्युन्त आनंद हुआ आप की आज्ञा अनुसार बाईबिल के पूर्वापर विरुद्ध का उल्था हिन्दी में हो रहा है[3] तैयार होने पर भेजा जायगा।

चतुर्भुज[4] पौराणिक का दुराचरण यहां पर भी लोगों को भले प्रकार प्रकाशित हो गया क्योंकि वह सत्यार्थप्रकाशादिक वेदोक्त ग्रन्थों में बादी के प्रश्नो को आप का कथन बतला कर लोगों को धोखा देते थे सो उनकी यह दगाबाजी उन्के श्रोताजनो को स्पष्ट मालूम हो गई और वह बड़े निरादर से रुखसत किये गये

थोड़े दिवस से पंडित गौरीशंकर[5] वहुत बिमार है, लेकिन अब आराम होता जाता है और आप की कृपा से सभा बदस्तूर जारी और दिन बदिन उन्नति पर है कि आजकल सप्ताह में दो बार अर्थात् शुक्रवार व सोमवार हुआ करती है

---

१. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्र व्यवहार' भाग १, पृष्ठ ९७-९९ तक छपा है।

२. ऋ० द० का यह पत्र 'ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन' पूर्ण संख्या ८५१ (भाग २, पृष्ठ ८७२-८७४) पर छपा है।

३. अमेरिका में उन दिनों "सेल्फ कण्ट्रोडिक्शंस आफ दी बाइबल' नामक पुस्तक छपी थी। उसी का हिन्दी अनुवाद करने के लिये ऋ० द० ने पूर्ण संख्या ८५१ के पत्र में ठाकुर नन्दकिशोर जी को लिखा था। इस विषय में विशेष 'ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन', भाग २, पृष्ठ ८७३, टि० ४ देखें।

४. चतुर्भुज के विषय में पूर्व पूर्ण संख्या ४४७, (पृष्ठ ५३३), ४४८ (पृष्ठ ५३५), ४६१ (पृष्ठ ५४७) पर भी देखें। पूर्ण संख्या ४६१ (पृष्ठ ५४७) में रामलाल (बम्बई) का वर्णन भी है।

५. इन का वर्णन बहुत से पत्रों में है। ऋ० द० के पत्रों में भी उल्लेख है। ये वैदिक धर्म के प्रचारक थे।

और यह तजवीज हमारे सभासद डाक्टर किशनलाल की सम्मति से हुई है और यह आजकल बड़े परोपकारी पुरुष हैं महाराज के खास दफतर में नौकर हैं और सभासदों की सेवा और सभा की उन्नति में अत्यन्त कटिबध मालूम होते हैं

आप के उपदेशों की प्रशंसा महाराज साहब जैपुराधीश के निकट कईवार हुई और उन्होंने उसकी सत्यता पर सम्मति भी की परंतु और कुछ विशेष वार्ता न हुई

प्रयाग से मुद्रत किया हुआ धन्यवाद पत्र आया था[1] उस पर आज्ञानुसार हस्ताक्षर करके उदयपुराधीश की सेवा में भेज दिया गया परंतु अभी तक उत्तर नहीं आया सो जबाब आने पर जैसा हाल होगा निवेदन किया जायगा

और सर्व सभासदो की प्रेमपूर्वक नमस्ते मालूम हो

आप का शिष्य नन्दकिशोरसिंह

जंपुर मिती आषाढ शुक्ला ३ शनी सं० ४०

—:०:—

[पूर्ण संख्या ४८९] पत्र

॥ ओ३म् ॥[2]

श्रीयुत पूजनियोतम प्रतिष्टिता चार्य्य श्रीमान सर्वोपमालायक ॥ महाशय ! स्वामी जी श्री दयानन्द सरस्वतीजी महाराज नमस्ते ३ प्रगट हो कि ॥ देवदत्त ब्राह्मण आप के पास पहुंचा[3] होयगा जी कोथली साङ्गर[4] की आप कों भेजी सो पहुंची होवेगी जी लिखना ·· ·········र छाछ फीटकड़ी की साधन जो शिरकार क: मनुष्य करी

---

१. धन्यवाद पत्र और इसके उत्तर में पूर्ण संख्या ४५७ (पृष्ठ ५४१) की टि० ५ देखें।

२. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १, पृष्ठ १६२-१६३ पर छपा है।

३. देवदत्त ब्राह्मण को सांगरी भेजने का उल्लेख पं० कालूराम के पूर्व पूर्ण संख्या ४५५ (पृष्ठ ५४०) पर छपे पत्र में भी आया है।

४ सांगर=सांगरी=शमी वृक्ष की पतली सुखाई हुई फलियां।

..........उसका आजार मिटा वा न मिटा सो लिखना जी ॥ यहां पर तो............मनुष्य को ए साधन उसी रोग पर कराया था सो गुण हुआ इस वास्ते आप को लिखा ॥ हमने साहपुरा से आया पीछे ॥ ओर। शोकर का समंचार पक्का होने से लिखेंगे जी ॥ ओर नई जूति ह कि गत आप कृपा करके लिखवांवें जी ओर हमारे तो आप को इष्टह् ॥ ओर गउओं के विषय मे हस्ताक्षर करवावेंगे ॥ ठाडी[1] वरखा होने से ॥ ओर हजूर से................री नमस्ते कहणा जी ॥ कृपा पत्र अवश्य जरूर ३ लिख.........जी ॥ ओर देवदत्त सें कहणा वे पुस्तक भेज.........को देवदत्त देगा था सो सीमने में पारसल बना दई सो............।।) डाकमुन्शी लेके रवंन्ने करेगा जद तो रशीद देवे.........ओर नहिं तो विगर रसीद लिये १।) में पूच शक्ति है.........देवदत्त का जो अभिप्राय होवे सो सो लिखवाना जरूर ४ जैपुर्कि तलेटी ईलाका शीकर आर्य्य समाज सेठों का रामगढ़ सं. प. प. कालूराम जी लिखतमाज्ञा कारिक शिष्य केदारवल्लभ ओर यहां के सर्व सभासद वा समाजस्थों के अभिवादन धन्यवाद ज्ञातम् पत्र दिजिये जी.........शु.[2] ३ सं० १६४० ॥

—:०:—

[पूर्ण संख्या ४६०] पत्र

[3]श्रीयुत स्वामीजी महाराज के चरण कमलों में इस दीन छुट्टनलाल का शतशः प्रणाम अंगिकृत हो प्रार्थना यह है बलदेव को जो मेरा आज्ञाकारी शिष्य था आप की आज्ञा में भेजा था परन्तु ऐसा

---

१. अर्थात् गहरी।

२. मास का नाम नष्ट हो गया है। पत्र में ठाडी बरखा=गहरी वर्षा होने पर गोरक्षा पत्रक पर हस्ताक्षर कराने का उल्लेख होने से व्यक्त होता है कि यह पत्र सम्भवत: आषाढ़ शु. ३ सं. १६४०=७ जुलाई १८८३ को लिखा गया होगा। सीकर के प्रान्त में प्राय: श्रावण मास में गहरी वर्षा होती है। सीकर में वर्षा ऋतु का प्रारम्भ १५ जुलाई के आस पास होता है अत: यह ज्येष्ठ शु० ३ — ८ जून १६४० का नहीं हो सकता क्योंकि पत्र से ध्वनित होता है कि साधारण वर्षा प्रारम्भ हो गई थी।

३. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १, पृष्ठ २१३-२१४ पर छपा है।

सुनने में आया है कि एक तो आप उस का विश्वास नहीं करते—दूसरे—उस को किसी अच्छे काम की शाबाशी (इस से आदमी का चित्त प्रसन्न होता अरु काम की उमंग होती है)नहीं देते तीसरे झिकड़ते हो हे ज्ञान दाता वह अभी लड़का है अभी घर से बाहर निकला कभी ऐसी सखती सही नहीं आप सब के निबाहने वाले हो ऐसे पारस के पास वह शीघ्र ही सुधर सक्ता है सो इस दीन की यह प्रार्थना है कि आप उसको धीरज देते रहैं और किसी के साथ शत्रुता न करने दें उसके खाने पीने की भी शुधि लिया करें यदि यह आप को अंगीकृत न हो तो उसे प्रसन्नता से सीखदें ताकि मेरे ही पास आ जावे।

जो कुछ चूक रही हो क्षमा करें में तो निपट मूर्ख हूं आप बड़े हैं[1]

दास **छुट्टनलाल** पोस्टमास्टर बादनवाड़ा

—:०:—

[पूर्ण संख्या ४९१] पत्र

॥ ओ३म् ॥[2]

सिद्ध श्रीसर्वोपमा योग्य परमपूजनीय परमहंस परिव्राजकाचार्य्य सद्धर्मात्मा परमदयालु सत्योपदेश सर्वजन हृदेपुप्रकाशक श्रीमान् ब्रह्मवित सर्वउपमायुक्त श्री १०८ श्री स्वामीजी श्रीमद्दयानन्द सरस्वतीजी चरण कमलेषु प्रार्थनां निवेदयामि

हे स्वामीन् एक कार्ड आप के चरणकमल में निवेदन कर चुका हूं[3] परन्तु उस का मेरै को प्रत्युत्तर नही मिला हे गुरो आप जेष्ट वदी १० शुक्रवार को सहर जोधपुर में विप्रवेश किया तथापि एक समाचार पत्र मुज को नहीं मिला हे भगवन परमपूजनीयमदीश्वर जरूर रामानन्दजी के हस्त पत्र भिजवा देना चाहिये और में अब आपकी आज्ञा-

---

१. इस पत्र पर तिथि नहीं है। इस पत्र में बलदेव के विषय में उल्लेख है। बलदेव के २३ जुलाई १८८३ के पत्र से विदित होता है कि उसने उक्त तारीख से पूर्व स्वामी जी महाराज की नौकरी छोड़ दी थी। अतः यह पत्र जुलाई १८८३ के प्रारम्भ में लिखा गया होगा।

२. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १ पृष्ठ ६-८ तक छपा है।

३. द्र०—पूर्व पूर्ण संख्या ४७६, पृष्ठ ५६५।

नुस्वार अवश्यमेव वर्तूंगा कदापि आप की आज्ञा से बाह्य कभी नहीं चलूंगाजी और प्रयाग में जो मेरे सें व्यवहार व्यतिक्रम हो गया था सो तो वार्ता अब सो सो कोश पर गई[1] अब तो आप की कृपापूर्वक मैं कछू कहू वा चाहता हूं आगै प्रारब्धानुकूल वार्ता है और हे भगवन् आप के पास तें जो मनैं लेणा था सो ले लिया अब मैं आप के चरण कमल का आसरा रखता हूं जी और मेर को सहर पानीपत में लोक पूछते हैं कि तुह्मारा क्या धर्म्म है मैंने उत्तर दीया हमारा तो वैदिक धर्म्म है

फेर लोग पूछने लगे तुह्मने धर्म को जान लिया अथवा नहीं मनैं उत्तर दिया कि हां मनै धर्म को जाना है फेर विद्या काहे को पढ़ते हो उत्तर व्यवहार पारमार्थिक के सिद्धार्थ। प्रश्न तुह्म क्या करोगे परमार्थ को सिद्ध करि के उत्तर त्रिविध दुःखूं से छूट कर अनतानन्द की सिद्ध्यर्थ। प्रश्न भला तुह्मारा मत किस नै चलाया है उत्तर० मत्त मत्त असा उच्चारण नही करना मत संज्ञा तो मतवारे की औ मतवालों की है जो मद्य आदिकों से मत सिधि होता है (आप: विदुः। व्रह्म। जना।) धर्म कहो तुह्मारा क्या धर्म है। उत्तर. असत्य के पक्ष का सर्वथा त्याग करना और सत्य का पक्ष कभी नही छोडना और ईश्वर की आज्ञा का यथावत पालन करना है यह धर्म कहलाता है सो भगवन् कुतरकी लोग वहूत है परंतु मरे को लोग वहूत चाहत्ते हैं।

अष्टाध्यायी वेदाङ्गप्रकाश सहीत अध्ययन कर्ता हूं हंसार[2] में जो पंडित शाला पढाते थे सो अब सहर अंवाले मैं पढाते हैं १ पत्र जरूर भिजवायोजी रामानंदजी के हस्तें

श्रीयुत रामानन्दजी ब्रह्मचारीजी को मेरी वहूधा नमस्ते पहूचै चिठी जरूर भेजीयोजी रामानंद जी आप से प्रार्थना करता हूं कि समाचार की पत्री जरूर भेजीयो जी।

ठिकाना चिठी भेजने का।

जिला करनाल तसील थाना पानीपत बाजार बाजाजा मैं दुकान चिरंजीवलाल कन्हैयालाल की पर।

(ईश्वरानन्द)

(पानीपत मैं) संवत् १९४० आषाढ शु ४[3]

---

१. अर्थात् पुरानी हो गई।

२. अर्थात् हिसार।

३. ८ जुलाई सन् १८८३।

[पूर्ण संख्या ४९२] पत्र

ओ३म्[1]

माननीयषु

सविनय निवेदन मिदम

विदित हो कि मैं अप्रेल मे शमल:[2] पर्वत पर गया था वहां आर्य्य-समाज मे एक मास तक रहा परन्तु शरीर दु:खी होने के कारण निचे आकर फिलौर मे एक मास तक रहा अब अच्छा होगया हुं और शमल: आर्य्यसमाज[3].........ने दश १०) रुपया मेरे......ने को भेजे ....मे शमल.........को जाता हुं आज कल कालिका.........र रहा हुं यहां पर लाला र..........गोपीनाथ के प्रबन्ध से आर्य्य-समाज.........है और अब यहां से मैं कसोली आ...माज...जाकर उपदेश करुंगा फिर शमल: जावुंगा ६ अगस्त को शमल: की समाज का प्रथम वर्ष का उत्साह है और एक मास तक इस पर्वत में रहुंगा फिर नीचै आकर देखा चाहिये कि किस ओर जावुंगा और अप्रेल मासे मे इसी देश मे उपदेश कर रहा हुं आपकी कृपासे कई स्थानो में आर्य्य धर्म्म मे कई मनुष्य प्रवर्त हुए हैं यह संक्षेप से पत्र लिखा है पुन: जब कृपा-पत्र आपका आवेगा तब विस्तारपुर्वक अपना वृतान्त लिखूंगा अब कृपा करके शीघ्र ही कृपा पत्र विस्तारपुर्वक अर्थात् कौन कोन आपके पास हैं और जोधपुर कब तक बिराजमान रहोगे।

अब कृपा करके शीघ्र ही इस पत्र का उतर निचै लिखे पत: पर भेजना

स्वामी आत्मानन्द सरस्वती

आर्य्यसमाज मुकाम शमल: पहाड़

लाला ठाकरदास डाक्टर तथा पंडित परमानन्द बाजपई के प्रबन्ध से स्थापित हुआ है आप को कृपा चाहिये आर्य्यसमाज प्रति नगर ग्राम स्थापित हो जावेगी यथा शक्ती उपदेश करता रहूंगा

१० जोलाई सं० ८३ ई[4] ह: आत्मानन्द स:

---

१. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्र व्यवहार' भाग १, पृष्ठ २-३ पर छपा है। २. अर्थात शिमला।

३. जहां-जहां बिन्दियां अर्थात् लीडर हैं वहां-वहां असल पत्र फटा हुआ है अर्थात् उन भागों को दीमक चाट गई हैं। म० मुंशीराम।

४. आषाढ़ शु० ६ सं० १९४० वि०।

[पूर्ण संख्या ४९३] पत्र

॥ श्री ॥[1]

श्रीमत् परमहंस परिब्राजकाचार्य स्वामी जी महाराज्य
श्री १०८ श्री श्री दयानन्द जी की
सेवा मैं

॥ आपकों विदित होगा कि कविराजा शामलदाम जी नेत्रों का उपचार करान कों ईंदोर गये हैं ओर पहले की अपेक्षा अब अच्छे भी हैं ओर डाकदर के कथन से ग्यात हुवा है के अब दोय महींनें के पूर्व ही यहां आजावेंगे—ओर श्रीमांन् का चित्त भी अब प्रसन्न है ओर भाद्रपद शुल्का मैं निरामय का महोत्सव करनें की इच्छा है सो सूचनार्थ लिषा है—आप का वृतांत जोधपुर के पत्रों से ग्यात है ओर आप का पत्र भी श्रीमांन् के समीप पहुंचा था[2] परन्तु यह नही प्रकट हुआ के जोधपुर मैं आपकी स्थिती कब तक है ओर जोधपुर से कहां पधारनें की ईच्छा है ओर साहपुरे सैं सबलसिंह जी आप कों लेनें आये है उनकों आपनें क्या उत्तर दिया सो दया करकें आग्या कीजिये —अब एक विषय श्रीमांन्[3] की इच्छानुसार आपकी सेवा मैं निवेदन किया जाता है सो इस पर विचार करकें उत्तर सीघ्र ही प्रदान कीजिये वो बिषय यह है के पहले यहां पर अर्थात उदयपुर मैं किसी धर्म के बिषय मैं ब्याख्यांन नही दिया जाता था परन्तु थोड़े अवसर से गोरंड पादरियों ने वक्तृत्व देनां प्रारंभ किया है ओर वो प्रत्तेक गलियें ओर बाजारों मैं ब्याख्यान देते हैं जिसके निरोध ओर आर्य धर्म की उन्नती की दृष्टी सें श्री अधीसों का यह बिचार है के आर्य समाज का कोई महांन पुरुष अच्छा बिद्वान ओर बक्तृत्व मैं कुशल ओर चतुर ज्यो इस स्थान के योग्य होवै वो यहां बुलाया जावै ओर आर्य धर्म के बिसैं ब्याख्यान देनां प्रारंभ कराया जावै—यहां के प्रधान पुरुषों ने भी इस कार्य के प्रारंभ करनें मैं अपनी प्रसन्नता प्रगट कर

---

१. यह पत्र प० चमूपति सम्पादित ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग २, पृष्ठ १०७-१०९ पर छपा है।

२. यह पत्र हमें नहीं मिला। इसी पत्र के आधार पर पूर्ण संख्या ८४७ (भाग २, पृष्ठ ८९९) पर पत्र-सूचना छापी है।

३. अर्थात् उदयपुराधीश महाराणा सज्जनसिंह की।

कें ओर यह निवेदन किया है के यहां ब्याख्यांन देनें में उस पुरुष कों तीन बातों पर अवस्य ध्यान रखनां चाहिये के तीर्थ ओर मन्दिर मूर्ती पुजन का खंडन ओर निंदा नहीं की जावै यह बात प्रसिद्ध नहीं की जावेगी के उस पुरुष कों इन तीनों बातों के खंडन करनें की मनाई है तत्रापि उस पुरुष कों अवस्य बिचार रखनां होगा के ऊपर लिखी हुई तीनों बातों का खंडन के विषय मैं कभी ब्याख्यांन नहीं देवें—यदी जैसा के आपका[1] बिचार ओर अभिप्राय है वैसा लाभ इससे नहीं होवेगा परंतु श्रीमांन्[2] का यह सिद्धांत है के पादरियों के उपदेस से ज्यो मनुस्य स्वधर्म कों छोड़ कर अन्य धर्म मैं प्रवेश करते हैं वो तो बंद हो जावेगा तो यही बडा लाभ है—ब्याख्यान देनें के विषय मैं यह बिचार है के यदि उक्त पुरुष किसी नियत स्थान पर ब्याख्यान देनां प्रारंभ करैगा तो श्रवण करन कों विसेष आदमी नहीं जावैंगे ओर बिशेष लाभ भी नहीं होगा—अतएव प्रत्तेक स्थान् मैं ओर विशेष करिकैं मैं बाजार ब्याख्यान दिया जावेगा तो बहु फलदायक होगा—ओर श्री मांनू का यह भी अभिप्राय है के उस आंनें वाले आर्य पुरुष को यह सूचनां हो जांनां भी अवस्य है के यहां समाज नियत करनें की दृषी से सभाध्यक्ष प्रतिसभाध्यक्ष ओर सभासद् आदि नियत करनें की चेष्टा नहीं करैं जिस किसी को होनां होगा तो वो आपसे आप हो जावेगा—मैंने यह पत्र श्रीमदार्यकुलदिवाकरों के आग्यानुसार लिखा है आप इन सब बातों पर बिचार करकें उत्तर सीघ्र प्रदान करैं—

किमधिकम् बहुज्ञेषु—संवत १९३९[3] आषाढ शुक्ला ७[4]

॥ आपका दास
बारहट कृष्णसिंह

—:०:—

१. अर्थात् ऋ० द० सरस्वती का।

२. अर्थात् महाराणा सज्जनसिंह का।

३. यहां सं० १९४० होना चाहिये। क्योंकि यह पत्र जोधपुर लिखा गया था। जोधपुर के समाचार जानने की अभिलाषा भी इस पत्र में प्रकट की है।

४. ११ जुलाई १८८३।

[पूर्ण संख्या ४९४] पत्र

ओ३म्[1]

स्वस्ति श्रीमत् जगद् गुरु सर्वोपमा विराजित वेद मूर्ति श्री श्री १०६ श्री मद्दयानंद सरस्वती स्वमिनां चरण कमले अनुचर छत्रदत्त कृतानेक दंडवत्समुल्लसन्तुतराम् भाषया आप के पधारने के पीछे कोइ कृपा पत्र नही आया सो कृपा करके पत्र देसी और वृत्तांत वहां के लिषावसी यहां अधीशों[2] को दर्शन की वहुत अभिलाषा लाग रही है होकम माफक पठन पाठन होता हैं नित्य ध्यान भी होता है और जहारसिह जी के और हमारे नित्य आर्यसमाज करने का विचार होता हैं सो अब आप की कृपा से यहां बीस कु होगा आज अधीश और जुहारसिह जी मैं सर्वकाछोला के परगने दौडा में जावेंगे सो पीछें आय कर समाज करेगे मैंने भी ६० सातर तो कर लिये है होते जाते हैं उपदेश नित्य करता हु आपकी सुद्रष्टि हैं ज्यु ही बनी रहे और भाष्य के रुपैये आज भेज दिये हैं[3] और यहां लायक काम होवें सो लिषावसी कोटे से सिवशर्मा जी का नमस्ते वचावसी और कोटाधीश[4] की भी दंडवत मालुम होसी आप की नित्य वार्ता पूछै हैं सो आप लिषावेंगें तो म वहां लिषु वहां से अधीश[5] पुछाते हैं मिती आषाढ़ सुद ७ सं १९४०[6]

द: छत्रदत्त का

—:०:—

१. यह पत्र पं० चमूपति सम्पादित 'ऋ० द० का पत्र व्यवहार' भाग २, पृष्ठ ३६-३७ पर छपा है।

२ अर्थात् शाहपुराधीश नाहरसिंह।

३. अर्थात् वेदभाष्य के चन्दे के रुपये। इस विषय में जवाहरसिंह का ९ जून ८३ का पूर्व पूर्ण संख्या ४५३ (पृष्ठ ५३८, पं० २०) पत्र तथा छत्रदत्त का आषाढ़ वदि ६ सं० १९४० का पूर्व पूर्ण संख्या ४७३ (पृष्ठ ५६१, पं० २२) का पत्र भी देखें।

४. कोटा राज्य के महाराजा। ५. अर्थात् कोटा नरेश,

६. ११ जुलाई सन् १८८३।

[पूर्ण संख्या ४९५] पत्र

ओ३म्[1]

श्रीयुत सर्वोत्तम माननीय स्वामी जी

नमस्ते

महाशय—

विदित हो कि इस पत्र से पहिले १० जोलाई को मेने अपना वृतान्त लिख कर भेजा है[2] सो आप के चरणों में पहुंचा होगा परन्तु आज विशेष आनन्द की बात हुई इस वास्ते पुन: निवेदन करता हुं आनन्द की बात यह है कि पण्डित सुन्दर लालजी राय बहादर शमले ....[3]र मे.......... ले हैं और आर्य्यसमाज से.........था ....र्म्म के प्रचार करने के विषय बहु............हुई परन्तु यह आज ही यहां से चले गये.........इस वास्ते बहुत सतसग न हुआ इनकी मे क्या प्रशसा करूं यह एक सज्जन पुरुष है और आर्य्य-समाजो के हितकारी हैं और आपके सच्चे भक्त हैं और मेरे को बड़े प्रेम मे और निर्भिमान होकर सत्कार से मेले हैं में आशा रखता हुं कि एसे पुरुषों से आर्य्यधर्म्म की उन्नति होगी और आपकी कृपा से अब मेरा शरीर अच्छा अब रविवार तक यहां उपदेश करके फिर जावुंगा एक मास तक शमल: आर्य्यसमाज में उपदेश करूंगा पश्चात नीचे उतर आवुं प्रथम करनाल जाकर फिर कहीं जावुंगा अब आप अपना......कृप का......विस्तारपुर्वक मंगल.........समाचार...... कि कोन कोन आपके पास हैं और योधपुर मे कब तक आजेंगे और भीमसेन के होने से आपके पास कोई नही रहेगा अब शीघ्र ही कृपा करके कृपा पत्र लिखना

१२ जोलाई स० १८८३[4]

ह: आत्मानन्द स:

कालका जिला शमल:

---

१. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्र व्यवहार' भाग १, पृष्ठ १४०-१४१ पर छपा है।

२. द्र०—पूर्व पूर्ण संख्या ४९२ (पृष्ठ ५८२) का पत्र।

३. जहां-जहां बिन्दियां अर्थात् लीडर हैं वहां-वहां असल पत्र फटा हुआ है। अर्थात् उन भागों को दीमक चाट गई हैं। म० मुंशीराम।

४. आषाढ़ शु० ८ सं० १९४० वि०।

और यहां से लाला खोशीराम मंत्री आर्य्यसमाज की नमस्ते पहुंचे इसी के यतन्न से यहां आर्य्यसमाज स्थापित हुई है

[पूर्ण संख्या ४९६]　　　　पत्र

जिल्ला खानदेश तारीख १३ जुलाई १८८३[1]

मिती आषाढ शुद्ध १८०५[2]

आप से पहेले एक पत्र भेजा था[3] उसका उत्तर नहीं आया इस लिये चिन्ता युक्त हैं. सो आप कृपा पत्र भेज के दूर कीजिए पुरोहित उदयलालजी तो अब तक घडी प्राप्त हो चूके[4] होंगे सो भी आप तपास करवाना और आप के तर्फ का विशेष समाचार हमकुं लिख के सदा आनन्दित करना ये विनंती है.

लक्ष्मण गोपाल देशमुख
असिस्टंट कलक्टर

—:०:—

[पूर्ण संख्या ४९७]　　　　पत्र

वैदिक यन्त्रालय, प्रयाग[5]
१३-७-८३[6]

---

१. आषाढ शु० ९, सं० १९४० वि०। यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १, पृष्ठ २४३ पर छपा है।

२. यह शकाब्द है। दक्षिण भारत में शालिवाहन शक का प्रयोग होता है।　　३. द्र०—१४ जून सन् १८८३ का पूर्व पूर्ण संख्या ४५९, पृष्ठ ५४३ पर छपा पत्र।

४. इसके लिये २४ जून ८३ के पूर्व पूर्ण संख्या ४५९, पृष्ठ ५४३ की टि० ६ देखें।

५. यह पत्र परोपकारिणी सभा के मन्त्री हरविलास सारडा के 'वर्क्स आफ महर्षि दयानन्द एण्ड परोपकारिणी सभा' नामक ग्रन्थ के छठे परिशिष्ट पृष्ठ ११६-११७ पर छपा है। ग्रन्थ का मुद्रण काल सन् १९४२ है। इससे पूर्व भाद्रपद सं० १९७४ (=सन् १९१७) में स्वामी श्रद्धानन्द (म० मुंशी-राम)जी ने 'आदिम सत्यार्थप्रकाश और आर्यसमाज के सिद्धान्त' नामक ग्रन्थ के पृष्ठ २१ पर इस का कुछ अंश छापा था। (द्र०—वेदवाणी, नवम्बर १९६८ का 'सत्यार्थ प्रकाश परिशिष्टाङ्क' पृष्ठ ३३)।

६. आषाढ शु० ९ सं० १९४० वि०।

श्री स्वामी जी की सेवा में

श्री महाराज, नमस्ते।

निवेदन यह है कि वेदभाष्य में जो मांसभक्षण का विधान आया था उसको तो आपने निकाल दिया था और मुझको भी आज्ञा दी थी कि मांस का विधान न आये इस प्रकार छाप दो, सो मैंने छाप दिया था।[1] अब सत्यार्थप्रकाश के भक्ष्याभक्ष्य का प्रकरण–पाया इस में भी आपने मांस खाने की आज्ञा स्पष्ट दी है।

प्रथम जब पुस्तक लिखा गया था[2] तब तो मांस की आज्ञा नहीं दी, पीछे से शोधते समय आपने दी है ऊपर से आपने बनाया है,[3] इसमें मेरी शक्ति नहीं कि मैं इसको काट दूं इसलिये आपसे निवेदन किया।[4] अब जैसी आप की आज्ञा हो वैसा किया जाय। आप ने ऐसी आज्ञा दी है कि जिन पशुओं को क्षत्रिय खेतों की रक्षा के लिये मारें वा अन्य ऐसे कारण मारें तो उनका मांस खावें तो कुछ दोष नहीं है। परन्तु यह जड़ ऐसी है कि जिसके कारण से लोग अच्छी तरह मांसाहारी हो जायेंगे। क्योंकि बुरे काम के लिये थोड़ा सा भी सहारा मिल जाये तो मनुष्य स्वार्थवश होकर बढ़ा लेता है। जो

---

१. इस विषय में ऋ० द० का फा० गु० ६, सं० १९३९ = १७ मार्च का 'पत्र और विज्ञापन' का पूर्ण संख्या ७७२ (भाग २) पृष्ठ ८०५ पं० १२-१५ तथा पं० २४ देखें। इसी प्रकार यजुर्वेद भाष्य के १३वें अध्याय की प्रेस कापी के पृष्ठ ४५६ की पीठ पर ऋ० द० ने अपने हाथ से लिख कर जो आदेश मुंशी समर्थदान को भेजा था, उसमें भी लिखा है। इसे हमने ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन' पूर्ण संख्या ७७० (भाग २, पृष्ठ ८०१) पर छापा है, उसे भी देखें।

२. अर्थात् दसवें समुल्लास की प्रेस कापी में।

३. अर्थात् पृष्ठ के मार्जन (हाशिये) पर बढ़ाया है।

४. इस पत्र का ऋ० द० ने जो उत्तर दिया था वह प्राप्त नहीं हुआ। हां, ऋ० द० के पूर्ण संख्या ८८५ (भाग २, पृष्ठ ९०४, पं० २२) तथा ८९० (भाग २, पृष्ठ ९०९, पं० ७-८) में मुंशी समर्थदान के किसी निजी पत्र के उत्तर देने का उल्लेख आया है। हमारे विचार में 'निजी पत्र' के रूप में उद्धृत यही पत्र है। कारण, इसी पत्र में आगे लिखा है—'यह पत्र मैंने कार्यालय से पृथक् लिखा है……।

किसी प्रकार के मांस की आज्ञा मिल गई तो लोग अनेक मार्ग निकाल लेंगे । सो कृपा करके प्रथम विचार कर लिया करें तो उपकार विशेष हो । इस विषय में जैसी आप की आज्ञा हो लिखें ।

थोड़े थोड़े काल में विचार का बदलना हानिकारक होता है । उपद्रवी पशुओं का मारना तो ठीक है, परन्तु इनका मांस सदैव के लिये प्रवृत्ति करता है फिर तो निरुपद्रवी भी बेचारे मारे जायेंगे । जैसी की आजकल की गति देखने में आती है । बुराई का मूल थोड़ा सा ही होता है परन्तु पीछे तो वट वृक्षवत् बड़ा विस्तार कर लेती है ।

बुरे कामों का वारंबार निषेध करने पर भी लोग कर लेते हैं और अच्छे को सहस्र बार भी उपदेश करने से भी नहीं करते । मांसाहार में यदि दोष है तो उसका विधान किञ्चिन्मात्र भी नहीं होना चाहिये । जो किया जायगा तो इसकी प्रथा विशेष होगी । मांस के साथ मदिरा भी लगी है जो दोनों की प्रवृत्ति हुई तो सब उन्नति गिर जायगी और विपरीत फल उत्पन्न होगा । फिर जैसा आप उचित समझें वैसा करें । सत्यार्थप्रकाश का एक फार्म तो और छपेगा पीछे से आपका पत्र आवेगा[1] तब छपेगा कृपा करके पत्र शीघ्र दीजिए ।

यह पत्र मैंने कार्यालय से पृथक् लिखा है ।[2] इसमें नम्बर नहीं डाला है क्योंकि कार्यालय के पत्रों को नकल रामचन्द्र करते हैं और ये हम लोगों के विचार से सर्वथा पृथक् है । किन्तु विरुद्ध कहिये । इस पत्र का विषय खानगी है[2] कि विरोधियों को प्रगट होने से बड़ी हानि होती है ।[3]

आर्यों के आचार्य का यंत्रालय, आर्यों ही के द्रव्य ही से बना और नौकर सब अनार्य रखे जांय यह भी एक काल की विचित्र गति का परिचय है । आर्यों के पैसे और सम्पत्ति का दर्द अनार्यों को कहां

---

१. द्र०—पूर्व पृष्ठ ५८७ की टि० १ ।

२. सम्भवत: इसीलिये ऋषि दयानन्द ने इस का 'निजी पत्र' के रूप में उल्लेख किया है । द्र०—पूर्व पृष्ठ ५८८ की टि० ४ ।

३. हमारा विचार है कि मुंशी समर्थदान ने ऋ० द० का पत्र नष्ट कर दिया होगा, जिससे वह किसी विरोधी के हाथ न पड़ जाये ।

तक होता है इस का भी विचारशील सोच सकते हैं। कृपा करके सत्यार्थप्रकाश के विषय में तत्काल आज्ञा दीजिये।

आपका आज्ञाकारी,
समर्थदान
मैनेजर

—:०:—

[पूर्ण संख्या ४६८] पत्र

॥ ओ३म् ॥[1]

सिद्धश्री परमपूजनीय परमहंसपरिव्राजकाचार्य्य श्री १०८ श्री स्वामी जी श्रीमद्दयानन्द सरस्वती जी चरण कमलेषु पापक्षयार्थ निमित्त केन प्रार्थनां निबे[2] ······ (प्रार्थना आप········कर्त्ता हूं कि पत्र दोय भेज चुका हूं[3] परन्तु अब तक समाचार पत्र मेरे को नही प्राप्ति भया सो हे भगवन् समाचार पत्र जोधुपुर का अवश्यकता से ही देना उचित ह हे दयानिधे क्या एक पत्र द्वारा भी मेरे को कृतार्थ न करोगे आपको अवश्य ही कर्तव्यता है कृतार्थता को

चिठी भेजने का ठिकाना जिला करनाल तसील थाना पानिपत मैं बाजार बजाजा मैं दुकान चिरंजीवलाल कन्हैलाल की पर ईश्वरानन्द को मिले

१ जोधपुर का निवास का समाचार
२ और रामानद जी कहां······पाय 'कै मि
३ ओर कौंन से रोज········और ऋग्वेद का कोनसा·········· होता है।

अष्टाध्यायी का बहूत अच्छा बदाङ्गप्रकाश सहीत पाठ हो रहा है ओर संधिविषय तो समाप्त हो गया अब शीघ्र ही उपदेशाधिकारी

---

१. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १, पृष्ठ ८-६ पर छपा है।

२. जहां-जहां बिन्दियां हैं, वहां-वहां असल पत्र फटा हुआ है। इन भागों को दीमकें चाट गई है। म० मुंशीराम।

३. ये दोनों पत्र पूर्व पूर्ण संख्या ४७६(पृष्ठ ५६५)तथा ४६१(पृष्ठ ५८०) पर छप चुके हैं।

हो जाउगा महाभाष्य विवरण और कैयठ सहित मगवाय लियी है रुपये १८

श्रीयुत ब्रह्मचारीजी रामानन्दजी को वहूधा नमस्ते अषाढ़शुदी १०[1]

[ईश्वरानन्द][2]

—:०:—

[पूर्ण संख्या ४९९]　　　　पत्र

ओम्[3]

श्रीयुत परमहंस परिव्राजकाचार्य सर्वोपकारी दिग्विजयार्कीय श्री ३ स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज के चरण कमल में प्रणति तति शुभदायका पहुंचे दश दिन हुवे कि स्वामी सहजानन्द सरस्वती जी फरीदकोटराज औ फीरोजपुर आर्यसमाज से इस स्थान में पहुंचे और आर्यसमाज मुलतान में अनेक विषयों में व्याख्यान प्रदान किये जिस से हम सब आर्यस्थ तथा अन्य लोग भी आनन्दित हुवे और स्वामी जी अभी तक इसी जगह स्थित हैं और व्याख्यान दे रहे हैं हम उनको धन्यवाद देते हैं कि ऐसे सुललित व्याख्यान सत्यशास्त्रादि प्रमाण युक्त से हम लोगों को सुशिक्षित कर रहे हैं और अन्य स्थानों में भी करें आशा है कि यदि इसी प्रकार दो चार और उपदेशक महात्मा आप की कृपा से हों तो अति शीघ्र देशोन्नति हो जावे और सत्यधर्म प्रकाशित होवे ।

और धन्यवादपत्र[4] जो वैदिक यंत्रालय से आया था उस पर प्रधानादियों के हस्ताक्षर करा के महाराणा उदयपुराधीश की सेवा में भेजा गिया है ॥

आशा है कि आप पुनरागमन से हम लोगों को सुशिक्षित करेंगे

---

१ सं० १९४०=१४ जुलाई १८८३ ।

२. पत्र पर ईश्वरानन्द का हस्ताक्षर नहीं है ।

३ यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १, पृष्ठ ३०६-३०७ पर छपा है ।

४. इस 'धन्यवादपत्र' के सम्बन्ध में पूर्व पूर्ण संख्या ४५७ पृष्ठ ५४१ की टि० ५ देखें ।

अवकाशानुसार ॥ विज्ञतमेषु किमधिकम् ।

आप का चरणसेवक
काशीराम
उपप्रधान आर्य समाज
मुलतान

१५ जुलाई १८८३[1]

—:o:—

[पूर्ण संख्या ५००] पत्र

॥ श्री: ॥[2]

दयानंनद सरस्वती जी माहाराज:—

॥ श्री श्री १०४ श्री श्री सांमी जी माहाराज से मेरी दंवत पांहचे तथा आ पांनी के सबब सै की कीचड कादा भी बौत है नै देषने पीरने मं भी दीकत होगी छीटे बगेरे लगेगे ईस लीयें मेंने मुनासब नही समजा सौ आप आज नही पदारे ईस की मैंनै भी दरबार सं बी और माराज श्री प्रतापसिंघ जी साहब से पुछ लीया है सौ फुरमाया के बौत मुनासीब है आर आप कु बी तकलीफ होती ईस लीयै ईतलान लीषा है फकत

१९३९[3] रा० अ० शु १२[4]
Tej Singh

—:o:—

[पूर्ण संख्या ५०१] पत्र

ओ३म्[5]

सिद्धि श्री सर्व्व सद्गुण सम्पन्न श्री १०८ स्वामी श्रीमद्दयानन्द सरस्वती जी के पदसरोज में भोलानाथ की नमस्ते—

---

१. आषाढ़ शु० १० सं० १९४० वि० ।

२. यह पत्र पं० चमूपति सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग २, पृष्ठ ९० पर छपा है ।

३. यहां संवत् १९४० होना चाहिये ।

४. अ०=असाढ़=आषाढ़ शु० १२ स० १९४०=१७ जुलाई १८८३ ।

५. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १, पृष्ठ ३७१-३७२ पर छपा है ।

आप की कृपा से इस समाज का प्रथम वर्ष समाप्त हुआ और उसका वार्षिक उत्सव श्रावण कृष्ण १० रविवार को नियत हुआ है, विनय पूर्वक आप के। चरणारविन्द में प्रार्थना है कि उक्त समय पर पधार कर इस समाज को सुशोभित कीजिये—और यदि आप का आना न हो तो किसी अपने शिष्य को भेज दीजिये—सब समाजो में भी निमंत्रणपत्र भेजे गये हैं—

संवत १९४० वि०
मिति असाढ सुदी १२[1]

आप का सेवक
भोलानाथ
मंत्री आर्य्यसमाज, बरेली।

—:०:—

[पूर्ण संख्या ५०२] पत्र

॥ ओ३म् ॥[2]

सिद्ध श्री परमपूजनीय परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री १०८ श्री स्वामी जी श्रीमद्दयानन्द सरस्वती जी चरणकमलेषु निवेदनमिदम्

निवेदन आप से यह विदित होय पण्डित मेर को वहूत श्रेष्ठ मिला है जी व्याकर[ण] विद्या में पूरण गति है दयालु और धार्मिक भी मालूम होता ह भीक्षा माग खाता हूं लोग पानीपत के मुज को चाहैते हैं और मेर को आप दया दृष्टि से कछु आज्ञा कर दीजिगा जपनेमतपदानादिकू कि आज्ञा दीजियेगा

रामानन्दजी ब्रह्मचारी जी को मेरी वहूधा नमस्ते संवत् १९४० आ सुदी १३[3]

(ईश्वरानन्द)[4]

—:०:—

१. १७ जुलाई १८८३।

२. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १, पृष्ठ १० पर छपा है।

३. १८ जुलाई सन् १८८३।

४. इस कार्ड पर डाक घर की मोहर १८ जुलाई की है। म० मुंशीराम

[पूर्ण संख्या ५०३] पत्र

॥ श्री ॥[1]

स्वस्ति श्री सर्वोपकारणार्थ कारूणिक परमहंस परिबराजकाचार्य श्रीमद्दयानन्द सरस्वती जी माहराज के चरणारविन्दों में माहराजाधिराज शाहपुरेश की बारम्बार नमस्तेस्तु अपरंच ॥ आपकी महरबानगी के साथ दो तीन षत[2] पहूंचे पढ़ने से बहुत प्रसन्न हुआ और जुहार सिंह जी के विशय में आपने ये लिषा था के उस्या कुछ हाल न्हीं लिषा सो इस्का कारण यह हुआ कि में इस अरसे में ककछोला चला गया और जवाहरसिंह जी भी मेरे साथ था और वहां अवकाश न मिलने के कारन न लिष सका सो आप क्षमा करें जैसा आपने इन के विशय में कहा था उस्से भी मेंने अच्छा पाया और जो आपने लिषा था के पूर्व प्रतज्ञात पत्र के कुछ व्युरध हुवा हो तो लिषें सो उसके व्युरध कुछ नहीं हुआ। मेरे यहा का कायदा है के लिषने में एक तो और सिवाये मिले तो अच्छा है यह षयाल मेरा है और आप की मारफत सिरफ ५०) रुपये मासिक लिषा गया था पर हमने इन की दानाई और लयाकत देख के ६०) रुपये माहवार कर दिये हैं षाना हमने इस वास्ते सामिल रषा था के ये नांवाकिफ थे इन को सुरूसुरू ही में तकलीफ होती अब चंद रोज के बाद वाकिफ हो जावेंगे तो षुद इन्तजाम कर लेंगे और अब षानगी काम भी सुपुरद कर देवेंगे— और सबल जी काकोजी आप के षिदमत में हाजिर हुए होंगे— बूंदी का पत्र आया वो असा ही था जैसा आरयू के नाम दस्यु या अनारी लोग लिषते हैं— क्षत्रय पाठशाला बहुत जल्द होने वाली है— जैसी आपकी कृपा दृष्ट मेरे हाल पर है वैसी ही बनी रह और समाज भी यहाँ बनाने की तजवीज हो रही है इश्वर ने चाहा तो बहोत जलदी आर्य समाज कायम हो जायगा मिति आसाढ़ सुदि १५ सं० १९३९[3] तारीष २० जोलाई सन १८८३ ईसवी हः द[ा]म नाहरसिहस्य

साहपुरा

---

१. यह पत्र प० चमूपति सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग २, पृष्ठ २३-२४ पर छपा है।

२. इस पत्र में सर्वत्र 'ष' को 'ख' पढ़ें।

३. सं० १९४० होना चाहिये। २० जुलाई ८३ को सं० १९४० था।

[पूर्ण संख्या ५०४] पत्र

20-7-83[1] ओ३म्[2]

नमस्ते। वेदानुयायिन्

आपु से यह मेरी प्रार्थना है कि आयु के विषय मे इस दास कू भ्रम है अर्थात् अकाल मृतु है वा नही और यत्न कर के मृतु का निवारण होता है वा नही यदि जो निवारण है तो यत्न से मृतु का संभव नही हो सक्ता और जो निवारण नही औषधी ब्रह्मचर्यादिक किस लिए है इस का संदेह निवारणार्थ विस्तार पूर्वक पत्र शीघ्र भेजिये क्योंकि इस अनुचर कू यह निश्चय है कि अकाल मृतु नही है किमधिकम्।

उत्तर से शीघ्र ही सूचित करना योग्य है कारण कि भ्रम का निवारण हो जावै।[3]

पत्र भेजा जिला बुलन्दशहर परगना खुरजा डांकघर अरनोयां ठिकाना नगलिया उदयभांन की से कुन्दनलाल गुप्त ने[4]

—:o:—

[पूर्ण संख्या ५०५] पत्र

आर्य्य समाज अजमेर[5]

नं० ४५४ ता: २१-७-८३[6]

श्री स्वामी जी महाराज

नमस्ते.

---

१. आषाढ़ पूर्णिमा सं० १९४०।

२. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्र व्यवहार' भाग १, पृष्ठ ३९२-३९३ पर छपा है।

३. यद्यपि ऋ० द० के वेदभाष्यादि ग्रन्थों से स्पष्ट हो जाता है कि वे अकाल मृत्यु मानते थे। परन्तु यदि इस पत्र का ऋ० द० का प्रेषित उत्तर प्राप्त हो जाता तो आर्यसमाज में यह विवाद का विषय न बनता।

४. नोट—इस पत्र के पृष्ठ पर लिखा है—"सेवा में श्रीयुत महा मान्यवर जगत् गुरु श्रीस्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज के बमुकाम जोधपुर राज मारवाड़"। मुंशीराम

५. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्र व्यवहार' भाग १, पृष्ठ १७२-१७३ पर छपा है। ६. श्रावण कृ० १, २ सं० १९४० वि०।

इससे प्रथम एक चिट्ठी आप की सेवा में भेजी गई थी[1] जिसमें पंडितों और स्वामी केशवानन्द का आप के पास जाने का हाल लिखा था पर न जाने आपने उत्तर क्यों नहीं दिया. आजकल इस नगर में पोप लोगों ने यह गप्प उड़ा रक्खी है कि जोधपुर में स्वामी जी से फौजदारी हो गई है यद्यपि हम जानते हैं कि यह सर्वदा असत्य ही है तथापि अल्पज्ञता के कारण कितने ही प्रकार के संकल्प विकल्प उठते हैं. इस कारण आप कृपा कर इसका सत्य वृत्तान्त लिखें

१२ वीं जोलाई सन् ८३ ई० का भारतमित्र आप की सेवा में पहुंचा होगा उसमें ए ओ. होम साहब[2] ने जो थियोसाफिष्ट के मेम्बर हैं. वेद भ्रान्ति अभ्रान्ति का वृत्तान्त लिखा है और आप से उत्तर मांगा है सो उत्तर अवश्य देना चाहिये[3].

और जोधपुर का वृत्तान्त भी लिखें कि यहां के लोगों को कैसी भक्ति है और महाराजा साहब का कैसा स्नेह है. किमधिकम्.

रामानन्द ब्रह्मचारी, अमरदान जी कन्हैयालाल जी महाशयों को नमस्ते पहुचे और सब सभासदों की ओर से आपकी सेवा में नमस्ते पहुंचे.

आपका दास
कमलनयन शर्म्मा
मंत्री आर्य्य स. अजमेर

—:०:—

१. द्र० —३-७-८३ का पूर्व पूर्ण संख्या ४८१ (पृष्ठ ५७०) पर छपा पत्र ।

२. ये वे ही मिस्टर ए० ओ० ह्यूम साहब हैं, जिन्होंने सन् १८८५ में कांग्रेस की स्थापना की थी ।

३. इस का उत्तर ऋ० द० ने भारतमित्र के सम्पादक के नाम एक आलोचनात्मक पत्र लिख कर भेजा था । द्र०—'ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन', पूर्ण संख्या ८६३, भाग २, पृष्ठ ८८०-८८३ । यह उत्तर भारत-सुदशा-प्रवर्तक और देशहितैषी पत्रों के सम्पादकों को भी भेजा था । द्र०—पूर्ण संख्या ८६४, ८६५, ८६६ भाग २, पृष्ठ ८८३, ८८४ ।

[पूर्ण संख्या ५०६] पत्र

ओ३म्[1]

संस्कार बिद पुराण पुरुषी

अजमेर ता: २३ जौलाई[2]

नमस्ते महाशय

श्री मत्परहंस परिव्राजकाचार्य्य परमगुरु विरुद्ध मत खंडन सत्य-मत मंडन जगत विख्यात् स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज चरण कमलेषु हाल यह है कि आप का दास जोधपुर से रवानह हो कर बांदन बाड़े में आन पहुंचा और अब अजमेर में हूं दासकी विनय है कि जो मैंने कुछ विरुद्ध वाक्य कहा हो तो क्षमा फर्मावें और दास पर मिहर्बानी रखावें और सब से मेरा नमस्ते कह देना फर्मावे—

ता. २३ जोलाई १९६०[3]

बलदेव अज मुकाम अजमेर शरीफ

—:०:—

[पूर्ण संख्या ५०७] पत्र

(कार्ड पर)[4]

एक पोस्ट कार्ड आप का आया था[5] वो श्री आर्यकुल कमल दिवाकर की सेवा में अर्पण कर दिया यहां सब प्रसन्न है श्रीमांन बहुत प्रसन्न है मैंने एक पत्र श्रीमांन् की आज्ञानुसार आपकी सेवा में भेजा था[6] उसका उत्तर नहीं आया[7] सो यथा उचित लिष भेजें—और

---

१. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १. पृष्ठ २१६ पर छपा है।

२. यहाँ सन् का निर्देश नहीं है। श्रावण कृष्णा ४, सं० १९४०।

३. सम्भवत: यहां सं० १९४० के स्थान पर लेखक प्रमाद या मुद्रण प्रमाद से १९६० हो गया है। अथवा सन् १८८३ चाहिये। श्रावण कृष्णा ४ सं० १९४० २३ जुलाई सन १८८३ सोमवार।

४. यह पत्र पं० चमूपति सम्पादित 'ऋ० द० का पत्र व्यवहार' भाग २. पृष्ठ ११३ पर छपा है।

५. यह पत्र हमें नहीं मिला।

६. द्र०—पूर्व पूर्ण संख्या ४९३, पृष्ठ ५८३-५८४ तक छपा पत्र।

७. इसका उत्तर ऋ० द० ने आषाढ़ शु० १५ सं० १९४० को दिया था

इंदोर से कविराजा जी का पत्र आया जिस से प्रकट हुआ के अब उन के नेत्रों मैं आरांम है और दृष्टी भी अछी हो गई भादवे मैं यहां आ जावैंगे—सूचनार्थ निवेदन किया है

सम्वत १९४० श्रावण वदि ५ मंगलवार[1]

।। बारहट कृष्णसिंह

परम हंस परिव्राजकाचार्य स्वामीं जी महराज श्री १०८
श्री दयानंद सरस्वती जी के चरन कमलों में
जोधपुर फैजुल्लाखां जी के बाग मैं पहुंचै
बार्ट किसन सिंह

जोधपुर फंजुल्लाखां जी के बाग मैं
Jodhpur Jodhpur July 27

—:o:—

[पूर्ण संख्या ५०८] पत्र

ओम् तत्सत्[2]

श्रीस्वामी जी महाराज नमस्ते ।।

समाचार यह है कि बाईबिल का पूर्वापर विरुद्ध तर्जुमा जो आप ने मंगाया था[3] उस के विषय में प्रार्थना यह है कि कुछ तो हो गया

(द्र०—पूर्ण संख्या ८५६, भाग २, पृष्ठ ८७१)। इस की पहुंच बारहट कृष्णसिंह ने श्रावण वदी ९, सं० १९४० के पत्र में दी है (द्र०—अग्रिम पूर्ण संख्या ५१२ का पत्र)।

१. २४ जुलाई १८८३। पत्र के अन्त में '२७ जुलाई' लिखा है। क्या पत्र ३ दिन पीछे भेजा गया? अथवा भूल से 'जुलाई २७' लिखा गया। बारहट कृष्णसिंह जी के इस पत्र का उत्तर ऋ० द० ने श्रावण वदि ११ सं० १९४० को दिया था। द्र०— 'ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन' पूर्ण संख्या ८७०, भाग २, पृष्ठ ८८५।

२. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १, पृष्ठ ९९-१०१ तक छपा है।

३. इस के लिये ऋ० द० का आषाढ़ वदी १० सं० १९४० का पूर्ण संख्या ८५१ (भाग २, पृष्ठ ८७२) का पत्र देखें। इस विषय में नन्दकिशोर सिंह का आषाढ़ शुक्ला ३ सं० १९४० का पूर्व पूर्ण संख्या ४८८, पृष्ठ ५७७ पर छपा पत्र भी देखें।

है और कुछ अवशेष है विलंब का कारण यह है कि जिस की वोह किताब थी उस ने अपने किसी मित्र को दिखलाने के लिये लेली थी हमने और किताब मंगवाई है वोह अभी आने वाली है और उस किताब वाले ने भी आज या कल ही देने की प्रतिज्ञा की है इस कारण अब मैं आप की सेवा मैं प्रार्थना करता हूं कि बहुत शीघ्र तर्जुमा करके आप की सेवा में समर्पण करूंगा ।। और जो कुछ तर्जुमा हो चुका है उसमें दो चार खंडन आप की सेवा में भेजता हूं।

प्र०—१ परमेश्वर का अपने कामों से राजी होना ।।

फिर परमेश्वर ने हर एक वस्तु पर जिसे उसने बनाया था दृष्टि कि और देखा कि बहुत अच्छी है ।। (उत्पत्ति विषय पर्व १ आयत ३१ ।।

परमेश्वर का अपने कामों से नाराज होना ।।

तब मनुष्य को पृथिवी पर उत्पन्न करने से परमेश्वर पचताया और इसे अति शोक हुवा । उत्पत्ति वि० प० ६ आयत ६ ।।

५ परमेश्वर का थकना और आराम लेना ।।

परमेश्वर ने छ दिन में स्वर्ग और पृथिवी उत्पन्न किये और सातवें दिन आराम पाया (पात्रा वि० प० ३१ आयत १७ ।।

क्षमा करने से मैं थक गया हूं ।। (यर्मिया)प० १५ आयत ६

तूने मुझे अपने कुकर्म्मों से थका दिया ।। (यसिइयाह) प० ४३ आ० २४

परमेश्वर न कभी थकता है न आराम लेता है ।।

क्या तूने नहीं जाना और क्या तूने नहीं सुना कि परमेश्वर सनातन का ईश्वर है पृथिवी के सिवानों का सृष्टिकर्त्ता वोह न निर्बल होता न थकता है (यसिइयाह) प० ४० आ० २८ ।।

आप का दर्शनाभिलाषी
नन्दकिशोरसिंह
जयपुर २४ जोलाई ८३[1]

—:०:—

१. श्रावण कृ० ५ सं० १९४० वि० ।

[पूर्ण संख्या ५०६] पत्र-सूचना

[किसी साधु का संस्कृत में पत्र।][1]

—:o:—

[पूर्ण संख्या ५१०] पत्र

[ओ३म्][2]

Ajmere College.
अजमेर २४ जुलाई १८८३[3]

सत्यधर्म्म प्रचारक श्रीमत् स्वामी जी महाराज के पद पंकजों में अनुचर शुकदेवप्रसाद कृत नमस्ते सविनय स्वीकृति हों–पं० शालिग्राम जी इच्छित पंडित के लिये काशी को लिखा है उस्का उत्तर आने पर आप को सूचना दी जायेगी[4]—कुशल संयुत उधर के समाचार चाहता हूं—मेरे अन्तःकरण की वांछा आप को विदित है उसके पूर्ण होने के लिये कुछ उपाय हो तो ठीक है—उसके कारण शाहपुरा के मुकाम अर्ज कर चुका हूं किमधिकम्—

आप का पं० शुकदेव प्र:

—:o:—

[पूर्ण संख्या ५११] पत्र

॥ ओ३म् ॥[5]

सिद्ध श्रीपरमपूज्यनीय परहंस परिब्राजकाचार्य श्री १०८ स्वामी

---

१. यह पत्र किसी साधु ने वैदिक यन्त्रालय प्रयाग के पते पर भेजा था। इसे मुंशी समर्थदान ने १४ अगस्त ८३ के अनुपलब्ध पत्र के साथ भेजा था। द्र०—ऋ० द० का भाद्र १, सं० १६४० का पूर्ण संख्या ८६० का पत्र (भाग २, पृष्ठ ६०६, पं० ५-८) तथा मुंशी समर्थदान का २४-८-८३ का पूर्ण संख्या ५४५ (भाग ४)।

२. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्र व्यवहार' भाग १, पृष्ठ २०८ पर छपा है।

३. श्रावण कृ० ५ स० १६४० वि०।

४. इस के विषय में पं० शुकदेव का श्रावण शुक्ला ६ सं० १६४० (११ अगस्त १८८३) का अग्रिम पूर्ण संख्या ५२७ का पत्र देखें।

५. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १, पृष्ठ १२-१४ पर छपा है।

जी श्रीमद्[या]नन्द सरस्वतीजी चरणकमलेषु बहूधा नमस्ते समाचार सहर पानीपत के निवासकारियों का प्रश्न० सहर पानीपत के लोग ऐसा प्रश्न कर्ते हैं कि तुम्हारा धर्म क्या है और किस की सम्मति पूर्वक आचरण धर्म के कर्ते हो (उत्तर) (हमारा धर्म वैदिक है) और जो पूर्व सृष्टि में ब्रह्मा आदि महर्षि हूये थे जो कि वेद द्वारा ईश्वराज्ञा के पालक और सकल जगद्धितैशी थे सो अब तक सर्व मनुष्यों को विदित है कि चतुर्भि: वेद के ज्ञाता ब्रह्मा जी हूये हैं अतएव ब्रह्मादि पूर्णार्षो की सम्मतिपूर्वक आर्य्य लोगों का धर्म्माचरण (आज) पर्यन्त सनातन चला आया है (अन्यथा नही) पुन: उक्त लोगों का प्रश्न० वैदिक धर्म क्या है (उत्तर) ईश्वरोपासना वेदाध्ययन सत्यभाषणादि कर्मों से शरीर कि आयु को व्यतीत करना होता है और आचार्य्य पितृ आदिकों को स्वपुरुषार्थ से संतुष्ट करना होता है इत्यर्थ: ।

(उक्त पोपों का पुन: प्रश्न) उक्त मनुष्य यह प्रतिपादन कर्ते हैं प्रथम मूर्तिपूजन का अधिकार वेद प्रतिपाद्य है तुम कसैं मूर्तिपूजा का निषेध कर्ते हो देखो शङ्कराचार्य्य जो थे मूर्तिपूजा को कहीं भी खण्डन नहीं किया किन्तु सर्वथा मण्डन करणे मैं चरितार्थ हूये हैं क्या शङ्कराचार्य्य वेद के ज्ञाता नही थे जिन्होंने मूर्तिपूजन को कहि भी खण्डन नहीं किया तुम्हारे स्वामी जी वेद के कोनसे मन्त्र से मूर्तिपूजा खण्डन कर्ते हैं सो कहो (उत्तर) **नतस्यप्रतिमाअस्ति इत्यनेन मंत्रेण मूर्तिपूजानिषेधेत्यर्थ:** ।

(पूर्वोक्त पोपो का पुन: प्रश्न) जो लौकिक धर्म है सो वेदान्तरङ्ग है या बहिरङ्ग है जो वेद बहिरङ्ग लौकिक व्यापार को स्वीकार करोगे तो महद्दूषणापत्ति जावेगी क्युंकि जितने शरीरूं का व्यापार का परिणाम है सो सर्व वेद प्रतिपाद्य है यातैं वेदान्तरङ्ग है लौकिक नहीं यदि लौकिक हो तो वेद बहिरङ्ग है तदपि वेद ह इस रीति से सर्वथा त्याज्यनीय है और वेद में लोक लोकान्तर की प्राप्ति निमित्तक जो कर्म उपासना किये जाते हैं सो प्रवृत्ति के हेतु जो कर्मोपासना तिन का वेद में सर्वथा त्याज्यही विदित है वेद का सिद्धान्त प्रवृत्ति मे कहीं भी नहीं है किन्तु निवृत्ति मार्ग द्वारै जीव ब्रह्म की अभेदान्वय मैंहि तात्पर्य्य है तुह्य किस प्रकार वेदों का आशय प्रवृत्ति मार्ग मे

लगाते हो और वेदान्त सूत्र जोकि व्यास भगवान् प्रणित हैं तिन सूत्रन का भि निवृत्ति माग हि मैं तात्पर्य्य है और व्यास भगवान् के जो मुख्य शिष्य जैमिनि थे तिन्होंने पूर्व मिमांसा नाम करिकशास्त्र वनाया तिस शास्त्र विषै जैमिनिमुनिजी ने कर्म्म को प्रधान मान्या है परन्तु प्रवृत्ति मार्ग को खण्डन करिके निवृत्ति हि मार्ग को मुख्य प्रतिपादन किया है यातें ऋषि मुनि प्रणित दश उपनिषत् तिन का भि केवल निवृत्ति ही में तात्पर्य है प्रवृत्ति मार्ग मैं किसी उपनिषत् का तात्पर्य्य नही है।

अैसे अैसे प्रश्न वहूत्से पोप लोग करत हैं मैं तो सर्व का प्रहार कर देता हूं जी—

और अष्टाध्यायी अध्ययन वेदाङ्गप्रकाश सहित करता हूं।

व्याकरण को खूब जिह्वाग्र या पत्रस्थ अवश्य ही करूंगा जी

श्रीयुत् परमसतकाराधिकारी विद्वज्जन् श्रीमद्रामानन्द ब्रह्मचारी जी योग्य भिक्षु ईश्वरानन्द का वहुश: नमस्ते विदित हो आग पत्र आप का आया[1] समाचार मेर को आप का ज्ञात हुवा आप का पत्र पठन करिके मैं वहुत प्रश्न हूवा जी दयादृष्टि पूर्वक पत्र देते रह्या करो मेरे पास पत्र भेजने ठिकाना जिला करनाल तहसील थाना पानीपत में वाजार वजाजा में दुकान चिरञ्जीवलाल कन्हैयालाल की पर पहुंचे।

भवच्चरणकमलेषु पत्रमिदम्—

ईशवरानन्देन लिपिकृतम्

(संवत् १९४० श्रा० व० ८ बार शुक्र)[2]

—:o:—

[पूर्ण संख्या ५१२] **पत्र**

॥ श्री ॥[3]

॥ श्रीमत् परम हंस परिव्राजकाचार्य स्वामी जी महाराज श्री० १०८ श्री श्री दयानंद सरस्वती जी की सेवा मैं

॥ पत्र आपका आया और कुरांन तथा ईंजील का षंडन भेजा

---

१. रामानन्द का पत्र उपलब्ध नहीं हुआ।

२. २७ जुलाई सन् १८८३।

३. यह पत्र पं० चमूपति सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग २, पृष्ठ ११४ पर छपा है।

सो भी पहुंचा[1] वो सब श्रीमांन की सेवा मैं अर्पण कीये गये श्रीमंन् ने पढ कर आग्या की के हमारा अभिप्राय शास्त्रार्थ करानें का नहीं है किंतु यह इच्छा थी के जैसे ईसाई लोग अपनें इच्छानुसार व्याख्यान करते हैं इसी तरह यह भी होता परंतु ज्यो यह असक्य है तो कुछ चिता नहीं—सो आग्यानुसार मैंनें आप को सूचनां करदी है और उदयलाल जी प्रोहित कों घड़ी के वास्ते कहा सो उनों नें उत्तर दिया के दो घडियें हमारें पास आई थीं[2] जिस मैं एक यहां रखी और एक भेज दी सो यह भी आप कूं सूचनार्थ लिषा है और यहां सब प्रसंन है श्रीमांन वहुत प्रसंन है १९४० श्रावण बदि ९ सनिश्चरवार—[3]

आपका सेवक बारहट कृष्णसिंह[4]

—:०:—

[पूर्ण संख्या ५१३] पत्र

[5]काटन स्ट्रीट न० ९४
कलकत्ता।

पुज्यपाद श्रीमत् स्वामी दयानंद सरस्वती[6]
श्री चरण कमलेषु।

महानुभव ?

मेरी— अभिलाषा है कि एक पुस्तक ऐसी बने जिसमे निम्नलिखित विषयों का संग्रह रहे—यथा:—

---

१. इनके विषय में ऋ० द० के पूर्ण संख्या ८५८, ८५९, ८७० (भाग २, पृष्ठ ८७७, ८८५) के पत्र भी देखें।

२. इसके विषय में ऋ० द० ने पूर्ण संख्या ८५९ (भाग २, पृष्ठ ८७९, ९-११) के पत्र में पूछा था।

३. २८ जुलाई सन् १८८३।

४. इस पत्र का उत्तर ऋ० द० ने श्रा० शु० ३, सं० १९४० को दिया था (द्र० –पूर्ण संख्या ८७५, भाग २, पृष्ठ ८९२-८९४)।

५. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १, पृष्ठ ७५-७६ पर छपा है।

६. इस पत्र की तारीख का निर्देश करते हुए ऋ० द० ने सम्पादक, भारतमित्र, कलकत्ता से पूछा था। द्र०—ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन, पूर्ण संख्या ८७३(भाग २, पृष्ठ ८९१ पं० २२-२५ तथा पृष्ठ ८९२ पं० १-४)।

१। सनातन आर्य्य धर्म्म के प्रयोजन।

२। आर्य्य धर्म्म के अनुसार ईश्वर स्तुति।

३। आर्य्य के नित्य कर्म्म और धर्म्माचरण के नियम।

४। स्वामी जी की संक्षिप्त जीवनी।

५। एक सामान्य पंचाङ्ग जिसमें अंगरेजी बार तारिख, हिन्दी बार तारिख तिथि और नक्षत्र आदिक का विवरण रहे।

६। आर्य्य समाज सम्बन्धी—विशेष घटनावली।

७। आर्य्य समाजों की तालिका जिसमें नीचे लिखे विषय रहें—

(क) समाज का नाम (ख) कब स्थापित हुआ

(ग) मन्त्री का नाम (घ) सभासदों की संख्या

(ङ) वार्षिक उतसव का दिन।

८। विद्यालय, पुस्तकालय और चिकित्सालयों की तालिका जो कि आर्य्य जन द्वारा स्थापित हुये हैं वा उनसे जिनका कार्य्य निर्वाह होता है

९। (संवाद) पत्रों की तालिका जो आर्य्य जन द्वारा प्रकाशित होते हैं। उनका नाम ठिकाना मूल्य।

१०। पुस्तकों की तालिका (आर्य्य धर्म्म व समाज संम्बन्धी उन का नाम मूल्य और ठिकाना।

११। एक मान चित्र जिसमें वे नगर वा ग्राम विशेष कर लिखे जावें जहां आर्य्य सभाएं स्थापित हैं।

१२। अन्यान्य आवश्यकीय विषय जैसे वैज्ञानिक राजनैतिक और भाषा वा शिक्षा विषयीनी सभाओं के नाम। स्टेम्प मनिआर्डर टलीग्राफ रजिस्ट्रि आदिक के नियम।

मैं इस पुस्तक का नाम "**आर्य्य पंचाङ्ग**"[1] रखना चाहता हूं। और आशा है कि प्रति वर्ष एक ऐसा पंचाङ्ग आपकी आज्ञानुसार निकला करे। मेरी इच्छा है कि मैं एक ऐसी पुस्तक इस वर्ष की प्रकाश करूं: परंतु आपकी सहायता के विना इसका सुफल होना असम्भव है मैं इस विषय में अनभिज्ञ हूं। यदि आप कृपा कर के मेरे इस मन्तव्य को

१. यह इस बात का साक्ष्य देता है कि आरम्भिक काल में आर्य कितने कर्मठ एवं लगन वाले थे।

समस्त आर्य्य जन और समाजों से पचार करदें जिससे कि मैं उन समाजों के विवरण संग्रह करने में समर्थ हो सकुं तो मेरा मनोर्थ सिद्ध होजावे। इससे समस्त आर्य्य जनों का उपकार हो सकेगा मुजे पूर्ण आशा है। यदि आपकी अभिरुचि होवे तो उत्तर दान से इस अधीन को बाधित कीजिएगा मेरे मन्तव्य के दोष गुण विचारने का भार आपही के हाथ रहा। मै इस विषय में आपकी सम्मति प्रार्थना करता हुं। अन्त में मैं यह भी आपसे निवेदन करना उचित समझता हुं कि इस मन्तव्य से सम्पादक भारतमित्र की विशेष सहानुभूती है। इति—

प्रार्थी विनयावनत

जुलाई २८। १८८३[1]

श्रीकृष्ण क्षत्री

सम्पादक "ज्ञानवर्द्धिनी सभा"[2]

कृपापत्र इस पते ले लिखियेगा।

श्रीकृष्ण क्षत्री

९४ न० काटन स्ट्रीट कलकत्ता।

To SriKrishan Khattry
94 Cotton Street
CalCutta

—:o:—

[पूर्ण संख्या ५१५] पत्र

आर्य्यसमाज अजमेर[3]

नं० ४६५ ता: २९—८—८३[4]

श्री स्वामी जी महाराज,

नमस्ते—

आपका कृपापत्र आया सब को आनन्दित किया, मिष्टर ए० यु०

१. श्रावण कृ० ९ सं० १९४० वि०।

२. इस पत्र के विषय मे पूर्व पृष्ठ ६०३, टि० ६ देखें।

३. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १, पृष्ठ १७४ पर छपा है।

४. श्रावण कृ० १० सं० १९४० वि०।

होम साहब के कथन का खन्डन[1] जो आपने दे० हि० में छपने को भेजा है सो पहुंचा. दे० हि० के भाद्रपद मास के मसौदे में जो कि १० अगस्त को छपने को जावेगा उसमें लिखा गया.

भारतमित्र और अन्यत्र पत्रों में आपने मुद्रितार्थ भेज दिया. अच्छा किया क्योंकि उनमें शीघ्र प्रकाश होगा. सब सभासदों की ओर से नमस्ते पहुंचे.

आपका दास
कमलनैयन शर्म्मा
मंत्री. आर्य्य. स. अजमेर

—:०:—

[पूर्ण संख्या ५१५] पत्र

ओ३म्[2]

सत्यधर्म्म प्रदम्वेद नित्यवेद प्रकाशकम् तत्सभाष्येण सदज्ञान नाशयन्तम्परि प्रजन् श्रीमन्महोदय जगद्गुरु परमहंस परिव्राजकाचार्य दिग्विजयार्कीय स्वामी दयानन्द सरस्वतीनां चरणसरोज मकरन्दं शिरसा दधामः महाराज आपकी कृपा से जौलाई ता. २७ को मुलतान से आर्यसमाज सक्खर पहुचे इहां का समाचार बहुत अच्छा है तथा मुलतान का भी परन्तु विदेशीय सब इहां का समाजस्थ हैं और यहां का स्थान अतिशय सुशोभित नदी विमानादिक से हो रहा है मैं व्याख्यान दे रहा हूं आपके कृपासे यदि इहां के रईश समाजस्थ हो जावें तो आश्चर्य नहीं क्योंकि पांच चार ५-४ यहां के भद्र पुरुष नित्य प्रति प्रश्नोत्तर द्वारा संदेह निवृत कर रहे हैं महाराज और जो कुछ समाचार वह पीछे लिखेंगे

सम्वत १९४० सन १८८३ जोलाई-ता, २९[3]
आपका दास सहजानन्द सरस्वती
श्रीमत्प्रेषितपत्रपठनेनैव महानान्दोजातः[4]

---

१. यह खण्डन 'सम्पादक, भारतमित्र, कलकत्ता' को भेजा था। द्र०—'ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन' पूर्ण संख्या ८७८ (भाग २, पृष्ठ ८९५)। यही देशहितैषी (अजमेर) तथा भारतसुदशाप्रवर्तक के सम्पादक को भी भेजा था।

२. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्र व्यवहार' भाग २, पष्ठ ३३-३४ पर छपा है। ३. श्रावण कृ० १० सं० १९४० वि०।

४. यह पत्र हमें प्राप्त नहीं हुआ।

[पूर्ण संख्या ५१६] पत्र

ॐ श्री[1]

नमस्ते अती दुखीत हुं के मेरे से जो सेवा की आज्ञा हुई सो होना कठीन है मेरी बदली अमझरे के असपताल में आज नौ महीने से हो गई आज आपका पत्र सांमलराम जी कवी[2] के वारे में आया से मैंने पण्डीत भेरोंलाल जो इन्दोर के असपताल मे हे उनके पास भेज दीया हे और आशा है की भेरोंलाल बरोबरकवी जी की खाबर रखेंगे[3]

दा[सा]नुदास बिहारीलाल

—:o:—

[पूर्ण संख्या ५१७] पत्र

ता: १–८–८३[4]

आर्य्य कुल भूषण श्रीयुत स्वामी जी महाराज.

नमस्ते। जोधपुर

प्राथना किङ्कर की यह है कि मैं "देवनागरी" अक्षर स्पष्ट व शुद्ध उत्तम प्रकार से लिखता हूं. नमूना के वास्ते यह विनय पत्र सेवा में भेज कर आशा रखता हूं कि यदि इस दीन के योग्य कोई कार्य

---

१. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्र व्यवहार' भाग १, पृष्ठ २२६ पर छपा है।

२. अर्थात् कविराज श्यामलदास। नाम लिखने में भूल हुई है। कविराज श्यामलदास आंखों की चिकित्सा कराने इन्दौर गये थे। उन्हीं के लिये स्वामी जी महाराज ने बिहारीलाल को लिखा होगा।

३. इस पत्र पर तिथि का निर्देश नहीं है। कविराज श्यामलदास दो बार आंखों की चिकित्सा कराने इन्दौर गये थे। पहली बार आषाढ़ १९४० में, दूसरी बार भाद्र कृ० ११ सं० १९४० में। सम्भवत: यह पत्र जब कविराज पहली बार इन्दौर गये तब लिखा होगा। अत: यह पत्र आषाढ़ के अन्त या श्रावण १९४० के प्रारम्भ जुलाई १८८३ में लिखा गया होगा।

४. श्रावण कृ० १३, सं० १९४० वि०। यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १, पृष्ठ २१८-२१९ पर छपा है।

आप के निकट हो तो कृपा कर शीघ्र आज्ञा कीजिये. बड़ा अनुग्रह होगा. विशेषु किमधिकम्-कृपा कर शीघ्र उत्तर दीजिये।

आपका दास
बालकराम बाजपेइ[1]
आर्य्य समाज अजमेर

—:o:—

[पूर्ण संख्या ५१८] पत्र

॥ श्री ॥[2]

॥ श्री मत्परम हंस परिव्राजका चार्य
स्वांमी जी महाराज श्री १०८ श्री श्री
दयानंद सरस्वती जी के चरन कमलों में

॥ कृपा पत्र आपका आया दो कितावे ज्यो आपनें भेजी थी श्रीमानों की भेंट कर दी गई[3] और इस बिषय में एक पत्र आप की सेवा में भेज चुका हुं[4] निश्चय है के पहुंचा होगा वो पत्र श्रीमांनं के आज्ञ्यानुसार लिखा था—लाहोर का पत्र[5] ज्यो आपनें भेजा था वो भी अधीसो के दृष्टिगोचर हुआ था परंतु बिस्मर्ण हो गया था सो आप के इस पत्र आनें पर स्मर्ण कराया गया तो आग्या की के अभी एक बंगाली बाबू हैड माष्टर है वो परिक्षार्थ रखा गया है यदि इस का कांम ठीक नहीं देखा जावेगा तो फिर आप सें सूचनां की जावेगा—इस जगह पर यूरोपियन नहीं रखा जावेगा—और महासयों का चित

---

१. बालकराम बाजपेयी के इस पत्र को पाकर ऋ० द० ने १० अगस्त १८८३ को कमलनयन शर्मा अजमेर को लिखे गये पत्र में बालकराम बाजपेयी के सम्बन्ध में पूछा था (द्र०—ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन' पूर्ण संख्या ८७९, भाग २, पृष्ठ ८९६-८९७)। बालकराम बाजपेयी के २० अगस्त और ३१ अगस्त १८८३ के पत्र को आगे यथास्थान देखें।

२. यह पत्र पं० चमूपति सम्पादित 'ऋ० द० का पत्र व्यवहार' भाग २, पृष्ठ ११५-११६ पर छपा है।

३. इस विषय में पूर्व पूर्ण संख्या ५१२, पृष्ठ ६०३ की टि० १ देखें।

४. यह पत्र पूर्व पूर्ण संख्या ५१२, पृष्ठ ६०२ पर छपा है।

५. यह पत्र हमें नहीं मिला।

प्रसन्न है भाद्रपद शुक्ला मैं निरामय का महोत्सव होगा ओर बर्षा यहां बहुत दिनों सें नहीं हैं—ओर अब बहुत आवस्यकता है—ओर आप के लिषनें के अनुसार जयकर्ण जी कों कह दिया[1] उनोंनें आप का बहुत धन्यबाद किया है—ओर कविराजा सांवल दास जी के आंखें अब अच्छी हैं ओर अब वो इस सप्ताह मैं उदयपुर आजावेंगे— श्रीमानों नें आपकों नमस्ते कहा है ओर यहां सब तरह से कुशल है १९४० श्रावण शुक्ला २[2]

आपका सेवक
बार्हट कृष्णसिह
बहारट किसन जी
नं १८ उदयपुर

—:o:—

[पूर्ण संख्या ५१९] पत्र

॥ श्रीपरमैश्वरजी ॥[3]

॥ स्वास्ति श्री जोधपुर शुभस्थानस्थ सर्वोपमा विराजमान स्वामी जी महाराज श्री १०८ श्री दयानन्दजी सरस्वतीजी के चरण कमलेषु उदयपुरस्थलिषितं उज्वलजयकर्ण का शाष्टांक नमस्ते निवेदन होवें अपर ॥ कृपा पत्र आप का आया[4] जिस मैं लिखा मेरै पिता के ओर

---

१. द्र०—ऋ० द० का श्रा० ब० ११, सं० १९४० (=३० जुलाई १८८३ का, पूर्ण संख्या ८७० (भाग २, पृष्ठ ८८६, पं० १५-१८) का पत्र।

२. ५ अगस्त सन् १८८३।

३. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १, पृष्ठ १०७-१०८ पर छपा है।

४. यह संकेत ऋ० द० के श्रावण बदी ११ स० १९४० (=३० जुलाई १८८३) को बारहट किशन जी को लिखे पत्र की ओर है (द्र०—'ऋ० द० के पत्र और विज्ञापन' पूर्ण संख्या ८७०, भाग २, पृष्ठ ८८६, पं० १५-१८)। इसका उल्लेख ऋ० द० ने श्रावण शु० ३, सं० १९४० (=५ अगस्त १८८३) को लिखे पूर्ण संख्या ८७५ के पत्र में भी किया है (द्र०-भाग २, पृष्ठ ८९४, पं० ३-४)।

महाराज प्रतापसिंह जी सें अैक्यता करादी सो तो आप करुणानिधि है यावत आर्यावर्त का आप उपकार कर्त्ते हैं इस मैं हमारा उपकार कीया सों आप की अधिकाइ अधिक तो अक जिह्वा सें क्या लिखु परंतु जिस कार्य के वस मैं पांच वर्ष सें यहा तपस्या करता हुं सो इतना तो सांवलदासजी नै किया कि यहा स्थापत कर दिये परन्तु मन की भ्रांती यावत थी तावत् कुछ न था सो आपनै शुभ दृष्टी करकें मिटादी अब अके प्रताप से तथा यावदार्यकुलदिवाकर महाराणा जी के प्रताप में जन्मभर आनंदित रहेंगें नहीं तो बड़ा कष्ट था इश्वर आप कों चिरंजीवी करें ॥ ये व्रतांत मेरे पिताजी ने पहेलं भी लिख दिया था फेर आप परोपकारी है जो न्याय की रीति सें हमारा उपकार बनें सो करोइगें ॥ और मास्टर के विषय मे कृष्न जी नें उत्तर लिखाइहैं[1] ॥ संमत् १९४० का श्रावण शुक्ला २ द्वितीय[2] ॥

—:•:—

[पूर्ण संख्या ५२०] पत्र

[3]ओ३म् भू भु स्व: विश्वा रूपाणि प्रति मुञ्चते कवि: प्राशा विद्भदे द्वी पदे शं चतुष्पदे ॥ पिनाक मध्य ७ सवितावरे ण्यनु प्राणणे विराजती.[4] इस्मैं शुद्धा शुद्ध विचार आप कर लीजीये

ओ३म् परमात्मने नम:

श्रीमद्विद्यासागर स्वामी जी नमस्ते उक्त मंत्र किस वेद का कौन से अध्याय की कौन ऋचा है इस का शब्दार्थ भावार्थ क्या है अपनी

---

१. द्र०—बारहट कृष्णसिंह का पूर्व पूर्ण संख्या ५१८(पृष्ठ ६०८ पं० १४-१७) का पत्र । २. ५ अगस्त १८८३ ।

३. यह मन्त्र और अगला पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्र व्यवहार' भाग १, पृष्ठ ३७८-३७९ पर छपा है।

४. इसी पत्र में यह अशुद्ध लिखा हुआ मन्त्र निम्नलिखित प्रकार शोधा हुआ भी वर्तमान है—

ओ३म् भू भूं स्व: विश्वा रूताणि प्रति मुञ्चते कवि:प्रासावीद् भद्रं द्विपदे चतुष्पदे ॥ विनाकमख्यत्सविता वरेण्योऽनुप्रयाणमुषसो विराजति । यजुर्वेद । [द्वादशे] अध्याये तृतीयो मन्त्र:।

करुणा से उत्तर प्रसाद कीजिये पत्र कुत्र अशुद्ध हो शुद्ध कर दीजिये उत्तर के लिये टिकट भेजा है[1] पता मेरा यह है—

श्रावण २४ गते[2] भौमे
१९४० वि०
७-८-८३

पण्डित **रमादत्त** तृपाटी
मिशन कूल, नयनीताल।

—:०:—

[पूर्ण संख्या ५२१] पत्र

श्री[3]

तारीख ७ आगष्ट १८८३
श्रावण ४ शुद्ध १८०५[4]

श्री स्वामि दयानन्द सरस्वती जी से बहुत विनय पूर्वक लिखा जाता है कि आप के दो पत्र आये[5] समाचार पाये घडी पोंहोची सो ठीक हुआ—आज हमारे बंधु कु लिख चुके है वह भी पूछते थे कि घडी का वर्तमान क्या है. आप सेवकलाल ने घड़ी भेजे का वर्त्तमान लिखे सो क्या उनो की भी घडी गई और पोहोंची.

फिर आप घडी की किमत के वास्ते लिखते हैं सो क्या आप हम कु कृतघ्न ठैराने चाहते हैं—कभी हम भी आप से लिखे कि हम आप के सन्निध जितने रोज ठैरे[6] उतने रोज का भोजन आदि का और

---

१ इस पत्र का उत्तर ऋ० द० ने दिया था। यह पं० रमादत्त के अगले २०-८-१८८३ के पत्र से ज्ञात होता है। यह पत्र हमें नहीं मिला। पृ. ६१० की टिप्पणी सं० ४ म० मुंशीराम सम्पादित पत्र व्यवहार में छपी है। यह टिप्पणी तथा मन्त्र का शुद्ध पाठ सम्भवतः ऋ० द० का लिखवाया हुआ है।

२. यह सौर तिथि है। चान्द्रतिथि श्रावण शु० ४, सं० १९४० वि०।

३. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्र व्यवहार' भाग १, पृष्ठ २४४-२४५ पर छपा है।

४. यह शकाब्द है। श्रावण शु० ४, सं० १९४० वि०।

५. ये पत्र हमें नहीं मिले।

६. रा० ब० गोपालराव हरि देशमुख के पुत्र लक्ष्मण गोपाल देशमुख ऋ० द० से योग सीखने की इच्छा से २६ मई सन् १८८३ को अजमेर पहुंचे थे। वहां से वे ऋषि दयानन्द के साथ ही जोधपुर गये (द्र०-पं० लेखराम कृत जीवनचरित, हिन्दी सं० पृष्ठ ६०६)। वहां वे कितने दिन रहे यह किसी

सवारी के खरच का भी दाम लेके सरकार मे जमा करवाइये तो ये क्या अच्छी बात होगी घडी की कीमत कुछ बडी नहीं है मित्रता के व्यवहार में छोटी बात का अलग हिसाब रखे वह हमारी नजर से ठीक नहीं. और घडी भी तो आप पाये नही पुरोहित जी पाये आप केवल आप के वचन के लिये हमकु आज्ञा किये और आप रुपया भरें तो वह तो दंड जसा आपकु हो गया सो हम नहीं करने कु चाहते-हां कभी सेवकलाल ने घडी भेजी नही होगी और उनके पास रुपये पड़े होंगे तो उन से आप आज्ञा कीजिये।

हमारे तीर्थ रूप का आना तो हमारे लिखे से न होगा आप कभी लिखे जब तो वह आवे तो आवे।

हम इच्छा करते हैं कि आप के पत्र हम कु सब संस्कृत में आवे सो इच्छा आप पूर्ण कीजिये इस से हम कु भी संस्कृत पत्रव्यवहार का मार्ग समजा जायेगा—इति विनतिः।

आप का श्रावण वद्य १० का पत्र है सो आषाढ़ वद्य १० होना चाहिये[1]।

लक्ष्मणगोपाल देशमुख
असिस्टंट कलेक्टर, खानदेश

—:०:—

[पूर्ण संख्या ५२२] पत्र

॥ ओ३म् ॥[2]

सिद्धश्री परमपूज्य परमहंसपरिव्राजकाचार्य्य वर्य्य श्री मच्छुद्ध-स्वरूप चिदाघ न सकल जगद्धितोपकारक मूर्तिषु स्वाश्रम धर्म्म

जीवनचरित से ज्ञात नहीं होता। ऊपर का उल्लेख जोधपुर साथ जाने और वहां रहने के सम्बन्ध में है।

१. ऋ० द० ने उत्तर भारतीय पञ्चाङ्ग के अनुसार श्रावण वदी १० ठीक लिखा था। परन्तु दक्षिण भारत में महिना अमावास्या पर समाप्त होता है। अतः उत्तर भारतीय श्रावण कृष्णपक्ष उनके यहां आषाढ़ का अन्त्य पक्ष माना जाता है। लक्ष्मण गोपाल को दोनों क्षेत्रों के पञ्चाङ्गों का ज्ञान न होने से ऐसा लिखा है।

२. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्र व्यवहार' भाग १, पृष्ठ १५-१६ पर छपा है।

मर्यादा पालन तत्परेषु श्री १०८ श्री स्वामी जी श्रीमद्दयानन्द सरस्वती जी चरण कमलेषु ईश्वरानन्द का मनसावाचाकर्मणा हस्ताभ्यां वहुशः नमस्ते

समाचार आप से विदित हो कि आप करूणा पूर्वक पत्र स्विकार किया करो हे परम कारूणिक ववासीर की दवाई जरूर मेरे प्रति पत्र द्वारे प्रकट कियी जाय तो श्रीमानों का वडा भारी ही उपकार है

समाचार दूसरा एक वावू[1] सहर मुरादावाद के पास का सहर पानीपत में नौकर है सो व: पुस्तक मगवाया चाहता है रूपये किस प्रकार भेजे जांय सो जरूर लिखो जो मणीआडर करवा के भेज देवें या और प्रकार से आप के चरण कमल में जिस रीति से रूपये पहूच जाञ सो लिखो

श्रीयुत मद्रामानन्द ब्रह्मचारी जी योग्य ईश्वरानन्द की वहूशः नमस्ते क्या रामानन्द जी आपने पत्र लिखने की मेरे प्रति प्रतिज्ञा करी थी सो कहां गयी सहर के लोगों ने मिल के डाकतर से बवासीर के मसे कटाय दीये और दश रूपये पञ्चों ने हकीम को दीये लौन मिरच खट्टाई मिठ्ठा दुग्धादि वगैरे सब खाने पीने की वस्तू वन्ध कर दी सो हे भगवन् अब तक कछु आराम नहीं हूवा है।

रूपय भि: खरचना मेरे अनुकूल है जो रूपयों से औषधी वन सकें तौ सो भि: लिखो और दूसरा कोई और साधन हो सोभि आपणि करूणा पूर्वक लिखना जी रामानन्द जी यह लिखने की प्रार्थना आप से करी जाती है श्री स्वामी जी से श्रवण करिके जरूर लिख भेजना जिला करनाल तसील थाना सहर पानीपत वाजार वजाजा चिरंजीवलाल की दुकान पर

पठन पाठान अच्छा होता है जरा दुःख के सम्वन्ध से कम पढता हू जी

संवत् १९४० श्रा० शु० ०५[2] **ईश्वरानन्द**

—:o:—

१. बाबू ज्वालाप्रसाद, धनौरा, जि० मुरादाबाद। द्र०— ईश्वरानन्द का श्रा० शु० ७, सं० १९४० (=१० अगस्त १८८३) का अग्रिम पूर्ण संख्या ५२५ पर छपा पत्र।

२. ८ अगस्त सन् १८८३।

[पूर्ण संख्या ५२३] पत्र

ओं इन्दोर रतलाम महाराज की कोठी[1]
श्रावण शुक्ला ५[2]

श्रीमद् परम हंस परिव्राजकाचार्य्य श्री श्री स्वामी दयानन्द समीपेषु नमस्ते

आपका एक पत्र मुझ को शफाखानें के द्वारा असाढ़ वदी ११ का लिखा उसी मास के अंत के पास मिला था[3] परन्तु येह निश्चय न था कि आप कहां है इस कारण स उत्तर लिखा न गया जोधपुर में जो उदयपुर का वकील रहता है उस से पूछने पर कल ज्ञात हुवा कि आप अभी वहीं विराजते हैं और विराजेंगे. मेरी आंखों में जोधपुर से लौटने पर अनायास रोग होकर कई महीने मुझे बोहत दर्द का दुख उठाना पड़ा वहां डाक्तरों की चिकित्सा से कुछ आराम न होकर में यहां आया डाकटर कीगन जो आंख की चिकित्सा में बड़े निपुण हैं इलाज करते हैं और गणपत सिंह जी जो उन के नीचे हैं वोह भी दिन प्रति संभाल लेते है येह आपके लिखे के अनुसार बोहत उत्तम आदमी हैं पहले करते मुझ फायदा भी बोहत है किसी सहारे के बिना भी में चल फिर लेता हूं आशा है कि कुछ दिनों में और भी अच्छा हो जाऊं. शुभ कार्य्य[4] में विघ्न तो हुवा परन्तु अनायास दर्द हो जाने से —इसपर भी उस के विचार से निश्चिंत नहीं हूं और विश्वास रखता हूं कि पीछा आते हुए और भी दो तीन जगह के अक्षर करा लिये जावेंगे।

भवदीय
क. रा. श्यामल दास
बकलम ब्रजनाथ मि. ल

ब्रजनाथ भी जो कविराज जी की सेवा में है प्रणाम अर्ज करता है

—:o:—

१. यह पत्र पं० चमूपति सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग २, पृष्ठ ४६-४७ पर छपा है।

२. सं० १९४०=८ अगस्त सन् १८८३।

३ यह पत्र हमें उपलब्ध नहीं हुआ।

४. अर्थात् गोरक्षा के विषय में हस्ताक्षर कराने के कार्य में।

[पूर्ण संख्या ५२४] पत्र

Dinapore,[1]
Dated 9th August, 1883.

Dear Sir,

I must apologise to begin with for writing to you a perfect stranger to me, but I think I can reply on a great mind to forgive such intrusion.

I have frequently heard of your name and of your work and I hold both in great respect. I know you are one of those who are searching for truth and trying to bring others into the same path.

I have seen in Newspapers from time to time that you have held discussions with Christian Missionaries on subjects regarding Theology and Religion and that you have upheld your own views on these great subjects with ability and have got the better of the arguments so discussed.

Now, I am not a Missionary, nor do I profess to have any Theological training, nor do I wish to enter into any discussions. I am an every day worker in the ordinary way of life, but I am one of those who wish to see the "True" Christian Religion vindicated from its surroundings of error, that have crept into Modern Christian Churches.

I am one of those who think that as the same God is the loving Father of all, of European-Aryans and Indo-Aryans, or of Christians, Hindus, and all others of whatever sect, Nationality or Race that there should be a common bond amongst all.

---

१. यह पत्र वैदिक मैगजीन (गुरुकुल कांगड़ी) माघ १९६५ वि० छपा था।

What universal man now requires is a synthesis, or drawing together of all the threads of all religions that bind us to the common centre—the universal Father of mankind. There is good to be found in all great religions and a great deal is common to all. The fundamental maxim of the great Teacher I am about to bring to your notice is that "**all religion has relation to life** and **life of religion is to do good.**"

The object of my writing to you now is to introduce to you (if you have not heard of them before) the writings of a great Philosopher and Theologion **Emanucl Swedenborg**, who was born in Sweden in 1668 and died in 1772 in his 85th year.

These writings are very voluminous both on Scientific subjects and Theology. I would earnestly invite you to read them, for I am convinced, that a man of your acknowledged ability will find in themmatter of deep interest and importance. You will find in them philosophical and spiritual subjects discussed by a Christian author, in a light they have never before been put before you by Missionaries or Christian Teachers in this country. Swedenborg and his works are at a rule despised by them, they call him a visionary and either from Theological bais, or incapacity to read his writings, they reject them with scorn and by their advice try to keep others from reading them

Ralph Waldo Emerson, a great American Philosopher and Critic says of Swedenborg—"This man who appeared to his contemporaries a visionary, and elixir of moonheams, no doubt lead the most

real life of any man then in the world, and now when Royal, and ducal Fredericks, Christiens and Brunswicks of that day, slid into oblivion, he (Swedenborg) begins to spread himself into the minds of thousands."

Again Emerson says of him—

"A colossal soul, he is wast abroad in his times, uncomprehended by them and repuires a long focal distance to be seen·········His superb speculations, as from a tower over nature and arts, without ever loosing sight of the texture and sequence of things almost realises his own picture of the original integrity of man........."

Again he says of Swedenborg—

"He is one of missoriums and Mastodons of litrature, he cannot be measured by whole colleges of ordinary scholars. His stalwart presence would flutter the gowns of an university."

Again Emerson talking of his writing says—

"But Swedenborg is systematic and respective of the world in every sentence, all the means are orderly given, his faculties work with astronomic punctuality and this admirable writing is pure from all retness our egotism ...."

These criticisms of Emerson will give you an idea of this great man's writings and may perhaps be sufficient to kindle a desire in you to see what a great Philosopher and Theologian (one who is but too little known to the world as yet) has to say on subjects of the deepest importance to mankind.

But besides this, I send you a Pamphlet written by Mr. Rao Bahadur Daboda Pandurung of Bombay (who has lately died)—a Hindu gentleman of great literary attainments and one who had a great insight into the Vedic Shastras and most of the religions of the world. He has read Swedenborg's writings and this pamphlet is a criticism thereon and will further shew you what the great Theologion and Philosopher's writings are, but of course it can only be by a study of these writings themselves that your mind will be satisfied, for the above is at the best only a comment on them.

I shall be obliged if you will kindly write a few lines in reply to say that I have given no offence is thus writings to you, I do it in a neighbourly spirit and please lat me know if Mr. Daboda Pandurung's pamphlet has safely reached your hands.

Yours faithfully,
J. H. WILSON,
Superintending Engineer,
Western Circle, Bengal,
Dinapore.

भाषार्थ

दानापुर
दिनांक ६ अगस्त १८८३

प्रिय महोदय,

आरम्भ में मैं आपसे इस बात के लिये क्षमा-याचना करूं कि यद्यपि आप मुझ से पूर्ण अपरिचित हैं, तथापि मैं आपको पत्र लिख रहा हूं, किन्तु मैं सोचता हूं कि इस प्रकार की अनधिकार चेष्टा के लिए आप जैसा मनस्वी पुरुष मुझे क्षमा कर देगा।

मैंने प्रायः आपका नाम सुना है तथा आपके कार्य के बारे में भी

मुझे जानकारी मिली है। मुझे आपके नाम तथा काम दोनों ही के प्रति पूर्ण आदर है। मैं जानता हूं कि आप सत्यान्वेषी महानुभावों में एक हैं तथा दूसरों को भी सत्पथ पर लाना चाहते हैं।

मैंने समाचारपत्रों में पढ़ा है कि आपने धार्मिक विषयों पर ईसाई प्रचारकों से शास्त्रार्थ किये हैं तथा इन महत्त्वपूर्ण विषयों पर आपने अपने दृष्टिकोण को अत्यन्त योग्यतापूर्वक प्रस्पष्ट भी किया है और इस प्रकार के तर्क-वितर्क में अपने पक्ष को सुदृढ़ रखा है।

अब मैं आपको बताऊं कि न तो मैं धर्मप्रचारक ही हूं और न मैंने किसी प्रकार का धार्मिक प्रशिक्षण ही लिया है। किसी प्रकार के शास्त्रार्थ में उतरने की भी मेरी कोई इच्छा नहीं है। मैं जीवन की सामान्य धारा में बहने वाला एक साधारण कार्यकर्ता हूं किन्तु मैं उनमें से एक हूं जो यह चाहते हैं कि आधुनिक ईसाई चर्चों में जो त्रुटियां आ गई हैं और जिनसे सच्चा ईसाई धर्म भी आक्रान्त हो रहा है, वह सर्वथा निर्दोष सिद्ध हो सके।

मैं उनमें से भी एक हूं जो यह सोचते हैं कि एक ही परमात्मा सारी मनुष्य-सृष्टि का प्यारा पिता है, चाहे वे यूरोपीय आर्य हों या भारतीय आर्य। चाहे वे ईसाई, हिन्दू या किसी अन्य मत को मानने वाले हों, किसी देश या नस्ल के हों। इन सब को मानवता के बन्धन में बान्धने का एक ही सूत्र होना शाहिये।

आज के विश्व मानव की जो कामना है वह एक प्रकार के संश्लेषण की इच्छा है, ताकि हम सभी धर्मों के सभी सूत्रों को खींच कर एक कर सकें ताकि वह हमें मानवता के विश्व पिता परमात्मा रूपी केन्द्र से आबद्ध कर दे। सभी महान् धर्मों में समान अच्छाइयाँ है तथा सब में बहुत कुछ समानतायें भी हैं। जिस महान् उपदेशक के बारे में मैं आपको बताना चाहता हूं उसका मूल सिद्धान्त इस प्रकार है—सभी धर्म जीवन से जुड़े हैं तथा धर्म का प्राण है भलाई।

मेरे लिखने का उद्देश्य आपको एक महान् दार्शनिक तथा धर्मवेत्ता एमानुएल स्वेडनबर्ग की रचनाओं से परिचित कराना है (यदि आपने इनके बारे में पहले नहीं सुना है)जो स्वेडनमें १६६८ में जन्मा था था तथा ८५ वर्ष की आयु पाकर १७७२ में दिवङ्गत हुआ। विज्ञान तथा धर्म पर लिखे गये उसके ये ग्रन्थ अत्यन्त विशालकाय हैं। मैं

आपको इन्हें पढ़ने के लिए प्रेरित करता हूं क्योंकि मुझे पूरा भरोसा है कि आपके जैसी सर्व स्वीकृत योग्यता का व्यक्ति यदि इन्हें पढ़ेगा तो उसे इनमें अत्यन्त रोचक तथा महत्त्वपूर्ण सामग्री मिलेगी। आप को इनमें एक ईसाई लेखक द्वारा विवेचित ऐसे दार्शनिक और आध्यात्मिक विषय मिलेंगे जिनकी विवेचना इस प्रकार इससे पूर्व इस देश में किसी भी प्रचारक या ईसाई उपदेष्टा द्वारा नहीं की गई है। इस प्रकार से इन लोगों के द्वारा स्वेडनबर्ग तथा उसके ग्रन्थों का तिरस्कार ही किया गया है। वे उसे कल्पना लोक का वासी स्वप्न-दर्शी कहते हैं तथा या तो धार्मिक पूर्वाग्रह के कारण, अथवा इस कारण कि वे उसके ग्रन्थों को भली भांति पढ़ नहीं सके हैं। उन्होंने इन ग्रन्थों को घृणापूर्वक बहिष्कृत कर दिया है। साथ ही वे अन्यों को इन्हें न पढ़ने का ही परामर्श देते हैं।

अमेरिका के एक महान् दार्शनिक तथा आलोचक राल्फ वाल्डो एमर्सन ने स्वेडनबर्ग के बारे में लिखा है—"यह व्यक्ति जो अपने समकालीनों के द्वारा केवल एक स्वप्नद्रष्टा माना गया, संसार के किसी अन्य व्यक्ति से अधिक यथार्थ जीवन जीता रहा और अब जब कि उस युग के रायल, फ्रैडरिक्स, क्रिस्टीन्स तथ बन्सविक्स आदि दार्शनिक विस्मृति के गर्त में ढकेल दिये गये हैं, यह दार्शनिक (स्वे-डनबर्ग) हजारों लोगों के मनों पर छा रहा है।"

एमर्सन पुन: उसके बारे में कहता है—"वह एक विराट् आत्मा है। अपने समय में उसका चिन्तन अत्यन्त व्यापक है, समकालीन लोग उसे भली भांति जान भी नहीं सके। उसे सही रूप में देखने के लिए विस्तृत दृष्टि अपेक्षित है····प्रकृति और कलाओं के बारे में उस का श्रेष्ठ चिन्तन ऐसा प्रतीत होता है मानो किसी उच्च स्तम्भ पर खड़े होकर उसने सच सोचा हो, उसने इन वस्तुओं की संरचना तथा अनुक्रम को विस्मृत किये बिना ही उनके बारे में सोचा था। मनुष्य की मौलिक सत्यनिष्ठा उसके व्यक्तित्व में प्रति प्रतिफलित हुई थी।"

स्वेडनबर्ग के बारे में वह पुन: लिखता है—"साहित्य का यह एक शलाका पुरुष है। साधारण विद्वानों को विद्या सभाओं द्वारा उसकी विद्वत्ता को नापना कठिन है। उसकी शानदार उपस्थिति ही किसी विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों के चोगों को फड़फड़ा सकती है और उन्हें हैरत में डाल सकती है।"

पुनः उसके ग्रन्थों के बारे में वह कहता है—"उसके लेखन के प्रत्येक वाक्य में व्यवस्था तथा तारतम्य है। सभी अर्थ व्यवस्थित रूप से दिये गये हैं। उसकी क्षमता ज्योतिषीय समयबद्धता से काम करती है तथा उसका यह प्रशंसनीय लेखन अहङ्कारजन्य धृष्टता से पूर्णतया मुक्त है।"

एमर्सन द्वारा लिखी गई स्वेडनबर्ग की यह आलोचना इस महापुरुष के लेखन का स्वल्प परिचय आपको देगी तथा इससे सम्भवतः आपके मन में यह जानने की तीव्र इच्छा उत्पन्न होगी कि यह महान् दार्शनिक तथा धर्मवेत्ता (जिसे आज भी दुनिया बहुत कम जानती है) मानवता के लिये नितान्त महत्त्वपूर्ण विषयों के बारे में क्या कहता है।

इसके साथ ही मैं बम्बई के श्री रावबहादुर दादोबा पाण्डुरङ्ग (जो कई वर्ष हुए दिवङ्गत हो गये हैं) द्वारा लिखी गई एक पुस्तिका आपको भेजता हूं। श्री पाण्डुरङ्ग महान् साहित्यिक उपलब्धियों वाले एक हिन्दू सज्जन थे, जिनकी वैदिक शास्त्रों तथा संसार के अधिकांश धर्मों में गहरी पैठ थी। उन्होंने स्वेडनबर्ग के ग्रन्थों को पढ़ा था तथा यह पुस्तिका भी उन ग्रन्थों की आलोचना में ही लिखी गई है। इससे आपको आगे और ज्ञात होगा कि उस महान् धर्मशास्त्री तथा दार्शनिक की रचनायें किस कोटि की हैं। तथापि यह तो कहना ही पड़ेगा कि उसके इन ग्रन्थों को स्वयं पढ़ने के बाद ही आपके मस्तिष्क को सन्तुष्टि मिलेगी, क्योंकि पाण्डुरङ्ग की पुस्तक तो केवल उन ग्रन्थों पर एक टिप्पणी ही है।

मैं अत्यन्त आभारी होऊंगा यदि आप इस पत्र के उत्तर में कुछ पंक्तियां लिख कर मुझे यह सूचित करेंगे कि मैंने ऐसा लिखकर आप के प्रति कोई अपराध नहीं किया है। मैंने एक पड़ोसी मित्र की भावना से ही आपको लिखा है तथा कृपया यह सूचित करें कि श्री दादोबा पाण्डुरङ्ग की पुस्तक आपको सुरक्षित रूप से मिल गई है।

आपका विश्वासपात्र,
जे० एच० विलसन।
अधीक्षक अभियन्ता,
पश्चिमी क्षेत्र, बङ्गाल,
दानापुर।

[पूर्ण संख्या ५२५] पत्र

ओ३म्[1]

सिद्ध श्रीमत् कृपासिन्धुष्वार्त्तिध्वान्तर विस्वलंभूरिशोमत्प्रणामा: स्युर्गु रूपाद युगेष्वित: श्रीमान् परमपूज्यनीय श्री मत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य वर्य्य श्रीस्वामी जी श्री १०८ जगद्गुरू श्रीमद्दयानंद सरस्वती जी चरण कमलेषु मनसावाचा हस्ताभ्यामुक्त चरण कमलेषु वहुश: नमस्ते

हे भगवन् समाचार आप से विदित हो १) रूपये के टिकट इस पत्र के साथ भेजे जाते हैं श्रीमानों को पत्र सहित मिलेंगे सो हे स्वामीन् आप शीघ्र ही १) रूपये कि पुस्तक जिला करनाल तहसील थाना सहर पानीपत में बाजार बजाजा में दुकान लाला चिरंजीव लाल कि पर भेजें

उक्त पुस्तकों के नाम

१ सन्ध्या कि पुस्तक

२ वेद विरूद्ध मत खण्डन कि पुस्तक

३ आर्य्यदेशरत्नमाला कि पुस्तक

४ वेदान्त ध्वान्त निवारण कि पुस्तक

हे कृपानिधे हमरा पठन पाठन का अनुष्ठान शीघ्र हि पूरा होय जाय हे परम कारूणिक हम लोगों का व्याकरणादि अनुष्ठान निरविघ्नता से समाप्त हो जाय तो वहूत श्रेष्ट है हे दयानिधे मेरा चित्त निस दिवस शरीराऽऽयु पर्यन्त श्रीमानों के चरण कमले में हि बनारह इत्याभिवादन मिदम्

उक्त पुस्तकों का डाक मसूल सहर पानीपत में दिया जायगा वावू ज्वालाप्रसाद को अध्ययन करवायि जांवेंगी रहनें वाले सहर धनौरा के जिला मुरादाबाद । श्रीयुत रामानन्द ब्रह्मचारी जी से ईश्वरानन्द का वहुश: नमस्ते

संवत् १९४० श्रा० शु० ७[2] (ईश्वरानन्द सरस्वती)

—:०:—

१. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्र व्यवहार' भाग १, पृष्ठ १६-१८ तक छपा है।

१. १० अगस्त सन् १८८३ ।

[पूर्ण संख्या ५२६] पत्र

Sukkur,[1]
Dated 10th August, 1883.

My dear Swamiji, Namaste,

Swami Sahajanand is here since a fortnight and has delivered lectures (Drja Khan) on different sudjects of Dharm and Desh Upkar, we all Samajists here have been greatly benefitted by his lectures, No doubt our country will be improved by the diffusion of Sat Dharm among the people by such Updeshaks.

We are greatly indebted to you for the Vedic Dharm now-a days being professed amongst our countrymen.

Kindly accept our heartly thanks for sending Updeshak to travel from one country to another to spread and enlighten the minds of people with their knowledge (Vedic Dharm).

Yours obediently,
Mungoo Ram,
Corresponding Secretary,
Arya Samaj,
Sukkur.
MUNSHI RAMA

भाषार्थ

सक्खर
दिनांक १० अगस्त १८८३

मेरे प्रिय स्वामी जी,
नमस्ते ।

एक पखवाड़े से स्वामी सहजानन्द यहां हैं और उन्होंने धर्म तथा देशोपकार के विषयों पर अनेक व्याख्यान यहां (दरिया खान में)

१. यह पत्र वैदिक मैगजीन (गुरुकुल कांगड़ी) पौष १९६५ वि० में छपा था ।

दिये हैं। इन व्याख्यानों से हम आर्यसमाजियों को अतीव लाभ पहुंचा है। निश्चय ही ऐसे उपदेशकों द्वारा देशवासियों को सद्धर्म का उपदेश देने से हमारे देश की उन्नति होगी। हमारे देशवासियों के बीच आज कल वैदिक धर्म का जिस प्रकार प्रचार किया जा रहा है, उसके लिये हम आपके अत्यन्त ऋणी हैं। एक देश से दूसरे देश में जाकर लोगों में वैदिक धर्म का प्रचार करने और लोगों के मनों को रोशन करने हेतु कृपया हमारा हार्दिक धन्यवाद ग्रहण करें।

आपका आज्ञाकारी,
मंगूराम
मन्त्री (पत्र-व्यवहार)
आर्यसमाज सक्खर।
मुन्शीराम

—:o:—

[पूर्ण संख्या ५२७] पत्र

[1]परम कृपालु श्री स्वामीजी महाराज नमस्ते वा अष्टांग प्रणाम के पश्चात् यह निवेदन है कि यह पत्र जो काशी से पं० शिवकुमार ने पं० शालिग्राम जी के उत्तर में भेजा है[2] ज्यों का त्यों आपके आलोकनार्थ भेजा है इसका आशय देख कर जैसी इच्छा हो प्रकाशित की जावे—पं० शालिग्राम जी की नमस्ते स्वीकृत हो अन्य सर्व सभासदों की ओर से नमस्ते वा प्रणाम पहुंचै और सब कुशल है किमधिकम्—

---

१. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १, पृष्ठ २०६ पर छपा है।

२. वेदभाष्य के कार्य की सहायता के लिये ऋ० द० ने अजमेर निवासी पं० शुकदेव को कोई पत्र लिखा था। पं० शुकदेव के पिछले कई पत्रों में पं० दामोदर आदि का उल्लेख मिलता है। पं० शालिग्राम इस काल में काशी गये थे। वहां प्रसिद्ध विद्वान् शिवकुमार जी से पण्डित के लिये बातचीत की थी, और अजमेर आकर उन्हें पत्र लिखा था। उसका पं० शिवकुमार जी ने जो उत्तर दिया। उसकी ओर यह संकेत है। पं० शिवकुमार जी का पत्र हम आगे छाप रहे हैं।

(मेरे लिये भी कुछ उपाय कहीं पर कीजिये)[1]

आप का अनुचर
शुकदेवप्रसाद
नार्मल स्कूल अजमेर कालेज

अजमेर श्रावण शुक्ला ९ ता ११ अगस्त १८८३ ई०[2]

श्रीरामचन्द्रो विजयताम्[3]

स्वस्ति श्री मदशेषशास्त्रावगाहन निपुण प्रज्ञाविलासालोकानन्दितान्तःकरणेषु श्री शालग्रामशर्म्म पण्डितवरेषु शिवकुमारशर्म्मणोनतिकुशलादिवृत्तन्तु सुतावेषणयापिभवत्पत्रस्थप्राथमकल्पिकः प्रस्तुताधिकारस्वीकारवान् पण्डितोनालम्भि प्रायोनधीनाः कथञ्चित् सम्भावितनावद्योग्यताकाः पठनादिनिरतास्तत्रगन्तुमेवनकामयन्ते परन्तु पण्डित द्वयेच्छायां किञ्चित्तदुच्यते श्री राजारामशास्त्रिणां प्रथमशिष्यस्तत्कालाध्येतृस्वसतीर्थ्येभ्यः सर्वेभ्योप्युत्तमः प्रतिष्ठिततमः सम्मतिचत्वारिंशतः पञ्चाशतश्चान्तरालेवयसि वर्त्तमानो वसन्तमिश्रः कश्चिन्मैथिलोऽकारणसर्वसुहृत् पूर्णवैयाकरणोव्युत्पत्तिमतामग्रेसरः साम्प्रतं प्रवासकरणेच्छया काशीमायातः कुटुम्बभारेणेमां जीविकां स्वीकर्त्तु मिच्छति अयंसमग्रपण्डितगुण सम्पन्नतया श्री दयानन्दस्वामिनां नूनं, हृदयङ्गमो भविष्यति, एवमेकोनैयायिको गादाधारी जागदीशीप्रभृतिवादग्रन्थानां प्रौढ़वेत्ता नवद्वीपेचिरमधीतवान् अनुमान खण्डवादेऽत्यन्तकुशलोयदुनाथशर्म्मा मैथिलोपि काङ्क्षति प्रस्तुतपदम् अयञ्च दर्शनान्तरं सम्प्रतिसम्यगजानन्नपिबुद्धिमत्तयाल्पकालेनतत्पाटव सम्पादन योग्यतां बिभर्ति परमुभाभ्यामपि मैथिलत्वात् संस्कृतस्य भाषायामनुवादः प्रथमं नचारयितव्यः किन्तु द्वित्रिदिनानि वृत्तान्त पत्र दर्शनादिना किञ्चित दीर्घैकवचनादिनियमबोधनेन च भाषाज्ञानसम्पत्युत्तरम्, भाषायाः संस्कृतेऽनुवादस्तु वैयाकरणेन सम्यक्करिष्यते द्वितीयेनापि

---

१. इस विषय में पं० शुकदेव का पूर्व पूर्ण संख्या ५१०, पृष्ठ ६०० पर मुद्रित २४ जुलाई सन् १८८३ का पत्र भी देखें।

२. ११ अगस्त १८८३ को श्रावण शुक्ला ८ सं० १९४० पड़ता है।

३. इस पत्र का उल्लेख पूर्व पूर्ण संख्या ५२७ के पत्र में होने से यहां दे रहे हैं। यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १, पृष्ठ २०९-२१२ तक भाषानुवाद सहित छपा है।

तत्साहाय्येन कथञ्चित् करिष्यत एव तत्यासेतयोरुपादित्सायां धूमशकट भाटकेन सह पत्रं प्रेष्यं तदैमौप्रेषयिष्येते इति शिवम् श्री:

(अनुवाद)[1]

स्वस्ति

अशेष (अनेक) शास्त्रों के अवगाहन में निपुण बुद्धि के विलास (अकुण्ठित-प्रसार) से उत्पन्न आलोक (ज्ञान प्रकाश) से आनन्दितान्त:करण श्रीमन् शालग्राम पण्डित प्रवर को शिवकुमार शर्मा का नमस्कार और कुशलादि

'वृत्तन्तु' आगे हाल यह है कि आप के लिखे पहिले ढंग का विद्वान् जो उपस्थित अधिकार को स्वीकार करे बहुत ढूंढने पर भी कोई नहीं मिल सका. प्राय: नवीन लोग जैसे तैसे उतनी योग्यता सम्पादन करने के अनन्तर आगे पढ़ने में दत्त चित्त होने के कारण वहां जानाही नहीं चाहते परन्तु दो पण्डितों की इच्छा के विषय में कुछ लिखता हूं इन में से पहिले पं० राजाराम शास्त्री जी के आदिम शिष्य, उस समय के अपने साथियों में सब से उत्तम और प्रतिष्ठित (जिन की अवस्था अब ४०—५० के भीतर होगी) मैथिल वसन्त मिश्र जी काशी में प्रवासार्थ आये हैं-- कुटुम्ब पालन के निमित्त यह इस वृत्ति को स्वीकार करना चाहते हैं, यह बड़े मिलनसार और बहुत ही विचारशील वैयाकरण हैं आशा है कि पण्डिताई के सम्पूर्ण गुणों से युक्त होने के कारण इन पर स्वामी दयानन्द जी अवश्य ही सन्तुष्ट रहेंगे—

इसी तरह दूसरे यदुनाथ शर्म्मा मैथिल—जो कि गादाधारी जागदीशी आदि वाद ग्रन्थों के उत्कृष्ट ज्ञाता और अनुमान खण्ड के वाद में अत्यन्त कुशल है जिन्हों ने बहुत दिनों तक नदिया में पढ़ा है वे भी इस पद को चाहते हैं यद्यपि इन्हों ने अब तक प्राचीन दर्शन नहीं देखे हैं तथापि थोड़े ही समय में उन्हें अपने आप देखने की योग्यता रखते हैं—

ये दोनों मैथिल है इस लिये प्रारम्भ में ही उनसे भाषानुवाद न कराना-दो तीन दिन कोई समाचारपत्र देखने से भाषा के एक वचन द्विवचन आदि का ज्ञान होने पर ये उसे भी कर सकेंगे भाषा से संस्कृत तो वैयाकरण अच्छी बना सकेंगे यदि आपको इनके रखने की इच्छा हो तो रेल का किराया और उत्तर पत्र साथ ही भेजिये तब ये यहां से भेजे जांयगे।

—:०:—

१. यह अनुवाद किसने किया, यह अज्ञात है।

[पूर्ण संख्या ५२८] पत्र

ओ३म्[1]

श्री मदन अवविद्यान्धकारभूयिष्टविद्वन्मानमराजहंसेषु वैदिक वाक्योपदेशेन पवित्रीकृतधरित्रीतलेषु श्री मत्परमहंस परिब्राजकाचार्य दयानन्द सरस्वती दिग्विजयार्कर्कीय स्वामीषु मदीया भक्तितमा सदा भवतु यत ईश्वराख्यं लब्धम् विभोशिकारपुरस्थं विद्धि निवासं मदीयं शिकारपुर मे श्री समाज अस्थित होगआ आपकी कृपासे इहा का प्रधान चाण्डूमल भाटिआ जज साहेब का वकिल मसन्द प्रनिमदास मन्त्री विदित हो कि आपकी सन्ध्या छपाई हुई उसकी उलथा अंगरेजी मे भ्रष्टार्थ संयुक्त छपवाइ लाहोर वालेन उसमे अर्थ किआ है कि पूर्व दिशा मे बैठ कर सन्ध्या करना एसे एसे अर्थों पर बहुत मनुष्य सन्ध्या करते हैं उस में बहुत जगह अनर्थ किया है आप एक प्रति मंगवा कर देखिए सब विदित हो जाएगा आपका कर कञ्जाङ्कित पत्र एक मेरे पास आया[2] सं० १९४० अस्त. १२[3]

देशसिंध आपका दास

सहजानन्द सरस्वती— सिकारपुर

—:०:—

[पूर्ण संख्या ५२९] पत्र

ओ३म् तत्सत्[4]

श्रीस्वामी जी महाराज नमस्ते

अत्यंत शोक का समाचार है कि श्रावण शुक्ला ७ शुक्रवार तदनुकूल १० अगस्त सन वर्त्तमान को प्रातःकाल के समय मुन्शी गंगाप्रसाद जी वैश्य निवासी चौमुका कि जो इस वैदिकधर्मसभा के प्रधान थे हैजे के उपद्रव से स्वर्गवास हो गया इस कारण हम को

---

१. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्र व्यवहार' भाग १, पृष्ठ ३४-३५ पर छपा है।

२. यह पत्र हमें नहीं मिला।

३. श्रावण शु० ९ स० १९४० वि० तदनुसार १२ अगस्त सन् १८८३।

४. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्रव्यवहार' भाग १, पृष्ठ १०१-१०३ पर छपा है।

अत्यंन्त ही शोक हुवा है कि ऐसे पुरुषार्थी तथा धर्म्मानुयायी पुरुष का समागम होना अत्यंत कठिन है इन का आर्य्यत्व वा पुरुषार्थ तथा वेदानुकूलाचरण इस नगर में विख्यात हो चला था और उस से उन्नति की अत्यंत आशा होती थी परंतु क्या किया जावे इस में दैव ही प्रवल है ॥ ऐसी युवा अवस्था में ऐसे श्रेष्ट पुरुष का वियोग अत्यंत दु:खदायक होता है अव आशा है कि आप पत्र द्वारा शीघ्र ही अनुमोदित करेंगे।

आप का सेवक
नन्दकिशोरसिंह ॥
जयपुर
श्रा० शु० १० सोमवार[1]

—:०:—

[पूर्ण संख्या ५३०] **पत्र-सूचना**

[मुन्शी समर्थदान का पत्र]
१४-८-८२ प्रयाग[2]

—:०:—

[पूर्ण संख्या ५३१] **पत्र**

वैदिक यंत्रालय।[3]
१५। ८। ८३ प्रयाग[4]

नं० ८७३

श्री स्वामीजी महाराज की सेवा में।
जोधपुर

श्री महाराज !

---

१. सं० १९४०। १३ अगस्त सोमवार सन् १८८३।

२. यह पत्र हमें नहीं मिला। इस की सूचना समर्थदान के अग्रिम पूर्ण संख्या ५३१ (पृष्ठ ६२९, पं० १) के पत्र से मिलती है। तारीख का निर्देश उसी के आधार पर किया है।

३. यह पत्र म० मुंशीराम सम्पादित 'ऋ० द० का पत्र व्यवहार' भाग १, पृष्ठ ४६०-४८३ तक छपा है।

४. श्रावण शु० १२ सं० १९४० वि०।

नमस्ते कल एक निवेदन पत्र आप को भेज चुका हूं।[1]

(१) राय बहादुर पंडित सुन्दरलाल जी तारीख ९ वर्त्तमान मास को आए थे परन्तु ठहर न सके हम लोग स्टेशन पर ही उन से मिले थे।

(२) आप के पास से धातुपाठ की सूची आई इस मे धातु के सामने उस का गण, आत्मनेपद, परस्मैपद ये सब लिखे हैं। मेरी समझ में इन का लिखना ठीक नहीं क्योंकि मूल धातु पाठ में तो ये यह सब लिखे ही हैं फिर दुबारा लिखने की क्या आवश्यकता है। मेरी समझ में सूचि में केवल धातु लिख कर उस के सामने छपे हुए ग्रंथ की पृष्ठ और पंक्ति लिख देनी चाहिये। जिस की इच्छा देखने की हो वह लिखे पृष्ठ से मूल पुस्तक में निकाल के देखले। वहां उस का सब हाल खुल जायगा। सूचि में गण आदि तब छपने चाहिये कि जब मूल पुस्तक साथ न हो। जब मूल पुस्तक इस के साथ है तो पुस्तक वढ़ाने से कौन लाभ है? पुस्तक को निरर्थक बढ़ा कर क्यों कागज और कंपोजादि का व्यय वढ़ा कर बहुमूल्य करना? इस विषय में जैसी आप की आज्ञा हो लिखीये। जो गणादि साथ छपने की आज्ञा आप देंगे तो बड़ा खर्च पड़ेगा इस के कंपोज में बड़ी कठिनता पड़ेगी और कुच्छ फल भी न होगा।

(३) गोबध निवारणार्थ हस्ताक्षर कराने में देर क्यों होती है? लार्ड रिपन के जाने का समय निकट चला आता है इनके गए पीछे कुच्छ न होगा। जो कुच्छ अच्छा होना है सो इन्हीं के समय में होगा। इस में विशेष प्रयत्न करना चाहिये। यदि आप आज्ञा दीजिये तो मैं एक फार्म कोष्ठदार छपवा लूंगा और एक पत्र सही होने का मुंबई में छपा था उस की नकल छपवा लूं पीछे समाचार पत्रों में नोटिस देदूं कि गोवध निवारण के लिये जो लोग सही करवाना चाहैं वे मुझ से फार्म मंगवालें और सही करवा करवा कर मेरे पास भेजदें एकत्र होने पर मैं स्वामी जी महाराज के पास भेज दूंगा। इस प्रकार नोटिस होने पर सही शीघ्र हो जायगी। जो लोग मंगवेंगे उनको एक फार्म तो मैं भेज दूंगा। अधिक हस्ताक्षर करवावेंगे तो कोरे कागज पर रूल करवा लेंगे। मेरी तुच्छ समझ में यह प्रकार श्रेष्ठ है। जैसी

---

१. यह पत्र हमें उपलब्ध नहीं हुआ।

आप की आज्ञा हो लिखिये। इस काम में ढील होने से बड़ा नुकसान होता है। उदयपुर शाहपुरे और जोधपुर के महाराजाओं से आपने इस विषय में क्या सहायता चाही? और किसी के यहां से कुच्छ मिली वा नहीं? यदि उचित हो कृपा कर के लिखिये।

(४) आज की डाक में गत सप्ताह जो ता० ११ को समाप्त हुआ उस की भाषा ५० मन्त्रों की और १० पुस्तक गण पाठ के और एक मेरठ का आया हुआ पुस्तक भेजता हूं। इस से पहिले सप्ताह की भाषा मंत्र न होने के कारण से नहीं वनी मंत्र नहीं थे इस से नहीं वनी। आपने भेजे सो मंत्रों के पत्रे पहुंचे परन्तु कोई पत्र आपका नहीं आया। पत्र देने में देर न होनी चाहिये। कृपापत्र दीजिये।

आप का आज्ञाकारी
समर्थदान
मैनेजर

पुन: निवेदन यह है मैंने मुनशी इन्द्रमणी को वेदभाष्य के रुपयों के लिये लिखा था उन्हों ने लिखा कि हमारा हिसाव स्वामी जी जानते हैं प्रथम उन से पूछ लो। इस लिये आप से निवेदन है कि उन के हिसाब के विषय में आप लिखें। कि उन की ओर कितना रुपया है। आप के पत्र आने से मैं उन को लिखूंगा। अब वेदभाष्य उन्होंने वंध कर दिया है।

समर्थदान
मैनेजर

—:०:—

[पूर्ण संख्या ५३२] पारसल-सूचना

१—वेदभाष्य के मन्त्रों की भाषा।
२—१० गणपाठ के पुस्तक।
३—मेरठ की आई पुस्तक।[1]

—:०:—

१. इन को पारसल से भेजने की सूचना मुंशी समर्थदान के पूर्व पूर्ण संख्या ५३१ के पत्र में पृष्ठ ६३०, पं० ६-७ पर है।

[पूर्ण संख्या ५३३] पत्र-सारांश

फर्रुखाबाद: मेरठ, दानापुर और लखनऊ इन चार समाजों में से छः छः महीने पश्चात् कोई धार्मिक उत्तम पुरुष अन्तरंग की सभा की सम्मति से वैदिक यन्त्रालय में जाया करे हिसाब किताब पुस्तकों का जमा खर्च करे।[1]

विश्वेश्वरसिंह

—:o:—

[शेष पत्र, पत्र-सूचना आदि अगले भाग में देखें]

१. यह सारांश ऋ० द० के भाद्रसुदी १५, सं० १९४० (=१६ सित० १८८३ के पूर्ण संख्या ९१६ (भाग २, पृष्ठ ९३१) के पत्र के आधार पर बनाया है।

रामलाल कपूर ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित वेद-विषयक ग्रन्थ

१. यजुर्वेदभाष्य-विवरण—ऋषि दयानन्दकृत भाष्य पर पं० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु कृत विवरण। प्रथम भाग १५०.००, द्वितीय भाग ७५.००।

२. तैत्तिरीय-संहिता—मूलमात्र, मन्त्रसूची सहित। १००.००

३. तैत्तिरीयसंहिता-पदपाठ—दाक्षिणात्यपाठानुसारी। बृहद् आकार में। पृष्ठ संख्या ६७०। १५०.००

४. अथर्ववेदभाष्य—श्री पं० विश्वनाथ जी वेदोपाध्याय कृत। १-३ काण्ड ५०.००, ४-५ काण्ड ५०.००, ६ काण्ड ५०.००, ७-८ काण्ड ५०.००, ९-१० काण्ड ५०.००, ११-१३ काण्ड ५०.००, १४-१७ काण्ड ५०.००, १८-१९ काण्ड ५०.००, बीसवां काण्ड ५०.००।

५. ऋग्वेदादिभाष्य-भूमिका—पं० युधिष्ठिर मीमांसक द्वारा सम्पादित एवं शतशः टिप्पणियों से युक्त। मूल्य ५०.००

६. ऋग्वेदादिभाष्य-भूमिका-परिशिष्ट—भूमिका पर किये गये आक्षेपों के ग्रन्थकार द्वारा दिये गये उत्तर। ५.००

७. भूमिका-भास्कर—स्वामी विद्यानन्द सरस्वती, दो भागों में पूर्ण, प्रथम भाग २००.००, दूसरा भाग १५०.००।

८. वेदार्थ-भूमिका (हिन्दी)—स्वामी विद्यानन्द सरस्वती २५.००

९. वेदार्थ-भूमिका (संस्कृत)—,, ,, ,, ३०.००

१०. वेदार्थ-भूमिका (संस्कृत-हिन्दी) ,, ,, ,, ५०.००

११. माध्यन्दिन (यजुर्वेद) पदपाठ— १००.००

१२. गोपथ-ब्राह्मण (मूल)—सम्पादक श्री डा० विजयपाल जी विद्यावारिधि। अब तक प्रकाशित सभी संस्करणों में अधिक शुद्ध और सुन्दर संस्करण। ८०.००

१३. वैदिक-सिद्धान्त-मीमांसा—(प्रथम भाग) पं० युधिष्ठिर मीमांसक लिखित वेद विषयक १९ विशिष्ट निबन्धों का अपूर्व संग्रह। ७५.०० द्वितीय भाग १००.००।

पुस्तक प्राप्ति स्थान—

रामलाल कपूर ट्रस्ट बहालगढ़, (सोनीपत-हरियाणा)

रामलाल कपूर एण्ड सन्स, २५९६, नई सड़क दिल्ली



लेखक का जीवन-परिचय

नाम– म॰ म॰ पण्डित युधिष्ठिर मीमांसक।

जन्म– २२ सितम्बर, सन् १९०९ ई॰।

जन्मस्थान– विरकच्यावास (विरञ्च्यावास), अजमेर (राजस्थान)।

शिक्षा– प्रारम्भिक शिक्षा पाँचवीं तक जन्मस्थान पर, तत्पश्चात् 'विरजानन्द आश्रम' हरदुआ गंज, अलीगढ़ आदि स्थानों पर पण्डित ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु आदि विद्वानों के सान्निध्य से सम्पूर्ण वैदिक वाङ्मय का गम्भीर अध्ययन।

अध्यापन– विरजानन्द आश्रम (लाहौर, वाराणसी, बहालगढ़), महर्षि दयानन्द स्मारक महाविद्यालय (टंकारा), पाणिनीय संस्कृत सान्ध्य महाविद्यालय (भुवनेश्वर, उड़ीसा) तथा अन्य अनेक स्थलों पर भी स्वतन्त्र रूप से अध्यापन कार्य एवं रामलाल कपूर ट्रस्ट के प्रधान पद पर रहते हुए आजीवन कुशल सञ्चालन किया।

लिखित ग्रन्थ– संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास (दो भाग), वैदिक-स्वरमीमांसा, वैदिक-छन्दोमीमांसा, वैदिक-सिद्धान्तमीमांसा, श्रौत-यज्ञ-मीमांसा आदि अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों का लेखन।

सम्पादित ग्रन्थ– निरुक्त-समुच्चयः, भागवृत्ति-संकलनम्, दशपाद्युणादिवृत्तिः (दो भाग), शिक्षा-सूत्राणि, क्षीरतरंगिणी, दैवम् (पुरुषकार-वार्त्तिकोपेतम्), काशकृत्स्न-धातुव्याख्यानम्, माध्यन्दिन-पदपाठः, महाभाष्यम् (हिन्दी-व्याख्या दो अध्याय पर्यन्त), ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन (चार भाग) आदि अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों का सम्पादन।

विशिष्ट सम्मान एवं पुरस्कार– सन् १९७७ ई॰ में भारत के राष्ट्रपति द्वारा 'राष्ट्रिय पण्डित', आर्यसमाज सान्ताक्रुज (मुम्बई) द्वारा सन् १९८५ ई॰ में ७५ सहस्र रुपये से सम्मानित, सन् १९९४ ई॰ में उत्तर प्रदेश संस्कृत अकादमी द्वारा एक लाख का 'विश्वभारती' पुरस्कार, स॰ सं॰ विश्वविद्यालय वाराणसी द्वारा 'महामहोपाध्याय' की उपाधि दी गई।

निधन– २८ जून सन् १९९४ ई॰।